माध्यमिक पाठ्यक्रम

वेदाध्ययन–245

पुस्तक–2

विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

ए-24-25, संस्थागत क्षेत्र, सेक्टर–62,

नोएडा-201 309 (उत्तर प्रदेश)

वेबसाइट : www.nios.ac.in, टोल फ्री नं. 18001809393

सलाहकार समिति

प्रो. सरोज शर्मा
अध्यक्ष
रा.मु.वि.शि. संस्थान
नोएडा, उत्तरप्रदेश

डॉ. राजीव कुमार सिंह
निदेशक (शैक्षिक)
रा.मु.वि.शि. संस्थान
नोएडा, उत्तरप्रदेश

पाठ्यविषय निर्माता समिति

समिति अध्यक्ष
डॉ. के. इ. देवनाथन्
कुलपतिः
श्रीवेङ्कटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय
चन्द्रगिरि परिमार्ग अलिपिरि
तिरुपति - 517 502 (आन्ध्रप्रदेश)

समिति उपाध्यक्ष
डॉ. दिलीप पण्डा
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)
हिरालाल मजुमदार मेमोरियल कालेज
दक्षिणेश्वर, कलकत्ता - 700 035 (पश्चिम बंगाल)

डॉ. रामनाथ झा
प्रोफेसर (संस्कृत एवं प्राच्य विधा संस्थान)
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

डॉ. सन्तोष कुमार शुक्ल
प्रोफेसर (संस्कृत एवं प्राच्य विधा संस्थान)
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

आचार्य फूलचन्द
वैदिक गुरुकुल
पतञ्जलि योगपीठ, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

आचार्य प्रद्युम्न
वैदिक गुरुकुल, पतञ्जलि योगपीठ, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

श्री सन्तु कुमार पान
सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)
विजयनारायण महाविद्यालय
पत्रालय - इटाचुना, मण्डल - हुगली - 712 147 (प. बंगाल)

स्वामी वेदतत्त्वानन्द
प्राचार्य
रामकृष्ण मठ विवेकानन्द वेद विद्यालय
बेलुड-मठ, मण्डल हावडा - 711 202 (प. बंगाल)

डॉ. राम नारायण मीणा
सहायक निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा - 201309 (उत्तरप्रदेश)

पाठ्यक्रम-समन्वयक

डॉ. राम नारायण मीणा
सहायक निदेशक (शैक्षिक)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
नोएडा - 201309 (उत्तर प्रदेश)

पाठ लेखक

(पाठ 1, 5, 6, 17-24)
श्री राहुलगाजि
अनुसन्धाता (संस्कृत विभाग)
जादवपुर विश्वविद्यालय
ककोलकाता - 700032 (प. बंगाल)

(पाठः 8)
स्वामी वेदतत्त्वानन्द
प्राचार्य
रामकृष्ण मठ विवेकानन्द वेद विद्यालय
बेलुड मठ, मण्डल - हावडा - 711202 (प. बंगाल)

(पाठ 2, 3, 4, 7, 9-15)

श्रीमान् विष्णुपदपाल

अनुसन्धाता (संस्कृताध्ययनविभाग)

रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द विश्वविद्यालय

मण्डल हावडा-711 202 (प.बंगाल)

(पाठः 16)

डॉ. दिलीप पण्डा

सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)

हिरालाल मजुमदार मेमोरियल कॉलेज फॉर विमिन दक्षिणेश्वर

कोलकाता - 700 035 (पश्चिम बंगाल)

संपादक मण्डल

डॉ. दिलीप पण्डा

सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)

हिरालाल मजुमदार मेमोरियल कालेज

दक्षिणेश्वर, कलकत्ता - 700 035 (पश्चिम बंगाल)

स्वामी वेदतत्त्वानन्द

प्राचार्य

रामकृष्ण मठ विवेकानन्द वेद विद्यालय

बेलुड-मठ, मण्डल हावडा - 711 202 (प. बंगाल)

अनुवादक मण्डल

डॉ. विजेन्द्र सिंह

सहायक प्रोफेसर (संस्कृत)

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या संस्थान,

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,

नई दिल्ली-110067

श्री शिवराम

अनुसंधाता,

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या संस्थान

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय,

नई दिल्ली-110067

डॉ. राम नारायण मीणा

सहायक निदेशक (शैक्षिक)

रा0 मु0 वि0 शि0 संस्थान

नोएडा-201309 (उत्तर प्रदेश)

श्री पुनीत त्रिपाठी

वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

नोएडा, (उत्तर प्रदेश)-201309

रेखाचित्राङ्कन और मुख पृष्ठ चित्रण एवं डीटीपी

स्वामी हररूपानन्द

रामकृष्ण मिशन्,

बेलुर-मठ

मण्डल - हावडा - 711202 (प. बंगाल)

मैसर्स शिवम ग्राफिक्स

431, ऋषि नगर,

रानी बाग, दिल्ली - 110034

आपसे दो बातें ...

अध्यक्षीय सन्देश

प्रिय शिक्षार्थी,

'भारतीय ज्ञान परम्परा' पाठ्यक्रम के अध्ययन के लिए आपका हार्दिक स्वागत करती हूँ। भारत अति प्राचीन और विशाल देश है। भारत का वैदिक वाङ्मय भी उतना ही प्राचीन, प्रशंसनीय और श्रेष्ठ है। सृष्टिकर्ता भगवान ही भारतीयों के सम्पूर्ण विद्याओं के प्रेरक हैं, ऐसा सिद्धान्त शास्त्रों में प्राप्त होता है। भारत के प्रसिद्ध विद्वान, सामान्य जनमानस तथा अन्य ज्ञानी लोगों के बीच प्राचीन काल में आदान-प्रदान का माध्यम संस्कृत भाषा ही थी ऐसा सभी को ज्ञात है। इतने लम्बे काल में भारत के इतिहास में जो शास्त्र लिखे गए, जो चिन्तन उत्पन्न हुए, जो भाव प्रकट हुए वे सभी संस्कृत भाषा के साहित्यरूपी भण्डार में निबद्ध हैं। इस भण्डार का आकार कितना है, भाव कितने गंभीर हैं, मूल्य कितना अधिक है, इसका निर्धारण करने में कोई भी समर्थ नहीं है। प्राचीन काल में भारतीय क्या-क्या पढ़ते थे, वह निम्न श्लोक के माध्यम से प्रकट करते है -

अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः।
पुराणं धर्मशास्त्रं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश॥ (वायुपुराणम् 61.78)

इस श्लोक में चौदह प्रकार की विद्याएँ बताई गयी हैं। चार वेद (और चार उपवेद), छः वेदाङ्ग, मीमांसा (पूर्वोत्तरमीमांसा), न्याय (आन्वीक्षिकी), पुराण (अट्ठारह मुख्य पुराण और उपपुराण), धर्मशास्त्र (स्मृति) ये चौदह विद्या कहलाते हैं। इसके अलावा अनेक काव्य ग्रंथ और बहुत ही शास्त्र हैं। इन सभी विद्याओं का प्रवाह ज्ञान प्रदान करने वाला, प्रगति करने वाला और वृद्धि करने वाला है जो प्राचीन समय से ही चल रहा है। समाज के कल्याण के लिए भारत में विद्या दान परम्परा के रूप में गुरुकुलों में आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक, आयुर्वेद, राजनीति, दण्डनीति, काव्य, काव्य शास्त्र और अन्य बहुत से शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन होता रहा है।

विद्या के शिक्षण के लिए ब्रह्मचारी परिवार को छोड़कर गुरुकुल में ब्रह्मचर्याश्रम को धारण कर जीवन बिताते थे। और इन विद्या में पारंगत होते थे। इन विद्याओं में आज भी कुछ लोग पारंगत है। प्राकृतिक परिवर्तनों, विदेशी आक्रमणों, स्वदेश में हो रही ऊठा-पटक इत्यादि अनेक कारणों से पहले जैसी अध्ययन-अध्यापन की परंपरा अब छूटती जा रही है। इन पाठ्यक्रमों की परीक्षा, प्रमाणपत्र इत्यादि आधुनिक शिक्षण पद्धति के द्वारा कुछ राज्यों/प्रदेशों में होता है, परन्तु बहुत से राज्यों/प्रदेशों में नहीं होता है। अतः इन प्राचीन शास्त्रों का अध्ययन, परीक्षण, और अधिक प्रमाणीकरण का होना आवश्यक है। इसे ध्यान में रखकर यह पाठ्यक्रम राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के द्वारा प्रारम्भ किया गया है। लोगों के कल्याण के लिए जितना ज्ञान आवश्यक है वैसा ज्ञान इन शास्त्रों में निहित है और मनुष्य के सामने प्रकट हो, ऐसा लक्ष्य है। जिसके द्वारा यहाँ पर सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी कल्याण दृष्टि से कल्याणकारी हों, किसी को कोई दुख प्राप्त नहीं हो, कोई किसी को दुःख नहीं दे इस प्रकार अत्यन्त उदार उद्देश्य 'भारतीयज्ञानपरम्परा' इस नाम से इस पाठ्यक्रम की रचना की गई है। विज्ञान शरीरारोग्य का चिन्तन करता है। कला विषय मनोविज्ञान को तथा मनोविज्ञान आध्यात्मिक विज्ञान को मनोरंजन के रूप में सोचते हैं। विज्ञान साधनस्वरूप और सुखोपभोग साध्य है। अतः निःसन्देह रूप से कहा जा सकता है कि कला शाखा विज्ञान से भी श्रेष्ठ है। लोग कला को छोड़कर विज्ञान से सुख नहीं प्राप्त कर सकते हैं परन्तु विज्ञान को छोड़कर कला से सुख को प्राप्त कर सकते हैं।

यह संस्कृत साहित्य का पाठ्यक्रम छात्रानुकूल ज्ञानवर्धक लक्ष्यसाधक और पुरुषार्थसाधक है ऐसा मेरा मानना है।

इस पाठ्यक्रम के निर्माण में जिन हिताभिलाषी विद्वांन, उपदेष्टा, पाठलेखक, त्रुटिसंशोधक और मुद्रणकर्ता ने साक्षात् या परोक्षरूप से सहायता की, उनको संस्थान पक्ष से हार्दिक कृतज्ञता ज्ञपित करता हूं। रामकृष्णमिशन- विवेकानन्द-विश्वविद्यालय के कुलपति श्रीमान् स्वामी आत्मप्रियानन्द जी का विशेषरूप से धन्यवाद जिनकी आनुकूलता और प्रेरणा के बिना इस कार्य की परिसमाप्ति दुष्कर थी।

इस पाठ्यक्रम के अध्येताओं का विद्या से कल्याण हो, सफल हो, विद्वांन हो, सज्जन हो, देशभक्त हों, समाजसेवक हो ऐसी हमारी हार्दिक इच्छा है।

अध्यक्ष

राष्ट्रीय-मुक्त-विद्यालयी-शिक्षा-संस्थान

आपसे दो बातें ...

निदेशकीय वाक्

प्रिय पाठक,

'भारतीय ज्ञान परम्परा' पाठ्यक्रम को पढ़ने की इच्छा से उत्साहित भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुरागी और उपासकों का हार्दिक स्वागत करता हूँ। अत्यधिक हर्ष का विषय है, की जो गुरुकुलों में पढ़ाया जाने वाला पाठयक्रम हमारे राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के पाठयक्रम में भी सम्मिलित किया गया है। आशा है की लम्बे समय से हमारी प्राचीन संस्कृति से जो दुरी थी वह अब समाप्त हो जाएगी। हिन्दु जैन और बौद्धों के धार्मिक, आध्यात्मिक और काव्यादि वाङ्गमय प्रायः संस्कृत में लिखा हुआ है। सैकड़ों, करोड़ों मनुष्यों के प्रिय विषयों की भूमिका के माध्यम से प्रस्तुत् प्रवेश योग्यता के द्वारा और मन को प्रसन्न करने के लिए माध्यमिक स्तर और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कुछ विषय सम्मिलित किये गए हैं। जैसे आंग्ल-हिन्दी आदि भाषा ज्ञान के बिना उस भाषा के लिखे गए माध्यमिक स्तरीय ग्रन्थ पढने में और समझ में सक्षम नहीं हो सकते हैं, वैसे ही यहाँ पर प्रारम्भिक संस्कृत तथा हिन्दी भाषा को नहीं जानते तो, इस पाठ्यक्रम को जानने में समर्थ नहीं हो सकते हैं। अतः प्रारम्भिक संस्कृत के विद्वान् छात्र यहाँ इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के अधिकारी हैं ऐसा जानना चाहिए।

गुरुकुलों में अध्ययन करने वाले छात्र आठवीं कक्षा तक जितना संभव हो अपनी परंपरा से अध्ययन करें। नौंवीं दसवीं कक्षा और ग्याहरवीं तथा बारहवीं कक्षा तक भारतीय ज्ञान परम्परा के इस पाठ्यक्रम का निष्ठा से नियमित अध्ययन करें। इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिए योग्य होंगे।

संस्कृत के विभिन्न शास्त्रों में किया गया कठिन परिश्रम विद्वान्, प्राध्यापक, शिक्षक, और शिक्षाविद् इस पाठ्यक्रम का प्रारूपरचना में, विषय निर्धारण के लिए विषयपरिमाण निर्धारण में, विषय प्रकट करने का, भाषास्तर निर्णय में और विषयपाठ लिखने में संलग्न हैं। अतः इस पाठ्यक्रम का स्तर उन्नत होना है।

संस्कृत साहित्य की यह स्वाध्याय सामग्री आपके लिए पर्याप्त, सुबोध, रुचिकर, आनन्दरस को प्रदान करने वाली, सौभाग्य देने वाली, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि पुरूषार्थों के लिए उपयोगी रहेगी, ऐसी हम आशा करते है। इस पाठ्यक्रम का प्रधान लक्ष्य है की भारतीय ज्ञान परम्परा का शैक्षणिक क्षेत्रों में विशिष्ट और योग्य स्थान स्वीकृत होना चाहिए। यह लक्ष्य इस पाठ्यक्रम के माध्यम से पूर्ण होगा, ऐसा हमारा दृढ विश्वास है। पाठक अध्ययनकाल में यदि मानते हैं, की इस अध्ययन सामग्री में, पाठ के सार में, जहाँ संशोधन, परिवर्तन और परिवर्धन संस्कार चाहते हैं, उन सभी के प्रस्ताव का हम स्वागत करते हैं। इस पाठ्यक्रम को फिर भी और अधिक प्रभावी, उपयोगी और सरल बनाने में आपके साथ हम हमेशा तत्पर हैं।

सभी अध्येताओं के अध्ययन में सफलता और जीवन में सफलता के लिए और कृतकृत्य के लिए हमारे आशीर्वचन हैं–

किं बाहुना विस्तरेण।
अस्माकं गौरववाणीं जगति विरलाम् सर्वविद्याया लक्ष्यभूताम् एव उद्धरामि -

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्॥
दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिमाप्नुयात्।
शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्॥

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदतां ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया।
मनश्च भद्रं भजतादधोक्षजे आवेश्यतां नो मतिरप्यहैतुकी॥

निदेशकः (शैक्षिक)
राष्ट्रीय-मुक्त-विद्यालयी-शिक्षा-संस्थान

आपसे दो बातें ...

समन्वयक वचन

प्रिय जिज्ञासु,

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

परम्परा को आधार मानकर यह प्रार्थना है कि हमारा अध्ययन विघ्नों से रहित हो। अज्ञान का नाश करने वाला तेजस्वी हो। द्वेष भावना का नाश करने वाला हो। विद्या लाभ के द्वारा सभी कष्टों का निवारण करने वाला हो।

'भारतीय ज्ञान परम्परा' इस पाठ्यक्रम के अङ्गभूत यह पाठ्यक्रम उच्चतर माध्यमिक कक्षा के लिए निर्धारित किया गया है। इस पाठयक्रम की अध्ययन सामग्री आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं परम हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। सरल संस्कृत तथा हिन्दी भाषा को जो जानता है, वह इसके अध्ययन में समर्थ है।

विद्वानों का अभिप्राय और अनुभवों के आधार पर काव्य शास्त्र का फल रस ही है। आनंद रस स्वरूप ही है। सभी प्राणियों का सभी कार्य आनंद और सुखपूर्वक संपन्न हो, यही प्रबल इच्छा है। काव्य के सभी विषय रस में ही स्थित हैं। काव्यों के अनेक प्रकार हैं और काव्य प्रपंच सबसे महान हैं। काव्य बहुत हैं उनमें से विविध काव्याशों का चयन करके इस पाठ्य सामग्री में सम्मिलित किया गया है। इसी प्रकार साहित्य का सामान्य स्वरूप, काव्य का स्वरूप, भेद आदि प्रारंभिक ज्ञान यहाँ दिया गया है। पारंपरिक गुरुकुलों में जिस शिक्षण पद्धति से पाठ दिए जाते थे, उसी पद्धति का अनुसरण कर ये पाठ्यक्रम प्रतिपादित किया गया है।

उच्चतर माध्यमिक कक्षा हेतू निर्धारित साहित्य विषय का यह पाठ्यक्रम अत्यंत उपकारक है। शिक्षार्थी इसके अध्ययन से ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ होंगे। इसके अध्ययन से छात्र अन्य काव्यों में प्रवेश के योग्य होंगे। ये पाठ्य सामग्री काव्य और काव्यशास्त्र का श्रृद्धा सहित अध्ययन में प्रवेश के लिए और मन को शांति देने वाली है। इस पाठ्यक्रम के आकार पर नहीं जाना चाहिए और न इससे भय होना चाहिए। परंतु गंभीर रूप से अध्ययन करना चाहिए।

सम्पूर्ण पाठ्यपुस्तक दो भागों में विभक्त है।

पाठक पाठों को अच्छी प्रकार से पढ़कर पाठ में आये प्रश्नों के उत्तरों पर स्वयं विचार कर अन्त में दिए हुए प्रश्नों के उत्तरों को देखें, और उन उत्तरों को अपने उत्तरों से मिलाएँ। प्रत्येक पत्र में दिए हुए रिक्त स्थान पर टिप्पणीं करनी चाहिए। पाठ के अन्त में दिए प्रश्नों के उत्तरों का निर्माण करके परीक्षा के लिए तैयार हो जाएँ।

शिक्षार्थी अध्ययन काल में किसी भी कठिनता का अनुभव करते हैं, तो अध्ययन केन्द्र में किसी भी समय जाकर समस्या के समाधान के लिए आचार्य के समीप जाएँ या राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के साथ ई-पत्र द्वारा सम्पर्क करें। वेबसाइट पर भी संपर्क व्यवस्था है। वेबसाइट www.nios.ac.in इस प्रकार से है।

ये पाठ्यविषय आपके ज्ञान को बढाएं, परीक्षा में सफलता को प्राप्त करवाए, आपकी विषय में रुचि बढाए, आपका मनोरथ पूर्ण करे, ऐसी कामना करते है।

अज्ञानान्धकारस्य नाशाय ज्ञानज्योतिषः दर्शनाय च इयं में हार्दिकी प्रार्थना –

ॐ असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मामृतं गमय॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

भवत्कल्याणकामी
पाठयक्रम समन्वयक (शैक्षिकम्)
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थानम्

अपने पाठ कैसे पढ़ें!

वेदाध्ययन, माध्यमिक की इस पाठ्य सामग्री को विशेष रूप से आपकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए निर्मित किया गया है। आप स्वतंत्र रूप से स्वयं पढ़ सकें इसलिए इसे एक प्रारूप में ढाला गया है। निम्नलिखित संकत आपको सामग्री का सर्वोत्तम उपयोग करने का तरीका बताएंगे। दिए गए पाठों को कैसे पढ़ना है आइए, जानें–

पाठ का शीर्षक : इसे पढ़ते ही आप अनुमान लगा सकते हैं कि पाठ में क्या दिया जा रहा है। इसे पढ़िए।

भूमिका : यह भाग आपको पूर्व जानकारी से जोड़ेगा और दिए गए पाठ की सामग्री से परिचित कराएगा। इसे ध्यानपूर्वक पढ़िए।

उद्देश्य : प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के बाद आप इस पाठ से उद्देश्यों को प्राप्त करने में समर्थ हो जाएंगे। इन्हें याद कर लीजिए।

पाठगत प्रश्न : इसके एक शब्द अथवा एक वाक्य में पूछे गए प्रश्न हैं तथा कुछ वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं। ये प्रश्न पढ़ी हुई इकाई पर आधारि हैं इनका उत्तर आपको देते रहना है। इसी से आपकी प्रगति की जाँच होगी। ये सवाल हल करते समय आप हाथ में पेंसिल रखिए और जल्दी-जल्दी सवालों के समाधान ढूँढ़ते रहिए और अपने उत्तरों की जाँच पाठ के अंत में दी गई उत्तरमाला से मिलाइए। उत्तर ठीक न होने पर इकाई को पुनः पढ़िए।

आपने क्या सीखा : यह पूरे पाठ का संक्षिप्त रूप है–कहीं यह बिंदुओं के रूप में है, कहीं आरेख के रूप में तो कहीं प्रवाह चार्ट के रूप में। इन मुख्य बिंदुओं का स्मरण कीजिए। यदि आप कुछ अपने मतलब की मिलती-जुलती नई बातें जोड़ना चाहते हैं तो उन्हें भी वहीं बढ़ा सकते हैं।

पाठांत प्रश्न : पाठ के अंत में दिए गए लघु उत्तरीय तथा दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। इन्हें आप अलग पृष्ठों पर लिख कर अभ्यास कीजिए। यदि चाहें तो अध्ययन केंद्र पर अपने शिक्षक या किसी उचित व्यक्ति को दिखा भी कते हैं और उन पर नए विचार ले सकते हैं।

उत्तरमाला : आपको पहले ही बताया जा चुका है इसमें पाठगत प्रश्नों और क्रियाकलापों के उत्तर दिए जाते हैं। अपने उत्तरों की जाँच इस सूची से कीजिए।

पुस्तक-1

वैदिक साहित्य का इतिहास

1. वेद विषय में प्रवेश
2. वेदों का काल, पाठ प्रकार और मंत्रों में ऋषि, छन्द और देवता विनियोग
3. वेदों के भाष्यकार
4. वेद भाष्य की पद्धति
5. वैदिक आख्यामाण तथा वेदों के विषय में दार्शनिक विमर्श
6. वैदिक यज्ञ
7. वैदिक देवता

वैदिक सूक्तों का अध्ययन

8. सूर्यसुक्त और सञ्ज्ञान सूक्त
9. पूषन्-सूक्त और उषस्सूक्तं
10. वरुण सूक्त
11. यम सूक्त
12. शुन:शेपोपाख्यान-1
13. शुन:शेपोपाख्यान-2
14. शुन:शेपोपाख्यान-3
15. विश्वामित्रनदी संवाद

पुस्तक-2

वैदिकी प्रक्रिया

16. अष्टाध्यायी का प्रथम और द्वितीय (1-2) अध्याय
17. अष्टाध्यायी का तृतीय (3) अध्याय
18. अष्टाध्यायी का चतुर्थ (4) अध्याय
19. अष्टाध्यायी का चतुर्थ (4) अध्याय
20. अष्टाध्यायी का पंचम और षष्ट (5-6) अध्याय
21. अष्टाध्यायी का षष्ठ और सप्तम (6, 7) अध्याय
22. अष्टाध्यायी सप्तम (7) अध्याय
23. अष्टाध्यायी अष्टम (8) अध्याय
24. अष्टाध्यायी अष्टम (8) अध्याय

वेदाध्ययन-245

पुस्तक-2

क्रम	विषय-सूची	पृष्ठ संख्या
	वैदिकी प्रक्रिया	
16.	अष्टाध्यायी के प्रथम और द्वितीय अध्याय	1
17.	अष्टाध्यायी का तृतीय अध्याय	15
18.	अष्टाध्यायी का तृतीय और चतुर्थ अध्याय	33
19.	अष्टाध्यायी का चतुर्थ अध्याय	53
20.	अष्टाध्यायी का पंचम और षष्ट अध्याय	68
21.	अष्टाध्यायी का षष्ठ और सप्तम अध्याय	86
22.	अष्टाध्यायी सप्तम अध्याय	105
23.	अष्टाध्यायी अष्टम अध्याय-1	122
24.	अष्टाध्यायी अष्टम अध्याय-2	138
	सूत्रसूची	
	(i) पाठ्यक्रम	(i)
	(ii) प्रश्न पत्र का प्रारूप	(vii)
	(iii) नमूना प्रश्न पत्र	(viii)
	(iv) अंक योजना	(xii)

16

अष्टाध्यायी के प्रथम और द्वितीय अध्याय

संस्कृत वाङ्मय में शब्द दो प्रकार के होते हैं लौकिक और वैदिक। उनका बोध व्याकरण की रीति से सम्भव हैं। और वह व्याकरण लौकिक और वैदिक इन दो भागों में विभक्त है। लौकिक और वैदिक शब्दो के ज्ञान के लिए केवल व्याकरण ग्रन्थ ही हैं। उनमें भी पाणिनी का व्याकरण दोनों प्रकार का है। भगवान् पाणिनि ने अष्टाध्यायी बनाई। और उसको आश्रित करके श्रीमान् भट्टोजी दीक्षित ने वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी बनाई। उसके अंतिम भाग में वैदिक प्रक्रिया दिखाई। इसके बाद पाठों में वह ही वैदिक प्रक्रिया दिखाई जाती हैं। परन्तु पाठ विस्तार के भय से कुछ ही सूत्रों की आलोचना की जाती हैं। सूत्रों के चयन का क्रम तो अष्टाध्यायी के अनुसार ही है अर्थात् अष्टाध्यायी में जिस क्रम से वैदिक व्याकरण के सूत्र हैं उसी क्रम से यहाँ भी लिखे हैं। इसलिए पाठ का नाम भी उसी अनुरूप हैं।

इस पुस्तक के आदि में प्रथम पाठ में जो ये विषय बताएँगे उनमें कुछ - दो पुनर्वसु को एकवचन, षष्ठ्यन्त पतिशब्दकी घिसंज्ञा, इत यजेः करणे, छन्दसि बहुलं षष्ठी इत्यादि। लौकिकप्रयोग में धातु से पूर्व उपसर्गों का प्रयोग होता है। वेद में तो उपसर्गों का धातु के बाद भी और कभी व्यवधान से भी प्रयोग होता है। परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः नियम से द्वन्द्वसमास का परवल्लिङ्ग प्रसिद्ध है, वेद में द्वन्द्व का पूर्ववत् लिङ्ग होता है और यहाँ पाठ में बहुल शब्द का अर्थ भी कहेंगे। किञ्च षष्ठीयुक्तछन्दसि वा का योगविभाग से सर्वे विधयश्छन्दसि विकल्प्यन्ते इति जो परिभाषा सिद्ध होती है वो इस पाठ में बताएंगे और इस पाठ में आपके बोध सुगमता के लिए सूत्र व्याख्या करते समय वैदिक रूपों के साथ लौकिक रूपों का भी उल्लेख करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

टिप्पणी

- वेद में रूप क्रिया में लौकिक प्रक्रिया से क्या भेद हैं ऐसा जान पाने में;
- वेद में सभी विधि विकल्प से होती हैं अत:रूप बोधक परिभाषा को जान पाने में;
- किसी शब्द के लौकिक रूप और वैदिक रूप में क्या होता हैं ऐसा जान पाने में;
- वेद में द्वन्द्व पूर्व लिङ्ग में भी होता है यह भी जान पाने में;
- वेदों में उपसर्गों का प्रयोग कैसे होता है यह जान पाने में;
- निपात विषयी चर्चा का अवगमन कर जान पाने में;
- बहुल शब्दार्थ जान पाने में।

पुनर्वसु शब्द के द्वारा उद्भूत अवयव का ज्योति:समुदाय के अभिधान से दोनों को द्विवचन प्राप्त होने पर यह सूत्र आरम्भ होता है-

16.1 छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम्।। (1.2.61)

सूत्रार्थ:– वेद विषय में पुनर्वसु को विकल्प से एकचन होता है।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में तीन पद हैं। छन्दसि पुनर्वस्वो: एकवचनम् यह सूत्रगत पदच्छेद है। छन्दसि सप्तम्यन्त पद है, यहाँ वैषयिक सप्तमी है। छन्द शब्द अर्थ वेद है। अत: छन्दसि का वेद में यह अर्थ होता है। पुनर्वस्वो: यह षष्ठ्यन्त पद है। एकवचनम् यह प्रथमान्त पद है। फल्गुनीप्रोष्ठपदानां च नक्षत्रो इस सूत्र से नक्षत्रे पद की अनुवृत्ति आती है। और वह षष्ठीद्विवचनान्त है। अस्मदो द्वयोश्च सूत्र से द्वयो: पद की अनुवृत्ति आती है। जात्याख्यायामेकस्मिन्बहुवचनमन्यतरस्याम् सूत्र से अन्यतरस्याम् पद की अनुवृत्ति आती है। और वह विकल्पार्थक सप्तमीविभक्ति प्रतिरूपक अव्यय है। सूत्रार्थ – वेदविषय में नक्षत्रवाचक पुनर्वसु शब्द से द्वित्त्व अर्थ में विकल्प से एकवचन होता है। उससे ही पक्ष में द्विवचन भी होता है। लोक में तो मात्रा द्विवचन ही होता है।

उदाहरण- पुनर्वसु, पुनर्वसू।

सूत्रार्थ समन्वय– अश्विनी भरण्यादि सत्ताईस संख्यक नक्षत्रों में पुनर्वसु नक्षत्र सातवाँ है। और नक्षत्रवाचक पुनर्वसु शब्द से द्विवचन प्राप्त होने पर प्रकृत सूत्र से एकवचन विधन से सु प्रत्यय में स्वमोर्नपुंसकात् से सु का लुक् होने पर पुनर्वसु प्रयोग सिद्ध होता है। उक्त सूत्र के द्वारा वैकल्पिक द्विवचन के विधान से द्विवचन पक्ष में औ प्रत्यय की प्रक्रिया में पुनर्वसू द्विवचनान्त प्रयोग भी होता है। लोक में तो केवल पुनर्वसू द्विवचनान्त का ही प्रयोग होता है।

विशाखा शब्द से उद्भूत अवयव के ज्योति: समुदाय के अभिधान से दोनों को द्विवचन प्राप्त होने पर यह सूत्र आरम्भ होता है-

टिप्पणी

16.2 विशाखयोश्च॥ (1.2.62)

सूत्रार्थः- छन्द विषय में विशाखा को भी विकल्प एकवचन होता है।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र दो पद हैं। विशाखयोः च यह सूत्रगत पदच्छेद है। विशाखयोः षष्ठीद्विवचनान्त पद है। च अव्ययपद है। छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम् सूत्र से छन्दसि और एकवचनं च दोनों पदों की अनुवृत्ति आ रही है। जात्याख्यायामेकस्मिन्बहुवचनमन्यतरस्याम् इस सूत्र से अन्यतरस्याम् पद की अनुवृत्ति आती है। फाल्गुनीप्रोष्ठपदानां च नक्षत्रे सूत्र से नक्षत्रे पद की अनुवृत्ति आती है। और वह षष्ठीद्विवचनान्त है। अस्मदो द्वयोश्च सूत्र से द्वयोः पद की अनुवृत्ति आती है। सूत्रार्थ वेद में नक्षत्रवाचक विशाखशब्द से द्वित्व अर्थ में विकल्प से एकवचन होता है। सत्ताईस संख्यक नक्षत्रों में 'विशाखा' सोलहवां नक्षत्र विशेष है। 'विशाखा' नक्षत्र के नाम से 'वैशाख' मास का नामकरण हुआ।

उदाहरण- विशाखा, विशाखे।

सूत्रार्थसमन्वय- नक्षत्र वाचक विशाखा शब्द से द्विवचन प्राप्त होने पर प्रकृतसूत्र से एकवचन विधान से **विशाखा** यह प्रयोग होता है। उक्तसूत्र से वैकल्पिक एकवचन विधान से द्विवचनपक्ष में **विशाखे** का भी प्रयोग होता है। लोक में तो द्विवचन ही होता है। उससे विशाखे यह प्रयोग होता है।

पतिः समास एव (1.4.8) सूत्र से पति शब्द की समासमात्र में घिसंज्ञा होती है। उससे असमास में पतिशब्द की घिसंज्ञा नहीं होती है। यह तो लोक में। किन्तु वेद में असमास में भी घिसंज्ञा हो अतरू अग्रिमसूत्र आरम्भ करते हैं-

16.3 षष्ठीयुक्तछन्दसि वा॥ (1.4.9)

सूत्रार्थ– षष्ठ्यन्त से युक्त पतिशब्द की छन्द में घिसंज्ञा विकल्प से हो।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में तीन पद हैं। षष्ठीयुक्तः छन्दसि वा यह सूत्रगत पदच्छेद है। षष्ठीयुक्तः प्रथमान्त पद है। और उसका अर्थ होता है षष्ठ्यन्त से युक्त। छन्दसि सप्तम्यन्त पद है, यहाँ वैषयिक सप्तमी है। वा विकल्पार्थक अव्यय है। पतिः समास एव इस सूत्र से पतिः (1/1) पद की अनुवृत्ति आती है। शेषो घ्यसखि सूत्र घि की अनुवृत्ति आती है। (घि एक संज्ञा है। और वह शेषो घ्यसखि सूत्र से होती है। उसका अर्थ है- ह्रस्व इकारान्त उकारांत की सखि शब्द को छोड़कर घिसंज्ञा होती है)।

षष्ठीयुक्तछन्दसि वा का योगविभाग करते हैं। योग सूत्र को कहते है। षष्ठीयुक्तश्छन्दसि यह एक योग (सूत्र) है, वा अपर योग (सूत्र) है। 'वा' इस द्वितीयसूत्र में छन्दसि पद की अनुवृति आती है। उससे 'वा छन्दसि' यह द्वितीयसूत्र का आकार है। वहां प्रथमसूत्र का अर्थ है वेद विषय में षष्ठ्यन्त से युक्त पति शब्द घिसंज्ञक होता है। द्वितीय सूत्र

टिप्पणी

का अर्थ- व्याकरणशास्त्र में जितना भी कार्य होता है वह वेद में विकल्प से होता है। इससे प्रथम सूत्र के द्वारा जो विधि कही गई वह भी विकल्प से होता है। और योग विभाग करने पर द्वितीय के योग से प्रथम सूत्र का जो अर्थ आया वह तो पाणिनिकृत षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा इस मूलसूत्र से ही सिद्ध है। अतः यह योगारम्भ व्यर्थ है। व्यर्थ होता हुआ ज्ञापित कराता है कि सभी विधियाँ छन्द में विकल्प से होती हैं। उससे योगारम्भ करने पर प्रथम सूत्र से जो विधि कही वह विकल्प से होती है यह सिद्ध होता है। एवं योग विभाग अपने अंश में चरितार्थ है। अन्यत्र भी इसका फल है। जैसे- प्रतीपमन्य उर्मिर्युद्ध्यति इस आत्मनेपद के प्रयोगस्थल पर युद्ध्यति यह परस्मैपद प्रयोग भी होता है। योगारम्भ नहीं करते हैं तो षरूठीयुक्तश्छन्दसि वा इस सूत्र में जो विकल्पत्व कहा गया है वही उसमें भी हो। अन्यत्र न हो। किन्तु अन्यत्र भी विकल्पत्व हो तदर्थ यह योगविभाग किया गया है। बहुलं छन्दसि इत्यादि उसके ही प्रपञ्च हैं। उस प्रथम सूत्र से विधीयमान कार्य छन्द में विकल्प से प्राप्त होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ का समन्वय- ''क्षेत्रस्य पतिना वयम्'' इस प्रयोग में समास के अभाव से पतिः समास एव सूत्र से घिसंज्ञा अप्राप्त में षष्ठीयुक्तश्छन्दसि इस प्रकृतसूत्र से क्षेत्रस्य षष्ठ्यन्त से युक्त पतिशब्द का विकल्प से घिसंज्ञा में पति शब्द विहित का टाप्रत्यय के स्थान में आङो नास्त्रियाम् के योग में आङ के अनादेश में पतिना रूप सिद्ध होता है (तृतीया एकवचन टाविभक्ति की आङ्संज्ञा होती है प्राचीन वैयाकरणों के मत में)। घिसंज्ञा के अभाव में पत्या रूप बनता है। लोक में तो समास में ही घिसंज्ञा होती है। जैसे भूपतिना। असमास स्थल तो पत्या यही प्रयोग होता है।

16.4 अयस्मयादीनि च्छन्दसि॥ (1.4.20)

सूत्रार्थः– वेद में अयस्मय आदि शब्द साधु होते हैं।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में दो पद हैं। अयस्मयादीनि छन्दसि। अयस्मयादीनि यह प्रथमान्त पद है। अयस्मयः आदिः येषां तानि इमानि अयस्मयादीनि बहुव्रीहिसमास। च्छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है, यहाँ वैषयिक सप्तमी है। सूत्रार्थ– अयस्मयादि पद छन्द विषय में साधु होते हैं। अयस्म आदि शब्द वेद में साधु शब्दत्व से व्यवहित हैं अर्थात् प्रयोजनानुसार भसंज्ञा और पदसंज्ञा होती है। इसी अर्थ की प्रतिपादक हैं उभयसंज्ञान्यपि इति वक्तव्यम् यह वार्तिक भी यहाँ पढा गया है। भसंज्ञा और पदसंज्ञा के अधिकार में इस सूत्र के पाठ से वेद में अयस्मय इत्यादि शब्दों का साधुत्व अङ्गीकृत है।

उदाहरण- स सुष्टुभा स **ऋक्वता** गणेन (ऋ. 3-7-26)।

सूत्रार्थ का समन्वय– अयस्मयादि गण में ऋक्वता यह शब्द पढ़ा गया है। ऋचः अस्य सन्ति इस विग्रह में ऋच्-शब्दोत्तर मतुप्प्रत्यय में और मकार के वकारादेश में ऋच्वत् इस अवस्था में, उभयसंज्ञान्यपि इति वक्तव्यम् इस वार्तिक से पदसंज्ञा में चोः कुः इस सूत्र से पदान्त चकार को कुत्व ककार होता है। उससे ऋक्वत् यह शब्द निष्पन्न होता

है। और उस शब्द के तृतीया एकवचन में ऋक्वता यह रूप बनता है। भसंज्ञा होने पर झलां जशोऽन्ते सूत्र से जश्त्व नहीं होता उससे ककार को गकार नहीं होता है। जश्त्वविधान के लिए पदंज्ञा का भत्वसामर्थ्य बाध से। अन्यथा जश्त्व ही हो कुत्व नहीं हो इस इष्ट प्रयोग की हानि होती है। अतरू उक्त वाक्य के अन्तर्गत ऋक्वता इस पद में पदत्व से कुत्व और भत्व से जश्त्व का अभाव। और यहाँ अनन्तर की विधि नहीं होती है और न ही प्रतिषेध न्याय को बान्ध कर उभयसंज्ञाविधाने किम् प्रमाणम् आनन्तर्यात् एकैव संज्ञा स्यात् यह कहना चाहिए। उभयसंज्ञान्यपि इति वक्तव्यम् इस वार्तिक से। लोक में तो ऋग्वता रूप होता है।

अयसो विकारः इति विग्रहे मयड् वैतयोर्भाषायाम् इत्यनेन मयटि प्रक्रिया अयस् मय इति स्थिते लोके सकारस्य रुत्वे रोश्च उत्वे अय् अ उ मय इति जाते आद्गुणः इति गुणैकादेशे ओकारे विभक्तिकार्ये च अयोमयः इति रूपम् भवति इति लोके। परन्तु पूर्वोक्तसूत्रे अयस्मय इत्येवं पाठदर्शनात् छन्दसि सकारस्य रुत्वाभावः भसंज्ञया सिध्यति। तेन अयस्मयः इत्येव रूपम् वेदे।

16.5 छन्दसि परेऽपि॥ (1.4.81)

सूत्रार्थः वेद में वे गति उपसर्ग संज्ञक शब्द धातु से परे भी होते हैं।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में तीन पद हैं। छन्दसि परे अपि यह सूत्रगत पदच्छेद है। परे अपि यहाँ पर एङः को पदान्तादति इससे पूर्वरूप होता है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है, यहाँ वैषयिक सप्तमी है। परे यह प्रथमा बहुवचनान्त रूप है। अपि यह अव्ययपद है। ते प्राग्धातोः इस सूत्र से ते तथा धातोः दोनों पदों की अनुवृत्ति आ रही है। ते इस पद से गतिसंज्ञक तथा उपसर्गसंज्ञक शब्दों का ग्रहण होता है। सूत्रार्थ होता है– छन्द विषय में गतिसंज्ञक शब्द तथा उपसर्गसंज्ञक शब्द धातु से परे भी हो।

उदाहरण- याति नि हस्तिना। निहन्ति मुष्टिना।

सूत्रार्थ का समन्वय- याति नि हस्तिना यह छान्दस प्रयोग है। यहाँ नि पद गतिसंज्ञक है। प्रकृत सूत्र से गतिसंज्ञक नि- शब्द का याति धातु से परे प्रयोग सिद्ध होता है। लोक में तो ते प्राग्धातोः इस नियम के द्वारा धातू से पूर्व ही गत्युपसर्गसंज्ञक शब्द प्रयुक्त होते है।

16.6 व्यवहिताश्च॥ (1.4.82)

सूत्रार्थ- छन्द में गति तथा उपसर्गसंज्ञक शब्द व्यवधान से भी देखे जाते हैं।

सूत्रावतरणिका– वेद में गतिसंज्ञक तथा उपसर्गसंज्ञक शब्दों के व्यवधान से भी धातू के बाद तथा पूर्व में प्रयोग के लिए यह सूत्र बनाया गया।

सूत्र की व्याख्या– इस सूत्र में दो पद हैं। व्यवहिताः च सूत्रगत पदच्छेद है। व्यवहिताः यह प्रथमान्त पद है। च अव्ययपद है। छन्दसि परेऽपि इस सूत्र से छन्दसि पद की अनुवृत्ति आ रही है, यहाँ वैषयिक सप्तमी है। ते प्राग्धातोः इस सूत्र से ते तथा धातोः दो पदों की अनुवृत्ति आ रही है। ते इससे गतिसंज्ञक तथा उपसर्गसंज्ञक शब्दों का ग्रहण होता है। सूत्रार्थ इस प्रकार है वेद में गतिसंज्ञक तथा उपसर्गसंज्ञक शब्दों का किसी दूसरे शब्द से व्यवहितत्व होने पर भी प्रयोग होता है। उस व्यवधान से गति और उपसर्गसंज्ञक शब्द धातु से पूर्व अथवा पर प्रयुक्त होते हैं यह इस सूत्र का आशय है। छन्द में गति तथा उपसर्गसंज्ञक के परे रहने पर भी प्रयोग करना चाहिए यह सूत्र का भाव है।

उदाहरण- हरिभ्यां याह्योक आ। आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि।

सूत्रार्थ का समन्वय- याहि ओक आ इत्यत्र यहाँ 'आ' उपसर्ग का ते प्राग्धातोः इस सूत्र के अनुसार याहि इससे पूर्व में ही प्रयोग होने पर आयाहि ऐसा प्राप्त होने पर व्यवहिताश्च इस प्रकृतसूत्र के बल से आ का बाद में प्रयोग होने से हरिभ्यां याह्योक आ यह सिद्ध होता है। सूत्र में भी-शब्दसामर्थ्य से व्यवहिताश्च सूत्र के बल से 'आ' का व्यवहितत्व से पूर्वप्रयोग होने पर आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि यह प्रयोग सिद्ध होता है। इस प्रकार छन्द में उपसर्गों का व्यवहार देखा जाता है। लोक में तो उपसर्गों का प्रयोग धातु से पूर्व ही होता है। धातु और उपसर्गों के में कोई भी व्यवधान नहीं होता है।

पाठगत प्रश्न-16.1

1. छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम् का क्या अर्थ है?
2. षष्ठ्यन्त से युक्त पतिशब्द की विकल्प से घिसंज्ञा किस सूत्र से होती है?
3. गतिसंज्ञक और उपसर्गसंज्ञकों का धातु के व्यवहित रूप से प्रयोग किस सूत्र से होता है।
4. किस नक्षत्र का अनुसरण करके वैशाखमास का नामकरण किया गया?
5. छन्दसि परेऽपि सूत्र का अर्थ लिखो?
6. षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा इस सूत्र से कौन सी परिभाषा ज्ञापित की गयी?
7. षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा इस सूत्र का क्या अर्थ है?
8. लोक में असमास में पतिशब्द की घिसंज्ञा होती है अथवा नहीं?

16.7 तृतीया च होश्छन्दसि॥ (2.3.3)

सूत्रार्थ- वेद विषय में हु धातु के अनभिहित कर्म में तृतीया विभक्ति होती है चकार

टिप्पणी

से द्वितीया भी होती है।

सूत्रावतरणिका- वेद में हु-धातु के कर्म को द्वितीया और तृतीया के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या– यह विधायक सूत्र है। इससे द्वितीयाविभक्ति और तृतीयाविभक्ति का विधान होता है। इस सूत्र में चार पद हैं। तृतीया च हो: छन्दसि यह सूत्रगत पदच्छेद है। तृतीया यह प्रथमान्त पद है। च यह अव्ययपद है। हो: षष्ठ्यन्त पद है। हो: इसका जुहोति धातु अर्थ है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है, यहाँ वैषयिकसप्तमी है, और उसका वेद विषय में यह अर्थ है। अनभिहिते यह अधिकार है। कर्मणि द्वितीया इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृत्ति आती है। सूत्रस्थ चकार से द्वितीया विभक्ति भी होती है यह जानना चाहिए। सूत्रार्थ इस प्रकार है छन्द विषय में हु धातु के अनभिहित कर्म को तृतीया और द्वितीया विभक्ति होती है।

उदाहरण - यवाग्वा/यवागूम् अग्निहोत्रं जुहोति।

सूत्रार्थ का समन्वय– पहले वाले वैदिक वाक्य में हु-धातु का कर्म यवागू है। अत: प्रकृत सूत्र के द्वारा यवागू-शब्द से तृतीया विभक्ति में यवाग्वा यह रूप सिद्ध होता है। विकल्प से द्वितीया विभक्ति में यवागूम् अग्निहोत्रं जुहोति यह वाक्य भी सिद्ध होता है।

16.8 द्वितीया ब्राह्मणेम॥ (2.3.60)

सूत्रार्थ– ब्राह्मण विषयक प्रयोग में व्यवहारार्थक दिव धातु के कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में दो पद हैं। द्वितीया प्रथमान्त पद है। ब्राह्मणे सप्तम्यन्त पद है। और यहाँ विषयसप्तमी है। अतरू ब्राह्मणे इसका ब्राह्मण के विषय में यह अर्थ होता है। यहाँ दिवस्तदर्थस्य इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति आ रही है। तदर्थ शब्द से वि-अव-पूर्वक ह्न धातु के तुल्य धातुओं तथा पण्धात्वर्थ के तुल्य धातुओं का ग्रहण है। और वह दिव् धातु दिवस्तदर्थस्य सूत्र में स्पष्ट की गई है। अधीगर्थदयेशां कर्मणि इस सूत्र से कर्मणि की अनुवृत्ति आ रही है। सूत्रार्थ इस प्रकार है कि ब्राह्मण विषयक प्रयोग में दिवस्तदर्थ के कर्म में षष्ठी विभक्ति हो। मन्त्रव्यतिरेक वेदभाग ब्राह्मण होता है।

दिवस्तदर्थस्य सूत्र से द्यूतार्थक और क्रयविक्रय रूप व्यवहारार्थक दिव् धातु से कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है जैसे शतस्य दीव्यति यहाँ द्यूतार्थ और क्रयविक्रयरूपव्यवहारार्थक दिव् धातु का प्रयोग है। यहाँ दिव् धातु का कर्म शतम् है। अत: दिवस्तदर्थस्य से षष्ठीविभक्ति में शतस्य ऐसा प्रयोग होता है। किन्तु प्रकृत में दिवस्तदर्थस्य से कर्म में षष्ठीविभक्ति प्राप्त होने पर उसका बाधक द्वितीया ब्राह्मणे यह योग आरम्भ होता है। अत: उसका अपवाद द्वितीया ब्राह्मणे यह योग है।

टिप्पणी

उदाहरण में सूत्रार्थ का समन्वय– गामस्य तदहः सभायां दीव्येयुः इस उदाहरण में दिव्–धातु के कर्म गोशब्द से द्वितीयाविभक्ति होती है। न की षष्ठी विभक्ति। यद्यपि यहाँ ब्राह्मणविषयक प्रयोग है। और पणार्थक तथा व्यवहृर्थक दिव्–धातु का प्रयोग भी है। और दिव्–धातु वाच्यक्रिया का कर्म गौ है। लोक में तो गोः तदहः सभायां दीव्येयुः यह प्रयोग होता है।

16.9 चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसिम॥ (2.3.63)

सूत्रार्थ– छन्द विषय में चतुर्थी अर्थ में बहुल करके षष्ठी विभक्ति होती है।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में तीन पद हैं, चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि। चतुर्थ्यर्थे यह सप्तम्यन्त पद है। बहुलम् यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। यहाँ विषयसप्तमी है। षष्ठी शेषे सूत्र से शेषे इस पद की अनुवृत्ति आ रही है। अतरू सूत्रार्थ इस प्रकार होता है वेद विषय में चतुर्थी अर्थ में बहुल करके षष्ठी विभक्ति होती है। बहुल क्या होता है यह यहाँ कहा जाता है–

''क्वचित्प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद्विभाषा क्वचिदन्यदेव।
विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चातुर्विधं बाहुलकं वदन्तिम॥''

अर्थात्– सूत्रोक्त कार्य की कहीं प्राप्ति नहीं होने पर भी प्रवृत्ति हो। और कहीं प्राप्ति होने पर भी अप्रवृत्ति हो। तथा कही विकल्प से प्रवृत्ति होती है। और कहीं अन्य ही कुछ होता है।

उदाहरण–गोधाकालकादार्वाखाटस्ते वनस्पतीनाम् इति।

सूत्रार्थ का समन्वय– पूर्वोक्त उदाहरण में वनस्पतीनाम् में षष्ठी विभक्ति वनस्पतिभ्यः इस चतुर्थ्यर्थ में होती है। अतरू गोधाकालकादार्वाखाटस्ते वनस्पतिभ्यः इसका अर्थ बोध करना चाहिए। सूत्र में बहुलग्रहण से वेद विषय में षष्ठ्यर्थ में चतुर्थ्य भी कर लिया जाता है। जैसे या खर्वेन पिबति तस्यै खर्वः यहाँ पर तस्यै चतुर्थ्यन्त पद तस्याः इस षष्ठ्यर्थ में प्रयुक्त है।

16.10 यजेश्च करणे॥ (2.3.63)

सूत्रार्थ– यज धातु के भी करण कारक में वेद विषय में बहुल करके षष्ठी विभक्ति होती है।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में तीन पद हैं। यजेः च करणे यह सूत्रगत पदच्छेद है। यजेः षष्ठ्यन्त पद है। च अव्ययपद है। करणे सप्तम्यन्त पद है। चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि सूत्र से बहुलम् तथा छन्दसि दो पदों की अनुवृत्ति आ रही है। छन्दसि यहाँ वैषयिकसप्तमी

टिप्पणी

है। षष्ठी शेषे सूत्र से शेषे पद की अनुवृत्ति आ रही है। सूत्रार्थ इस प्रकार है यज धातु से करण कारक में वेदविषय में बहुल करके षष्ठी विभक्ति होती है। बहुल क्या होता है यह पूर्वसूत्र में कह ही चुके हैं।

उदाहरण– घृतस्य घृतेन वा यजते।

सूत्रार्थ का समन्वय- पूर्वोक्त उदाहरण में यज धातु का करण घृतम् है। उस प्रकृतसूत्र से घृत शब्द में बहुल करके करण कारक में षष्ठी विभक्ति होती है। सूत्र में 'बहुलम्' पद की अनुवृत्ति में षष्ठी के अभाव पक्ष में तृतीया विभक्ति घृतेन यजते का भी प्रयोग होता है। उससे घृतस्य घृतेन वा यजते यह प्रयोग सिद्ध होता है। लोक में तो घृतेन यजते यह एक ही प्रयोग होता है।

16.11 बहुलं छन्दसि॥ (2.4.39)

सूत्रार्थ- छन्द विषय में अद को घसलृ आदेश होता है बहुल करके।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में दो पद हैं। बहुलम् यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि सप्तम्यन्त पद है, यहाँ वैषयिक सप्तमी है। अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति सूत्र से अदः इस षष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति आ रही है। लुङ्सनोर्घस्लृ सूत्र से घस्लृ की अनुवृत्ति आ रही है। आर्धधातुके यह अधिकार सूत्र है। सूत्रार्थ इस प्रकार है वेद विषय में अद के स्थान पर घस्लृ-आदेश होता है बहुल करके आर्धधातुक के परे रहते। बहुल का अर्थ पूर्व कह चुके हैं।

उदाहरण- सग्धिः।

सूत्रार्थ का समन्वय- अद्-धातु से स्त्रियां क्तिन् सूत्र से क्तिन्-प्रत्यय करने पर तथा अनुबन्धलोप होने पर अद् ति इस स्थिति में बहुलम् छन्दसि इस प्रकृतसूत्र से अद के स्थान पर घसलृ आदेश होकर और अनुबन्धलोप होकर घस् ति ऐसा रूप बनता उसके बाद घसिभसोर्हलि च इस सूत्र से घस की उपधा का लोप घ् स् ति ऐसा होने पर झलो झलि सूत्र से सकार का लोप होने पर घ् ति ऐसा होने पर झषस्तथोर्धोऽधः इस सूत्र से तकार को धकार होने पर घ् धि यह होने पर झलां जश् झशि इस सूत्र से घकार के स्थान पर जश गकार होकर ग्धि यह रूप सिद्ध होता है। उसके बाद समान शब्द के साथ पूर्वापर प्रथमचरमजघन्यसमानमध्यमध्यमवीराश्च इस सूत्र से समास होने पर समानस्य छन्दस्यमूर्धप्रभृत्युदर्केषु इस सूत्र से समान के स्थान पर स आदेश होकर सग्धिः रूप सिद्ध होता है।

16.12 हेमन्तशिशिरावहोरात्रे च छन्दसि॥ (2.4.28)

सूत्रार्थ– हेमन्त और शिशिर शब्द, तथा अहन् और रात्रि शब्दों का द्वंद्व समास में छन्द

टिप्पणी

विषय में पूर्ववत् लिङ्ग होता है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में चार पद हैं। हेमन्तशिशिरौ अहोरात्रे च छन्दसि यह सूत्रगत पदच्छेद है। हेमन्तशिशिरौ यह प्रथमान्त पद है। हेमन्तश्च शिशिरश्च हेमन्तशिशिरौ। अहोरात्रे यह प्रथमाद्विवचनान्त पद है। च यह अव्ययपद है। छन्दसि यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। पूर्ववदश्ववडवौ इस सूत्र से पूर्ववत् पद की अनुवृत्ति आ रही है। परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः इस सूत्र से द्वन्द्वः इस पद की अनुवृत्ति आ रही है। सूत्रार्थ इस प्रकार होता है वेद विषय में द्वन्द्वसमास से निष्पन्न हेमन्त और शिशिर तथा अहन् और रात्रि शब्दों का पूर्ववत् लिङ्ग होता है। पूर्ववत् इसका पूर्वपदवत् यह अर्थ है।

उदाहरण में सूत्रार्थ का समन्वय- अहश्च रात्रिश्च ऐसा विग्रह होने से द्वन्द्वसमास में अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च रात्रेः इस सूत्र से समासान्त अच्प्रत्यय होकर अहोरात्रि अ ऐसा होने पर यस्येति च इस सूत्र से इकार का लोप होकर अहोरात्र यह सिद्ध होता है। उसके बाद रात्राह्नाहाः पुंसि इस सूत्र से रात्रादिशब्दों का पुल्लिंग में व्यवहार होता है इससे अहोरात्रौ यह रूप सिद्ध होता है वेद विषय में। परन्तु वेद विषय में तो अहन् इस पूर्वपद के नपुंसकलिङ्गकत्व होने से अहोरात्रे यह भी रूप सिद्ध होता है। तथा प्रयोग में अहोरात्रे का करते हैं। न केवल द्विवचन में ही यह नियम है। अपितु बहुत्वविवक्षा में भी पूर्वपद के समान लिङ्ग होना चाहिए। उसका उदाहरण अहोरात्राणि ऐसा विधान किया गया है।

हेमन्तश्च शिशिरश्च हेमन्तशिशिरौ। हेमन्त शब्द के पुंलिङ्ग होने से **हेमन्तशिशिरौ** यह रूप बनता है वेद विषय में। किन्तु लोक में **हेमन्तशिशिरे** ऐसा प्रयोग होता है। किन्तु हेमन्त शिशिर का स्त्रिलिंग न होने पर शिशिर शब्द का अस्त्रि में अर्थात् पुल्लिंग और स्त्रिल्लिंग में प्रयोग देखा जाता है। तथा शिशिरशब्द की पुंलिङ्ग पक्ष में सूत्र की वैयर्थ्यापत्ति है। नपुंसक में व्यवहार किया जाता है तो समस्तपद को परवल्लिङ्ग हो अर्थात् नपुंसकलिंग हो उसकी निवृत्ति के लिए प्रकृतसूत्र आवश्यक है।

16.13 बहुलं छन्दसि॥ (2.4.73)

सूत्रार्थ- छन्द विषय में अदादिगण से विहित शप् का बहुल करके लुक् होता है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। बहुलम् छन्दसि यह सूत्रगत पदच्छेद है। बहुलम् यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है, यहाँ वैषयिक सप्तमी है। अदिप्रभृतिभ्यः शपः इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृत्ति आ रही है। ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञोः इस सूत्र से लुक् पद की अनुवृत्ति आ रही है। सूत्रार्थ इस प्रकार है वेद विषय में अदादिगण से विहित शप् का बहुल करके लुक् होता है। बहुल का अर्थ कह ही चुके हैं।

उदाहरण- शयते।

टिप्पणी

सूत्रार्थ का समन्वय- शी-धातु से लट्-लकार होने पर शी ल् इस स्थिति में ल के स्थान पर तकार आदेश होकर शी त होने पर कर्तरि शप् से शप्-प्रत्यय होने पर शी अ त होने पर अदिप्रभृतिभ्यः शपः से शप् को लुक् प्राप्त हुआ प्रकृत सूत्र से उसका निषेध शी अ त इस स्थिति में शीङः सार्वधातुके गुणः से ईकार को गुण एकार हुआ शे अ त इस स्थिति के बाद एचोऽयवायावः से एकार के स्थान पर अय आदेश होकर शय् अ त हुआ टित आत्मनेपदानां टेरे से टी तकार से उत्तर अकार को एकार सभी वर्णों के सम्मेलन से शयते यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो शेते रूप ही बनता।

16.14 बहुलं छन्दसि॥ (2.4.76)

सूत्रार्थ- छन्द विषय में जुहोत्यादिगण से विहित शप् को बहुल करके श्लु होता है।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में दो पद हैं। बहुलम, छन्दसि यह सूत्रगत पदच्छेद है। बहुलम् यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है, यहाँ वैषयिकसप्तमी है। अदिप्रभृतिभ्यः शपः इस सूत्र से शपः पद की अनुवृत्ति आ रही है। जुहोत्यादिभ्यः श्लुः इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृत्ति आ रही है। सूत्रार्थ इस प्रकार है छन्द विषय में जुहोत्यादिगण से विहित शप् को श्लु बहुल करके होता है। अर्थात् शप् के स्थान पर विहित श्लु आदेश कदाचित् नहीं भी होता है। और कभी कभी शप् के स्थान पर अविहित श्लु आदेश भी होता है यह सूत्र में बहुल ग्रहण आशय है।

उदाहरण- दाति प्रियाणि चिद्वसु (ऋ.7.16.11)।

सूत्रार्थ का समन्वय– दा धातु से लट्-लकार में दा ल् इस स्थिति में लकार के स्थान पर तिबादेश तथा अनुबन्धलोप होने पर दा ति होने पर शप् के लिए जुहोत्यादिभ्यः श्लुः इससे शप् को श्लु श्लौ से दा को दित्व दा दा ति ऐसा होने पर द्विरुक्त के पूर्वभाग को पूर्वोऽभ्यासः से अभ्यास संज्ञा ह्रस्वः से अभ्यास के अच् को ह्रस्व द दा ति ऐसा होने पर सभी वर्णों का सम्मेलन करने पर ददाति रूप सिद्ध होता है लोक में। प्रकृतसूत्र से शप् को श्लु न हो तो श्लौ यह सूत्र न लगकर दाति ऐसा रूप सिद्ध होता है वेद विषय में।

16.15 कृमृदुरुहिभ्यश्छन्दसि॥ (3.1.59)

सूत्रार्थः- कृ-मृदु- और रुह इन धातुओं से उत्तर च्लि के स्थान पर अङ् आदेश होता है विकल्प से वेद विषय में कर्तरिवाची लुङ परे रहते।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र दो पद हैं। कृमृदुरुहिभ्यः छन्दसि यह सूत्रगत पदच्छेद है। कृमृदुरुहिभ्यः यह पञ्चमीबहुवचनान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है, यहाँ वैषयिकसप्तमी है। च्लि लुङि इससे च्लि की अनुवृत्ति आ रही है, अस्यतिवक्तिख्यादिभ्योऽङ् से अङ्

की, तथा इरितो वा से वा की अनुवृत्ति आ रही है। धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ् इस सूत्र से धातोः की अनुवृत्ति आ रही है। और वह पञ्चमीबहुवचनान्त रूप है। च्लेः सिच् इससे च्लेः की भी अनुवृत्ति आ रही है। सूत्रार्थ इस प्रकार है वेद में कर्तरीवाची कृ मृ दु रुह इन धातुओं से विहित च्लि के स्थान पर अङ् आदेश विकल्प से होता है यह सूत्रार्थ है।

उदाहरण- इदं तेभ्योऽकरं नमः।

सूत्रार्थ का समन्वय- पूर्वोक्त उदाहरण में अकरवम् यहाँ कृधातु से लुङ के स्थान पर मिप्-आदेश मेः के स्थान पर अम्-आदेश कृ अम् इस स्थिति में धातु से अट् आगम और अनुबन्धलोप होने पर कृ अम् ऐसा होने पर च्लि लुङि से च्लि और प्रकृतसूत्र से च्लि के स्थान पर अङादेश और अनुबन्धलोप होने पर ऋदृशोऽङि गुणः से धातु के ऋकार को गुण में अकार होने पर उरण् रपरः से रपरत्व अकार होने पर यह रूप सिद्ध होता है। लोक में च्लि के स्थान पर सिच् होने पर अकार्षम् यह रूप बनता है। एवम् मृधातु से तिप् वेद में अमरत्, लोक में तो अमृत रूप बनता है। दृधातु से तिप् में वेद में अदरत्, लोक में अदारीत् रूप बनता है। रुह् धातु से तिप् में वेद में आरुहत्, लोक में अरुक्षत् रूप बनता है।

पाठगत प्रश्न-16.2

9. हु धातु के कर्म को तृतीया तथा द्वितीया विभक्ति का वैकल्पिक विधान किस सूत्र से होता है?
10. द्वितीया ब्राह्मणे में कौन सी सप्तमी है?
11. द्वितीया ब्राह्मणे यह किसका अपवाद है?
12. चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि इस सूत्र में चतुर्थ्यर्थे किस विभक्ति का विधान होता है?
13. घृतस्य यजते यहाँ षष्ठी विधायक सूत्रा कौन सा है?
14. अहोरात्रे यहाँ पूर्ववत् लिङ्ग विधायक सूत्र कौन सा है?
15. बहुलं छन्दसि से किस विषय में शप् को बहुल करके लुक् होता है?
16. छन्द विषय में जुहोत्यादिगण में शप् को बहुल करके श्लु का विधायक सूत्र कौन सा है?
17. बहुलं छन्दसि से कहाँ पर शप् को बहुल करके श्लु होता है?
18. अमरत् इसका लौकिक रूप क्या होता है?

टिप्पणी

19. अकरम् का लौकिक रूप क्या होता है?

20. कृमृदुरुहिभ्यश्छन्दसि इस सूत्र से च्लि के स्थान पर क्या होता है सिच् अथवा अङ्?

पाठ का सार

इतना तो आप देख ही चुके हैं कि- छन्द विषय में नक्षत्र वाचक पुनर्वसु शब्द तथा विशाख शब्द से द्वित्त्व वाच्य में विकल्प से एकवचन होता है, लोक में तो द्विवचनम ही होता है। छन्द विषय में अयस्मयादि पद निपातित हैं। गतिसंज्ञक तथा उपसर्गसंज्ञक शब्द व्यवधान से धातु से परे अथवा पूर्व में होते हैं। छन्द विषय में हु धातु से कर्म में तृतीया भी होती है। छन्द विषय में चतुर्थी के लिए बहुल करके षष्ठी का भी प्रयोग होता है। और यज् धातु से करण कारक में बहुल करके षष्ठीविभक्ति भी होती है। छन्द विषय में अद् धातु को बहुल करके घस्लृ आदेश होता है। छन्द विषय में अदादिगण से विहित शप् का बहुल करके लुक् होता है। छन्द विषय में जुहोत्यादिगण से विहित शप् का बहुल करके लुक् होता है। और षष्ठीयुक्तश्छन्दसि इसका योगविभाग प्रदर्शित किया गया है। और उस योगविभाग से सर्वे विधयश्छन्दसि विकल्प्यन्ते यह परिभाषा ज्ञापित होती है। उसके बाद वेद में सभी विधियां विकल्प से होती हैं यह समझा।

पाठान्त प्रश्न

21. ''षष्ठीयुक्तश्छन्दसि'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

22. ''अयस्मयादीनि छन्दसि'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

23. ''छन्दसि परेऽपि'' तथा ''व्यवहिताश्च'' इन दोनों की व्याख्या कीजिए।

24. ''चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

25. ''कृमृदुरुहिभ्यश्छन्दसि'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

26. ''सग्धिः'' इस रूप को सिद्ध कीजिए।

27. शयते इस रूप को सिद्ध कीजिए।

28. दाति इस रूप की सिद्धि कीजिए।

29. पतिना यहाँ किस प्रकार पति शब्द की घिसंज्ञा होती है।

30. द्वितीया ब्राह्मणे इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

16.1

1. छन्द विषय में पुनर्वसू नक्षत्र के द्वित्त्व को एकवचन विकल्प से हो।
2. षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा।
3. व्यवहिताश्च सूत्र से।
4. 'विशाखा' नक्षत्र के नामानुसार ही 'वैशाख' मास का नामकरण हुआ।
5. छन्द विषय में गतिसंज्ञक और उपसर्गसंज्ञक पद धातु से परे भी हों।
6. सभी विधियाँ छन्द विषय में विकल्प से होती हैं।
7. षष्ठ्यन्त से युक्त पति शब्द की छन्द विषय में घिसंज्ञा विकल्प से हो।
8. नहीं होती है।

16.2

9. तृतीया च होश्छन्दसि।
10. विषयसप्तमी।
11. दिवस्तदर्थस्य।
12. षष्ठी से।
13. यजेश्च करणे।
14. हेमन्तशिशिरावहोरात्रे च छन्दसि से।
15. अद् आदि से।
16. बहुलं छन्दसि।
17. जुहोत्यादिगण में शप् को बहुल करके श्लु होता है।
18. अमृत।
19. अकार्षीत्।
20. अङ्।

सोलहवां पाठ समाप्त

17

अष्टाध्यायी का तृतीय अध्याय

पूर्व पाठ में आपने कुछ वैदिक शब्दों का प्रयोग तथा प्रक्रिया को जाना। इस पाठ में इन्, ण्वि, ज्युट्, विट्, विच्, क्विप् इत्यादि प्रत्ययों का प्रयोग करेंगे। और कुछ निपातन से सिद्ध शब्दों की भी आलोचना करेंगे। दश लकार होते हैं। उनमें से लेट्-लकार का प्रयोग वेद में होता है यह आप जानते ही हैं। इस पाठ के अन्त में लेट्लकार सम्बन्धी चर्चा करेंगे।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- धातु से परे इन्, ण्वि, ज्युट्, विट्, विच्, क्विप् इत्यादि प्रत्यय कब होते हैं इस विषय को जान पाने में;
- कुछ निपातन से सिद्ध शब्दों को जान पाने में;
- लेट्-लकार की विशेषता जान पाने में;
- छन्द में लेट्-लकार के रूप की प्रक्रिया को जान पाने में।

17.1 छन्दसि निष्टर्क्यदेवहूय- प्रणीयोन्नीयोच्छिष्य- मर्यस्तर्याध्वर्य-खन्यखान्य- देवयज्यापृच्छ्यप्रतिषीव्य- ब्रह्मवाद्यभाव्य-स्ताव्योपचाय्य-पृडानि॥ (3.1.123)

सूत्रार्थ- निष्टर्क्य आदि शब्दों का छन्द विषय में निपातन किया जाता है।

सूत्रावतरणिका- छन्द विषय में निष्टर्क्य-देवहूय-प्रणीय-उन्नीय-उच्छिष्य-मर्य-स्तर्या-ध्वर्य-खन्य-खान्य-देवयज्या-अपृच्छ्य- प्रतिषीव्य-ब्रह्मवाद्य-भाव्य-स्ताव्य-उपचाय्य-पृड शब्दों के निपातन के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से उक्त पदों का निपातन किया गया है। इस सूत्र में दो पद हैं। वहाँ छन्दसि यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। निष्टर्क्यदेवहूयप्रणीयोन्नीयोच्छिष्य मर्यस्तर्याध्वर्यखन्यखान्यदेवयज्यापृच्छ्यप्रतिषीव्यब्रह्मवाद्य- भाव्यस्ताव्योपचाय्यपृडानि यह प्रथमाबहुवचनान्त पद है। निपात्यन्ते अर्थात् अध्याहार किया जाता है। निपातन क्या होता है इस प्रश्न का उत्तर सिद्ध प्रक्रिया का निर्देश निपातन है। सूत्रार्थ इस प्रकार है छन्द विषय में निष्टर्क्य-देवहूय-प्रणीय-उन्नीय-उच्छिष्य-मर्य-स्तर्या-ध्वर्य-खन्य- खान्य-देवयज्या-अपृच्छ्य- प्रतिषीव्य-ब्रह्मवाद्य-भाव्य-स्ताव्य-उपचाय्य-पृड-इन शब्दों का निपातन किया जाता है।

उदाहरण-

इनके उदाहरण जैसे ''निष्टर्क्यं चिन्वीत पशुकामः''। ''स्पर्धन्ते वा उ देवहूये''। ''आपृच्छ्यं धरुणं वाज्यर्षति''। इत्यादि।

वहाँ निष्टर्क्य में निस्-पूर्वक-कृत्-धातु से क्यप्प्रत्यय प्राप्त होने पर निपातन से ण्यत्प्रत्यय करके ऋकार को गुण रपरत्व पूर्वक निस् कर् त् य इस अवस्था में आद्यन्त दो वर्णो के विपर्यय से अर्थात् ककार और तकार को विपर्यय होने पर निस् तर् क् य इस स्थिति में सकार को षत्व और तकार को टकार होकर निष्टर्क् रूप बनता है। लोक में निष्कृत्य रूप होता है।

देवहूयः- देवानां ह्वानं हवनं वा यह विग्रह करके देवशब्द पूर्वक ह्वेधातु से अथवा हू धातु से क्यप्प्रत्यय होने पर तथा दीर्घ होकर निपातन से तुक् के अभाव में देवहूयः यह रूप सिद्ध होता है।

प्रणीयः- प्रपूर्वक णी धातु से क्यप्प्रत्यय करने पर प्रणीय रूप बनता है। लोक में तो यत्प्रत्यय से प्रणेय रूप सिद्ध होता है।

उन्नीयः- उत्पूर्वक नी धातु से क्यप्प्रत्यय करने पर यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो उन्नेयः रूप होता है।

उच्छिष्यम्- उत्पूर्वक शिष्-धातु से क्यप्प्रत्यय करने पर उच्छिष्यम् यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो उच्छेष्यम् रूप बनता है।

मर्यः- मृधातु से यत्प्रत्यय करने पर यह रूप बनता है। लोक में तो ण्यत्प्रत्यय करके मार्यः रूप बनाया जाता है।

स्तर्या- स्तृधातु से यत्प्रत्यय करके स्त्रिलिंग में टाप् करने पर स्तर्या रूप सिद्ध होता है। यह रूप स्त्रीलिङ्गान्तता से निपातित है। लोक में तो स्तृधातु से ण्यत्प्रत्यय करने पर स्तार्यः रूप सिद्ध होता है।

टिप्पणी

ध्वर्यः- ध्वृ धातु से यत्प्रत्यय करने पर ध्वार्य रूप बनता है। लोक में तो ण्यत्प्रत्यय से ध्वार्यः रूप बनता है।

खन्यः, खान्यः- खन्धातु से यत्प्रत्यय करने पर खन्यः रूप सिद्ध होता है। खन्धातु से ण्यत्प्रत्यय करने पर खान्यः रूप सिद्ध होता है। लोक में तो दोनों जगह यत्प्रत्यय से खेयः रूप बनता है।

देवयज्या- देवानां यजनम् व्युत्पत्ति पूर्वक देव उपपदक-यज्धातु से यत् प्रत्यय करके स्त्रिलिंग में टाप् प्रत्यय करने पर यह रूप सिद्ध होता है। लोक में इज्या यह रूप होता है।

अपृच्छ्यः- आङ्पूर्वक-प्रच्छ्-धातु से क्यप्प्रत्यय करने पर यह रूप बनता है। लोक में तो ण्यत् प्रत्यय से आप्प्राच्छ्यः रूप सिद्ध होता है।

प्रतिषीव्यः- प्रति पूर्वक सिव्-धातु से क्यप्प्रत्यय तथा सकार को षत्व तथा इकार को हलि च से दीर्घ होकर प्रतिषीव्य रूप बनता है। लोक में तो प्रतिषेव्यः रूप बनता है।

ब्रह्मवाद्यम्- ब्रह्मणः वेदस्य वदनम् विग्रह पूर्वक ब्रह्मन् उपपदक-वद्-धातु से ण्यत् प्रत्यय करने पर यह रूप सिद्ध होता है। लोक में क्यप्प्रत्यय तथा यत्प्रत्यय से ब्रह्मोद्यम्, और ब्रह्मवद्यं दो रूप बनते हैं।

भाव्यः, स्ताव्यः- भूधातु तथा स्तुधातु से ण्यत् प्रत्यय करने पर यथाक्रम भाव्यः स्ताव्यः ये दो रूप सिद्ध होते हैं। लोक में तो भूधातु से यत्प्रत्यय करने पर भव्यः, तथा स्तुधातु से क्यप्प्रत्यय करने पर स्तुत्यः ये दो रूप बनते हैं।

उपचाय्यपृडम्- पृडयति सुखयति विग्रह पूर्वक पृड्-धातु से क्यप्प्रत्यय करने पर पृडः रूप सिद्ध होता है। उपचाय्यं च तत् पृडम् च विग्रह पूर्वक कर्मधारयसमास में उपचाय्यपृडम् रूप बनता है। यहाँ पृड उत्तरपद के परे रहते उपपूर्वक चि धातु से ण्यत्प्रत्यय करके अयादेश का निपातन किया गया है।

17.2 छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्॥ (3.2.27)

सूत्रार्थ– वेद विषय में वन आदि धातुओं से कर्म उपपद रहते इन् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- छन्द विषय में वन्-सन्-रक्ष्-और मथ्-धातु से कर्म उपपद रहते इन्-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या– यग सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से इन्-प्रत्यय का विधान किया गया है। इस सूत्र में दो पद हैं। छन्दसि यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। वनसनरक्षिमथाम् यह षष्ठीबहुवचनान्त पद है। यहाँ पञ्चचम्यर्थ में षष्ठी बोद्धव्य है। स्तम्बशकृतोरिन् सूत्र से इन् की अनुवृत्ति आती है। कर्मणि भृतौ सूत्र से कर्मणि की अनुवृत्ति आ रही है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आ रहा है। धातोः से धातुभ्यः ऐसा पञ्चमीबहुवचनान्त

का ग्रहण करना चाहिए। तब छन्द विषय में वन सन रक्ष मथ् आदि धातुओं से कर्म उपपद रहते इन् प्रत्यय परे होता है ऐसी वाक्य योजना बनती है। सूत्रार्थ इस प्रकार है छन्द विषय में वन्-सन्-रक्ष्-और मथ्-धातुओं से कर्म उपपद रहते इन्-प्रत्यय धातु से परे हो। यहाँ वन्-धातु का माँगना अर्थ है। सन्-धातु दानार्थक है। रक्ष्-धातु पालनार्थवाची है। मथ्-धातु विलोडनार्थक है।

उदाहरण- ब्रह्मवनिं त्वा क्षत्रवनिम् ऐसा वेद में प्रयोग है। वहाँ ब्रह्म वनति व्युत्पत्ति पूर्वक कर्म उपपद रहते प्रकृतसूत्र से याचनार्थक वन्-धातु से इन्-प्रत्यय की प्रक्रिया में ब्रह्मन् वन् इन् इस स्थिति में अनुबन्धलोप होने पर ब्रह्मन् वन् इ होकर नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य से प्रातिपदिकान्त ब्रह्मन् के नकार का लोप होने पर ब्रह्म वन् इ इस स्थिति में सम्पूर्ण ब्रह्मवनि होने पर उपपदसमास में प्रातिपदिक संज्ञा करके द्वितीया एकवचन की विवक्षा में अम् हुआ ब्रह्मवनि अम् होकर अमि पूर्वः से पूर्वरूप एकादेश में ब्रह्मवनिम् रूप बनता है। क्षत्रवनिम् भी इसी प्रकार बनता है। गोषणिं पथिरक्षी हविर्मथिः इत्यादि उदाहरण और भी हैं।

17.3 छन्दसि सहः॥ (3.2.63)

सूत्रार्थ– वेद विषय में सुबन्त उपपद रहते सह धातु से ण्वि प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- सुबन्त उपपद रहते सह्-धातु से ण्वि-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से ण्विप्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। छन्दसि यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। सहः यह पञ्चम्येकवचनान्त पद है। भजो ण्विः इस सूत्र से ण्विः की अनुवृत्ति आ रही है। सुपि की अनुवृत्ति होती है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आ रहा है। छन्द विषय में सह धातु से ण्वि प्रत्यय होता है सुप् परे रहते यह वाक्य योजना बनती है। सूत्रार्थ इस प्रकार है छन्द विषय में सह्-धातु से सुबन्त उपपद रहते ण्वि-प्रत्यय धातु से परे होता है। और सह्-धातु का अर्थ मर्षण होता है।

उदाहरण-पृतनाषाट् उदाहरण है। पृतनां सहते यह व्युत्पत्ति करके सुबन्त उपपद रहते सह्-धातु से प्रकृत सूत्र से ण्वि-प्रत्यय होकर पृतना सह् ण्वि इस स्थिति में अनुबन्धलोप होकर पृतना सह् इस स्थिति में अत उपधायाः से उपधा को वृद्धी होकर पृतना साह् इस स्थिति में उपपदसमास होकर प्रातिपदिकसंज्ञा में सौ से अनुबन्धलोप पृतनासाह् स् इस स्थिति में हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् से सकार का लोप हो ढः से हकार को ढकार पृतनासाढ् इस स्थिति में झलां जशोऽन्ते से ढकार को डकार होकर अवसान संज्ञा में वावसाने से डकार को टकार होकर पृतनाषाट् रूप बनता है।

टिप्पणी

17.4 वहश्चः॥ (3.2.64)

सूत्रार्थ- छन्द विषय में सुप् उपपद रहते वह् धातु से ण्वि प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- सुबन्त उपपद रहते वह् धातु से ण्वि-प्रत्यय के विधान के लिए सूत्र को प्रणीत किया गया।

सूत्रव्यख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से सुबन्त उपपद रहते वह धातु से ण्वि-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। और वह च यह सूत्रगत पदच्छेद है। वहः यह पञ्चम्येकवचनान्त पद है। च यह अव्ययपद है। भजो ण्विः इस सूत्र से ण्वि की अनुवृत्ति आ रही है। छन्दसि सहः सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति आ रही है। सुपि इसकी अनुवृत्ति आ रही है। धातोः और प्रत्यय का अधिकार आ रहा है। छन्द विषय में वह् धातु से ण्वि प्रत्यय होता है सुप् परे रहते यह वाक्ययोजना है। और सूत्रार्थ इस प्रकार है छन्द विषय में सुबन्त उपपद रहते वह्-धातु से ण्वि-प्रत्यय होता है।

उदाहरण- दित्यवाट्।

सूत्रार्थ का समन्वय- दित्यं वर्षद्वयं वहति विग्रह पूर्वक सुबन्त उपपद रहते वह्-धातु से प्रकृतसूत्र से ण्वि-प्रत्यय होकर अनुबन्धलोप होकर दित्य वह् इस स्थिति में अत उपधायाः से उपधा को वृद्धी होकर दित्य वाह् होने पर उपपदसमास होकर प्रातिपदिकसंज्ञा में सौ से अनुबन्धलोप होकर दित्यवाह् स् होकर हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् से सकार का लोप होकर हो ढः से हकार को ढकार होकर दित्यवाढ् होने पर झलां जशोऽन्ते से ढकार को डकार वावसाने से डकार को टकार होकर दित्यवाट् रूप सिद्ध होता है।

17.5 हव्येऽनन्तःपादम्॥ (3.2.66)

सूत्रार्थ- हव्य सुबन्त उपपद रहते छन्द विषय में अनन्तःपाद में वह को ण्युट् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- हव्य उपपद तथा सुबन्त उपपद रहते छन्द विषय में अनन्तःपाद में वह को ण्युट्-प्रत्यय के विधान के लिए इस सूत्र को प्रणीत किया गया।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से ण्युट्-प्रत्यय का विधान किया जाता है। इस सूत्र में दो पद हैं। हव्ये अनन्तःपादम् यह सूत्रगत पदच्छेद है। हव्ये सप्तम्येकवचनान्त यह पद है। अनन्तःपादम् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। अन्तः मध्ये पादस्येति अन्तःपादम् इति यहाँ अव्ययीभावसमास है। न अन्तःपादम् अनन्तःपादम् में नञ्तत्पुरुष समास है। वहश्च सूत्र से वहः की अनुवृत्ति आती है। छन्दसि सहः सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति आ रही है। काव्यपुरीषपुरीष्येषु ण्युट् सूत्र से ण्युट् की अनुवृत्ति आ रही है। सुपि की अनुवृत्ति

टिप्पणी

आ रही है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आ रहा है। भवति का अध्याहार है। और तब वाक्य योजना इस प्रकार होती है हव्य सुबन्त उपपद रहते छन्द विषय में पाद के मध्य में वह धातु से ञ्युट् प्रत्यय होता है। सूत्रार्थ इस प्रकार है हव्य उपपद रहते तथा सुबन्त उपपद रहते छन्द विषय में पाद के मध्य में वह्-धातु को ञ्युट्-प्रत्यय होता है। अर्थात् हव्य उपपद तथा सुबन्त उपपद रहते छन्द विषय में वह्-धातु से ञ्युट्-प्रत्यय होता है दो पाद के मध्य में तो नहीं होता है। अपितु पाद के मध्य में वहश्च से ण्वि प्रत्यय ही होता है।

उदाहरण- अग्निश्च हव्यवाहनः यह वैदिकप्रयोग है।

सूत्रार्थ का समन्वय– वहाँ हव्यवाहनः यहाँ पर हव्यं वहति ऐसा विग्रह करने पर हव्य के उपपद रहते वह्-धातु को प्रकृतसूत्र से ञ्युट्-प्रत्यय तथा अनुबन्धलोप होकर हव्य वह् यु इस स्थिति में अत उपधायाः से उपधा को वृद्धि हव्य वाह् यु होकर युवोरनाकौ से यु को अनादेश होकर संयोग करके सम्पूर्ण हव्यवाहन की उपपदसमास प्रातिपदिकसंज्ञा में विभक्ति करके हव्यवाहनः रूप सिद्ध होता है।

17.6 जनसनखनक्रमगमो विट्॥ (3.2.67)

सूत्रार्थ- उपसर्ग में सुबन्त उपपद रहते जन आदि धातुओं से वेद विषय में विट् प्रत्यय होता है। (शेखरः)

सूत्रावतरणिका- उपसर्ग उपपद और सुबन्त उपपद रहते जन्-धातु सन्-खन्-क्रम्- और गम्-धातु से विट्-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से विट्-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। जनसनखनक्रमगमः यह पञ्चम्येकवचनान्त पद है। विट् यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि सहः सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति आ रही है। उपसर्गे और सुपि की भी अनुवृत्ति आती है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आ रहा है। उपसर्ग तथा सुबन्त उपपद रहते जनसनखनक्रमगमः धातुओं से विट् प्रत्यय परे होता है ऐसी वाक्य योजना बनती है। सूत्रार्थ इस प्रकार है उपसर्ग उपपद रहते तथा सुबन्त उपपद रहते जन्-धातु सन्-खन्-क्रम्- और गम्-धातुओं से विट्-प्रत्यय परे होता है।

उदाहरण- अब्जः।

सूत्रार्थ का समन्वय- अप्सु जायते इस विग्रह में अप्सु में सुबन्त उपपद रहते प्रकृतसूत्र से विट्-प्रत्यय होकर अप् जन् विट् इस स्थिति में विट का सर्वोपहारलोप होकर अप् जन् इस स्थिति में विट्-वनोरनुनासिकस्यात् सूत्र से नकार को आकारादेश होकर अप् ज आ इस स्थिति में सवर्णदीर्घ होकर अप् जा इस स्थिति में झलां जशोऽन्ते से पकार को बकार आदेश होकर संयोग में निष्पन्न अब्जा को उपपदसमास में प्रातिपदिकसंज्ञा होकर विभक्ति कार्य होकर अब्जाः रूप बनता है। गोजाः गोषाः इत्यादि उदाहरण हैं।

टिप्पणी

17.7 मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो ण्विन्॥ (3.2.71)

सूत्रार्थ- मन्त्र विषय में श्वेतवह उक्थशस् और पुरोडाश से ण्विन् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका– मन्त्र विषय में श्वेतवह् उक्थशस् और पुरोडाश् सूत्रपठित शब्दों से ण्विन्-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से ण्विन्-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। मन्त्रे यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशः यह पञ्चम्येकवचनान्त पद है। ण्विन् यह प्रथमान्त पद है। प्रत्ययः और परः का अधिकार आता है। सूत्रार्थ इस प्रकार है मन्त्र विषय में श्वेतवह उक्थशस् तथा पुरोडाश शब्दों से ण्विन् प्रत्यय परे होता है।

उदाहरण- श्वेतवाहौ।

सूत्रार्थ का समन्वय- प्रकृतसूत्र से श्वेतवह्-शब्द से ण्वि-प्रत्यय होकर अनुबन्धलोप होकर श्वेतवह् इस स्थिति में अतरू उपधायाः से उपधा को वृद्धि श्वेतवाह् होकर उपपदसमास में प्रातिपदिकसंज्ञा होकर औ-प्रत्यय होकर सभी वर्णों का सम्मेलन करने से श्वेतवाहौ रूप सिद्ध होता है। एवं श्वेतवाहः इत्यादि उदाहरण भी स्वयम् बोद्धव्य हैं।

पाठगत प्रश्न-17.1

51. निपात किसको कहते हैं?
52. वन्-धातु का क्या अर्थ है?
53. पृतनां सहते इस अर्थ में कौन सा रूप सिद्ध होता है?
54. दित्यवाद् इस स्थिति में ढकार को डकार किस सूत्र से होता है?
55. छन्दसि वनसनरक्षिमथाम् इस सूत्र का क्या अर्थ है?
56. ज्युट्-प्रत्यय किस सूत्र से होता है?
57. ण्वि प्रत्यय विधायक एक सूत्र लिखो?
58. वहश्च का क्या अर्थ है?

17.8 अवे यजः॥ (3.2.72)

सूत्रार्थ- अव उपपद रहते यज्-धातु से मन्त्र के विषय में ण्विन् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- मन्त्र विषय में अव उपपद रहते यज्-धातु से ण्विन्-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से अव उपपद रहते यज-धातु से ण्विन् प्रत्यय का विधान किया गया है। इस सूत्र में दो पद हैं। अवे यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। यजः यह पञ्चम्येकवचनान्त पद है। मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो ण्विन् इस सूत्र से मन्त्रे और ण्विन् ये दो पद अनुवर्तित हैं। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आता है। तब मन्त्र विषय में अव उपपद रहते यज धातु से ण्विन् प्रत्यय परे होता है यह वाक्ययोजना बनती है। सूत्रार्थ इस प्रकार है मन्त्र विषय में अव उपपद रहते यज्-धातु से ण्विन्-प्रत्यय परे होता है।

उदाहरण- अवयाजौ।

सूत्रार्थ का समन्वय- अव उपपद रहते यज्-धातु से प्रकृतसूत्र से ण्विन्प्रत्यय होकर ण्विन्-प्रत्यय का सर्वापहारलोप होकर अव यज् इस स्थिति में यज्-धातु के अकार की अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा से उपधासंज्ञा तथा अत उपधायाः से उपधा के अकार को वृद्धी स्थान आन्तर्य से आकार होकर अव याज् इस स्थिति में संयोग में उपपदसमास में कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा और उसके बाद ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, और परश्च का अधिकार के प्रवर्तमान से स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खल कपोतन्याय से इक्कीस स्वादि प्रत्ययों में प्राप्त प्रथमाद्विवचन की विवक्षा में औ-प्रत्यय होकर सभी वर्णों के सम्मेलन से अवयाजौ रूप बनता है।

17.9 अवयाः श्वेतवाः पुरोडाश्च॥ (8.2.67)

सूत्रार्थ–ये सम्बुद्धी में कृतदीर्घ निपात करता है।

सूत्रवतरणिका– संबुद्धी के परे रहते अवया श्वेतवा पुरोडा इन कृतदीर्घ शब्दों के निपात के लिए इस सूत्र को प्रणीत किया गया है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र में चार पद हैं। अवयाः श्वेतवाः पुरोडाः च यह सूत्रगत पदच्छेद है। अवयाः श्वेतवाः और पुरोडाः ये तीनों पद प्रथमा एकवचनान्त हैं। च यह अव्ययपद है। संबुद्धौ यह पद प्राप्त होता है। चकार से उक्थशाः का भी ग्रहण होता है। तब अवयाः श्वेतवाः पुरोडाः और उक्थशाः संबुद्धी में यह वाक्य योजना बनती है। सूत्रार्थ इस प्रकार है सम्बुद्धी में कृतदीर्घ अवयाः श्वेतवाः पुरोडाः और उक्थशाः इन शब्दों का निपात होता है।

उदाहरण– अवपूर्वक यज्, श्वेतपूर्वकवह्-, तथा पुरस्पूर्वकदास्-धातु से ''मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो ण्विन्'' तथा ''अवे यजः'' इस सूत्र से ण्विन्प्रत्यय प्राप्त होने पर ''श्वेतवहादीनां डस् पदस्येति वक्तव्यम्'' इस वार्तिक से डस्प्रत्यय में ये रूप होते हैं। यहाँ सम्बोधन एकवचन में दीर्घ का निपात किया गया है।

टिप्पणी

17.10 विजुपे छन्दसि॥ (3.2.73)

सूत्रार्थ- उप उपपद रहते वेद विषय में यज धातु से विच् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- उप उपपद रहते यज्-धातु से विच्-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से यज्-धातु से विच्-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। विच् उपे छन्दसि यह सूत्रगत पदच्छेद है। विच् यह प्रथमान्त पद है। उपे यह सप्तम्येकवचनान्त पद है। छन्दसि यह भी सप्तम्यन्त पद है। अवे यजः इस सूत्र से यज की अनुवृत्ति आ रही है। धातोः प्रत्ययः और परः का तो अधिकार आ ही रहा है। सूत्रार्थ इस प्रकार है उप उपपद रहते यज्-धातु से विच्-प्रत्यय होता है।

उदाहरण- उपयट्।

सूत्रार्थ का समन्वय- उपपूर्वक-यज्-धातु से विच्-प्रत्यय करके उप यज् विच् इस स्थिति में विच् का सर्वापहारलोप होकर उप यज् इस स्थिति में संयोग उपपद रहते समास में निष्पन्न उपयज् ऐसा होकर उपपदसमास में प्रातिपदिकसंज्ञा कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से उसकी प्रातिपदिकसंज्ञा होकर ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इत्यादि अधिकार सूत्र लगकर स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय पूर्वक इक्कीस स्वादि प्रत्ययों में प्राप्त प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सौ अनुनासिकत्व से पाणिनी के द्वारा प्रतिज्ञात सु प्रत्यय के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होकर तस्य लोपः इस सूत्र से उस इत्संज्ञक उकार का लोप होने पर उपयज् स् ऐसा होकर हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् से सकार का लोप होकर व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः से जकार को षकार उपयष् ऐसा होने पर झलां जशोऽन्ते से षकार को जश्त्व स्थानकृत आन्तर्य से डकार डकार के बाद वर्णाभाव में विरामोऽवसानम् इस सूत्र से अवसानसंज्ञा होकर अवसानपरक वावसाने से डकार को टकार होकर उपयट् यह रूप बनता है।

17.11 आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च॥ (3.2.274)

सूत्रार्थ– सुबन्त तथा उपसर्ग उपपद रहते आकारान्त धातुओं से छन्द विषय में मनिन आदि प्रत्यय होते हैं। तथा चकार से विच् भी होता है।

सूत्रावतरणिका- सुबन्त तथा उपसर्ग उपपद रहते छन्द विषय में आकारान्त धातुओं से मनिन्-क्वनिप्-वनिप्-विच् प्रत्ययों के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से मनिन्, क्वनिप्, वनिप्, विच् इन प्रत्ययों

टिप्पणी

का विधान किया गया है। इस सूत्र में तीन पद हैं। आतः मनिन्क्वनिब्वनिपः च यह सूत्रगत पदच्छेद है। आतः यह पञ्चम्यन्त पद है। मनिन्क्वनिब्वनिपः यह प्रथमाबहुवचनान्त पद है। च यह अव्ययपद है। विजुपे छन्दसि इस सूत्र से विच् और छन्दसि इन दो पदों की अनुवृत्ति आ रही है। सुपि उपसर्गे इनकी भी अनुवृत्ति आ रही है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आ रहा है। यहाँ आतः यह विशेषण है तथा, धातोः यह विशेष्य है। अतः तदन्तविधि में आदन्त धातु से यह अर्थ लाभ है। सूत्रार्थ इस प्रकार होता है सुबन्त तथा उपसर्ग उपपद रहते छन्द विषय में आदन्त धातुओं से मनिन्-क्वनिप्-वनिप्-तथा विच्-प्रत्यय परे होते हैं।

उदाहरण- सुदामा।

सूत्रार्थ का समन्वय- शोभनं ददाति ऐसा विग्रह करने पर शोभनम् यह सुबन्त उपपद रहते दा-धातु से आदन्तत्व होने से प्रकृतसूत्र से मनिन्-प्रत्यय होने पर अनुबन्धलोप होकर सु दा मन् इस स्थिति में उपपदसमास में प्रातिपदिक संज्ञा होकर सु का अनुबन्धलोप करके सुदामन् स् ऐसा होने पर सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ से उपधाको वृद्धि सकार का लोप और नकार का लोप होकर सुदामा यह रूप बनता है।

17.12 बहुलं छन्दसि॥ (3.2.88)

सूत्रार्थ– वेद विषय में कर्म उपपद रहते भूतकाल में हन् धातु को बहुल करके क्विप् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- उपपद रहते हुए भी हन्-धातु को बहुल करके क्विप्-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से हन्-धातु से बहुल करके क्विप्-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। बहुलम् यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप् इस सूत्र से क्विप् की अनुवृत्ति आ रही है। कर्मणि हनः इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृत्ति आ रही है। भूते यह सूत्र भी यहाँ अनुवर्तित है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आता है। सूत्रार्थ इस प्रकार होता है कर्म उपपद रहते हन्-धातु से भूतकाल में क्विप्-प्रत्यय परे होता है।

उदाहरण- मातृहा।

सूत्रार्थ का समन्वय- मातरं हतवान् विग्रह पूर्वक कर्म उपपद रहते भूतकाल में हन्-धातु से प्रकृतसूत्र से क्विप्-प्रत्यय होकर मातृ हन् क्विप् इस स्थिति में क्विप् का सर्वापहारलोप होकर उपपदसमास में प्रातिपदिकसंज्ञा होकर सु का अनुबन्धलोप होकर मातृहन् स् इस स्थिति में सौ च से उपधादीर्घ होकर सकार तथा नकार का लोप होकर मातृहा ऐसा रूप बनता है।

टिप्पणी

17.13 छन्दसि गत्यर्थेभ्यः॥ (3.3.126)

सूत्रार्थ– ईषद् आदि उपपद रहते गत्यर्थ धातुओं से छन्द विषय में युच् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका– छन्द विषय में ईषद् आदि उपपद रहते गत्यर्थक धातुओं से युच्-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से गत्यर्थक धातुओं से युच्-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। गत्यर्थेभ्यः यह पञ्चम्यन्त पद है। गतिः अर्थः येषां तेभ्यः गत्यर्थेभ्यः। आतो युच् इस सूत्र से युच् की अनुवृत्ति आती है। ईषद्-दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल् इस सूत्र से ईषद्-दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु इन दो पदों की अनुवृत्ति आ रही है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आता है। सूत्रार्थ इस प्रकार है छन्द विषय में कृच्छ्राकृच्छ्रार्थों में ईषद्-दुःसुषु उपपद रहते गत्यर्थक धातुओं से युच्-प्रत्यय परे होता है।

उदाहरण- सूपसदनः।

सूत्रार्थ का समन्वय- सु-उपपद पूर्वक तथा उप-उपपद पूर्वक सद्-धातु से गत्यर्थक प्रकृतसूत्र से युच्-प्रत्यय होकर अनुबन्धलोप होकर सु उप सद् यु इस स्थिति में युवोरनाकौ से यु के स्थान पर अनादेश होकर सु उप सद् अन ऐसा होकर सवर्णदीर्घ संयोग में निष्पन्न सूपसदन के उपपद रहते समास प्रातिपदिकसंज्ञा होकर सु का अनुबन्धलोप होकर सूपसदनः रूप बनता है।

17.14 अन्येभ्योऽपि दृश्यते॥ (3.3.130)

सूत्रार्थ– गत्यर्थक धातुओं से अन्य धातुओं से भी छन्द विषय में युच् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- गत्यर्थक जो अन्य धातुएँ हैं उनसे भी छन्द विषय में युच्-प्रत्यय के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से युच्-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। अन्येभ्यः अपि दृश्यते यह सूत्रगत पदच्छेद है। अन्येभ्यः यह पञ्चम्यन्त पद है। अपि यह अव्ययपद है। दृश्यते यह क्रियापद है। आतो युच् इस सूत्र से युच् की अनुवृत्ति आती है। ईषद्-दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल् इस सूत्र से ईषद्-दुःसुषु कृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु इन दो पदों की अनुवृत्ति आ रही है। छन्दसि गत्यर्थेभ्यः इस सूत्र से छन्दसि पद की अनुवृत्ति आ रही है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आता है। सूत्रार्थ इस प्रकार है छन्द विषय मर कृच्छ्राकृच्छ्रार्थ में ईषद्-दुःसुषु उपपद रहते गत्यर्थक अन्य धातुओं से युच्-प्रत्यय परे होता है।

उदाहरण - सुवेदनाम्।

सूत्रार्थ का समन्वय- सु-उपपदपूर्वक विद्-धातु से गत्यर्थभिन्नार्थकत्व से प्रकृतसूत्र से युच् होकर अनुबन्धलोप होकर सुविद् यु इस स्थिति में युवोरनाकौ से यु-को अनादेश सुविद् अन होने पर विद् के इकार को गुण एकार होकर सु वेद् अन इस स्थिति में संयोग में उपपदसमास प्रातिपदिकसंज्ञा में स्त्रीत्व की विवक्षा में टाप् को विभक्ति कार्य होकर सुवेदनाम् रूप बनता है।

17.15 लिङर्थे लेट्॥ (3.4.7)

सूत्रार्थ– विध्यादि तथा हेतुहेतुमद्भावादि लिङ के अर्थ में धातु से वेद विषय में लेट् विकल्प से लेट् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका- छन्द विषय में विध्यादि तथा हेतुहेतुमद्भावादि लिङ के अर्थ में धातु से लेट्-विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से छन्द विषय में विध्यादि तथा हेतुहेतुमद्भावादि लिङ के अर्थ में धातु से लेट् लकार होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। लिङर्थे यह सप्तम्यन्त पद है। लेट् यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि लुङ्-लङ-लिटः इस सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति आती है। अन्यतरस्याम् की भी पूर्वसूत्र से अनुवृत्ति आ रही है। धातोः प्रत्ययः तथा परः का अधिकार आता है। तब छन्द विषय में लिङ अर्थ में धातु से लेट् प्रत्यय परे होता है ऐसी वाक्य योजना बनती है। लिङर्थ विध्यादि तथा हेतुहेतुमद्भावादि को कहते हैं। सूत्रार्थ इस प्रकार है छन्द विषय में विध्यादि तथा हेतुहेतुमद्भावादि में धातु से लेट् प्रत्यय होता है।

उदाहरण- जोषिषत्। तारिषत्।

सूत्रार्थ का समन्वय- जुष्-धातु से लिङर्थ में प्रकृतसूत्र से लेट् होकर प्रथमपुरुष एकवचन में तिप् आकर ''सिब्बहुलं लेटि'' सूत्र से सिप्प्रत्यय तथा अनुबन्धलोप होकर जुष् स् ति ऐसा होकर ''लेटोऽडाटौ'' से अडागम होकर ''आर्धधातुकस्येड्वलादेः'' इस सूत्र से इडागम तथा अनुबन्धलोप होकर जुष् इ स् अ ति होकर ''इतश्च लोपः परस्मैपदेषु'' सूत्र से तिप् के इकार का लोप होकर ''पुगन्तलघूपधस्य च'' सूत्र से उपधा को गुण होकर ''आदेशप्रत्यययोः'' इससे सकार को षत्व होकर जोषिषत् रूप बनता है।

तृ-धातु से लिङर्थ में प्रकृतसूत्र से लेट् तिप् सिप्प्रत्यय होकर अडागम तथा अनुबन्ध लोप होकर तृ स् अ ति होकर ''सार्वधातुकार्धधातुकयोः'' इस सूत्र से ऋकार को गुण अकार रपरत्व पूर्वक इडागम तथा अनुबन्धलोप होकर तर् इ स् अति इस स्थिति में ''व्यत्ययो बहुलम्'' इस सूत्र से तकार से उत्तर अकार को आकार होकर ''इतश्च लोपः परस्मैपदेषु'' से इकार का लोप होकर सकार को षत्व होकर तारिषत् रूप बनता है।

टिप्पणी

17.16 इतश्च लोपः परस्मैपदेषु॥ (3.4.17)

सूत्रार्थ– परस्मैपद विषय में लेट् लकार सम्बन्धी तिङ के इकार का भी विकल्प से लोप होता है।

सूत्रावतरणिका- परस्मैपद विषय में विकल्प से लेट् लकार सम्बन्धी तिङ के इकार के लोप के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से लेट् लकार सम्बन्धी इकार का परस्मैपद विषय में विकल्प से लोप होता है। इस सूत्र में चार पद हैं। इतः च लोपः परस्मैपदेषु यह सूत्रगत पदच्छेद है। इतः यह षष्ठ्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। लोपः यह प्रथमान्त पद है। परस्मैपदेषु यह सप्तम्यन्त पद है। लेटोऽडाटौ सूत्र से लेटः की अनुवृत्ति आ रही है। वा की वैतोऽन्यत्र इस पूर्वसूत्र से अनुवृत्ति आ रही है। तब लेट् सम्बन्धी इकार का विकल्प से लोप होता है परस्मैपद विषय में यह वाक्य योजना बनती है। सूत्रार्थ इस प्रकार है लेट् लकार के तिङ के ह्रस्व-इकार का विकल्प से लोप होता है परस्मैपद विषय में।

उदाहरण में सूत्रार्थ का समन्वय- जोषिषत्-जुष्-धातु से लिङर्थ में प्रकृतसूत्र से लेट् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में तिप् में ''सिब्बहुलं लेटि'' इस सूत्र से सिप्प्रत्यय होकर तथा अनुबन्धलोप होकर जुष् स् ति इस स्थिति में ''लेटोऽडाटौ'' इस सुत्र से अडागम ''आर्धधातुकस्येड्वलादेः'' सूत्र से इडागम तथा अनुबन्धलोप होकर जुष् इ स् अ ति होकर ''इतश्च लोपः परस्मैपदेषु'' इस सूत्र से तिप् के इकार का लोप होकर ''पुगन्तलघूपध स्य च'' इस सूत्र से उपधा को गुण होकर ''आदेशप्रत्यययोः'' से सकार को षत्व होकर जोषिषत् यह रूप बना।

17.17 लेटोऽडाटौ॥ (3.4.64)

सूत्रार्थ– लेट् लकार को अट् आट् का आगम पर्याय से होता है।

सूत्रावतरणिका- लेट्-लकार के अट् आट् आगम के विधान के लिए और उनके पित्त्व विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से लेट्-लकार के अट् आट् का आगम होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। लेटः अडाटौ यह सूत्रगत पदच्छेद है। लेटः यह षष्ठ्यन्त पद है। अडाटौ यह प्रथमान्त पद है। अट् च आट् च अडाटौ। आडुत्तमस्य पिच्च इस सूत्र से पित् की अनुवृत्ति आती है, और वह द्विवचनान्तता से विपरिणमित होता है। सूत्रार्थ इस प्रकार है लेट् लकार को अट् आट् का आगम पर्याय से होता है वे पित् होते हैं।

उदाहरणम् - तारिषत्।

सूत्रार्थ का समन्वय- तृ-धातु से लेट् लकार होकर अनुबन्धलोप होकर तृ ल् इस स्थिति में लकार के स्थान पर तिप् तथा अनुबन्धलोप होकर तृ ति इस स्थिति में पूर्वोक्तसूत्र से अडागम होकर अनुबन्धलोप होकर तृ अ ति ऐसा होकर सिब्बहुलं लेटि से सिप्-प्रत्यय होकर तथा अनुबन्धलोप होकर तृ स् अ ति इस स्थिति में सिब्बहुलं णिद्वक्तव्यः इस वार्तिक से स को णिद्वद्भाव होकर उसके परे ऋकार को अचो ञ्णिति से वृद्धि होकर तार् स् अ ति होकर इडागम तथा अनुबन्धलोप होकर तार इ स् अ ति होकर इतश्च लोपः परस्मैपदेषु से विकल्प से इकार के लोप के विधान से आदेशप्रत्यययोः से सकार को षकार होकर तारिषत् रूप सिद्ध होता है।

17.18 स उत्तमस्य॥ (3.4.68)

सूत्रार्थ– लेट् लकार सम्बन्धी उत्तम पुरुष के सकार का विकल्प से लोप होता है।

सूत्रावतरणिका– लेट् लकार के उत्तम पुरुष के सकार का विकल्प से लोप का विधान करने के लिए यह सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से लेट् लकार के उत्तम पुरुष के सकार का विकल्प से लोप होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। स यह प्रथमान्त पद है। उत्तमस्य यह षष्ठ्यन्त पद है। इतश्च लोपः परस्मैपदेषु इस सूत्र से लोप की अनुवृत्ति आ रही है। लेटोऽडाटौ इस सूत्र से लेटः की अनुवृत्ति आती है। वा की भी वैतोऽन्यत्र इस पूर्वसूत्र से अनुवृत्ति आ रही है। सूत्रार्थ इस प्रकार है लेट् लकार के उत्तम पुरुष के सकार का विकल्प से लोप होता है।

उदाहरण- करवाव।

सूत्रार्थ का समन्वय- कृ-धातु से लेट् लकार का अनुबन्धलोप करने पर कृ ल् इस स्थिति में लकार के स्थान पर वस् होकर कृ वस् होकर तनादिकृञ्भ्य उः इससे उप्रत्यय होकर कृ उ वस् इस स्थिति में ऋकार को गुण होकर कर् उ होकर लेटोऽडाटौ से (पित्) आडागम होकर अनुबन्धलोप होकर कर् उ आ वस् अब उकार को गुण होकर तथा अवादेश होकर कर् अव् आ वस् होकर पूर्वोक्तसूत्र से विकल्प से सकार का लोप होने पर सभी वर्णों के सम्मेलन से करवाव यह रूप बनता है। सकार के लोप के अभावपक्ष में करवावः रूप बनता है।

17.19 आत ऐ॥ (3.4.95)

सूत्रार्थ– लेट् सम्बन्धी आकार को ऐकारदेश होता है।

सूत्रावतरणिका- लेट्-लकार के आकार को ऐकार का विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से लेट्-लकार के आकार को ऐकार आदेश होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। आत यह षष्ठ्येकवचनान्त पद है। ऐ यह लुप्तप्रथमान्त है। लेटोऽडाटौ इस सूत्र से लेट् की अनुवृत्ति आती है। सूत्रार्थ इस प्रकार है लेट् लकार के आकार को ऐकार आदेश होता है।

उदाहरण- मादयैते।

सूत्रार्थ का समन्वय- मादि-धातु से लेट् होकर अनुबन्धलोप होकर मादि ल् इस स्थिति में लकार के स्थान पर आताम्-प्रत्यय होकर मादि आताम् होकर लेटोऽडाटौ से आडागम होकर अनुबन्धलोप होकर मादि आ आताम् होकर इकार को गुण एकार होकर अयादेश होकर माद् अय् आ आताम् इस स्थिति में पूर्वोक्तसूत्र से आताम् के आकार को ऐकार होकर मादय् आ ऐताम् इस स्थिति में टित आत्मनेपदानां टेरे से टी भाग को एत्व होकर मादय् आ ऐ त् ए अब आटश्च से वृद्धी एकादेश ऐकार होकर मादय् ऐ त् ए अब सभी वर्णों के सम्मेलन से मादयैते यह रूप बनता है।

17.20 सिब्बहुलं लेटि॥ (3.1.34)

सूत्रार्थ– लेट् लकार परे रहते धातु से सिप्-प्रत्यय बहुल करके होता है।

सूत्रावतरणिका– लेट् लकार परे रहते धातु से बहुल करके सिप्-प्रत्यय विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से लेट्-लकार परे रहते धातु से सिप्-प्रत्यय बहुल करके होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। सिप् बहुलं लेटि यह सूत्रगत पदच्छेद है। सिप् यह प्रथमान्त पद है। बहुलम् यह भी प्रथमान्त पद है। लेटि यह सप्तम्यन्त पद है। धातोः प्रत्ययः और परः का अधिकार आता है। सूत्रार्थ इस प्रकार है लेट् लकार परे रहते धातु से सिप्-प्रत्यय बहुल करके होता है।

उदाहरण- जोषिषत्।

सूत्रार्थ का समन्वय- जुष्-धातु से लिङर्थ में प्रकृतसूत्र से लेट् परे रहते प्रथमपुरुष एकवचन में तिप् होकर ''सिब्बहुलं लेटि'' इस प्रकृतसूत्र से सिप्प्रत्यय होकर अनुबन्धलोप होकर जुष् स् ति इस स्थिति में ''लेटोऽडाटौ'' इस सुत्र से अडागम होकर ''आर्धधातुकस्येड्वलादेः'' इस्व सूत्र से इडागम होकर तथा अनुबन्धलोप होकर जुष् इ स् अ ति इस स्थिति में ''इतश्च लोपः परस्मैपदेषु'' इस सूत्र से तिप् के इकार का लोप होकर ''पुगन्तलघूपध स्य च'' इस सूत्र से उपधा को गुण ओकार होकर ''आदेशप्रत्यययोः'' इससे सकार के स्थान पर षत्व होकर जोषिषत् यह रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न-17.2

60. अवयाः श्वेतवाः पुरोडाश्च का क्या अर्थ है?

61. विजुपे च्छन्दसि इस सूत्र का पदच्छेद कीजिए?

62. विजुपे च्छन्दसि इस सूत्र से किस धातु से कौन सा प्रत्यय होता है?

63. उपयज्-इस शब्दस्वरूप का प्रातिपदिकसंज्ञा विधायक सूत्र क्या है?

64. आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च इस सूत्र में चकार के ग्रहण से क्या सिद्ध होता है?

65. हन् को बहुल करके क्विप् किस सूत्र से होता है?

66. गत्यर्थक धातुओं को छन्द विषय में युच् किस सूत्र से होता है?

67. गत्यर्थक जो अन्य धातुएँ हैं उनको भी छन्द विषय में युच् किस सूत्र से होता है?

68. विध्यादि तथा हेतुहेतुमद्भावादि धातुओं से लेट् किस सूत्र से होता है?

69. इतश्च लोपः परस्मैपदेषु का क्या अर्थ है?

70. लेट् से अट् आट् ये आगम किस सूत्र से होते हैं?

71. स उत्तमस्य इस सूत्र से क्या होता है?

72. सुदामा का क्या अर्थ है?

73. आत ऐ इस सूत्र से क्या होता है?

74. छन्द विषय में विध्यादि तथा हेतुहेतुमद्भावादि धातुओं से लेट् किस सूत्र से होता है?

75. अन्येभ्योऽपि दृश्यते का क्या अर्थ है?

76. लिङर्थ क्या होता है?

77. मातरं हतवान् इस अर्थ में क्या रूप बनता है?

पाठ का सार

इस पाठ में इन्, ण्वि, ज्युट्, विट्, विच्, क्विप् इत्यादि कुछ प्रत्ययों का ससूत्र प्रयोग प्रदर्शित है। और वहां कुछ वैदिकशब्दों के लौकिकरूप भी प्रदर्शित हैं। तथापि पाठ के विस्तृत होने के भय से सभी रूपों को ससूत्र प्रदर्शित नहीं किया गया। और उनको

स्वयं जानना चाहिए। कुछ निपातन सिद्ध शब्दों की भी आलोचना की गयी है। और अन्त में लेट्लकार से सम्बन्धित भी चर्चा की गयी।

पाठान्त प्रश्न

77. छन्दसि गत्यर्थेभ्य: इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

78. अन्येभ्योऽपि दृश्यते इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

79. बहुलं छन्दसि इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

80. हव्येऽनन्त:पादम् इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

81. छन्दसि सह: इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

82. उपयट् तथा सुदामा इन दो रूपों को ससूत्र सिद्ध कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

17.1

51. सिद्धप्रक्रिया का निर्देश ही निपात है।

52. याचन।

53. पृतनाषाट्।

54. झलां जशोऽन्ते।

55. छन्द विषय में वन्-सन्-रक्ष्- और मथ्-धातुओं से कर्म उपपद रहते इन्-प्रत्यय होता है।

56. हव्येऽनन्त:पादम्।

57. मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो ण्विन्।

58. छन्द विषय में सुप् उपपद रहते वह धातु से ण्वि प्रत्यय होता है।

17.2

59. सम्बुद्धि में कृतदीर्घ अवया श्वेतवा पुरोडा उक्थशा इन शब्दों का निपात किया जाता है।

60. विच् उपे छन्दसि यह सूत्रगत पदच्छेद है।

61. यन्धातु से विच्प्रत्यय विजुपे च्छन्दसि इस सूत्र से होता है।

62. कृत्तद्धितसमासाश्च यहाँ प्रातिपदिकसंज्ञा विधायक सूत्र है।

63. विच्प्रत्यय से सिद्ध होता है।

64. बहुलं च्छन्दसि से।

65. च्छन्दसि गत्यर्थेभ्यः से।

66. अन्येभ्योऽपि दृश्यते इस सूत्र से।

67. लिङर्थे लेट् इस सूत्र से।

68. लेट् सम्बन्धी तिङ के इकार का लोप विकल्प से परस्मैपद में।

69. लेटोऽडाटौ इस सूत्र से।

70. लेट् लकार के उत्तम पुरुष के सकार का विकल्प से लोप होता है।

71. शोभनं ददाति यह अर्थ है।

72. लेट् लकार के आकार को ऐकार होता है।

73. लिङर्थे लेट्।

74. गत्यर्थक जो अन्य धातुएँ उनसे छन्द विषय में युच् प्रत्यय होता है।

75. हेतुहेतुमद्भावादि तथा विध्यादि।

76. मातृहा।

सत्रहवां पाठ समाप्त

18

अष्टाध्यायी का तृतीय और चतुर्थ अध्याय

प्रस्तावना

इस तृतीय पाठ में अष्टाध्यायी के तृतीय, चतुर्थ अध्याय के सूत्रों की व्याख्या करेंगे। यहाँ छन्दसि शायजपि, छन्दस्युभयथा, हशे विख्ये च, शकि णमुल्कमुलौ इन सूत्रों का व्याख्यान करेंगे। उन विविध शब्दों में निपात विषय में विशेष रूप से आलोचना करेंगे, जो शब्द केवल वेद में ही होते हैं। वहां से यहाँ विविध प्रत्ययों के विषय में भी आलोचन करेंगे, उनमें से कुछ केवल वेद में ही होते हैं, कुछ लोक में भी होते हैं। और वे प्रत्यय विविध अर्थों तथा विभिन्न शब्दों में होते हैं। और उनमें से विशिष्ट रूपों की प्रक्रिया भी दिखायेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढकर आप सक्षम होंगे–

- वेद में लेट्-लकार किस अर्थ में होता है जान पाने में;
- विकरण प्रत्ययों का छन्द के विषय में बहुल करके व्यत्यय होता है यह जान पाने में;
- छन्द के विषय में धातु के अधिकार में कहे गये प्रत्यय सार्वधातुक आर्धाधातुक उभय संज्ञक होते हैं यह जान पाने में;
- छन्द के विषय के तुमर्थ में कौन से विशिष्ट प्रत्यय होते हैं यह जान पाने में;
- छन्द के विषय में कौन से विशिष्ट शब्दों का निपातन होता है यह जान पाने में;

टिप्पणी

उपसंवादाशङ्कयोश्च (3.4.6)

सूत्रार्थ – उपसंवाद (पणबन्ध) तथा आशङ्का गम्यमान हो तो भी धातु से वेद विषय में लेट् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणिका – उपसंवाद तथा आशङ्का गम्यमान होने पर भी लेट्-लकार के विधान के लिए यह सूत्र प्रणीत किया गया है।

सूत्रव्याख्या – यह विधिसूत्र है। इससे लेट्-लकार का विधान किया गया है। इस सूत्र में दो पद हैं। उपसंवादाशङ्कयोः च यह सूत्रगत पदच्छेद है। उपसंवादाशङ्कयोः यह सप्तम्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः इस सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति आती है। लिङर्थे लेट् इस सूत्र से लेट् की अनुवृत्ति आती है। पदयोजना इस प्रकार बनती है – छन्द विषय में उपसंवाद तथा आशङ्का गम्यमान होने पर लेट् प्रत्यय होता है। उपसंवाद श्च आशङ्का च उपसंवादाशङ्के तयोः उपसंवादाशङ्कयोः इतरेतरयोग द्वंद्व समास। उपसंवाद पणबन्ध को कहते हैं। यदि आप मेरा यह काम करेंगे तो मैं आपको यह दूंगा ऐसे समय करण को पणबन्ध कहते हैं। आशङ्का का अर्थ सम्भावना होता है। प्रायः यह होगा ऐसा चिन्तन करना सम्भावना कहाता है। सूत्रार्थ इस प्रकार है उपसंवाद तथा आशङ्का गम्यमान होने पर धातु से वेद विषय में लेट्-प्रत्यय होता है।

उदाहरण – उपसंवाद का उदाहरण – अहमेव पशूनामीशै इति। आशङ्का का उदाहरण – नेज्जिह्मायन्त्यो नरकं पताम इति।

छन्दसि शायजपि (3.1.84)

सूत्रार्थ – वेद विषय में श्ना के स्थान पर शायच् आदेश होता है तथा शानच् भी होता है।

सूत्रावतरण – वेद विषय में हल् से उत्तर श्न के स्थान पर हौ परे रहते शायच् विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत हुआ।

सूत्रव्याख्या – ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से श्ना प्रत्यय के स्थान पर शायच् और शानच् आदेश होते हैं। इस सूत्र में तीन पद है। छन्दसि शायच् और अपि। छन्दसि सप्तम्यन्तपद, शायच् प्रथमान्त पद और अपि अव्ययपद। हलः **श्नः शानज्झौ** सूत्र से हलः श्नः और हौ तीनों पदों की अनुवृत्ति आती है। छन्दसि हलः श्नः शायच् अपि हौ ये पदक्रम हुआ। सूत्र में अपि शब्द ग्रहण शानजादेश के भी विधानार्थ है। वेद विषय में हल् से उत्तर श्नः स्थान पर शायच् और शानच् आदेश होवे, हौ परे रहते। शायच् के शकार की **लशक्वतद्धिते** से इत् संज्ञा, चकार की **हलन्त्यम्** से। अब आय शेष रहता है।

उदाहरण – गृभाय।

टिप्पणी

सूत्रार्थ समन्वय- ग्रह् (ग्रह उपादाने) धातु के लोट् में अनुबन्धलोप होने से ग्रह् ल् इस स्थिति में ल के स्थान पर सिप् होकर अनुबन्धलोप होने पर ग्रह् सि इस स्थित में **क्र्यादिभ्यः श्ना** से श्नाप्रत्यय होने से अनुबन्धलोप होकर ग्रह् ना सि होने पर **सेर्ह्यपिच्च** से सि के स्थान पर हि सर्वादेश से ग्रह् ना हि इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से श्नास्थान पर शायच्-आदेश और अनुबन्धलोप होकर ग्रह् आय हि बना। फिर **अतो हे से** हि का लोप होने पर **ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचतिवृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां ङिति च से** गकारोत्तरवर्ती रेफ के स्थान पर सम्प्रसारण होकर ऋकार हुआ गृ अ ह् आय एस स्थिति में **सम्प्रसारणाच्च** से पूर्वरूपैकादेश होने पर गृह् आय में हग्रहोर्भश्छन्दसि वार्तिक से हकार के स्थान पर भकारादेश सभी वर्णसम्मेलन और विभक्तिकार्य होने पर **गृभाय** रूप बना।

व्यत्ययो बहुलम् (3.1.85)

सूत्रार्थ - कि वेद विषय में बहुल करके सब विधियों का व्यत्यय हो।

सूत्रावतरण - कि वेदविषय में बहुल करके सब विधियों का व्यत्यय विधान के लिए ये सूत्र बना है।

सूत्रव्याख्या - ये विधिसूत्र है। इससे शपादि विकरण प्रत्ययों का व्यत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। व्यत्ययः प्रथमान्त पद और बहुलम् अव्यय पद। **छन्दसि शायजपि** सूत्र से छन्दसि पद अनुवर्त है। विकरणानाम् ये अधयाहार है। विकरणानां बहुलं व्यत्ययः छन्दसि ये पदयोजना हुई। व्यतिगमनम् व्यतिहारः व्यतिक्रमो वा व्यत्ययः। सूत्रार्थ हुआ कि वेदविषय में बहुल करके सब विधियों का व्यत्यय हो।

उदाहरण - भेदति।

सूत्रार्थसमन्वय- भिद् (भिदिर् आवरणे) धातु से लट्लकार में अनुबन्धलोप होने पर भिद् ल् इस स्थिति में ल के स्थान पर तिप् तथा अनुबन्धलोप होने पर भिद् ति इस स्थिति में भिद्-धातु रुधादिगण में पठित होने से **रुधादिभ्यो श्नम्** से प्राप्त श्नम्-विकरण बाधित होकर प्रकृतसूत्र से व्यत्यय से शप्-प्रत्यय होकर अनुबन्धलोप होने पर भिद् अ ति इस स्थिति में शप् के सार्वधतुक होने से **पुगन्तलघूपधास्य च** से भिद् के लघूपधा इकार के स्थान पर गुण एकार हुआ, सभी वर्ण के सम्मेलन से **भेदति** रूप सिद्ध हुआ। श्नम् करने पर **भिनत्ति** रूप होता है।

छन्दस्युभयथा (3.4.117)

सूत्रार्थ - वेद विषय में धात्वधिकार में कहे गये प्रत्यय सार्वधातुकार्धधातुक दोनों संज्ञा वाले हों।

सूत्रावतरण - वेद विषय में धात्वधिकार में कहे गये प्रत्यय सार्वधातुकार्धधातुक दोनों

टिप्पणी

संज्ञा के विधान के लिए ये सूत्र पढ़ा गया है।

सूत्रव्याख्या - ये संज्ञासूत्र है। इससे सार्वधातुकसंज्ञा और आर्धधातुकसंज्ञा दोनों होती है। इस सूत्र में दो पद है। छन्दसि और उभयथा। छन्दसि इति सप्तम्यन्तपद। उभयथा इति अव्यय। उभयथा शब्द का तात्पर्य सार्वधातुक और आर्धधातुक है। धातोः, प्रत्ययः, परः इन तीन का अधिकार है। पदों का क्रम होगा -छन्दसि धातोः परः प्रत्ययः उभयथा। सूत्रार्थ होगा कि वेद विषय में धात्वधिकार में कहे गये प्रत्यय सार्वधातुकार्धधातुक दोनों संज्ञा वाले हों।

उदाहरणम् - वर्धान्तु।

सूत्रार्थसमन्वय- णिजन्त वृध्-धातु से लोट लकार में अनुबन्धलोप होकर वृध् इ ल् इस स्थिति में ल के स्थान पर प्रथमपुरुष बहुवचन की विवक्षा में झि-प्रत्यय होने पर वृध् इ झि हुआ। **कर्तरि शप्** से शप् होकर अनुबन्धलोप होकर वृध् इ अ झि बनता है। फिर झकार के स्थान पर अन्तादेश होने से वृध् इ अ अन्त् इ इस स्थिति में **एरुः** से इकार के स्थान पर उकार होकर वृध् इ अ अन्त् उ बना। यहां **तिङ्शित्सार्वधातुकम्** से शप् की सार्वधतुकसंज्ञा है। किन्तु प्रकृतसूत्र से शप् की आर्धधातुकसंज्ञा भी होती है। फिर आर्धधातुकशप् परे होने से णेरनिटि से णि इकार का लोप होता है। फिर (अ अन्त्) इस दशा में **अतो गुणे** से पररूपैकादेश होकर अकार होने पर वृध् अन्त् उ होकर सर्ववर्णसम्मेलन से **वर्धन्तु** रूप बना। लोक में तो **वर्धयन्तु** रूप है। यहाँ शप् सार्वधातुक ही होता है। उससे शप् के आर्धधातुकत्व के अभाव से **णेरनिटि** की प्रवृत्ति नहीं हुई और जिससे णिलोप भी नहीं हुआ।

तुमर्थे सेसेनसेअसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः॥ (3.4.1)

सूत्रार्थः वेदविषय में तुमर्थ में से-सेन् असे-असेन्- क्से-कसेन् अध्यै-अध्यैन्- कध्यै-कध्यैन्- शध्यै-शध्यैन्-तवै-तवेङ्-तवेन् प्रत्यय हों।

सूत्रावतरणम् - वेदविषय में तुमर्थ में सेसेनसेअसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यै-कध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेन्-प्रत्ययों के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या - ये विधिसूत्र है। इससे से सेन् असे इत्यादि प्रत्यय होते है। इस सूत्र में दो पद है। तुमर्थेये सप्तम्यन्त पद है और सेसेनसेअसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यै-कध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः ये प्रथमान्त पद है। **छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः** इस सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति आई। **धातोः, प्रत्ययः और परश्च** ये तीन सूत्रों का अधिकार है। और अब सूत्रार्थ होता है कि वेदविषय में तुमर्थ में से-सेन् असे-असेन्-क्से-कसेन् -अध्यै-अध्यैन्- कध्यै- कध्यैन्- शध्यै-शध्यैन्-तवै-तवेङ्-तवेन् प्रत्यय हों।

उदाहरण - वक्षे।

टिप्पणी

सूत्रार्थसमन्वयः - वच्-धातु से तुमर्थ में पूर्वोक्तसूत्र से से-प्रत्यय हुआ। वच् से इस स्थिति में **चोः कुः** से चकार के स्थान पर ककार होने से वक् से इस स्थिति में **आदेशप्रत्यययोः** से सकार के स्थान पर षकार होने पर वक्षे ये एजन्त कृदन्त समुदाय बनता है। उसके बाद कृदन्त होने से प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर औत्सर्गिक एकवचन में सु विभक्ति होकर वक्षे स्। फिर वक्षे के एजन्तकृदन्त समुदाय होने से **कृन्मेजन्तः** से अव्ययसंज्ञा होकर **अव्ययादाप्सुपः** से सु का लुक् होकर और **वक्षे** रूप बना। लोक में तो **वक्तुम्** रूप बनता है। इसी प्रकार **जीवसे (जीवितुम्)** इत्यादि उदाहरण है।

द्यृशे विख्ये च॥ (3.4.11)

सूत्रार्थ - वेदविषय में तुमर्थ में द्यृशे और विख्ये ये दो रूप निपातन किये जाते है।

सूत्रावतरण - वेद विषय में द्रष्टुम् अर्थ में द्यृशे और विख्यातुम् अर्थ में विख्ये इनके निपातन के लिए ये सूत्र बनाया। **तुमर्थे सेसेनसेअसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन्त वैतवेङ्तवेनः** सूत्र से तुमर्थे की अनुवृत्ति।

सूत्रव्याख्या - ये विधिसूत्र है। इससे द्यृशे और विख्ये ये दो रूप निपातन किये जाते है। इस सूत्र में तीन पद है। द्यृशे, विख्ये और च। दो पद प्रथमान्त और च अव्ययपद है। **छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः** सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति। फिर सूत्रार्थ हुआ कि वेदविषय में तुमर्थ में द्यृशे और विख्ये ये दो रूप निपातन किये जाते है।

उदाहरण- द्यृशे। विख्ये।

सूत्रार्थसमन्वय- वेद में द्यृश्- धातु से तुमर्थ में के-प्रत्यय और अनुबन्धलोप होकर द्यृश् ए ऐसा होने पर पूर्ववत् विभक्ति कार्य होकर **द्यृशे** रूप सिद्ध होता है। वि-पूर्वक ख्या-धातु के- प्रत्यय तथा अनुबन्धलोप होकर वि ख्या ए। फिर **आतो लोप इटि च** से ख्या के आकारलोप होकर वि ख्य् ए बना तथा सर्ववर्णसम्मेलन और पूर्ववत् विभक्तिकार्य होकर विख्ये रूप सिद्ध होता है।

शकि णमुल्कमुलौध् (3.4.12)

सूत्रार्थ - शक्नोति धातु उपपद होने पर तुमर्थ में धातु से परे णमुल्-कमुल्-प्रत्यय होते है।

सूत्रावतरण - शक्नोति धातु उपपद होने पर तुमर्थ में धातु से परे णमुल्-कमुल्-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र बनाया।

सूत्रव्याख्या - ये विधिसूत्र है। इससे णमुल् और कमुल् ये दो प्रत्यय होते है। इस सूत्र में दो पद है। शकि सप्तम्यन्त पद और णमुल्कमुलौ प्रथमान्तपद है। **धातोः, प्रत्ययः और परश्च** सूत्रों का अधिकार है। और फिर सूत्रार्थ हुआ कि शक्नोति धातु उपपद

होने पर तुमर्थ में धातु से परे णमुल्-कमुल्-प्रत्यय होते है। णमुल् का णकार चुटू से इत्संज्ञक और लकार हलन्त्यम् से। और उकार उच्चारणार्थ है। अब केवल अम् ही शेष रहा। णमुल् के णित् होने से वृद्धि होती है। कमुल् का ककार **लशक्वतद्धिते** से इत्संज्ञक हुआ और लकार हलन्त्यम् से और उकार उच्चारणार्थ है। अब केवल अम् ही शेष रहा। कमुल् के कित् होने से गुणनिषेध।

उदाहरण - विभाजं नाशकत्। अपलुपं नाशकत्।

सूत्रार्थसमन्वय- पूर्वोक्त प्रथम उदाहरण में अशकत् शक् धातु से लुङ् में प्रथमा एकवचनान्त रूप है। और वो उपपद है। अतः वि पूर्वक भज्-धातु से प्रकृत सूत्र से णमुल्-प्रत्यय होकर अनुबन्धालोप होने के बाद वि भज् अम् इस स्थिति में **अत उपधायाः** से उपधा को वृद्धि होने पर विभाजम् मान्तकृदन्त समुदाय बनता है। फिर इस समुदाय के कृदन्त होनेसे **कृत्तद्धितसमासाश्च** से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई। फिर **कृन्मेजन्तः** से अव्यय संज्ञा होने पर औत्सर्गिक एकवचन में सुप्रत्यय होकर अव्ययादाप्सुपः से सु का लुक् हुआ और **विभाजम्** रूप बना। लोक में तो **विभक्तुम्** रूप बनता है।

द्वितीय उदाहरण में अशकत् उपपद है। इससे प्रकृतसूत्र से अप- पूर्वक लुप्-धातु से कमुल्- प्रत्यय होता है। फिर धातु के उकार के स्थान पर गुण प्राप्त होने पर कमुल्-प्रत्यय के कित् होने से गुणनिषेध होकर तथा पूर्ववत् विभक्तिकार्य होने पर **अपलुपम्** रूप सिद्ध हुआ। लोक में तो **अपलोप्तुम्** रूप बनता है।

पाठगत प्रश्न 18.1

1. विभाजम् में कौनसा प्रत्यय है ?
2. शक्नोति उपपद होने पर णमुल-कमुल-प्रत्यय किस अर्थ में होते है ?
3. वेदविषय में विख्ये पद सही है या नहीं ?
4. छन्दस्युभयथा का क्या अर्थ है ?
5. गृभाय में किस सूत्र से कः प्रत्यय होता है ?

ईश्वरे तोसुन्कसुनौ॥ (3.4.13)

सूत्रार्थ - वेदविषय में ईश्वरशब्द के उपपद रहते तुमर्थ में धातु से तोसुन्-कसुन् प्रत्यय होते है।

सूत्रावतरण - वेदविषय में ईश्वरशब्द के उपपद रहते तुमर्थ में धातु से तोसुन्-कसुन् प्रत्यय के विधानार्थ ये सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या - ये विधिसूत्र है। इससे तोसुन् और कसुन् प्रत्यय होते है। इस सूत्र में

टिप्पणी

दो पद है। ईश्वरे सप्तम्यन्तपद और तोसुन्कसुनौ प्रथमान्त पद। छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति हुई। **तुमर्थे सेसेनसेअसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ् तवेनः** सूत्र से तुमर्थे की अनुवृत्ति हुई। **धातोः, प्रत्ययः** और **परश्च** तीन सूत्रों का अधिकार है। अतः सूत्रार्थ हुआ की वेदविषय में ईश्वर शब्द के उपपद रहते तुमर्थ में धातु से तोसुन्-कसुन् प्रत्यय होते है।

उदाहरण - ईश्वरो विचरितोः। विचरितोः अर्थात् विचरितुम्।

सूत्रार्थसमन्वय - ईश्वरोपपद रहते विपूर्वक चर्-धातु से प्रकृतसूत्र से तोसुन्-प्रत्यय होकर अनुबन्धलोप होने पर वि चर्तोस् इस स्थिति में **आर्धधातुकस्येड्वलादेः** से इडागम होकर विचरितोस् बना। इस समुदाय के कृदन्त होने से **कृत्तद्धितसमासाश्च** से प्रातिपदिकसंज्ञा। फिर **कत्वातोसुन्कसुनः** से विचरितोस् की अव्ययसंज्ञा होने पर औत्सर्गिक एकवचन में सुप्रत्यय होकर विचरितोस् स् रूप बनने पर **अव्ययादाप्सुपः** विभक्तिसंज्ञक सु के सकार के लुक् होने पर विचरितोस् के सकार के स्थान पर रुत्व तथा विसर्ग होकर **विचरितोः** रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **विचरितुम्** रूप बनता है।

सृपितृदोः कसुन्॥ (3.4.17)

सूत्रार्थ - वेद विषय में भावलक्षण में सृप्-धातु और तृद्-धातु से तुमर्थ में कसुन्-प्रत्यय हो।

सूत्रावतरण - वेद विषय में भावलक्षण में सृप्-धातु और तृद्-धातु से तुमर्थ में कसुन्-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या - ये विधिसूत्र है। इससे सृप्-धातु और तृद्-धातु से तुमर्थ में कसुन्-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। सृपितृदोः षष्ठ्न्तपद और कसुन् प्रथमान्तपद। **छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः** सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति। **तुमर्थे सेसेनसेअसेन्क्सेकसेनध्यैअध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैतवेङ्तवेनः** सूत्र से तुमर्थे की अनुवृत्ति। **भावलक्षणे स्थेण्-कृञ्-वदि-चरि-हु-तमि-जनिभ्यस्तोसुन्** सूत्र से भावलक्षणे की अनुवृत्ति। **धातोः प्रत्ययः परश्च** तीन सूत्रों का अधिकार है। अतः सूत्रार्थ हुआ वेद विषय में भावलक्षण में सृप्-धातु और तृद्-धातु से तुमर्थ में कसुन्-प्रत्यय हो। कसुन् का ककार **लशक्वतद्धिते** से इत्संज्ञक तथा नकार **हलन्त्यम्** से। उकार उच्चारणार्थ है। केवल अस् ही शेष रहा। कित् होने से गुणाभाव।

उदाहरणम् - विसृपः। आतृदः।

सूत्रार्थसमन्वयः- विपूर्वक सृप्-धातु से भावलक्षण में तुमर्थ में प्रकृत सूत्र से कसुन्-प्रत्यय हुआ तथाअनुबन्धलोप होकर वि सृप् अस् इस स्थिति में कित् होने से गुण निषेध होकर विसृपस् कसुन्प्रत्ययान्त समुदाय बना। फिर इस समुदाय के कृदन्त होने से **कृत्तद्धितसमासाश्च**

टिप्पणी

से प्रातिपदिक संज्ञा। फिर **कृत्वातोसुन्कसुनः** से विसृप् अस् की अव्यय संज्ञा होने पर औत्सर्गिक एकवचन में सुप्रत्यय होकर विसृपस् स् हुआ और फिर अव्ययादाप्सुपः से विभक्तिसंज्ञक सु के सकार का लुक् होने पर पूर्ववत् प्रक्रिया से **विसृपः** रूप सिद्ध होता है।

आ-पूर्वक तृद्- धातु से प्रकृतसूत्र से कसुन्- प्रत्यय तथा पूर्ववत् विभक्ति कार्य होकर **आतृदः** रूप बनता है।

रात्रेश्चाजसौ॥ (4.1.31)

सूत्रार्थ- स्त्रीत्वविवक्षा में संज्ञा तथा छन्द विषय में रात्रिशब्द से ङीप्-प्रत्यय हो, जस् विषय से अन्यत्र।

सूत्रावतरण- स्त्रीत्वविवक्षा में संज्ञा तथा छन्द विषय में जस् विषय से अन्यत्र रात्रि शब्द से ङीप्-प्रत्यय विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या-ये विधिसूत्र है। इससे रात्रि- शब्द से ङीप-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में तीन पद है। रात्रेः, च और अजसौ। रात्रेः पञ्चम्यन्तपद, च अव्ययपदम् और अजसौ सप्तम्यन्तपद। न जसिः अजसिः तस्मिन् अजसौ। इकार उच्चारणार्थ है। **नित्यं संज्ञाछन्दसोः** सूत्र से संज्ञाछन्दसोः पद की अनुवृत्ति हुई। **संख्याव्ययादेर्ङीप्** सूत्र से ङीप् की अनुवृत्ति हुई। **स्त्रियाम्, प्रत्ययः** इनका अधिकार है - इसप्रकार वाक्ययोजना हुई -स्त्रियाम् संज्ञाछन्दसोः रात्रेः च ङीप् अजसौ। और फिर सूत्रार्थ बना - स्त्रीत्व विवक्षा में संज्ञा तथा छन्द विषय में रात्रिशब्द से ङीप्-प्रत्यय हो, जस् विषय से अन्यत्र।

उदाहरणम् - रात्री।

सूत्रार्थसमन्वयः- रात्रि शब्द से प्रकृत सूत्र द्वारा **ङीप्-प्रत्यय होकर** अनुबन्ध लोप होने पर रात्रि ई इस स्थिति में **यचि भम्** से भसंज्ञा होने पर **यस्येति च** से इकार लोप होकर **रात्री** ङ्यन्त समुदाय हुआ। फिर सुप्रत्यय होकर रात्री सु इस स्थिति में उकार लोप होने पर **हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्** से सलोप होकर रात्री रूप सिद्ध हुआ और इसका वेद में प्रयोग जैसे - **रात्री व्यख्यदायती** इति। लोक में तो **कृदिकारादक्तिनः** गण सूत्र से **ङीष्प्रत्ययः** होता है। लोक में ङीष होने पर **आद्युदात्तश्च** से रात्रीशब्दः अन्तोदात्तान्त होता है। वेद में ङीप् होने पर रात्रीशब्द अनुदात्तौ **सुप्पितौ** से अनुदात्तान्त होता है।

विशेष-ध्यातव्य है कि सूत्र में अजसौ पाठ है। जिससे जस्प्रत्यय पर रहते इस सूत्र की प्रवृत्ति नहीं होती है। अत एव **यास्ताः रात्रयः** में रात्रिशब्द से पर जस् प्रत्यय होने पर प्रकृतसूत्र से ङीप्-प्रत्यय नहीं होता है।

नित्यं छन्दसि॥ (4.1.46)

सूत्रार्थः- ब्रह्मवादिभ्य प्रातिपदिकों से वेदविषय में नित्य ङीष् हो।

सूत्रावतरणम्- स्त्रीत्व विवक्षा में वेदविषय में बह्वादिगण में पठित अनुपसर्जन प्रातिपदिकों से नित्य ङीष् प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत हुआ।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे ङीष्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। नित्यम् प्रथमान्त पद। छन्दसि सप्तम्यन्तपद। बह्वादिभ्यश्च सूत्र से बह्वादिभ्यः पद, अन्यतो ङीष् सूत्र से ङीष् पद की अनुवृत्ति हुई। **स्त्रियाम्, प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार तथा प्रातिपदिकात् और अनुपसर्जनात् का भी अधिकार है। अधिकृत प्रातिपदिकात् का प्रातिपदिकेभ्यः पञ्चमी बहुवचनान्त में तथा अनुपसर्जनात् का अनुपसर्जनेभ्यः पञ्चमी बहुवचनान्त रूप परिवर्तित हुआ। इस सूत्र में अनुपसर्जन शब्द का अर्थ मुख्य व प्रधान है। **बहुशब्दः आदिः येषां ते बह्वादयः इति बहुव्रीहिसमासः, तेभ्यः बह्वादिभ्यः।** इसप्रकार सूत्र हुआ कि स्त्रीत्व विवक्षा में वेदविषय में बह्वादिगण में पठित अनुपसर्जन प्रातिपदिकों से नित्य ङीष् हों।

उदाहरण- बह्वी।

सूत्रार्थसमन्वय- बहुशब्द में प्रकृतसूत्र से ङीष्-प्रत्यय होने पर अनुबन्धलोप होकर बहु-ई इस स्थिति में **इको यणचि** से इक् के उकार के स्थान पर यण्-आदेश वकार होने पर बह्वी ङ्यन्त समुदाय होता है। फिर सु विभक्ति होकर पूर्ववत् प्रक्रिया से **बह्वी** रूपं सिद्ध हुआ। लोक में तो **वोतो गुणवचनात्** से वैकल्पिक ङीष्प्रत्यय होकर **बह्वी, बहु** दो रूप बनते है।

भुवश्च॥ (4.1.47)

सूत्रार्थ- वेदविषय में ङीष् प्रत्यय हो।

सूत्रावतरण- वेद में विभ्वी प्रभ्वी इत्यादि रूपसिद्धि के लिए भू-धातु से नित्य ङीष्-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे भू- धातु से ङीष्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है- भुवः और च। भुवरू पञ्चम्यन्तपद तथा च अव्ययपद। **नित्यं छन्दसि** सूत्र से छन्दसि पद की तथा **अन्यतो ङीष्** सूत्र से ङीष् पद की अनुवृत्ति। **स्त्रियाम्, प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार। और उसके प्रथमान्तपद होने पर, अनुपसर्जनात् पञ्चम्यन्त पद, प्रातिपदिकात् और पञ्चम्यन्तपद का अधिकार। अतः सूत्रार्थ बनता है - वेद विषय में स्त्रीत्वविवक्षा में अनुपसर्जन भु शब्दान्त प्रातिपदिकों से नित्य ङीष्प्रत्यय होता है।

उदाहरण- विभ्वी। प्रभ्वी।

सूत्रार्थसमन्वय- विपूर्वक भू-धातु से **विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञायाम्** सूत्र से डुप्रत्यय होकर अनुबन्ध लोप होने पर भू उ। फिर भू-धातु के ऊकार का लोप होकर डुप्रत्ययान्त विभु- में प्रकृतसूत्र से ङीष्-प्रत्यय होकर विभु ई इस स्थिति में इको यणचि सूत्र से इक् के उकार के स्थान पर यण वकार होकर विभ्वी ङ्यन्त समुदाय हुआ। फिर पूर्ववत् विभक्ति कार्य होकर **विभ्वी** रूप सिद्ध हुआ। (चुटू से डुप्रत्यय का डकार इत्संज्ञक होने से तेन

टिप्पणी

उकारमात्र शेष रहा)

इस प्रकार - पूर्वक भू- धातु से **विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञायाम्** से डु- प्रत्यय होनेपर अनुबन्ध लोप होकर प्रभू उ इस स्थिति में धातु के ऊकार का लोप होकर तथा वर्णसम्मेलन से प्रभु हुआ। फिर प्रकृतसूत्र से ङीष्- प्रत्यय होनेपर अनुबन्धलोप होकर प्रभु ई में यण कार्य होकर प्रभ्वी ङ्न्तसमुदाय में पूर्ववत् विभक्तिकार्य होकर **प्रभ्वी रूप** सिद्ध होता है।

दीर्घजिह्वी च छन्दसि॥ (4.1.55)

सूत्रार्थ- असंयोगोपध होने से ही ङीष्-प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण- दीर्घ जिह्व इस स्थिति में **स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्** से ङीष्-प्रत्यय प्राप्ति के अभाव में ङीष्-प्रत्यय विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे ङीष्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। दीर्घजिह्वी प्रथमैकवचनान्तपद। च अव्ययपदम् और छन्दसि सप्तम्यन्तपद। **अन्यतो ङीष्** सूत्र से ङीष् पद की अनुवृत्ति। स्त्रियाम् का अधिकार। प्रत्ययः और परश्च का अधिकार। और वे प्रथमांत होने पर। प्रातिपदिकात् का अधिकार। और वो पञ्चम्यन्त है। इस प्रकार सूत्रार्थ हुआ - वेदविषय में स्त्रीत्वविवक्षा में ङीष्-प्रत्यय हो।

उदाहरण- दीर्घजिह्वी।

सूत्रार्थसमन्वय- दीर्घा जिह्वा यस्याः इति बहुव्रीहिसमास में स्वाङ्गाच्चोपसर्जनाद् असंयोगोपधात् से ङीष्-प्रत्यय का विधान नहीं होता है। क्योंकि उपध में संयोग है। **स्वाङ्गाच्चोपसर्जनाद् असंयोगोपधात्** से असंयोगोपध होने से ही ङीष्-प्रत्यय होता है। अतः ङीष्-प्रत्ययविधान के लिए प्रकृतसूत्र बना। उसके बाद ङीष्-प्रत्यय और अनुबन्ध लोप होकर दीर्घजिह्व ई इस स्थिति में यस्येति च से भसंज्ञक अकार का लोप होने पर सर्ववर्णसम्मेलन से दीर्घजिह्वी ङ्यन्तसमुदाय बना और फिर पूर्ववत् विभक्तिकार्य होने पर **दीर्घजिह्ववी** रूप सिद्ध हुआ।

कद्रुकमण्डल्वोश्छन्दसि॥ (4.1.71)

सूत्रार्थः- ऊङ् हो।

सूत्रावतरण- वेद विषय में स्त्रीत्वविवक्षा से कद्रु और कमण्डलु शब्द प्रातिपदिकों से परे ऊङ्-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र बना।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे ऊङ् - प्रत्यय होता है। ये द्विपदात्मक सूत्र है। **कद्रुकमण्डल्वोः छन्दसि** ये सूत्रगत पदच्छेद है। कद्रुकमण्डल्वोः षष्ठीद्विवचनान्तपद तथा छन्दसि सप्तम्यन्तपद है। **ऊङुतः** सूत्र से ऊङ् की अनुवृत्ति। **स्त्रियाम्** का अधिकार। **प्रत्ययः,**

टिप्पणी

परः का अधिकार और वे प्रथमान्त होने पर। प्रातिपदिकात् का अधिकार है और वो पञ्चमन्त है। अतः सूत्रार्थ होता है - वेद विषय में स्त्रीत्वविवक्षा से कद्रु और कमण्डलु शब्द प्रातिपदिकों से परे ऊङ्-प्रत्यय होता है। ऊङ् का ङकार **हलन्त्यम्** से इत्संज्ञक हुआ तो ऊमात्र शेष रहा।

उदाहरण-कद्रूः।

सूत्रार्थसमन्वय- कद्रु शब्द से स्त्रीत्व विवक्षा में प्रकृतसूत्र से ऊङ्-प्रत्यय होने पर अनुबन्ध लोप होकर कद्रु ऊ इस स्थिति में सवर्ण दीर्घ होकर कद्रू ऊङन्त समुदाय बना। फिर **प्रातिपदिकग्रहणे लिङ्गविशिष्टस्यापि ग्रहणम्** इस परिभाषा की सहायता से सु में रुत्व विसर्ग होने पर **कद्रूः** रूप बना। इस प्रकार **कमण्डलूः** को भी जाने।

छन्दसि ठञ्॥ (4.3.19)

सूत्रार्थ- वेद विषय में वर्षा शब्द से ठञ् हो।

सूत्रावतरण- लोक में वर्षा शब्द से ठक्-प्रत्यय होता है। परन्तु वेद में वर्षा शब्द से ठञ्-प्रत्यय विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे ठक्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। ये सूत्र **वर्षाभ्यष्ठक्** सूत्र का अपवाद है। छन्दसि सप्तम्यन्तपद। ठञ् प्रथमान्तपद। **वर्षाभ्यष्ठक्** सूत्र से वर्षाभ्यः की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार। वे प्रथमान्त होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार। **शेषे, तद्धिताः** दोनों का भी अधिकार। इसप्रकार सूत्रार्थ हुआ - वेद में वर्षादि प्रातिपदिकों से शैषिक तद्धितसंज्ञक ठञ्-प्रत्यय पर में हो।

उदाहरण- वार्षिकम्।

सूत्रार्थसमन्वय- **वर्षासु भवम्** इस विग्रह में वर्षा शब्द से प्रकृतसूत्र द्वारा ठञ्-प्रत्यय होनेपर वर्षा ठञ् इस स्थिति में ञ्कार की **हलन्त्यम्** से इत्संज्ञा होने पर इत्संज्ञक ञ्कार का **तस्य लोपः** से लोप होकर वर्षा ठ इस स्थिति में **ठस्येकः** से ठ के स्थान पर इक-आदेश तथा वर्षा इक इस स्थिति में **यचि भम्** से वर्षा की भसंज्ञा होने पर **यस्येति च** से आकार का लोप होकर वर्ष् इक इस स्थिति में अकार को **तद्धितेष्वचामादेः** सूत्र से वृद्धि आकार होकर वर्ष् इक इस स्थिति में सु-प्रत्यय होकर उसके स्थान पर अम् हुआ फिर वार्ष् इक अम् इस स्थिति में **अमि पूर्वः** से पूर्वरूपैकादेश होकर **वार्षिकम्** रूप सिद्ध हुआ। लोक में भी ठक्प्रत्यय होने पर **वार्षिकम्** रूप होता है। तो किर क्या भेद है ठञ् और ठक् में? ठञ् **ञ्नित्यादिर्नित्यम्** से आद्युदात्त है परन्तु ठक् कित् होने से अन्तोदात्त है इस प्रकार केवल स्वर भेद है। ठञ् होने पर **तद्धितेष्वचामादेः** से आदि अच् को वृद्धि तथा ठक् होने पर **किति च** से आदि अच् को वृद्धि।

वसन्ताच्च॥ (4.3.20)

टिप्पणी

सूत्रार्थः- वेद में ऋतुवाचक वसन्त शब्द से ठञ् हो।

सूत्रावतरण-ख्र वेद में (काल) ऋतुवाचक वसन्त शब्द से शैषिक तद्धितसंज्ञक ठञ्-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र है।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे ठञ्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। वसन्तात् च ये सूत्रगत पदच्छेद है। वसन्तात् पञ्चम्यन्तपद। च अव्ययपद। **छन्दसि ठञ्** सम्पूर्ण सूत्र यहाँ अनुवृत्त है। **कालाट्ठञ्** इस सूत्र से कालात् की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः और परश्च** का अधिकार और वे प्रथमान्त पद होने पर। प्रातिपदिकात् का अधिकार तथा वो पञ्चम्यन्तपद है। **शेषे, तद्धिताः** का भी अधिकार। इस प्रकार सूत्रार्थ हुआ - वेद में (काल) ऋतुवाचक वसन्त शब्द से शैषिक तद्धितसंज्ञक ठञ्-प्रत्यय पर में हो।

उदाहरण- वासन्तिकम्।

सूत्रार्थसमन्वय- **वसन्तर्तौ भवम्** इस व्युत्पति से ऋतुवाचि वसन्त शब्द से प्रकृतसूत्र द्वारा ठञ्-प्रत्यय होने पर वसन्त ठञ् इस स्थिति में ञ्कार का **हलन्त्यम्** से इत्संज्ञा होने पर इत्संज्ञक ञ्कार का **तस्य लोपः** से लोप होकर वसन्त ठ इस स्थिति में **ठस्येकः** से ठ के स्थान पर इक-आदेश होने पर वसन्त इक इस स्थिति में **यचि भम्** से भसंज्ञा होकर **यस्येति च** से अकार का लोप हुआ - अब वसन्त् इक इस स्थिति में वकारोत्तरवर्ति अकार को **तद्धितेष्वचामादेः** से वृद्धि आकार हुई - वासन्त् इक इस स्थिति में तद्धितान्त होने से **कृत्तद्धितसमासाश्च** सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर सु-प्रत्यय तथा उसके स्थान पर अम्द्य वासन्त् इक अम् इस स्थिति में **अमि पूर्वः** से पूर्वरूपैकादेश होकर **वासन्तिकम्** रूप सिद्ध हुआ।

हेमन्ताच्च॥ (4.3.19)

सूत्रार्थ- वेद विषय में हेमन्त शब्द से ठञ्-प्रत्यय हो।

सूत्रावतरणम्- वेद में हेमन्त शब्द से ठञ्-प्रत्ययविधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे ठञ्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। हेमन्तात् च सूत्रगत पदच्छेद है। हेमन्तात् पञ्चम्यन्तपद और च अव्ययपद। **छन्दसि ठञ्** सम्पूर्ण सूत्र यहां अनुवृत्त है। **कालाट्ठञ्** सूत्र से कालात् की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** दोनों का अधिकार **प्रत्ययः और परश्च** का अधिकार और वे प्रथमान्त पद होने पर। प्रातिपदिकात् का अधिकार तथा वो पञ्चम्यन्तपद है। **शेषे, तद्धिताः** का भी अधिकार। इस प्रकार सूत्रार्थ हुआ - वेद विषय में कालवाचक हेमन्त शब्द से शैषिक तद्धितसंज्ञक ठञ्-प्रत्यय पर में हो।

उदाहरण- हैमन्तिकम्।

सूत्रार्थसमन्वय- **हेमन्ते भवम्** इस व्युत्पत्ति से हेमन्त शब्द से प्रकृत सूत्र द्वारा ठञ्-प्रत्यय

टिप्पणी

होकर हेमन्त ठञ् इस स्थिति में ञ्कार का **हलन्त्यम्** से इत्संज्ञा होने पर इत्संज्ञक ञ्कार का **तस्य लोपः** से लोप होने पर हेमन्त ठ इस स्थिति में ठस्येकः से ठ के स्थान पर इक-आदेश होकर हेमन्त इक इस स्थिति में **यचि भम्** से भसंज्ञा होकर **यस्येति च** से तकारोत्तरवर्ति अकार का लोप होने पर हेमन्त् इक इस स्थिति में एकार के स्थान पर **तद्धितेष्वचामादेः** से वृद्धि होने पर ऐकार होकर हैमन्त् इक इस स्थिति में सु-प्रत्यय होकर उसके स्थान पर अम् हुआ। हैमन्त् इक अम् इस स्थिति में **अमि पूर्वः** से पूर्वरूपैकादेश होकर **हैमन्तिकम्** रूप सिद्ध हुआ।

द्क्यचश्छन्दसि॥ (4.3.150)

सूत्रार्थ- विकार होने पर मयट् हो।

सूत्रावतरण- शरस्य (तृणविशेषस्य) विकारः विग्रह में मयट्-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे मयट्- प्रत्यय होता है। ये द्विपदात्मक सूत्र है। द्क्यचश्छन्दसि ये सूत्रगत पदच्छेद है। द्क्यचः पञ्चम्यन्त पद है। छन्दसि सप्तम्यन्त पद है। **मयड्वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादनयोः इस** सूत्र से मयट् की अनुवृत्ति। **तस्य विकारः** सूत्र से विकारः की अनुवृत्ति। **अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः** सूत्र से अवयवे की अनुवृत्ति हुई। **प्रत्ययः, परश्च** दोनों का अधिकार तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार भी। और वो पञ्चम्यन्त है। **तद्धिताः** का अधिकार। **समर्थानां प्रथमाद्वा** से समर्थानाम् की अनुवृत्ति है। इस प्रकार सूत्रार्थ हुआ- वेद विषय में द्वयच् षष्ठी समर्थ प्रातिपदिक से विकार और अवयव अर्थ अभिधेय होने पर तद्धितसंज्ञक मयट्-प्रत्यय पर में हो। मयट् का टकार **हलन्त्यम्** से इत्संज्ञक होने से मय शेष रहा।

उदाहरण- शरमयम्।

सूत्रार्थसमन्वय- **शरस्य (तृणविशेषस्य) विकारः** ऐसा विग्रह होने पर प्रकृतसूत्र से मयट्-प्रत्यय होने पर अनुबन्धलोप होकर शर मय इस स्थिति में **शरमय** तद्धितान्तसमुदाय होकर सु विभक्तिकार्य होनेपर शरमयम् रूप बना।

नोत्वद्वर्ध्रबिल्वात्॥ (4.3.159)

सूत्रार्थः- वेदे द्क्यचः उत्वात् वर्ध्रबिल्वशब्दात् विकारार्थे मयट् न।

सूत्रावतरण- वेदे द्क्यचः उकारवतः प्रातिपदिकात् वर्ध्रबिल्वशब्दात् विकारार्थे मयट्-प्रत्ययनिषेधार्थं सूत्रमिदं प्रणीतम्।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे मयट्- प्रत्यय का निषेध होता है। इस सूत्र में दो पद है - न अव्ययपद और उत्वद्-वर्ध्र-बिल्वात् पञ्चम्यन्तपद। **द्वयचश्छन्दसि** सम्पूर्ण

टिप्पणी

सूत्र की अनुवृत्ति आती है। **मयड्वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छादनयोः इत्यस्मात्** सूत्र से मयट् की अनुवृत्ति। **तस्य विकारः** सूत्र से विकारः की अनुवृत्ति आई। और उस विकार में सप्तम्यन्तरूप से परिवर्तन हुआ। **अवयवे च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः** सूत्र से अवयवे की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** दो का अधिकार तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार और वो पञ्चम्यन्त है। **तद्धिताः** का अधिकार। इस प्रकार सूत्रार्थ हुआ कि वेद विषय में उकारवान् द्वयच् षष्ठी समर्थ प्रातिपदिक से वर्ध्र, बिल्व शब्द से विकार और अवयव अर्थ में तद्धितसंज्ञक मयट्-प्रत्यय पर में न हो।

उदाहरणम्-वार्ध्री।

सूत्रार्थसमन्वयः- वर्ध्रस्य विकारः विग्रह में **द्व्यचश्छन्दसि** से प्राप्त मयट्-प्रत्यय का निषेध होने पर अण्-प्रत्यय होकर अनुबन्धलोप हुआ। वर्ध्र अ इस स्थिति में अण् के अकार से पूर्ववर्ति भसंज्ञक अकार का लोप होने पर वर्ध्र बनता है। फिर **तद्धितेष्वचामादेः** से वकारोत्तरवर्ती अकार के स्थान पर वृद्धि आकार होने पर वर्णसम्मेलन से वार्ध्र बना। अब **टिड्ढाणञ्द्वयसज्दघ्नञ्मात्रच्तयप्ठक्ठञ्कञ्क्वरपः** से ङीप-प्रत्यय होने पर अनुबन्ध लोप और वार्ध्र ई इस स्थिति में ईकार से पूर्ववर्ति भसंज्ञक अकार का लोप होने पर वर्णसम्मेलन से **वार्ध्री** हुआ। अब विभक्ति कार्य होकर वार्धी रूप सिद्ध हुआ।

ढश्छन्दसि॥ (4.4.106)

सूत्रार्थ- सप्तम्यन्त समर्थ से साधु अर्थ में वेद विषय में सभाप्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक ढप्रत्यय पर में हो।

सूत्रावतरण- सभाप्रातिपदिक से साध्वर्थ में ढ- प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे ढ- प्रत्यय होता है। सूत्र में दो पद है। **ढः और छन्दसि** सूत्रगतपदच्छेद है। ढः प्रथमान्तपद और छन्दसि सप्तम्यन्तपद। **सभाया यः** सूत्र से सभायाः की अनुवृत्ति। **तत्र साधुः** सूत्र से साधुः की अनुवृत्ति। और वो सप्तम्यन्तरूप में विपरिणमित होते है। **प्रत्ययः, परश्च** दोनों का अधिकार है तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार और वो पञ्चम्यन्त है। **तद्धिताः** का अधिकार। इस प्रकार सूत्रार्थ हुआ कि- साधु अर्थ में वेद विषय में सभाप्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक ढप्रत्यय पर में हो।

उदाहरण- सभेयः।

सूत्रार्थसमन्वय- सभायां साधुः इस विग्रह में सभाशब्द से प्रकृतसूत्र द्वारा ढप्रत्यय होने पर सभा ढ इस स्थिति में **आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्** से ढ के स्थान पर एयादेश होकर सभा एय इस स्थिति में **यचि भम्** से भसंज्ञा होकर **यस्येति च** से आकारलोप होने पर सभ् एय इस स्थिति में वर्णसंयोग होने से निष्पन्न सभेय शब्द

टिप्पणी

से सु विभक्तिकार्य होकर **सभेयः** रूप बना। लोक में तो यत्प्रत्यय होकर **सभ्यः** रूप बनता है।

भवे छन्दसि॥ (4.4.190)

सूत्रार्थः- वेद विषय में सप्तम्यन्त प्रातिपदिक से भव अर्थ में तद्धितसंज्ञक यत्-प्रत्यय पर में हो।

सूत्रावतरण- **मेघे भवः** इस विग्रह में सप्तम्यन्त भवेअर्थ में विद्यमान मेघ प्रातिपदिक से प्रकृतसूत्र से यत्-प्रत्यय विधन के लिए ये सूत्र प्रणीत हुआ।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे यत्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। भवे सप्तम्यन्तपद और छन्दसि भी सप्तम्यन्तपद है। **प्राग्घिताद्यत्** सूत्र से यत् की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार है तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार जो पञ्चम्यन्त है। **तद्धिताः** का अधिकार। **तत्र भवः** सूत्र से तत्र की अनुवृत्ति। अतय सूत्रार्थ होता है - वेद विषय में सप्तम्यन्त प्रातिपदिक से भव अर्थ में तद्धितसंज्ञक यत्-प्रत्यय पर में हो।

उदाहरण- मेघ्यः।

सूत्रार्थसमन्वय- **मेघे भवः** इस विग्रह में सप्तम्यन्त भवेअर्थ में विद्यमान मेघ प्रातिपदिक से प्रकृतसूत्र से यत्-प्रत्यय होने पर मेघ यत् इस स्थिति में अनुबन्धलोप होकर मेघ य इस स्थिति में **यचि भम्** से भसंज्ञा होने पर यस्येति च से अकारलोप फिर सर्ववर्णसम्मेलन से मेघ्य प्रातिपदिकात् से सु विभक्ति कार्य होकर **मेघ्यः** रूप बना।

पाथोनदीभ्यां ड्यण्॥ (4.4.111)

सूत्रार्थ- वेद विषय में तत्र भवः इस अर्थ में विद्यमान पाथस् और नदी प्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक ड्यण्-प्रत्यय पर में हो।

सूत्रावतरण- वेद विषय में तत्र भवः इस अर्थ में विद्यमान पाथस् और नदी प्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक ड्यण्-प्रत्यय विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे ड्यण्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। पाथोनदीभ्याम् पञ्चमीबहुवचनान्तपद और ड्यण् प्रथमान्तपद। **भवे छन्दसि** सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार है तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार जो पञ्चम्यन्त है। **तद्धिताः** का अधिकार। **तत्र भवः** सूत्र से तत्र की अनुवृत्ति। अत; सूत्रार्थ होता है - वेद विषय में तत्र भवः इस अर्थ में विद्यमान पाथस् और नदी प्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक ड्यण्-प्रत्यय पर में हो।

उदाहरण- पाथ्यः।

टिप्पणी

सूत्रार्थसमन्वयः- पाथसि भवः इस विग्रह में भवे अर्थ में विद्यमान पाथस् प्रातिपदिक से प्रकृतसूत्र द्वारा ड्यण्-प्रत्यय होने पर पाथस् ड्यण् इस स्थिति में अनुबन्धलोप होकर पाथस् य इस स्थिति में डित्त्वसामर्थ्य से टी लोप होकर पाथ् य इस स्थिति में सु और रुत्वविसर्ग होकर **पाथ्यः** रूप बना।

सगर्भसयूथसनुताद्यन्॥ (4.4.114)

सूत्रार्थ- सप्तम्यन्त सगर्भ-सयूथ-सनुत प्रातिपदिकों से तद्धितसंज्ञक यन्-प्रत्यय पर में हों।

सूत्रावतरण- वेद विषय में भव अर्थ में विद्यमान सप्तम्यन्त सगर्भ-सयूथ-सनुत प्रातिपदिकों से तद्धितसंज्ञक यन्-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे यन् प्रत्यय होता है। ये दो पद वाला सूत्र है। सगर्भसयूथसनुतात् यन् ये सूत्रगत पदच्छेद है। सगर्भसयूथसनुतात् पञ्चम्यन्तपद और यन् प्रथमान्तपद है। **भवे छन्दसि** सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार है तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार जो पञ्चम्यन्त है। **तद्धिताः** का अधिकार। **तत्र भवः** सूत्र से तत्र की अनुवृत्ति। अत; सूत्रार्थ होता है - भव अर्थ में विद्यमान सप्तम्यन्त सगर्भ-सयूथ-सनुत प्रातिपदिकों से तद्धितसंज्ञक यन्-प्रत्यय पर में हों वेद विषय में।

उदाहरण- सगभ्र्यः। सयुथ्यः। सनुत्यः।

सूत्रार्थसमन्वय- सगर्भे भवः इस विग्रह में भव अर्थ में विद्यमान प्रकृतसूत्र से यन्-प्रत्यय होकर सगर्भ यन् इस स्थिति में अनुबन्धलोप होकर सगर्भ य इस स्थिति में **यचि भम्** से भसंज्ञा होने पर **यस्येति च** से अकारलोप होने पर सगर्भ् य इस स्थिति में संयोग होकर सगभ्य शब्द से सु विभक्तिकार्य होकर **सगभ्र्यः** रूप बना। इसी प्रकार सयुथ्य:और सनुत्यः रूप सिद्ध हुए।

बर्हिषि दत्तम्॥ (4.4.119)

सूत्रार्थ- वेद विषय में बर्हिष्-प्रातिपदिक से दत्त अर्थ में यत्-प्रत्यय पर में हो।

सूत्रावतरण- वेद विषय में सप्तम्यन्त समर्थ बर्हिष्-प्रातिपदिक से दत्त अर्थ में तद्धितसंज्ञक यत् प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे यत- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। बर्हिषि सप्तम्यन्तपद और दत्तम् प्रथमान्तपद। **भवे छन्दसि** सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति। **प्राग्घिताद्यत्** सूत्र से यत् की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार है तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार जो पञ्चम्यन्त है। **तद्धिताः** का अधिकार। **तत्र भवः**

टिप्पणी

सूत्र से तत्र की अनुवृत्ति। अतः यह सूत्रार्थ होता है - वेद विषय में सप्तम्यन्त समर्थ बर्हिष्-प्रातिपदिक से दत्त अर्थ में तद्धितसंज्ञक यत्-प्रत्यय पर में हो।

उदाहरण- वर्हिष्येषु।

सूत्रार्थसमन्वय- बर्हिःषु दत्ता इस प्रकार विग्रह होने पर दत्तार्थ में विद्यमान बर्हिष्-प्रातिपदिक से प्रकृतसूत्र से यत्-प्रत्यय होकर बर्हिस् यत् इस स्थिति में अनुबन्धलोप होने पर बर्हिस् य इस स्थिति में सकार के स्थान पर षकार होकर बर्हिष् य इस स्थिति में वर्णसंयोग से निष्पन्न बर्हिष्-प्रातिपदिक से सुप्-प्रत्यय होने पर विभक्तिकार्य होकर **बर्हिष्येषु** रूप बना।

दूतस्य भागकर्मणी॥ (1.4.120)

सूत्रार्थ- षष्ठ्यन्त समर्थ दूत-प्रातिपदिक से भाग और कर्म अभिधेय हो तो वेद विषय में यत्-प्रत्यय पर में हो।

सूत्रावतरण- दूतस्य भागः कर्म वा इस विग्रह में दूतशब्द से यत्-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे यत्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है। दूतस्य षष्ठ्यन्तपद और भागकर्मणी प्रथमान्तपद। **भवे छन्दसि** सूत्र से की **छन्दसि की** अनुवृत्ति। **प्राग्घिताद्यत्** सूत्र से यत् की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार है तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार जो पञ्चम्यन्त है। **तद्धिताः** का अधिकार। इस प्रकार सूत्रार्थ होता है - षष्ठ्यन्त समर्थ दूत-प्रातिपदिक से भाग और कर्म अभिधेय हो तो वेद विषय में तद्धितसंज्ञक यत्-प्रत्यय पर में हो।

उदाहरण- दूत्यम्।

सूत्रार्थसमन्वय- दूतस्य भागः कर्म वा इस विग्रह में दूतशब्द से प्रकृतसूत्र द्वारा यत्-प्रत्यय होकर तकार की इत्संज्ञा तथा **तस्य लोपः** से उसका लोप होने पर दूत य इस स्थिति में **यचि भम्** से भसंज्ञा होने पर **यस्येति च** से अकारलोप होकर संयोग होने पर निष्पन्न दूत्य-प्रातिपदिक से सु विभक्तिकार्य होकर **दूत्यम्** रूप बना।

रेवतीजगतीहविष्याभ्यः प्रशस्ये॥ (4.4.122)

सूत्रार्थ- रेवती, जगती, हविष्या प्रातिपदिकों से प्रशस्य अर्थ में यत्-प्रत्यय पर में हो।

सूत्रावतरण- रेवत्याः प्रशस्यम् इस विग्रह में रेवतीशब्द से यत्-प्रत्यय विधान के लिए ये सूत्र प्रणीत है।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे यत्- प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है।

रेवतीजगतीहविष्याभ्यः पञ्चम्यन्तपद और प्रशस्ये सप्तम्यन्तपद। **भवे छन्दसि** सूत्र से की **छन्दसि की** अनुवृत्ति। **प्राग्घिताद्यत्** सूत्र से यत् की अनुवृत्ति। **प्रत्ययः, परश्च** का अधिकार है तथा उनके प्रथमान्त पद होने पर प्रातिपदिकात् का अधिकार जो बहुवचनान्त में परिवर्तित हो जाता है। **तद्धिताः** का अधिकार। इस प्रकार सूत्रार्थ होता है - वेद विषय में रेवती, जगती, हविष्या प्रातिपदिको से प्रशस्य अर्थ में तद्धितसंज्ञक यत्-प्रत्यय पर में हो।

उदाहरणम्- रेवत्यम्।

सूत्रार्थसमन्वय- रेवत्याः प्रशस्यम् इस विग्रह में रेवतीशब्द से प्रकृतसूत्र द्वारा यत्-प्रत्यय होने पर तकार की हलन्त्यम् से इत्संज्ञा और **तस्य लोपः** से उसका लोप होने पर रेवती य इस स्थिति में **यचि भम्** से भसंज्ञा होने पर **यस्येति च** से ईकारलोप होकर रेवत् य स्थिति में संयोग होने से निष्पन्न रेवत्य प्रातिपदिक से सु विभक्तिकार्य हुआ और **रेवत्यम्** रूप बना।

पाठगत प्रश्न-18.2

1. **रात्रेश्चाजसौ** से कोन सा प्रत्यय होता है ?
2. हैमन्तिकम् में कौन सा प्रत्यय हुआ ?
3. वर्षासु भवम् ऐसे अर्थ में क्या रूप होगा? और कौन सा प्रत्यय है ?
4. वेद में ङीष-प्रत्यय विधायक एक सूत्र लिखो ?
5. नित्यं छन्दसि इसका क्या अर्थ है ?
6. दूत्यम् में किस सूत्र से यत् प्रत्यय हुआ ?
7. सगभ्र्यः का विग्रह लिखो
8. भसंज्ञाविधायक एक सूत्र लिखो।
9. पाथोनदीभ्यां ड्यण् इस सूत्र का अर्थ लिखो।
10. मेघ्यः में यत्-प्रत्यय विधायक सूत्र क्या है ?
11. हैमन्तिकम् और वासान्तिकम् में यथाक्रम ठञ्-प्रत्यय विधायक सूत्र लिखो।
12. रेवत्यम् में कौनसा प्रत्यय है ? और किस सूत्र से होता है ?

पाठ सार

इस पाठ में ये विषय आलोचित हैं। वेद विषय में पदबन्ध और आशङ्का में लेट्-

टिप्पणी

लकार होता है। वेद में हौ परे रहते हल् के उत्तर श्ना-प्रत्यय तो हो ही साथ ही शायच्- प्रत्यय भी होता है। **व्यत्ययो बहुलम्** सूत्र से वेड में विकरणप्रत्ययों का विकल्प से व्यत्यय होता है। **छन्दस्युभयथा** सूत्र से धात्वधिकार में उक्त प्रत्यय सार्वधातुकसंज्ञक भी होते है और आर्धधतुकसंज्ञक भी होते है। **तुमर्थे से....** इत्यादिसूत्र से से, सेन्, असे- इत्यादि प्रत्यय होते है। द्यृशे **विख्ये च** सूत्र से वेद में द्यशे विख्ये दो रूप निपातन किये जाते है। **शकि णमुल्कमुलौ** इत्यादि सूत्रों से वेद में णमुल्, कमुल्, तोसुन् कसुन्- इत्यादि प्रत्यय होते है। वेद विषय में जस्-भिन्न प्रत्यय परे रहते **रात्रेश्चाजसौ** सूत्र से रात्रि-शब्द से ङीष-प्रत्यय होता है। **नित्यं छन्दसि** सूत्र से बह्वादिभ्य छन्दसि विषय में नित्य ङीष-प्रत्यय होता है। **भुव श्च** इत्यादि सूत्रों द्वारा विभिन्न प्रातिपदिकों से वेद में विशेषरूप से ङीषदिप्रत्यय होते है। **छन्दसि ठञ्** इत्यादि सूत्रों द्वारा वर्षा इत्यादि प्रातिपदिकों से विभिन्न अर्थों में ठञादि तद्धितप्रत्यय होते है।

पाठान्त प्रश्न

1. गृभाय रूप बनाओ।
2. **छन्दस्युभयथा** सूत्र की व्याख्या करो।
3. द्यृशे और विख्ये रूप बनाओ।
4. अपलुम्प और विभाज म् रूप ससूत्र बनाओ।
5. **ईश्वरे तोसुन्कसुनौ** सूत्र की व्याख्या करो।
6. रात्री रूप सिद्ध करो।
7. विभ्वी और प्रभ्वी रूप सिद्ध करो।
8. दीर्घजिह्वी रूप सिद्ध करो।
9. वासन्तिकम् रूप सिद्ध करो।
10. हैमन्तिकम् रूप सिद्ध करो।
11. वार्ध्री रूपम् सिद्ध करो।
12. **ढश्छन्दसि** सूत्र की व्याख्या करो।
13. पाथ्यः रूप सिद्ध करो।
14. रैवत्यम् रूप बनाओ।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तरकूट-8.1

1. णमुल्-प्रत्यय।
2. तुमर्थ में।
3. साधु।
4. धात्वाधिकार में उक्त प्रत्यय सार्वधातुक और आर्धधातुक उभयसंज्ञक हो।
5. **छन्दसि शायजपि** से शायच्-प्रत्यय।

उत्तरकूट-8.2

1. ङीप्।
2. ठञ्।
3. वार्षिकम्। ठञ्।
4. **दीर्घजिह्वी च छन्दसि।**
5. **बह्वादिभ्यश्छन्दसि** विषय में नित्य ङीष्।
6. दूतस्य भागकर्मणी।
7. सगर्भे भवः इति।
8. **यचि भम्**।
9. पाथस् और नदी प्रातिपदिकों से वेद विषय में भव अर्थ में ड्यण्-प्रत्यय हो।
10. भव अर्थ में वेद विषय में।
11. हेमन्ताच्च और वसन्ताच्च।
12. यत्प्रत्यय, **रेवतीजगतीहविष्याभ्यः प्रशस्ये** सूत्र से।

अठ्ठारवाँ पाठ समाप्त

19

अष्टाध्यायी का चतुर्थ अध्याय

इस पाठ में अष्टाध्यायी के चौथे अध्याय के कुछ सूत्रो की प्रमुख रूप से व्याख्या करेंगे। और दो तीन पांचवे अध्याय के भी। पूर्व पाठ में आप लेट्-लकार का भी और कसुन्-ङीप्-ङीष्-ऊङ्-ठञ्-मयट्-ढ-ङ्यण्-यत् इत्यादि प्रत्ययो के प्रयोग से जाना है। इस पाठ में यत्-ञ-यल्-घ-तातिल्-अञ्-वति इत्यादि विशिष्टम् तद्धित प्रत्ययो के विषय में आलोचना करेंगे। उनमें किस शब्द का किस अर्थ में प्रयोग होता है यह भी यहाँ प्रतिपादित करेंगे। यहाँ मत्वर्थ में मासतन्वोः, मधोर्ञ च, ओजसोऽहनि यत्खौ, वेशोयशआदेर्भगाद्यल्, ख च, सोममर्हति यः इत्यादि विशेष सूत्रों की व्याख्या करेंगे। वैदिक शब्दों को और लौकिक रूपों को भी यहाँ प्रदर्शित करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- वेद में मत्वर्थ प्रातिपदिक से कौन से प्रत्ययो का विधान होता है यह जान पाने में;
- मासतन्त्वोः अर्थ प्रातिपदिक से कौन से प्रत्यय होते है यह जान पाने में;
- विशिष्ट तद्धितप्रत्ययो का परिचय प्राप्त कर पाने में;
- तद्धितान्तशब्दो की प्रक्रिया को जान पाने में।

19.1 मत्वर्थे मासतन्वोः॥ (4.4.128)

सूत्रार्थ- मास और तनू प्रत्ययार्थ विशेषण हो तो मत्वर्थ प्रातिपदिक से यत् प्रत्यय होता है छन्द विषय में।

टिप्पणी

सूत्र अवतरण- नभः अस्ति अस्मिन् ऐसा विग्रह करने पर यत्-प्रत्ययविधान के लिए इस सूत्र की रचना की।

सूत्र व्याख्या- यह विधिसूत्र। इस सूत्र में दो पद है। मत्वर्थे यह सप्तम्यन्त पद है। मासतन्वोः यह सप्तमी द्विवचनान्त पद है। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति आ रही है। प्राग्घिताद्यत् इस सूत्र से यत् इसकी अनुवृति आती है। ङ्याप्प्रातिपदिकात् इस सूत्र से प्रातिपदिकात् इस पञ्चम्यन्त पद की अनुवृति आती है। प्रत्ययः परः इन दो पद का यहाँ अधिकार है। तद्धिताः इसका अधिकार है। और उसका प्रथमा एकवचनान्त से विपरिणाम है। ''छन्दसि मासतन्वोः प्रातिपदिकात् तद्धितः यत् प्रत्ययः परः'' यह पदयोजना है। और उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द विषय में मास तनू अर्थ का वर्तमान प्रातिपदिक से मत्वर्थ में यत्-प्रत्यय होता है।

उदाहरण- नभस्यः (भाद्रपदः)। ओजस्या (तनूः)।

सूत्रार्थ का समन्वय- नभस्- शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने से और उस नभस्- प्रातिपदिक से नभः अस्मिन् अस्ति इति विग्रह करने पर प्रकृतसूत्र से यत्-प्रत्यय करने पर नभस् यत् इस स्थिति में यत्-प्रत्ययान्त्य के तकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा करने पर तस्य लोपः इस सूत्र से उसकी इत्संज्ञक तकार का लोप होने पर नभस् य इस स्थिति में संयोग करने पर नभस्य इस शब्द स्वरूप का कृत्प्रत्ययान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिकसंज्ञा। उसके बाद ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङ सिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादि प्रत्ययो प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यये करने पर नभस्य सु इस स्थिति में अनुनासिकत्वेन पाणिनीयैः प्रतिज्ञा के अनुसार उस सुप्रत्ययान्त के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा और तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक उकार का लोप होने पर नभस्य स् ऐसा होने पर समुदाय का सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् इससे उसकी पदसंज्ञा होने पर तदन्त सकार के स्थान पर ससजुषो रुः इससे रु- यह आदेश हुआ और अनुबन्धलोप होने पर नभस्य र् यह हुआ समुदाय के अन्त्य रेफ के स्थान पर खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश होने पर और सभी वर्णो के मिलान करने पर नभस्यः यह रूप सिद्ध होते है।

19.2 मधोर्ञ च॥ (4.4.129)

सूत्रार्थ- मधुप्रातिपदिक से मत्वर्थ में मास और तनू को ञ और यत प्रत्यय होता है।

सूत्र अवतरण- मधु अस्ति अस्मिन् इस विग्रह करने पर मधुशब्द से ञ प्रत्यय विधान करने के लिए और यत्-प्रत्ययविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई।

टिप्पणी

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। मधोः यह पञ्चम्यन्त पद है। ञः यह प्रथमान्त पद है। च यह अव्ययपद है। मत्वर्थे मासतन्वोः इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृति आ रही है। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति आती है। प्राग्घिताद्यत् इस सूत्र से यत् इस की अनुवृति आती है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परः इनका अधिकार है। तद्धिता इसका अधिकार है। इस प्रकार यहाँ पदयोजना- छन्दसि मत्वर्थे मासतन्वोः मधोः ञ यत् च तद्धितः प्रत्ययः परः इति। यहाँ मासतन्वोः इस पद से उनका बोध कराने वाले अर्थो को जानना चाहिए। और उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द विषय में मधु प्रातिपदिक से परे मत्वर्थ तद्धित ञ प्रत्यय और यत्प्रत्यय परे हो मास और तनू अर्थ में है।

उदाहरण- माधवः मधव्यः चेति।

सूत्र अर्थ का समन्वय- मधु- शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इससे प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और मधु अस्मिन् अस्ति यह विग्रह करने पर प्रकृतसूत्र से ञ- प्रत्यय करने पर ञ- प्रत्यय के आदि ञकार की चुटू इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर और तस्य लोपः इस सूत्र से उसकी इत्संज्ञक ञकार का लोप होने पर मधु अ ऐसे होने पर तद्धितेष्वचामादेः इस सूत्र से मधु- शब्द के आदि अच अकार की वृद्धि स्थान आन्तर्य से आकार करने पर माधु अ ऐसी स्थिति में ओर्गुणः इस सूत्र से उकार का गुण स्थान आन्तर्य से ओकार माधे अ इस स्थिति में एचोऽयवायावः इस सूत्र से ओकार के स्थान पर अव आदेश होने पर माधव् अ इस स्थिति में सभी वर्णों के मिलान करने से निष्पन्न माधव इस शब्दस्वरूप की तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा। उसके बाद ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्ययो में प्राप्त प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करने पर माधव सु इस स्थिति में अनुनासिकत्वेन पाणिनीयैः प्रतिज्ञा के अनुसार सु प्रत्ययान्त के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक उकार का लोप होने पर माधव स् ऐसी स्थिति में समुदाय का सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् इससे उसकी पदसंज्ञा होने पर उसके अन्त्य सकार के स्थान में ससजुषो रुः इससे रु- यह आदेश और अनुबन्धलोप होने पर माधव र् ऐसी स्थिति में समुदाय के अन्त्य रु के स्थान में खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश होने पर सभी वर्णों को मिलाने पर **माधवः** यह रूप सिद्ध होता है।

मधु- शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इससे प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर। उसके बाद मधु अस्ति अस्मिन् ऐसा विग्रह करने पर मधुशब्द से प्रकृतसूत्र से यत्- प्रत्यय करने पर मधु यत् इस स्थिति में यत्- प्रत्ययान्त्य के तकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्यंज्ञा होने पर तस्य लोपः इस सूत्र से उस इत्संज्ञक तकार का लोप होने पर मधुय इस स्थित और उकार को गुण ओकार करने पर मधे य इस स्थिति में वान्तोयि प्रत्यये इस सूत्र से ओकार के स्थान में अव आदेश करने पर संयोग निष्पन्न

करने पर मधव्य शब्द का तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर उसके बाद ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करने पर मधव्य सु इस स्थिति में अनुनासिकत्वेन पाणिनीयैः प्रतिज्ञा के अनुसार सु प्रत्ययान्त के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इस सूत्र से इत्संज्ञा करने पर और तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक उकार का लोप होने पर मधव्य स् इस स्थिति में समुदाय की सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् इससे उस पदसंज्ञा के अन्त्य सकार के स्थान में ससजुषो रुः इससे रु- आदेश और अनुबन्धलोप करने पर मधव्य र् इस स्थिति में समुदाय के अन्त्य रेफ के स्थान पर खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश करने पर और सभी वर्णों को मिलाने पर मधव्यः यह रूप सिद्ध होता है।

19.3 ओजसोऽहनि यत्खौ॥ (4.4.130)

सूत्रार्थ- ओजस्-प्रातिपदिक से मत्वर्थ में दिन अभिधेय होने पर यत्-खौ प्रत्यय होता है।

सूत्र का अवतरण- ओजः प्रकाशः अस्ति अस्मिन् ऐसा विग्रह करने पर यत्-प्रत्यय विधान के लिए और ख प्रत्यय विधान के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्रव्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से यत्-प्रत्यय और ख-प्रत्यय का विधान करते है। इस सूत्र में तीन पद है। ओजसः यह पञ्चम्यन्त पद है। अहनि यह सप्तम्यन्त पद है। मत्वर्थे मासतन्वोः इस सूत्र से मत्वर्थे इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति आती है। यत्खौ यह प्रथमान्त पद है। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस विषयसप्तम्यन्त पद की अनुवृति आती है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परः इन तीन सूत्रो को यहाँ अधिकार है। इस प्रकार यहाँ पदयोजना है- छन्दसि मत्वर्थे अहनि ओजसः प्रातिपदिकात् यत्खौ प्रत्ययः परः इति। और सूत्र का अर्थ होता है छन्द विषय में अहनि (दिन) अर्थ में ओजस्प्रातिपदिक से यत्-खौ मत्वर्थीय प्रत्यय परे होते हैं।

उदाहरण- ओजस्यम्, ओजसीनम् चेति।

सूत्र अर्थ का समन्वय- ओजस्- शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा और ओजः (प्रकाशः) अस्ति अस्मिन् इस प्रकार विग्रह करने पर प्रकृतसूत्र से यत्-प्रत्यय करने पर ओजस् यत् इस स्थिति में हलन्त्यम् इस सूत्र से यत्-प्रत्ययान्त तकार की इत्संज्ञा और तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक तकार का लोप होने पर ओजस् य इस स्थिति में संयोग करने पर निष्पन्न ओजस्यशब्द का तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिकसंज्ञा और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टा-भ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसि-भ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन

टिप्पणी

की विवक्षा में सु प्रत्यय करने पर ओजस्य सु इस स्थिति में ओजस्- शब्द की नपुंसकलिङ्ग वर्तमान और अदन्त होने से अतोऽम् इस सूत्र से ओजस्य अम् इस स्थिति में अम्-इसकी विभक्तिश्च इससे विभक्तिसंज्ञक होने से न विभक्तौ तुस्माः इस निषेधसूत्र के कारण से हलन्त्यम् इस सूत्र से उस मकार की इत्संज्ञाभाव में ओजस्य अम् इस स्थिति में अमि पूर्वः इससे पूर्वरूप एकादेश होने पर अकार सभी वर्णों को मिलान करने पर **ओजस्यम्** यह रूप सिद्ध होता है।

ओजस्- शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा और ओजः प्रकाशः अस्ति अस्मिन् इस प्रकार विग्रह करने पर प्रकृतसूत्र से उस ख- प्रत्यय को करने पर ओजस् ख इस स्थि ति में आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् इस सूत्र से खकार के स्थान में ईन् आदेश होने पर ओजस् ईन् अ इस स्थिति में वर्णों को मिलाने पर निष्पन्न ओजसीन इस शब्दस्वरूप की तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधि कार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादि प्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय ओजसीन सु इस स्थिति में ओजस् शब्द की क्लीबलिङ्ग में वर्तमान और अदन्त होने से अतोऽम् इस सूत्र से ओजसीन अम् इस स्थिति में अम्-इसकी विभक्तिश्च इससे और स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ इस परिभाषा से विभक्ति संज्ञक होने से न विभक्तौ तुस्माः इस निषेधसूत्र के कारण हलन्त्यम् इस सूत्र कसे उस मकार की इत्संज्ञा अभाव में ओजसीन अम् यह हुआ इस स्थिति में अमि पूर्वः इससे पूर्वरूप एकादेश अकार होने पर और सभी वर्णों को मिलाने से ओजसीनम् यह रूप सिद्ध होता है।

19.4 वेशोयशआदेर्भगाद्यल्॥ (4.4.131)

सूत्रार्थ- वेश-यश-आदि भग प्रातिपदिक से मत्वर्थ में यल् हो।

सूत्र का अवतरण- वेशोभगप्रातिपदिक से और यशोभगप्रातिपदिक से यल्-प्रत्ययविधान के लिए इस सूत्र की रचना की।

सूत्रव्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। वेशोयशआदेः यह पञ्चम्यन्त पद है। भगात् यह पञ्चम्यन्त पद है। भग इस पद का अर्थ श्री, काम, माहात्म्य, शक्ति, कीर्तिरूप अर्थ है। यल् यह प्रथमान्त पद है। वेशश्च यशश्च वेशयशसी, ते आदौ यस्य स वोशोयशआदिः, तस्मात् वेशोयशआदेः। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति आती है। मत्वर्थे मासतन्वोः इस सूत्र से मत्वर्थे इस पद की अनुवृति है। प्रातिपदिकात् इस पञ्चम्यन्त पद की अनुवृति है। प्रत्ययः, परश्च इनका यहाँ अधिकार है। उससे पदों का अन्वय होता है- छन्दसि मत्वर्थे वेशोयशआदेः भगात् प्रातिपदिकात् यल् प्रत्ययः परः इति। और उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में मत्वर्थ वेश यश आदि भग प्रातिपदिक से यल्-प्रत्यय परे होता है।

उदाहरण में सूत्र अर्थ का समन्वय- वेशोभग- शब्द का समासान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और वेशोभगो विद्यते यस्य स इस विग्रह करने पर प्रकृतसूत्र से यल्-प्रत्यय करने पर वेशोभग यल् इस स्थिति में हलन्त्यम् इस सूत्र से यल्- प्रत्ययान्त्य के लकार की इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इससे उस की इत्संज्ञक लकार का लोप होने पर वेशोभग य इस स्थिति में यचि भम् इससे वेशोभग इसकी भ संज्ञा होने पर तदन्त अकार का यस्येति च इससे लोप होने पर वेशोभग् य इस स्थिति में संयोग निष्पन्न करने पर वेशोभग्य इस शब्दस्वरूप का तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इस अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टा-भ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसि-भ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्ष में सु प्रत्यय करने पर वेशोभग्य सु इस स्थिति में अनुनासिकत्वेन पाणिनीयैः प्रतिज्ञा के अनुसार सु प्रत्ययान्त के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक उकारस्य का लोप होने पर वेशोभग्य स् इस स्थिति में समुदाय सुबन्त की सुप्तिङन्तं पदम् इससे उसकी पदसंज्ञा होने पर तदन्त सकार के स्थान पर ससजुषो रुः इससे रु- इसका आदेश होने पर और अनुबन्धलोप होने पर वेशोभग्य र् इस स्थिति में समुदाय के अन्त्य रेफ के स्थान पर खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश होने पर सभी वर्णों का मिलान करने पर वेशोभग्यः यह रूप सिद्ध होता है।

यशोभग- इस शब्द के समासान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और यशोभगो विद्यते यस्य स यह विग्रह करने पर प्रकृतसूत्र से यल्-प्रत्यय करने पर यशोभग यल् इस स्थिति में हलन्त्यम् इस सूत्र से यल्- प्रत्ययान्त्य के लकार की इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक लकार का लोप होने पर यशोभग य इस स्थिति में यचि भम् इससे यशोभग इसकी भसंज्ञा होने पर उस अकार की यस्येति च इससे लोप होने पर यशोभग् य इस स्थिति में संयोग से निष्पन्न होने पर यशोभग्य इस शब्दस्वरूप का तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान से स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय करने पर यशोभग्य सु इस स्थिति में अनुनासिकत्वेन पाणिनीयैः प्रतिज्ञा के अनुसार सुप्रत्ययान्त की उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर और तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक उकार का लोप करने पर यशोभग्य स् इस स्थिति में समुदाय की सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् इससे उसकी पदसंज्ञा होने पर उस सकार के स्थान में ससजुषो रुः इससे रु- यह आदेश होने पर और अनुबन्धलोप करने पर यशोभग्य र् इस स्थिति में समुदाय के अन्त्य रेफ के स्थान में खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश होने पर सभी वर्णों के मिलान करने पर **यशोभग्यः** यह रूप सिद्ध होता है।

टिप्पणी

19.5 ख च॥ (4.4.132)

सूत्रार्थः- वेशोयशआदि प्रातिपदिक से मत्वर्थ में ख-प्रत्यय होता है।

सूत्र का अवतरण- वेशोभगो विद्यते यस्य स इस विग्रह में विद्यमान होने से वेशोभगप्रातिपदिक से ख प्रत्ययविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। ख यह अव्ययपद है। च यह अव्ययपद है। वेशोयशआदेर्भगाद्यल् इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृति आ रही है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परः इनका अधिकार है। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति आ रही है। मत्वर्थे मासतन्वोः इस सूत्र से मत्वर्थे इस पद की अनुवृति आती है। तद्धिताः इसकी अनुवृति आ रही है। सूत्र का अर्थ ही वेशोयशआदि प्रातिपदिक से भगात् तद्धित से ख-प्रत्यय परे हो छन्द विषय में।

उदाहरण- वेशोभगीनः, यशोभगीनः चेति।

सूत्र अर्थ का समन्वय- वेशोभग- शब्द का समासान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और वेशोभगो विद्यते यस्य स इसे विग्रह करने पर प्रकृतसूत्र से खप्रत्यय करने पर वेशोभग ख इस स्थिति में आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादि नाम् इस सूत्र से खकार स्थान पर ईन्- यह आदेश होने पर वेशोभग ईन् अ इस स्थिति में यचि भम् इस सूत्र से वेशोभगशब्द के अन्त्य अकार की भसंज्ञा होने पर यस्येति च इस सूत्र से उसके लोप होने पर वर्णसम्मेलन करने पर निष्पन्न वेशोभगीन इस शब्दस्वरूप की तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त में प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय करने पर वेशीभगीन सु इस स्थिति में अनुनासिक होने से पाणिनीयैः प्रतिज्ञातस्य सुप्रत्ययान्त के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक उकार के लोप होने पर वेशोभगीन स् इस स्थिति में समुदाय सुबन्त की सुप्तिङन्तं पदम् इससे उसकी पदसंज्ञा होने पर उस सकार के स्थान में ससजुषो रुः इससे रु- यह आदेश होने पर अनुबन्धलोप करने पर वेशोभगीन र् इस स्थिति में समुदाय के अन्त्य रु के स्थान में खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश होने पर और सभी वर्णों के मिलान करने पर **वेशोभगीनः** यह रूप सिद्ध होता है।

इसी प्रकार **यशोभगीनः** इत्यादि में भी जानना चाहिए।

19.6 सोममर्हति यः॥ (4.4.137)

सूत्र का अर्थ- द्वितीयान्त समर्थ सोमप्रातिपदिक से अर्हति इस अर्थ में य प्रत्यय हो।

टिप्पणी

सूत्र का अवतरण- सोमम् अर्हति इस विग्रह में सोम शब्द से य प्रत्यय विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। सोमम् यह द्वितीयान्त पद है। अर्हति यह क्रियापद है। यः यह प्रथमान्त पद है। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति आ रही है। प्रातिपदिकात् इस पञ्चम्यन्त पद की यहाँ अनुवृति आती है। प्रत्ययः परश्च इन दो पद का यहाँ अधिकार है। मत्वर्थे मासतन्वोः इस सूत्र से मत्वर्थे इस पद की अनुवृति आती है। तद्धिताः इसकी अनुवृति है। इस प्रकार यहाँ पदयोजना- छन्दसि सोममर्हति प्रातिपदिकात् यः तद्धितः प्रत्ययः परः इति। और सूत्र का अर्थ होता है सोम अर्हति इस अर्थ में द्वितीयान्त समर्थ सोम प्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक यप्रत्यय परे होता है।

उदाहरण में सूत्र अर्थ का समन्वय- सोमशब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इससे प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और सोममर्हति यह विग्रह करने पर द्वितीयान्त सोमप्रातिपदिक से अर्हति अर्थ में प्रकृतसूत्र से य प्रत्यय करने पर सोम य इस स्थिति में यचि भम् इससे सोम शब्द की भ संज्ञा होने पर यस्येति च इससे सोम शब्द के अन्त्य अकार का लोप होने पर संयोग करने पर निष्पन्न सोम्यप्रातिपदिक के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय करने पर सोम्य सु इस स्थिति में अनुनासिकत्वेन पाणिनीयैः प्रतिज्ञात के अनुसार सुप्रत्ययान्त के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर और तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक उकार का लोप होने पर सोम्य स् इस स्थिति में समुदाय के सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् इससे उसकी पदसंज्ञा होने पर तदन्त सकार के स्थान पर ससजुषो रुः इससे रु यह आदेश होने पर और अनुबन्धलोप होने पर सोम्य र् इस स्थिति में समुदाय के अन्त्य रेफ के स्थान में खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश होने पर सभी वर्णों के मिलान करने पर **सोम्यः** यह रूप सिद्ध होता है।

19.7 वसोः समूहे च॥ (4.4.140)

सूत्र का अर्थ- वसु प्रातिपदिक से समूह तथा मयट के अर्थ में यत् प्रत्यय हो।

सूत्र का अवतरण- वसु प्रतिपदिक समूह अर्थ में और मयट अर्थ में यत्-प्रत्ययविधान के लिए इस सूत्र की रचना आचार्य भगवान पाणिनि ने की।

सूत्र की व्याख्या- यह त्रिपदात्मक विधिसूत्र है। वसोः यह पञ्चम्यन्त पद है। समूहे यह सप्तम्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। चकार बल से मयट अर्थ में भी यत्-प्रत्यय

होता है, यह अर्थ भी प्राप्त होता है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परः इनके अधिकार में है। मये च इस सूत्र से मये इसकी अनुवृति आ रही है। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति आती है। मत्वर्थे मासतन्वोः इस सूत्र से मत्वर्थे इस पद की अनुवृति आ रही है। तद्धिताः इसकी अनुवृति आती है। उससे सूत्र का अर्थ होता है वसुप्रातिपदिक से समूह अर्थ में और मयट अर्थ में तद्धितसंज्ञक यत्-प्रत्यय हो।

उदाहरण- वसव्यः।

सूत्र अर्थ का समन्वय- वसु शब्द देवतावाची और धनवाची भी होता है। देववाचक वसु शब्द से समूह अर्थ की विवक्षा में अण्प्रत्यय प्राप्त होने पर धनवाचक वसु शब्द से समूह अर्थ की विवक्षा में अचित्तहस्तिधेनोष्ठक् इस सूत्र से ठक्प्रत्यय प्राप्त होने पर प्रकृतसूत्र से दोनों को बाधकर यत्-प्रत्यय करने पर वसु यत् इस स्थिति में अनुबन्ध लोप होने पर वसु य इस स्थिति में ओर्गुणः इससे उकार को गुण ओकार करने पर वसो य इस स्थिति में वान्तो यि प्रत्यये इससे ओकार के स्थान पर अवादेश करने पर वसव् य इस स्थिति में संयोग निष्पन्न होने से वसव्य प्रातिपदिक से सुप्रत्यय करने पर विभक्तिकार्य में वसव्यः यह रूप बनता है।

पाठगत प्रश्न-19.1

1. मत्वर्थे मासतन्त्वोः इससे किस अर्थ में यत्-प्रत्यय का विधान है।
2. मधोर्ञ इस सूत्र से क्या प्रत्यय होता है।
3. मधुशब्द की प्रातिपदिक संज्ञा विधायक सूत्र क्या है।
4. नभस्यः इसका क्या अर्थ है।
5. नभस्य इस स्थिति में प्रातिपदिक संज्ञाविधायक सूत्र लिखो।
6. नभस्यः यहाँ पर सुप्प्रत्ययविधायक सूत्र लिखो।
7. मधुशब्द से मत्वर्थ में ञ प्रत्ययविधायक सूत्र क्या है।
8. ओजस्य इसका क्या अर्थ है।
9. मत्वर्थ में यल्प्रत्यविधायक सूत्र क्या है।
10. वेशोभगीनः यहाँ पर किस सूत्र से क्या प्रत्यय होता है।
11. सोममर्हति यः यहाँ पर किससे य प्रत्यय किया गया है।
12. वसोः समूहे च इस सूत्र में चकार बल से क्या सिद्ध होता है।

टिप्पणी

19.8 नक्षत्राद्घः॥ (4.4.141)

सूत्र का अर्थ- नक्षत्र प्रातिपदिक से घ हो छन्द में और स्वार्थ में।

सूत्र का अवतरण- नक्षत्र प्रातिपदिक से छन्द में घ-प्रत्यय विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र दो पद वाला है। नक्षत्रात् घः यह सूत्र में आये पदच्छेद। नक्षत्रात् यह पञ्चम्यन्त पद है। घः यह प्रथमान्त पद है। प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परः इनका अधिकार है। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति है। नक्षत्रात् यहाँ पञ्चमी श्रवण से तस्मादित्युत्तरस्य इस परिभाषा से पर का अर्थ प्राप्त होता है। यहाँ किस अर्थ में घ-प्रत्यय हो इसका यहाँ पर निर्देश नही किया गया है। इसलिए यह प्रत्यय अनिर्दिष्ट है। उस अनिर्दिष्ट प्रत्यय से स्वार्थ में होता है इस नियम से घ प्रत्यय यहाँ स्वार्थ में होता है। अर्थात् घ प्रत्यय जिस प्रातिपदिक से किया जाता है उसी प्रातिपदिक के अर्थ में ही वह होता है। तद्धिता इसकी अनुवृति आती है। इसलिए इस सूत्र का अर्थ होता है छन्द में नक्षत्र प्रातिपदिक से परे तद्धितसंज्ञक घ प्रत्यय स्वार्थ में होता है।

उदाहरण- नक्षत्रियः।

सूत्र अर्थ का समन्वय– नक्षत्रप्रातिपदिक से प्रकृतसूत्र से घ-प्रत्यय करने पर नक्षत्र घ यह स्थिति होती है। वहा यथासंख्यमनुदेशः समानाम् इस परिभाषा से परिष्कार करने पर आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् इस सूत्र से घकार के स्थान में इय् यह आदेश होने पर नक्षत्र इय् अ इस स्थिति में यचि भम् इस सूत्र से नक्षत्र शब्द की भ संज्ञा होने पर यस्येति च इस सूत्र से रकार उत्तर अकार का लोप करने पर और संयोग करने पर निष्पन्न नक्षत्रिय- शब्दस्वरूप के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उस प्रातिपदिक संज्ञा करने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्यय, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करने पर नक्षत्रिय सु इअ स्थिति में अनुनासिकत्वेन पाणिनीयैः प्रतिज्ञा के अनुसार सुप्रत्ययान्त्य के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इससे उस इत्संज्ञक उकार का लोप होने पर नक्षत्रिय स् इस स्थिति में समुदाय के सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् इससे उस पदसंज्ञा के तदन्त सकार के स्थान पर ससजुषो रुः इससे रु- आदेश होने पर और अनुबन्धलोप करने पर नक्षत्रिय र् इस स्थिति में समुदाय के अन्त्य रेफ के स्थान में खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश करने पर सभी वर्णों के मिलान करने पर **नक्षत्रियः** यह रूप सिद्ध होता है।

टिप्पणी

19.9 सर्वदेवात्तातिल्॥ (4.4.142)

सूत्रार्थ- सर्व और देव प्रातिपदिक से छन्द में तातिल्-प्रत्यय हो।

सूत्र का अवतरण- सर्वप्रातिपदिक से और देवप्रातिपदिक से तातिल्-प्रत्यय विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्र की व्याख्या- इस सूत्र में दो पद है। सर्वदेवात् तातिल् यह सूत्र में आये पदच्छेद है। सर्वदेवात् यह पञ्चम्यन्त पद है। सर्वश्च देवश्च इति सर्वदेवम् तस्मात् सर्वदेवात् इति समाहारद्वन्द्वसमास। तातिल् प्रथमान्त पद है। ङ्याप्प्रातिपदिकात् इस सूत्र से प्रातिपदिकात् इस पञ्चम्यन्त पद की अनुवृति है। प्रत्ययः, परः इन दोनों का अधिकार है। तद्धिताः इसकी अनुवृति है। भवे छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति। यहाँ किस अर्थ में तातिल्प्रत्यय हो इसका निर्देश नही किया है। इसलिए इस प्रत्यय का अनिर्देश है। उससे अनिर्दिष्ट प्रत्यय स्वार्थ में होते है इस नियम से तातिल्प्रत्यय यहाँ स्वार्थ में होता है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में सर्वप्रातिपदिक से और देवप्रातिपदिक से तद्धितसंज्ञक तातिल्-प्रत्यय स्वार्थ में हो।

उदाहरण- सर्वतातिम्, देवतातिम्।

सूत्र अर्थ का समन्वय– सर्वादिगण में पढ़े हुए सर्वादीनि सर्वनामानि इस सूत्र से सर्वनामसंज्ञक सर्व- शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् इस सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा में उस प्रकृतसूत्र से स्वार्थ में तातिल्-प्रत्यय करने पर सर्व तातिल् इस स्थिति में तातिल्-प्रत्ययान्त्य के लकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इस सूत्र से उस लकार के लोप होने पर सर्व ताति इस स्थिति में संयोग होने पर निष्पन्न सर्वताति शब्दस्वरूप के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इति सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय में प्राप्त में द्वितीया एकवचन की विवक्षा में अम करने पर सर्वताति अम् इस स्थिति में इकार के और अकार के स्थान में अमि पूर्वः इससे पूर्वरूप एकादेश करने पर इकार और सभी वर्णों के मिलान करने पर **सर्वतातिम्** यह रूप सिद्ध होता है।

इसी प्रकार **देवतातिम्** यहाँ पर भी पूर्ववत् प्रक्रिया जाननी चाहिए।

19.10 सप्तनोऽञ्छन्दसि॥ (4.1.61)

सूत्रार्थ- सप्तन प्रातिपदिक से छन्द में तदस्य परिमाण इस अर्थ में अञ् हो।

सूत्रावतरणम्- छन्द में सप्त परिमाण वर्ग अथवा एषामिति विग्रह करने पर सप्तनः प्रातिपदिक से अञ्-प्रत्यय विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। सप्तनः अञ् छन्दसि ये सूत्र में आये पदच्छेद है। सप्तनः यह पञ्चम्यन्त पद है। अञ् यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। पञ्चद्दशतौ वर्गे च इस सूत्र से वर्गे इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। तदस्य परिमाणम् इस सम्पूर्ण सूत्र की यहां अनुवृति आती है। ङ्याप्प्रातिपदिक इस सूत्र से प्रातिपदिकात् इस पञ्चम्यन्त पद की अनुवृति है। प्रत्ययः, परः इन दोनों का अधिकार है। तद्धिताः इसकी अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में सप्तन्-प्रातिपदिक से तदस्य परिमाण इस अर्थ में और वर्ग अर्थ में तद्धितसंज्ञक अञ्-प्रत्यय हो।

उदाहरण- साप्तानि।

सूत्र अर्थ का समन्वय- छन्द में सप्त परिमाणं वर्गो वा एषामिति विग्रह करने सप्तन् इस प्रातिपदिक से प्रकृतसूत्र से अञ्-प्रत्यय करने पर सप्तन् अञ् इस स्थिति में ञकार के हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा करने पर तस्य लोपः इससे तल्लोप करने पर सप्तन् अ इस स्थिति में अचोऽन्त्यादि टि इससे सप्तन के अन्भाग की टि संज्ञा में नस्तद्धिते इससे टी के अन्-इसका लोप होने पर सप्त् अ इस स्थिति में तद्धितेष्वचामादेः इस सूत्र से आदि अच अकार को वृद्धि आकार करने पर साप्त् अ इस स्थिति में संयोग करने पर निष्पन्न साप्त् अ शब्दस्वरूप की तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान से स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से इक्कीस स्वादिप्रत्ययो प्राप्त में प्रथमाबहुवचन की विवक्षा में जस करने पर साप्त जस् इस स्थिति में जस्-शसोः शिः इससे सम्पूर्ण जस्- प्रत्यय के स्थान में शि- आदेश करने पर शि-प्रत्ययादि में शकार की लशक्वतद्धिते इस सूत्र से इत्संज्ञा करने पर तस्य लोपः इस सूत्र से उस शकार के लोप करने पर साप्त इ इस स्थिति में शि- इसकी शि सर्वनामस्थानम् इससे सर्वनामस्थानसंज्ञा होने और नपुंसकस्य झलचः इस सूत्र से साप्त-शब्द की अन्त्य आकार की नुम आगम करने पर नुम्-इसके उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इस सूत्र से इत्संज्ञया करने पर, मकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इस सूत्र से उस मकार अकार के लोप होने पर साप्तन् इ इस स्थिति मंय सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इससे नान्त साप्तन्-शब्द के उपध के अकार की दीर्घ करने पर और सभी वर्णो के मिलान करने पर **साप्तानि** यह रूप सिद्ध होती है।

19.11 संपरिपूर्वात् ख च॥ (5.1.62)

सूत्रार्थ- सं परि पूर्वक वत्सरान्त प्रातिपदिक से छन्द विषय में अधीष्टादि अर्थ में ख और छ प्रत्यय हो।

सूत्र का अवतरण- संवत्सरेण निर्वृत्तः संवत्सरं व्याप्य अधीष्टो भृतो भूतो भावी वा

टिप्पणी

इस विग्रह करने पर संवत्सरप्रातिपदिक से ख-प्रत्ययविधान करने के लिए और छ-प्रत्ययविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की।

सूत्रव्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। संपरिपूर्वात् यह पञ्चम्यन्त पद है। ख यह प्रथमान्त पद है। च यह अव्ययपद है। वत्सरान्ताच्छश्छन्दसि इस सूत्र से वत्सरात् इस पञ्चम्यन्त छन्द इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। तमधीष्टो भृतो भूतो भावी इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृति है। ङ्याप्प्रातिपदिकात् इस सूत्र से प्रातिपदिकात् इस पञ्चम्यन्त पद की अनुवृति है। प्रत्ययः, परः इन दोनों का अधिकार है। सूत्रस्थ चकार बल से छ-प्रत्यय का भी विधान है। और सूत्र का अर्थ होता है अधीष्ट प्रभृति अर्थ में छन्द में वत्सरान्त प्रातिपदिक से - प्रत्यय और छप्रत्यय होता है।

उदाहरण- संवत्सरीणः यह उदाहरण है। संवत्सरेण निर्वृत्तः संवत्सरं व्याप्य अधीष्टो भृतो भूतो भावी वा इस विग्रह में प्रकृतसूत्र से ख-प्रत्यय करने पर ख के स्थान में ईन्-आदेश होने पर संवत्सर ईन् अ इस स्थिति में यचि भम् इससे भसंज्ञा होने पर यस्येति च इससे अकार का लोप होने पर संवत्सर् ईन् अ इस स्थिति में नकार की अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि इससे णकार के संयोग करने पर निष्पन्न संवत्सरीण प्रातिपदिक से सुविभक्ति आदि विभक्ति के कार्य होने पर **संवत्सरीणः** यह रूप बनता है।

19.12 उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे॥ (5.1.118)

सूत्रार्थ- धात्वर्थ विशिष्ट साधन में वर्तमान वति हो।

सूत्रावतरण- धात्वर्थ क्रियाविशिष्ट साधन में वर्तमान उपसर्ग से वति-प्रत्ययविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या- यह विधिसूत्र है। इसमें तीन पद है। उपसर्गात् छन्दसि धात्वर्थे ये सूत्र में आये पदच्छेद है। उपसर्गात् यह पञ्चम्यन्त पद है इसलिए तस्मादित्युत्तरस्य इस परिभाषा से उत्तर यह पद प्राप्त होता है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद यहाँ वैषयिकसप्तमी है। धात्वर्थे यह सप्तम्यन्त पद है। धात्वर्थ क्रिया। तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः इस सूत्र से वति इस पद की अनुवृति है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परः इनका यहाँ अधिकार है। तद्धिताः इसकी अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द विषय में धात्वर्थ क्रिया में अर्थविशिष्टसाधन में उपसर्ग से परे तद्धितसंज्ञक वतिप्रत्यय हो। यह प्रत्यय स्वार्थिक है क्योकि इसका किस अर्थ में विधान करते है इसका निर्देश नहीं किया गया है। इसलिए स्वार्थ में ही वतिप्रत्यय होता है। और सूत्र का अर्थ होता है वेद विषय में धात्वर्थक्रिया विशिष्टसाधन में उपसर्ग से परे तद्धितसंज्ञक वतिप्रत्यय स्वार्थ में हो।

उदाहरण- यद् उद्वतो निवतः इत्युदाहरण।

सूत्र अर्थ का समन्वय– धात्वर्थक्रिया विशिष्टसाधन में प्रकृतसूत्र से वर्तमान उत्-उपसर्ग से वतिप्रत्यय करने पर अनुबन्धलोप करने पर उद्वत् इस स्थिति में प्रातिपदिक ङस्-प्रत्यय

करने पर अनुबन्धलोप करने पर उद्वत् अस् इस स्थिति में सकार को ससजुषो रुः इससे रुत्वेऽनुबन्धलोप करने पर उद्वतर् इस स्थिति में इस सुबन्तसमुदाय की सुप्तिऽन्तं पदम् इससे पदसंज्ञा होने पर पदान्त्य रेफ का खरवसानयोर्विसर्जनीय इससे विसर्ग करने पर उद्वतः यह रूप सिद्ध होता है।

पाठगत प्रश्न-19.2

13. नक्षत्राद्घः इस सूत्र में नक्षत्र शब्द से घ प्रत्यय किस अर्थ में होता है?
14. सर्वदेवात्तातिल् इससे तातिल्प्रत्यय किससे होता है?
15. सप्तनोऽञ्छन्दसि इससे अञ्प्रत्यय किस अर्थ में होता है?
16. सप्तनोऽञ्छन्दसि इस सूत्र का पदच्छेद प्रदर्शित कीजिए?
17. साप्तनि इसका विग्रह क्या है?
18. सम्पूर्वात् ख च इस सूत्र में चकार से किस प्रत्यय का ग्रहण होता है?
19. उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे इससे क्या प्रत्यय होता है?
20. उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे इस सूत्र का पदच्छेद लिखें।

पाठसार

इस पाठ में आपने मत्वर्थ में जो प्रत्यय होते है उस विषय में जाना है। यहाँ यत्-ञ-ख-यल्-घ-तातिल्-अञ्-वति इत्यादि प्रत्ययो के विषय में आलोचना की गई है। यहाँ इन प्रत्ययो का जो विधान करते है उन सूत्रो की भी विशेष रूप से आलोचना की है। उस उस प्रत्यय के द्वारा जो रूप होते है उनके मध्य में प्रसिद्ध प्रक्रिया को भी यहाँ दिखाया गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. नभस्यः इस रूप को सूत्र सहित लिखिए।
2. माधवः इस रूप को सूत्र सहित लिखिए।
3. ओजसीनम् इस रूप को सूत्र सहित लिखिए।
4. वेशोभग्यः इस रूप की सूत्र सहित व्याख्या कीजिए।
5. यशोभगीनः इस रूप को सूत्र सहित लिखिए।
6. सोममर्हति यः इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

टिप्पणी

7. वसव्यः इस रूप की सूत्र सहित व्याख्या कीजिए।
8. नक्षत्राद्धः इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
9. साप्तानि इस रूप की सूत्र सहित व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

19.1

1. मत्वर्थ में।
2. मत्वर्थ में मास और तनू से ञ और यत् प्रत्यय भी होता है।
3. कृत्तद्धितसमासाश्च यह मधु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा विधायक सूत्र है।
4. नभस्य शब्द का मेघयुक्त मास यह अर्थ है।
5. स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् यह यहाँ सुप्प्रत्ययविधायक सूत्र है।
6. कृत्तद्धितसमासाश्च इससे नभस्य की प्रातिपदिक संज्ञाविधायक सूत्र है।
7. मधोर्ञ च इस सूत्र से।
8. दिनम् यह अर्थ है।
9. वेशोयशआदेर्भगाद्यल् इस सूत्र को।
10. ख च इस सूत्र से खप्रत्यय।
11. द्वितीयान्त सोमशब्द से।
12. चकार बल से मयट अर्थ में भी यत्-प्रत्यय सिद्ध होता है।

19.2

13. स्वार्थ में।
14. सर्व प्रातिपदिक से और देवप्रातिपदिक से।
15. परिमाण इस अर्थ में
16. सप्तनोऽञ्छन्दसि इसमें सप्तनः अञ् छन्दसि ये सूत्र में आये पदच्छेद है
17. साप्तनि इत्यस्य छन्दसि सप्त परिमाणं वर्ग वा एषामिति विग्रहः।
18. छ प्रत्यय का ग्रहण।
19. वति प्रत्यय।
20. उपसर्गात् छन्दसि धात्वर्थे ये सूत्र में आये पदच्छेद

उन्नीसवां पाठ समाप्त

20

अष्टाध्यायी का पंचम और षष्ठ अध्याय

इस पाँचवे पाठ में अष्टाध्यायी के पाँचवे और छठे अध्याय के कुछ सूत्रों की व्याख्या करेंगे। पूर्व पाठ में आपने वैदिक व्याकरण में घ-तातिल्-वति इत्यादि प्रत्ययों के प्रयोग को जाना है। प्रस्तुत पाठ में कुछ डट्, मट् इत्यादि आगमनों का विवरण देखेंगे। उनके बारे में जानेंगे। छन्द में बहुव्रीहि विषय में नूतन नियमो को सूत्रव्याख्या सहित प्रतिपादित करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- बहुव्रीहिसम्बन्धि नियमों को जान पाने में;
- खिद्-धातु से विकल्प से एच को आकार विधान करेने के बारे में जान पाने में;
- दीर्घाज्जसि इचि च पूर्वसवर्णदीर्घ के विकल्प को जान पाने में;
- छन्द में दन्त शब्द को बहुव्रीह में दत्-आदेश विधान के बारे में जान पाने में;
- स्य यहाँ पर कब सकार का लोप होता है उस विषय को जान पाने में।

20.1 थट् च छन्दसि॥ (5.2.50)

सूत्रार्थ- संख्यादि में न हो ऐसे नांत संख्यावाची प्रातिपदिक के परे डट थट् और मट् हो।

सूत्रावतरण- छन्द में संख्यावाची प्रातिपदिक से डट थट्-मट् इनको आगम करने के

लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्रव्याख्या- इस विधिसूत्र में तीन पद है। थट् यह प्रथमान्त पद है। च यह अव्ययपद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। तस्य पूरणे डट् इस सूत्र से डट् इस पद की अनुवृति है। और वह षष्ठी के विपरिणाम में है। नान्तादसंख्यादेर्मट् इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृति है। संख्याया: गुणस्य निमाने मयट् इस सूत्र से संख्याया: इस पद की यहाँ अनुवृति है। और उससे इस सूत्र का अर्थ होता है असंख्यादि नान्त संख्यावाचक प्रातिपदिक से परे डट: थट्-मट् आगम होता है।

उदाहरण- पञ्चमम् पञ्चथम् चेत्यादीन्युदाहरणानि।

सूत्रार्थसमन्वय- लोक में संख्यावाचि प्रातिपदिक से विहित डट के स्थान में नान्तादसंख्यादेर्मट् इससे मट्-आगम का विधान होता है। छन्द में तो प्रकृतसूत्र से तो थट्-आगम और मट् आगम का विधान है। और भी पञ्चन् शब्द से डट्प्रत्यय करने पर पञ्चन् अ इस दशा में प्रकृतसूत्र से डट को थट्-आगम करने पर थट्- प्रत्ययान्त्य टकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर और तस्य लोप इस सूत्र से उस लोप के होने पर पञ्चन् थ् अ इस स्थिति में न लोप: प्रातिपदिकान्तस्य इस सूत्र से पञ्चन् शब्द के अन्त्य नकार का लोप होने पर पञ्च थ् अ इस स्थिति में संयोग से निष्पन्न पञ्चथ इस शब्दस्वरूप के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्यय:, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान से स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्यियोस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्ययो प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु प्रत्यय करने पर पञ्चथ सु इस स्थिति में पञ्चथ शब्द की क्लीबलिङ्ग में वर्तमान होने से अतोऽम् इस सूत्र से सुप्रत्यय के स्थान में अम आदेश होने पर पञ्चथ अम् इस स्थिति में अम् इस्की विभक्तिश्च इससे विभक्तिसंज्ञक होने से न विभक्तौ तुस्मा: इस निषेधसूत्र से हलन्त्यम् इस सूत्र से उस मकार की इत्संज्ञा का निषेध करने पर पञ्चथ अम् इस स्थिति में अमि पूर्व: इससे पूर्वरूप एकादेशे होने पर अकार और सभी वर्णो का मिलान करने पर पञ्चथम् यह रूपसिद्ध होता है।

और इसी प्रकार पञ्चन् अ इस दशा में प्रकृतसूत्र से मट्-आगम करने पर मट्-प्रत्ययान्त्य के टकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोप: इस सूत्र से उसके लोप होने पर पञ्चन् म् अ इस स्थिति में न लोप: प्रातिपदिकान्तस्य इस सूत्र से पञ्चन-शब्द के अन्त्य नकार का लोप होने पर पञ्च म् अ इस स्थिति में संयोग करने पर निष्पन्न पञ्चम शब्दस्वरूप के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और उसके बाद ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्यय:, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान से स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्ययो के प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय करने पर पञ्चम सु इस स्थिति में पञ्चथ-शब्द का क्लीबलिङ्ग में वर्तमान

टिप्पणी

होने से अतोऽम् इस सूत्र से सु प्रत्यय के स्थान में अम आदेश होने पर पञ्चम अम् इस स्थिति में अम् इसकी विभक्तिश्च इससे विभक्ति संज्ञा होने से न विभक्तौ तुस्माः इस निषेधसूत्र से हलन्त्यम् इस सूत्र से मकार की इत्संज्ञा का निषेध करने पर पञ्चम अम् इस स्थिति में अमि पूर्वः इससे पूर्वरूप एकादेश अकार करने पर और सभी वर्णों का मिलान करने पर पञ्चमम् यह रूप सिद्ध होता है।

20.2 बहुलं छन्दसि॥ (5.2.122)

सूत्रार्थ- मत्वर्थ में विनि हो।

सूत्रावतरण- अस्-माया-मेधा-स्रजो विनिः इस सूत्र से पढ़े हुए प्रातिपदिक से भिन्न प्रातिपदिक की विनिप्रत्यय विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्राव्याख्या- यह दो पद वाला विधिसूत्र है। बहुलम यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। अस्-माया-मेधा-स्रजो विनिः इस सूत्र से विनिः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति आती है। तदस्यास्त्यस्मिन्निति इस सूत्र की यहाँ अनुवृति है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परः इनका यहाँ अधिकार है। और उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में तदस्यास्त्यस्मिन्निति अर्थ में प्रातिपदिक से बहुल करके विनि प्रत्यय हो।

विशेष- अस्-माया-मेधा-स्रजो विनिः इस सूत्र से कहा गया अस्-आदि शब्दों से ही विनिप्रत्यय का विधान किया। उससे अ अतिरिक्त प्रातिपदिक से विधान नहीं किया। परन्तु इस सूत्र से उससे अतिरिक्त प्रातिपदिक से बहुल करके विनिप्रत्यय का विधान किया। बहुल किसको कहते है-

क्वचित्प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद्विभाषा क्वचिदन्यदेव।
विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति।इति॥

कारिकार्थ– सूत्र के द्वारा कहे गये कार्य की कही पर प्राप्ति नहीं होती है, फिर भी वहा पर प्रवृत्ति हो। कहीं पर प्राप्ति है लेकिन प्रवृत्ति नहीं होती है। और भी कहीं पर विकल्प से प्रवृत्ति होती है। और कहीं पर अन्य ही होता है।

उदाहरण- तेजस्वी इत्युदाहरणम्।

सूत्र अर्थ का समन्वय- तेजस्-शब्दात् अस्-माया-मेध-स्रजो विनिः इससे विनिप्रत्यय का विधान नहीं है। क्योंकि यह शब्द सूत्र में पढ़ा हुआ नहीं है। परन्तु इस सूत्र से तेजस्विन्-शब्द से विनिप्रत्यय का विधान करते है। यहाँ बहुलम्-शब्द का प्रथमा अर्थ का ग्रहण है। तेजस् विनि इस स्थिति मे विनि-प्रत्यय के अन्त्य इकार के अनुनासिक होने से पाणिनीयैः प्रतिज्ञा के अनुसार उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा और तस्य लोपः इस सूत्र से उसका लोप करने पर और संयोग करने पर निष्पन्न तेजस्विन्-शब्दस्वरूप के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्,

टिप्पणी

प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्य स्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय करने पर और सुप्रत्यय के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इस सूत्रे से इत्संज्ञा और उसका तस्य लोपः इस सूत्र से लोप होने पर तेजस्विन् स् इस स्थिति में सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इस सूत्र से इकार को दीर्घ ईकार करने पर तेजस्वीन् स् इस स्थिति में हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् इस सूत्र से सकार के लोप होने पर तेजस्वीन् इस स्थिति में नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य इससे नकार का लोप होने पर तेजस्वी यह रूप बनता है।

20.3 अमु च छन्दसि॥ (5.4.12)

सूत्रार्थ- किम एकारान्त त्तिङन्त तथा अव्ययो से विहित घ आमु अद्रव्यप्रकर्ष में प्रातिपदिक से अमु प्रत्यय हो।

सूत्रावतरणम्- किम एकारान्त त्तिङ अव्यय घ आमु अद्रव्यप्रकर्ष अर्थ में प्रातिपदिक से अमुप्रत्यय विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्राव्याख्या- यह तीन पद वाला विधिसूत्र है। अमु यह लुप्तप्रथमान्त पद है। च यह अव्ययपद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। किमेत्तिङव्ययघादाम्वद्रव्यप्रकर्षे इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृति आती है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः इनका अधिकार है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में किम एकारान्त त्तिङ अव्यय घ आमू अद्रव्यप्रकर्ष अर्थ में अमु प्रत्यय हो।

उदाहरण- प्रतरम् यह उदाहरण है। वहां प्र-उपसर्ग से तरप्-प्रत्यय करने पर तरप्-प्रत्ययान्त्य के पकार की हलन्त्यम् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इससे उसका लोप होने पर और संयोग करने पर निष्पन्न प्रतरशब्द के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा होने पर प्रकर्ष अर्थ में छन्द में प्रकृतसूत्र से अमुप्रत्यय करने पर अनुनासिकत्वेन पाणिनीयैः प्रतिज्ञा के अनुसार अमुप्रत्यय के उकार की इत्संज्ञा होने पर और उसका तस्य लोपः इस सूत्र से उस इत्संज्ञक उकार के लोप होने पर प्रतर अम् इस स्थिति में यचि भम् इससे प्रतर इसकी भसंज्ञा होने पर और यस्येति च इस सूत्र से रेफ से उत्तर अकार के लोप होने पर और संयोग होने पर प्रतरम् यह रूप है। लोक में तो प्रतराम्।

20.4 बहुप्रजाश्छन्दसि च॥ (5.4.123)

सूत्रार्थ- छन्द में बहुव्रीह में बहुप्रजास असिच्-प्रत्ययान्त निपात किया जाता है।

सूत्र का अवतरण- वेद में बहुप्रजास यहाँ पर असिच्-प्रत्ययान्त पद के निपात के लिए

टिप्पणी

इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्रव्याख्या- इस विधिसूत्र में तीन पद है। बहुप्रजाः यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। नित्यमसिच्प्रजा-मेधयोः इस सूत्र से असिच् इसकी अनुवृति है। बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात्षच् इस सूत्र से बहुव्रीहौ इस पद की अनुवृति है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परः इनका अधिकार है। निपात यह आक्षेप से प्राप्त होता है। निपातन किसको कहते है तो सिद्धिप्रक्रिया के निर्देश को ही निपात कहा जाता है। वहा सूत्र का अर्थ होता है छन्द में बहुप्रजास यह शब्द असिच्-प्रत्ययान्त बहुव्रीहि समास में निपातन किया जाता है।

उदाहरण- इस असिच्-प्रत्ययान्त निपातन का बहुप्रजा-शब्द का प्रयोग वेद में प्राप्त होता है। और इसका प्रयोग **बहुप्रजाः** निर्ऋतिमाविवेश्च यह है। लोक में तो **बहुप्रजः।**

20.5 छन्दसि च।। (5.4.142)

सूत्रार्थ- दन्त को दतृ आदेश हो बहुव्रीहि में।

सूत्र का अवतरण- छन्द में दन्तशब्द को बहुव्रीहि समास में दतृ-आदेश विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्र की व्याख्या- इस विधिसूत्र में दो पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। वयसि दन्तस्य दतृ इस सूत्र से दन्तस्य और दतृ इन दो पद की अनुवृति है। बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात्षच् इस सूत्र से बहुव्रीहौ इस पद की अनुवृति है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परः इनका अधिकार है। और सूत्र का अर्थ होता है छन्द में दन्त शब्द को दतृ आदेश बहुव्रीहि समास में हो।

उदाहरण- उभयतोदतः।

सूत्र अर्थ का समन्वय- उभयतः दन्ताः येषामिति विग्रह करने पर बहुव्रीहिसमास में उभयतस् दन्त इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से अनेकाल्शित्सर्वस्य इस परिभाषा परिष्कार से दन्त इसको दतृ आदेश होने पर उभयतस् दत् इस स्थिति में सकार को रुत्व और उकार करने पर उभयत उ दत् इस स्थिति में संयोग से निष्पन्न होने से उभयतोदत्-प्रातिपदिक से सु विभक्तिकार्य करने पर उभयतोदतः यह रूप सिद्ध होता है।

20.6 ऋतश्छन्दसि।। (5.4.158)

सूत्रार्थ- ऋदन्त बहुव्रीहि से कप् प्रत्यय न हो।

सूत्रावतरणम्- छन्द में ऋदन्त प्रातिपदिक से बहुव्रीहि समास में कप्-प्रत्ययनिषेध के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

टिप्पणी

सूत्रव्याख्या- इस विधिसूत्र में दो पद है। ऋतः छन्दसि ये सूत्रगत पदच्छेद है। ऋतः यह पञ्चम्यन्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। न संज्ञायाम् इस सूत्र से न इस पद की यहाँ अनुवृति है। उरः प्रभृतिभ्यः कप् इस सूत्र से कप् इसकी अनुवृति है। बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात्षच् इस सूत्र से बहुव्रीहौ इस पद की अनुवृति है। प्रातिपदिकात् प्रत्ययः परः इनका अधिकार है। यहा ऋतः प्रातिपदकात् ये दोनों समानविभक्तिक पद है। ऋतः यह विशेषण है। प्रातिपदिकात् यह विशेष्य है। इसलिए येन विधिस्तदन्तस्य इससे तदन्तविधि में ऋदन्तात् प्रातिपदिकात् यह अर्थ प्राप्त होता है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में ऋदन्त प्रातिपदिक से बहुव्रीहि समास में कप्-प्रत्यय नही होता है।

उदाहरण- उभयतोदतः प्रतिगृह्णाति।

सूत्रार्थसमन्वय- उभयतः दन्ताः सन्ति अस्य इस विग्रह में बहुव्रीहिसमास करने पर उत्तरपद दन्तशब्द को दतृ आदेश करने पर और प्रकिया कार्य करने पर उभयतोदतः यह रूप सिद्ध होता है।

20.7 तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य॥ (6.1.7)

सूत्रार्थ- तुजादि धातुओ के अभ्यास को दीर्घ हो।

सूत्रावतरणम्- तुज्-आदि धातुओ के अभ्यास को दीर्घ विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या- इस विधिसूत्र में तीन पद है। तुजादीनाम् दीर्घः अभ्यासस्य ये सूत्रगत पदच्छेद है। तुजादीनाम् यह षष्ठ्यन्त पद है। दीर्घः यह प्रथमान्त पद है। अभ्यासस्य यह षष्ठ्यन्त पद है। अभ्यासः यह एक संज्ञा है। दो बार कहे हुए में पूर्व की पूर्वोऽभ्यासः इससे अभ्याससंज्ञा का विधान है। धातोः इस पद की यहाँ अनुवृति है। और वह षष्ठीबहुवचनान्त से विपरिणाम है। उससे सूत्र का अर्थ होता है तुजादि धातुओं के अभ्यास को दीर्घ हो।

उदाहरण- तुज्-धातु से लिट्-लकार में कानच्-प्रत्यय करने पर और अनुबन्धलोप करने पर तुज् आन इस स्थिति में द्वित्व करने पर तुज् तुज् आन इस स्थिति में पूर्वोऽभ्यासः इस सूत्र से द्विरुक्त पूर्व तुज्-इसकी अभ्याससंज्ञा होने पर हलादिः शेषः इस सूत्र से अभ्यास का आदि हल शेष रहने पर तु तुज् आन इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से अभ्यास उकार ह्रस्व को दीर्घ होने पर तू तुज् आन इस ति स्थिते संयागे निष्पन्नस्य तूतुजान इति शब्दस्वरूपस्य कृदन्तत्वात् कृत्तद्धितसमासाश्च इससे उसकी प्रातिपदिक संज्ञा होने पर और ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च इनके अधिकार में वर्तमान से स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से इक्कीस स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय करने पर सुप्रत्यय के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् इस सूत्र से इत्संज्ञा होने पर

तस्य लोपः इस सूत्र से उसके लोप होने पर तूतुजान स् इस स्थिति में समुदाय के सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् इससे उसकी पदसंज्ञा होने पर तदन्त सकार के स्थान में ससजुषो रुः इससे रु यह आदेश होने पर अनुबन्धलोप होने पर तूतुजान र् इस स्थिति में रेफ से परे वर्णों के अभाव में विरामोऽवसानम् इस सूत्र से अवसान संज्ञा होने पर अवसानपरक होने से समुदाय के अन्त्य रेफ के स्थान में खरवसानयोर्विसर्जनीयः इससे विसर्ग आदेश होने पर और सभी वर्णों के मिलान करने पर तूतुजानः यह रूप सिद्ध होता है।

20.8 बहुलं छन्दसि॥ (6.1.34)

सूत्रार्थ- ह्व को सम्प्रसारण हो।

सूत्र का अवतरण- छन्द में ह्व को बहुल सम्प्रसारण विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्रव्याख्या- यह दो पद वाला विधिसूत्र है। बहुलम यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। ह्वः सम्प्रसारणम् इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृति आती है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में ह्वेञ् स्पर्धायाम् इस धातु से बहुल करके सम्प्रसारण हो।

विशेष- बहुलम् नाम क्या है तो कहते है-

> **क्वचित्प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः क्वचिद्विभाषा क्वचिदन्यदेव।**
> **विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति॥ इति।**

कारिका का अर्थ पूर्व में ही कह दिया है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय- आङ्पूर्वक ह्वेधातु से लट्-लकार में लकार के स्थान में लस्य इस सूत्र के अधिकार में वर्तमान से तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्तातांझथासाथांध्वमिड्वहिमहिङ् इस सूत्र से खले कपोतन्याय से अट्ठारह तिबादिप्रत्ययो में प्राप्त उत्तमपुरुष एकवचन की विवक्षा में इडागम और अनुबन्धलोप होने पर आ ह्वे इस स्थिति में इकार की अचोऽन्त्यादि टि इस सूत्र से टिसंज्ञा होने पर टित आत्मनेपदानां टेरे इससे टिसंज्ञक इकार के स्थान में एत्व एकार होने पर आ ह्वे ए इस स्थिति में कर्तरि शप् इस सूत्र से धातु से शप्प्रत्यय करने पर बहुलं छन्दसि (2.4.73) और इससे शप का लुक होने पर प्रकृतसूत्र से बहुल करके सम्प्रसारण होने पर वकार को उकार होने पर आ ह् उ ए ए इस स्थिति में उकार के और प्रथम-एकार के स्थान में संप्रसारणाच्च इस सूत्र से पूर्वरूप एकादेश होने पर उकार होने पर आ ह् उ ए इस स्थिति में अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ इससे उकार के स्थान में उवङादेश होने पर हलन्त्यम् इस सूत्र से उवङ्-प्रत्ययान्त्य ङकार की इत्संज्ञा होने पर तस्य लोपः इससे इत्संज्ञक ङकार

टिप्पणी

के लोप होने वर्णों के मिलाने पर आहुवे यह रूप सिद्ध होता है।

बहुलम् छन्दसि (6.1.34) इस पूर्वोक्त सूत्र से बहुल करके सम्प्रसारण का विधान करते है। उस बहुल ग्रहण से कही पर सम्प्रसारण नहीं होता है। जैसे ह्वयामि मरुतः शिवान्, ह्वयामि विश्वान् देवान् इत्यादि में सम्प्रसारण का अभाव है।

20.9 खिदेश्छन्दसि॥ (6.1.52)

सूत्रार्थ- छन्द में खिद् धातु को एच के स्थान पर आत्व होता है।

सूत्रावतरण- खिद्-धातु के एच को सविकल्प से आकार विधान करने के किए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्राव्याख्या- यह दो पद वाला विधिसूत्र है। खिदेः छन्दसि ये सूत्र में आये पदच्छेद है। खिदेः यह षष्ठ्यन्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। विभाषा लीयतेः इस सूत्र से विभाषा इस पद की अनुवृति है। आदेच उपदेशेऽशिति इस सूत्र से आत् एचः इन दो पद की अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में खिदे धातु के एच को विकल्प से आत्व हो।

उदाहरण- खिद्-धातु से लिट्-लकार में लकार के स्थान में तिप करने पर और तिप के स्थान पर णलादेश और अनुबन्धलोप होने पर खिद् अ इस स्थिति मर खिद् इसको द्वित्व होने पर खिद् खिद् अ इस स्थिति में द्विरुक्त पूर्वभाग की पूर्वोऽभ्यासः इससे अभ्याससंज्ञा होने पर हलादिः शेषः इससे अभ्यास का आदिहल्शेष रहने पर खि खिद् अ इस स्थिति में अभ्यासे चर्च इससे खकार के स्थान में चकार करने पर चि खिद् अ इस स्थिति में खकार से उत्तर इकार को गुण एकार करने पर चि खेद् अ इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से खेद् इसके एच एकार के स्थान में आकार करने पर सभी वर्णों के मिलान करने पर **चिखाद** यह रूप बनता है। लोक में तो **चिखिदे** यह रूप है।

20.10 शीर्षश्छन्दसि॥ (6.1.60)

सूत्रार्थ- शिरस् शब्द को शीर्षन् हो।

सूत्रावतरण- शिरस् शब्द को शीर्षन् इस निपातन विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की।

सूत्रव्याख्या- इस विधिसूत्र में दो पद है। शीर्षन् यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। निपात्यते यह आक्षेप से प्राप्त होता है। सिद्धिप्रक्रिया का निर्देश ही निपात है। इस प्रकार शीर्षन् यह छन्द में निपातन करते हैं। किसको तो कहते है की शिरःशब्द को। उससे सूत्र का अर्थ होता है शिरस् शब्द को शीर्षन् आदेश छन्द में निपातन से होता है।

टिप्पणी

उदाहरण- इस शब्द का वेद में प्रयोग होता है जैसे शीर्ष्णः शीर्ष्णो जगतः इति।

20.11 वा छन्दसि॥ (6.1.106)

सूत्रार्थ- दीर्घ से उत्तर ज्जस और इच प्रत्याहार के स्थान पर पूर्वसवर्ण दीर्घ विकल्प से हो।

सूत्रावतरण- छन्द में दीर्घ से पूर्वसवर्ण का जस और इच प्रत्यय के स्थान पर दीर्घविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या- यह दो पद वाला विधिसूत्र है। वा यह अव्ययपद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। नादिचि इस सूत्र से इचि इस पद की अनुवृति है। दीर्घाज्जसि च इस सम्पूर्ण सूत्र की यहाँ अनुवृति है। प्रथमयोः पूर्वसवर्णः इस सूत्र से पूर्वसवर्णः इस पद की यहाँ अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में दीर्घ से उत्तर जस और इच प्रत्यय को विकल्प से पूर्वसवर्णदीर्घ हो।

उदाहरण- वाराह्यौ यह उदाहरण। वाराहीशब्द से प्रथमा द्वितीया द्विवचन में औप्रत्यय करने पर वाराही औ इस स्थिति में दीर्घ ईकार से परे इच्प्रत्याहारस्थ औकार है अत प्रकृतसूत्र से पूर्वसवर्णदीर्घ वाराही यह रूप है। पूर्वसवर्ण अभाव में वाराही औ इस स्थिति में इको यणचि इससे ईकार के स्थान में यकार करने पर सर्ववर्णसम्मेलन करने पर वाराह्यौ यह रूप है। लोक मंमं तो पूर्वसवर्णनिषेध करने पर वाराह्यौ यह ही रूप है।

20.12 शेश्छन्दसि बहुलम्॥ (6.1.70)

सूत्रार्थ- छन्द में शि का बहुल करके लोप हो।

सूत्रावतरण- छन्द में शि का बाहुल्य से लोपविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या- यह तीन पद वाला विधिसूत्र है। शेः छन्दसि बहुलम् ये सूत्रगत पदच्छेद है। शेः यह षष्ठ्यन्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। बहुलम यह अव्ययपद है। लोपो व्योर्वलि इस सूत्र से लोपः इस पद की अनुवृति है। भवति इस पद का अध्याहार किया गया है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में शि का बहुल करके लोप हो। बहुलशब्द का अर्थ पूर्व में ही कह दिया है।

उदाहरण- यत्-शब्द का क्लीवलिङ्ग में जस्-प्रत्यय करने पर जस् इस स्थिति में जश्शसोः शिः इससे जस के स्थान में शि-प्रत्यय आदेश होने पर यत् शि इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से बाहुल करके शि का लोप होने पर त्यदादीनामः इससे तकार के स्थान में अकार करने पर य अ इस स्थिति में अतो गुणे इससे पररूप एकादेश करने पर य इस स्थिति

टिप्पणी

में नपुंसकस्य झलचः इससे नुमागम करने पर अनुबन्धलोप होने पर यन् इस स्थिति में सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इससे उपधादीर्घ होने पर नकार के लोप होने पर या यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो यानि यह रूप है।

पाठगत प्रश्न-20.1

1. नान्त आदि संख्या के परे डट को आगम क्या होता है?
2. मत्वर्थ में विनि किससे होता है?
3. बहुप्रजाः इसका निपात विधान किस सूत्र से किया गया है?
4. छन्दसि च इस सूत्र से क्या होता है?
5. ऋतश्छन्दसि इस सूत्र से क्या होता है?
6. छन्द में खिद् धातु के एच को आत्-आदेश वैकल्पिक होता है अथवा नहीं।
7. शिरस्-शब्द को शीर्षन् निपातन किस सूत्र से होता है?

20.13 अङ्ग इत्यादौ च॥ (6.1.119)

सूत्रार्थ– अङ्ग शब्द में जो एङ् और उसके आदि में जो अकार उससे परे रहते पूर्व एङ् उसको प्रकृतिभाव होता है यजुर्वेद में।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्रकृतिवद्भाव का विधान किया है। इस सूत्र में तीन पद है। अङ्ग यह सप्तम्यन्त पद है (यहाँ लोपः शाकल्यस्य इस सूत्र से यकारलोप होने पर)। च यह अव्ययपद है। एङः पदान्तादति इस सूत्र से एङः और अति इन दो पदो की अनुवृति है। प्रकृत्यान्तः पादमव्यपरे इस सूत्र से प्रकृत्या इसकी अनुवृति है। यजुष्युरः इस सूत्र से यजुषि इसकी अनुवृति है। संहितायाम इसका अधिकार है। उससे सूत्र का अर्थ होता है यजुर्वेद विषय में अङ्गशब्द का जो एङ् उसे अति परे प्रकृति हो संहिता में।

उदाहरण- प्राणो अङ्गे अङ्गे अदीव्यत् इत्युदाहरणम्।

सूत्रार्थसमन्वय- प्राणो अङ्गे अङ्गे अदीव्यत् इस उदाहरण में प्राणो अङ्गे इत्यत्र अङ्गे इसमे एङः परे है इसलिए प्रकृतसूत्र से प्रकृतिवद्भाव होता है। अङ्गे अङ्गे यहाँ पर अङ्गे-पद से परे यदि अकार है तो अङ्गे यहाँ पर एङ को प्रकृतिवद्भाव होता है इस अर्थ से प्रकृतिवद्भाव होता है।

20.14 अवपथासि च॥ (6.1.121)

सूत्रार्थ- अनुदात्त अकारादि अवपथाःशब्द परे रहते यजु में एङ् को प्रकृति स्वर होता है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र। इस सूत्र से प्रकृतिवद्भाव का विधान है। इस सूत्र में दो पद है। अवपथासि यह सप्तम्यन्तं पद है। च यह अव्ययपद है। एङः पदान्तादति इस सूत्र से एङः, अति इन दो पद की यहाँ अनुवृति है। प्रकृत्यान्तः पादमव्यपरे इस सूत्र से प्रकृत्या इसकी अनुवृति है। यजुष्युरः इस सूत्र से यजुषि इसकी अनुवृति है। अनुदात्ते च कुधपरे इस सूत्र से अनुदात्ते इस पद की अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है अनुदात्त और अति अवपथास्-शब्द से परे एङ् को प्रकृति होता है यजुर्वेद में।

उदाहरण- त्रीरुद्रेभ्यो अवपथाः।

सूत्रार्थसमन्वय- पूर्वोक्त उदाहरण में त्रीरुद्रेभ्यो यहाँ पर यकार से उत्तरवर्ति ओकार को प्रकृतिवद्भाव है। क्योकि अवपथाः (वध्धातु से लङ मध्यमपुरुष एकवचनान्त रूप है) यहाँ वकार से पूर्ववर्ति अकार अनुदात्त हो। और ह्रस्व अकार भी है।

20.15 स्यश्छन्दसि बहुलम्॥ (6.1.133)

सूत्रार्थ- स्य इसके सु का लोप हो हल परे रहते।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से सुलोप का विधान है। इस सूत्र में तीन पद है। स्यः छन्दसि बहुलम् ये सूत्रगतपदच्छेद है। स्यः यह लुप्तषष्ठ्यन्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। बहुलम यह प्रथमान्त पद है। एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि इस सूत्र से हलि और सुलोपः इन दो पद की अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है स्य-इसका सुलोप हो हल परे रहते है।

उदाहरण- एष स्य भानुः इत्युदाहरणम्।

सूत्रार्थसमन्वय- स्य भानुः यहाँ पर त्यद्-शब्द से सुविभक्ति में त्यदादीनामः इससे दकार के स्थान में अकारादेश होने पर त्य अ स् इस स्थिति में पररूप एकादेश होने पर त्य स् इस स्थिति में तदोः सः सावनन्त्ययोः इस सूत्र से तकार के स्थान में सकार होने पर स्य स् इस स्थिति में हल भकार परे प्रकृतसूत्र से सु के सकार का लोप होने पर स्य भानुः यह रूप है। इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिए।

20.16 ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे॥ (6.1.151)

सूत्रार्थ– ह्रस्व से उत्तर चन्द्रशब्द उत्तरपद को सुडागम हो मन्त्र विषय में।

टिप्पणी

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से सुडागम का विधान है। इस सूत्र में तीन पद है। ह्रस्वात् चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे ये सूत्रगतपदच्छेद है। ह्रस्वात् यह पञ्चम्यन्त पद है। चन्द्रोत्तरपदे यह सप्तम्यन्त पद है। चन्द्र उत्तरपदं यस्य तत् चन्द्रोत्तरपदम् तस्मिन् चन्द्रोत्तरपदे यहाँ बहुव्रीहिसमास है। मन्त्रे यह सप्तम्यन्त पद है। सुट्-कात् पूर्वः इस सूत्र से सुट् इस पद की अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है ह्रस्व से उत्तर चन्द्रशब्द उत्तरपद हो तो उसे सुडागम हो मन्त्र विषय में।

उदाहरण- हरिश्चन्द्रः इत्युदाहरणम्।

सूत्रार्थसमन्वय- हरिश्चन्द्रो यस्मिन् इस विग्रह में प्रक्रिया के द्वारा हरि चन्द्र इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से ह्रस्व से परे चन्द्र उत्तरपद को सुडागम होने पर सुट के टित्त्व होने से आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा से परिष्कार करने पर हरि सुट् चन्द्र इस स्थिति में स्तोः श्चुना श्चुः इससे सकार को शकार करने पर संयोग से निष्पन्न होने से हरिश्चन्द्र प्रातिपदिक से सु विभक्ति कार्य करने पर हरिश्चन्द्रः यह रूप बना है।

20.17 पितरामातरा च छन्दसि॥ (6.3.33)

सूत्रार्थ– द्वन्द्व समास में निपात करते है।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में तीन पद है। पितरामातरा यह प्रथमान्त पद है। च यह अव्ययपद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। देवताद्वन्द्वे च इस सूत्र से द्वन्द्वे इस पद की अनुवृति है। निपातन इस पद का आक्षेप किया गया है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में द्वन्द्व पितरामातरा इस शब्द का निपातन किया जाता है।

उदाहरण- आ मा गन्तां पितरामातरा च इति।

सूत्रार्थसमन्वय- पिता च माता च इस विग्रह में प्रक्रिया से पितृ मातृ इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से **पितरामातराशब्द** का निपातन करते है। लोक में **पितरौ, मातापितरौ** ये दो रूप है।

20.18 सध मादस्थयोश्छन्दसि॥ (6.3.96)

सूत्रार्थ– सह को सध-आदेश हो।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में तीन पद है। सध यह अविभक्तिक पद है। मादस्थयोः यह सप्तम्यन्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। सहस्य सध्रि इस सूत्र से सहस्य इस पद की अनुवृत्ति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है सह को सधा आदेश हो माद और स्थ शब्द के परे छन्द में।

टिप्पणी

उदाहरण- सधस्थम् इत्युदाहरणम्।

सूत्रार्थसमन्वय- सह तिष्ठति इस विग्रह में सह स्था इस स्थिति में आतोऽनुपसर्गे कः इस सूत्र से कप्रत्यय करने पर सह स्था क इस स्थिति में अनुबन्धलोप होने पर सह स्था अ इस स्थिति में कप्रत्यय के कित्त्व होने से आतो लोप इटि च इस सूत्र से स्था इसके आकार का लोप होने पर सह स्थ् अ इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से सह को सधादेश होने पर सध स्थ् अ इस स्थिति में संयोग से निष्पन्न होने पर सधस्थ-प्रातिपदिक से सु विभक्तिकार्य करने पर **सधस्थः** यह रूप है। अम्-विभक्ति में **सधस्थम्** यह रूप सिद्ध होता है।

20.19 छन्दसि च॥ (6.3.126)

सूत्रार्थ- अष्टन को आत्व हो उत्तर पद परे रहते।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में दो पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। अष्टनः संज्ञायाम् इस सूत्र से अष्टनः इस पद की अनुवृति है। ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से दीर्घः इस पद की अनुवृति है। और अचश्च इस परिभाषा से अचः यह षष्ठ्यन्त पद प्राप्त होता है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द में अष्टन के अच को दीर्घ हो (आत्त्व ही हो उत्तरपद परे रहते)। अच आदि को अथवा अन्त्य को किस स्थान में दीर्घ होता है यदि ऐसा कोई प्रश्न करे तो कहते है की अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अन्त्य अल के स्थान में ही यह अर्थ प्राप्त होता है अष्टन के अन्त्य अच के स्थान में ही दीर्घ होता है उत्तरपद परे रहते वेदविषय में यह सम्पूर्ण अर्थ प्राप्त होते है।

उदाहरण- अष्टापदी इत्युदारहणम्।

सूत्रार्थसमन्वय- अष्टौ पादाः यस्याः ऐसा विग्रह करने पर प्रक्रिया कार्य करने पर अष्टन् पाद इस स्थिति में नलोपः प्रातिपदिकस्य इस सूत्र से नकार के लोप होने पर अष्ट पाद इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से पाद इस उत्तरपद के परे रहते अष्टन के टकार उत्तरवर्ति अकार को दीर्घ आत्त्व करने पर अष्टापाद इस स्थिति में अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से परिष्कृत करने पर संख्या सु पूर्व के इससे दकार उत्तर आकारलोप होने पर स्त्रीत्व विवक्षा में पादोऽन्यतरस्याम् इससे विकल्प से ङीप्-प्रत्यय करने पर अष्टापादी इस स्थिति में सु विभक्तिकार्य करने पर अष्टापादी यह रूप बनता है।

20.20 मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रियविश्वदेव्यस्य मतौ॥ (6.3.131)

सूत्रार्थ– मन्त्र विषय में सोम-अश्व-इन्द्रिय-विश्वदेव्य ये सभी दीर्घ हो मतुप्-प्रत्यय के परे रहते।

टिप्पणी

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से दीर्घ का विधान करते है। इस सूत्र में तीन पद है। मन्त्रे यह सप्तम्यन्त पद है। सोमाश्वेन्द्रियविश्वदेव्यस्य यह षष्ठ्यन्त पद है। मतौ यह सप्तम्यन्त पद है। मतौ इसका मतुप्-प्रत्यय करने पर यह अर्थ है। ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से दीर्घ इस पद की अनुवृति है। उससे सूत्र का अर्थ होता है मन्त्र विषय में सोम-अश्व-इन्द्रिय-विश्वदेव्य इत्यादि को मतुप्-प्रत्यय के परे दीर्घ हो। किसको दीर्घ हो तो कहते है- अचश्च इस परिभाषा से अचः इस षष्ठ्यन्त पद की प्राप्ति है। अच के आदि को अथवा अन्त्य को किस स्थान को दीर्घ हो तो कहते है अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अन्त्य के अल स्थान को ही यह अर्थ प्राप्त होता है मन्त्र विषय में सोम-अश्व-इन्द्रिय-विश्वदेव्य इनके अन्त्य अच को दीर्घ हो मतुप्-प्रत्यय करने पर यह सम्पूर्ण अर्थ प्राप्त होता है।

उदाहरण- सोमावती इत्युदाहरणम्।

सूत्रार्थसमन्वय- सोमः अस्याम् अस्ति ऐसा विग्रह करने पर सोमशब्द से तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप् इस सूत्र से मतुप्-प्रत्यय करने पर सोम मत् इस स्थिति में मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः इससे मकार को वकार करने पर सोम वत् इस स्थिति में मतुप के उगित्त होने से उगितश्च इससे ङीप्-प्रत्यय करने पर अनुबन्धलोप होने पर सोमवत् ई इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से मकार से उत्तर आकार को दीर्घ आकार करने पर संयोग से निष्पन्न होने पर सोमावतीशब्द से सु विभक्ति के कार्य करने पर सोमावती यह रूप बनता है।

20.21 ओषधेश्च विभक्तावप्रथमायाम्॥ (6.3.132)

सूत्रार्थ– मन्त्र विषय में ओषधिशब्द को दीर्घ हो।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से दीर्घ विधान करते है। इस सूत्र में चार पद है। ओषधेः च विभक्तौ अप्रथमायाम् ये सूत्रगतपदच्छेद है। न प्रथमा अप्रथमा। अर्थात् प्रथमा-भिन्न यह अर्थ है। और वह विभक्तौ इसका विशेषण है। उस प्रथमा-से भिन्न द्वितीया आदि विभक्ति यह अर्थ प्राप्त होता है। ओषधोः यह षष्ठ्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। विभक्तौ यह सप्तम्यन्त पद है। अप्रथमायाम् यह सप्तम्यन्त पद है। और वह विभक्ति का विशेषण है। मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रियविश्वदेव्यस्य मतौ इस सूत्र से मन्त्रे इस पद की अनुवृति है। ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से दीर्घः इस पद की अनुवृति है। अचश्च अलोऽन्त्यस्य इन परिभाषाओ के द्वारा अन्त्य अच को दीर्घ हो यह अर्थ प्राप्त होता है। और सूत्र का अर्थ है– मन्त्र में ओषधिशब्द के अन्त्य अच को दीर्घ हो।

उदाहरण- ओषधीभ्यः इत्युदाहरणम्।

सूत्रार्थसमन्वय– ओषधिशब्द से भ्यस्-प्रत्यय करने पर ओषधि भ्यस् इस स्थिति में प्रकृतसूत्र

टिप्पणी

से ओषधिशब्द के अन्त्य अच इकार को दीर्घ करने पर ओषधी भ्यस् इस स्थिति में सकार के रुत्व होने पर विसर्ग करने पर ओषधीभ्यः यह रूप सिद्ध होता है।

20.22 इकः सुञि॥ (6.3.134)

सूत्रार्थ– ऋचा विषय में दीर्घ हो।

सूत्रावतरण– ऋचा विषय में इगन्त शब्द को सुञ परे रहते दीर्घविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से दीर्घ का विधान है। दो पदवाले इस सूत्र में इकः यह षष्ठ्यन्त पद है। सुञि यह सप्तम्यन्त निपातसंज्ञक पद है। ऋचि तु-नु-घ-मक्षु-तङ्-कुत्रो-रुष्याणाम् इस सूत्र से ऋचि इस विषयसप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से यहाँ दीर्घः इस पद की अनुवृति है। इस प्रकार यहाँ पदयोजना ऋचि सुञि इकः दीर्घः है। उससे सूत्र का अर्थ होता है– ऋग्विषय में इगन्त को दीर्घ हो सुञ के परे रहते। अत इस सूत्र से ऋग्वेद में सुञ परे इक को दीर्घ होता है।

उदाहरण- अभीषुणः।

सूत्रार्थसमन्वय– ऋग्वेद में अभीषुणः पद है। इस प्रकार यहाँ ऋचा विषय में अभि इसके इक इकार से परे सुञ् इसका निपातन है। उससे इस सूत्र से उस इक इकार के स्थान में दीर्घ ईकार करने पर सूञः इस सूत्र से सकार के स्थान में षकार करने पर नश्च धतुस्थोरुषुभ्यः और इस सूत्र से नकार को णकार करने पर अभीषुणः यह रूप सिद्ध होता है।

20.23 द्व्यचोऽतस्तिङः॥ (6.3.135)

सूत्रार्थ– मन्त्र विषय में दीर्घ।

सूत्रावतरण- ऋचा मन्त्र में द्व्यच तिङन्त के अत को दीर्घविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से दीर्घ विधान करने के लिए। इस सूत्र में द्व्यचः अतः तिङः ये पदच्छेद है। तीन पद वाले इस सूत्र में द्व्यचः, अतः, तिङः ये तीन पद षष्ठी एकवचनान्त है। इस सूत्र में ऋचि तु-नु-घ-मक्षु-तङ्-कुत्रो-रुष्याणाम् इस सूत्र से ऋचि इस विषयसप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से यहाँ दीर्घः इस पद की अनुवृति है। और मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रिय-विश्व-देव्यस्य मतौ इस सूत्र से मन्त्रे इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। और इस प्रकार यहाँ पदयोजना है- ऋचि मन्त्रे द्व्यचः तिङः अतः दीर्घः इति। उससे सूत्र का अर्थ होता है– ऋग्विषय में मन्त्र में द्व्यच तिङन्त के अत के स्थान में दीर्घ हो।

टिप्पणी

उदाहरण- विद्मा।

सूत्रार्थसमन्वय- विद ज्ञाने यह अदादिगण में पढ़े होने से विद्-धातु से कर्ता में लट मस शप और शप का लुक करने पर विद् मस् इस स्थिति में विदो लटो वा इस सूत्र से मस के स्थान में म-आदेश होने पर विद्म यह रूप होता है। यहाँ विद्म इस तिङन्त पद में द्व्यच् है। इसलिए ऋग्विषय मन्त्र में विद्म इस तिङन्त पद के अन्त्य अकार के स्थान में प्रकृतसूत्र से दीर्घ आकार करने पर विद्मा यह रूप सिद्ध होते है।

पाठगत प्रश्न-20.2

8. प्राणो अङ्गे इत्यादि में सन्धि कैसे नही होती है।
9. अङ्ग इत्यादौ च इस सूत्र में अङ्ग यहाँ पर कौनसी विभक्ति है।
10. स्यः यह किस प्रकार का पद है।
11. एष स्य भानुः इस वाक्य में स्य-इस उत्तरपद के सुलोप किससे होता है।
12. पितरामातरा यह शब्द ठीक है अथवा नही।
13. सध यह किस प्रकार का पद है।
14. ओषधीभ्यः यहाँ पर ईकार कहा से।
15. किस वेद में सुञ के परे इक को दीर्घ होता है।
16. विद्मा यहाँ पर अकार को दीर्घ किस सूत्र से होता है।

पाठसार

इस पाठ में जिन विषयो की जो आलोचना की है, अधुना संक्षेप से कहते है। जैसे नान्त आदि संख्यादि के परे डट को थट् और मट् आगम होता है। मत्वर्थ में विनिप्रत्यय बहुल करके छन्द में इस सूत्र से। छन्द में बहुव्रीह समास में बहुप्रजाः इस शब्द का निपातन करते है। बहुव्रीहि समास में दन्त को दतृ-आदेश होता है छन्दसि च इस सूत्र से। छन्द विषय में ऋदन्त प्रातिपदिक से बहुव्रीहि में कप्-प्रत्यय नहीं होता है। तुजादीनाम् दीर्घोऽभ्यासस्य इस सूत्र से तुजादियो के अभ्यास को दीर्घ होता है। छन्द में खिद् को विकल्प से एच को आकार होता है खिदेश्छन्दसि इस सूत्र से। शीर्षश्छन्दसि इस सूत्र से शिरस् शब्द को शीर्षन् यह निपातन होता है। पुनः दीर्घाज्जसि और इचि च पूर्वसवर्णदीर्घ विकल्प से होता है। सह को सध आदेश सध मादस्थयोश्छन्दसि इस सूत्र से होता है।

ऋचा विषय में इक को सुञ परे दीर्घ होता है इकः सुञि इस सूत्र से। छन्द में बाहुल्य से शि का लोप होता है। ऋचा विषय में इक को सुञ के परे दीर्घ होता है इकः सुञि इस सूत्र से। इन विषयो की इस पाठ में अत्यन्त सरल तरीके से आलोचना कि है।

पाठान्त प्रश्न

1. वा छन्दसि इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. ऋचश्छन्दसि इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
3. हरिश्चन्द्रः इस रूप को सिद्ध कीजिए।
4. अङ्ग इत्यादौ च इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. विद्मा इस रूप को सिद्ध कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

20.1

1. स्थट् और मट्।
2. बहुलं छन्दसि इससे।
3. बहुप्रजाश्छन्दसि च इस सूत्र से।
4. दन्तशब्द को दतृ आदेश विधान करने के लिए।
5. ऋदन्त बहुव्रीहि में कप् का निषेध करते है।
6. विकल्प से।
7. शीर्षश्छन्दसि इस सूत्र से।

20.2

8. अङ्ग इत्यादौ च इस सूत्रकृत नियम से।
9. अङ्ग इत्यादौ च इस सूत्र में अङ्ग यहाँ पर सप्तमीविभक्ति है।
10. स्यः यह लुप्तषष्ठ्यन्त पद है।
11. स्यश्छन्दसि बहुलम् इस सूत्र से।

टिप्पणी

12. यह साधु रूप है।

13. अविभक्तिक पद को।

14. ओषधेश्च विभक्तावप्रथमायाम् इस सूत्र से होता है।

15. ऋग्वेद में।

16. द्व्यचोऽतस्तिङः इस सूत्र से।

बीसवां पाठ समाप्त

21

अष्टाध्यायी का षष्ठ और सप्तम अध्याय

पूर्व के पाठों के समान इस पाठ में भी दीर्घ आदि विधिविषय में कुछ विशिष्ट नियमों की आलोचना करेंगे। उससे वेद में दीर्घविधि कहीं पर नित्य, अथवा कहीं पर विकल्प से और कहीं पर उसका निषेध होता है। और वे नियम लौकिक नियम से भिन्न ही हैं। उससे यहाँ धातुओं के अट आगम विषय में और आट आगमविषय में विशेषरूप से आलोचना करेंगे। लोक में जैसे लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु परे में हलादि धातुओं को अडागम, और अजादी धातुओं को आडागम होता है वैसे ही यहाँ पर भी अडागम और आडागम होता है परन्तु वेद में वे नियम कुछ भिन्न ही हैं। उन नियमों की यहाँ संक्षेप से आलोचना करेंगे। और उससे अट आट कहीं पर नित्य, और कही पर विकल्प से होते हैं। उस तिङन्तप्रकरण में हि के अपित्त्वविषय में आलोचना करेगे। लोक में सेर्ह्यपिच्च इस सूत्र से सि के स्थान में हि आदेश का विधान है, और उस हि को अपित्त्व अतिदेश करते है। वेद में तो ह्यादेश विषय में और अपित्त्व धर्मविषय में कुछ विलक्षण नियम है। और उन नियमों का इस पाठ में संक्षेप से प्रस्तुत किया है। और यणादेश विषय में, इयङुवङादेशविषय में और रुडागमादिविषय में संक्षेप से कुछ नियमों की और कुछ सूत्रों में आलोचना करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- वैदिक में दीर्घविधिविषय में विशिष्ट नियमों को जान पाने में;
- वेद में तिङन्तप्रकरण में लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु परे धातुओं को कैसे अडागम आडागम होता है इसको जान पाने में;

- वैदिक में तिङन्तप्रकरण में अपित्त्वधर्म का प्रयोजन तथा हि के स्थान में ध्यादेशविषय में तथा रुडागमादिवषय में विशिष्ट नियमों को जान पाने में;
- वेद में नञ् समास से भिन्न समास में क्त्व क्त्वादेश को जान पाने में।

21.1 निपातस्य च॥ (6.3.136)

सूत्रार्थ– और निपात को ऋग्विषय में दीर्घ आदेश होता है।

सूत्रावतरण- पूर्वसूत्र के द्वारा ऋच निपातनों को दीर्घ नहीं होता है। इसलिए वहा दीर्घविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से दीर्घ का विधान है। दो पद वाले इस सूत्र में निपातस्य यह षष्ठी एकवचनान्त पद है, च यह अव्ययपद है। यहाँ ऋचि तु-नु-घ-मक्षु-तङ्-कुत्रो-रुष्याणाम् इस सूत्र से ऋचि इस विषयसप्तम्यन्त पद की, ह्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से दीर्घः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। अलुगुत्तरपदे इस सूत्र से उत्तरपदे इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। संहितायाम् इस सप्तमी एकवचनान्त पद का यहाँ अधिकार है। यहाँ पद योजना इस प्रकार है - ऋचि संहितायां निपातस्य च दीर्घः उत्तरपदे इति। सूत्रार्थ है ऋग्विषय संहिता में उत्तरपद परे रहते निपात को दीर्घ हो।

उदाहरण- एवा हि ते।

सूत्रार्थसमन्वय- एवा इस उदाहरण में एव इस शब्द का चादिगण में पाठ होने से चादयोऽसत्त्वे इस सूत्र से उसकी निपातसंज्ञा होती है। 'एवा हि ते' इस ऋङमन्त्र में उत्तरपद परे एव इस निपात अकार के स्थान में प्रकृतसूत्र से दीर्घ आकार होने पर एवा यह रूप सिद्ध होता है।

21.2 अन्येषामपि दृश्यते॥ (6.3.137)

सूत्रार्थ– अन्य पूर्वपद स्थानों को भी दीर्घ हो।

सूत्रावतरण- पूर्वसूत्र के द्वारा जहा दीर्घ कहा नहीं गया है, परन्तु वेद में दीर्घ दिखाई देता है, उन अवशिष्ट में दीर्घविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्रव्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से दीर्घ होता है। तीन पद वाले इस सूत्र में अन्येषाम् यह षष्ठ्यन्त पद है, अपि यह अव्यय है, और दृश्यते यह तिङन्तं पद है। यहाँ ऋचि तु-नु-घ-मक्षु-तङ्-कुत्रो-रुष्याणाम् इस सूत्र से ऋचि इस विषयसप्तम्यन्त पद की, ह्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से दीर्घः इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। अलुगुत्तरपदे इस सूत्र से उत्तरपदे इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। संहितायाम् इस

विषयसप्तम्यन्त पद का यहाँ अधिकार है। पदयोजना इस प्रकार है - ऋचि संहितायाम् अन्येषामपि दीर्घः उत्तरपदे इति। सूत्रार्थ है– ऋग्वेद संहिताविषय में उत्तरपद परे रहते अन्य शब्दों को भी दीर्घ होता है।

उदाहरण- पूरुषः।

सूत्रार्थसमन्वय– लोक में पुरुषः यह रूप होता है। परन्तु ऋग संहिता में प्रकृतसूत्र से उकार के दीर्घ होने पर पूरुषः यह रूप सिद्ध होता है।

21.3 छन्दस्युभयथा॥ (6.4.5)

सूत्रार्थ- नाम को विकल्प से दीर्घ हो।

सूत्रावतरण- नामि इस सूत्र से लोक में धातृ नाम् यहाँ पर ऋकार को नित्य दीर्घ होता है, वेद में उस दीर्घ को विकल्प से विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की गई है।

सूत्राव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से विकल्प से दीर्घ का विधान किया गया है। इस सूत्र में छन्दसि यह विषय सप्तम्यन्त पद है, उभयथा यह अव्ययपद है। ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः इस सूत्र से दीर्घः इस प्रथमा एकवचनान्त पद, नामि इस सूत्र से नामि इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। अङ्गस्य इस पद का यहाँ अधिकार है। इस प्रकार पद योजना होती है छन्दसि अङ्गस्य उभयथा दीर्घः नामि इति। इस सूत्र में उभयथा इस पदनिर्देश होने से सूत्र से विहित कार्य को विकल्प करता है। सूत्र का अर्थ होता है- छन्द विषय में अङ्ग को विकल्प से दीर्घ होता है नाम के परे रहते।

उदाहरण- धातृणाम्-धातृणाम्।

सूत्रार्थसमन्वय- (वेद में) धातृ नाम् इस स्थिति में धातृशब्द से नाम के परे नामि इस सूत्र से ऋकार के स्थान में नित्य दीर्घ की प्राप्ति होने पर प्रकृतसूत्र से दीर्घ को विकल्प से विधान होता है। उस दीर्घ अभावपक्ष में रषाभ्यां नो णः समानपदे इस सूत्र से नकार के स्थान में णकार करने पर धातृणाम्, दीर्घपक्ष में धातक् णाम् ये दो रूप सिद्ध होते है।

विशेष- काशिकामत में इस सूत्र में न तिसृचतसृ इस सूत्र से तिसृचतसृ इस पद की अनुवृति से केवल तिसृ, चतसृ इन शब्दो को ही नाम के परे प्रकृतसूत्र से ऋकार के स्थान में विकल्प से दीर्घ होता है। भट्टोजिदीक्षित के मत से तो सभी शब्दों को नाम के परे विकल्प से दीर्घ होता है।

टिप्पणी

21.4 वा षपूर्वस्य निगमे॥ (6.4.9)

सूत्रार्थ– ष पूर्व के अच उपधा को विकल्प से दीर्घ होता है सर्वनामस्थान के परे।

सूत्रावतरण- वेदविषय में असम्बुद्धि सर्वनाम स्थान के परे नान्तपद के उपधाभूत षपूर्व को विकल्प से दीर्घविधान के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से विकल्प से दीर्घ का विधान होता है। तीन पद वाले इस सूत्र में वा यह अव्यय पद है, षपूर्वस्य यह षष्ठ्यन्त पद, और निगमे यह विषयसप्तम्यन्त पद है। अङ्गस्य इस पद का यहा अधिकार है। ह्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽण: इस सूत्र से दीर्घ: इस प्रथमा एकवचनान्त पद की, सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ इस सूत्र से सर्वनामस्थाने असम्बुद्धौ इन दो सप्तम्यन्त पद की, नोपधाया: इस सूत्र से नोपधाया: इस समस्त षष्ठ्यन्त पद की अनुवृति है। नस्य उपधा नोपधा, तस्य नोपधाया: यहाँ बहुव्रीहिसमास है। यहाँ 'न' यह लुप्तषष्ठ्यन्त पद है अङ्गस्य इसका विशेषण है। इसलिए तदन्तविधि के द्वारा नान्त अङ्ग की यह अर्थ प्राप्त होता है। और यहाँ पदयोजना- नोपधाया: अङ्गस्य दीर्घ: असम्बुद्धौ सर्वनामस्थाने इति। सूत्र का अर्थ असम्बुद्धि सर्वनाम स्थान के परे नान्त अङ्ग की उपधाभूत षकार को विकल्प से दीर्घ हो निगम विषय में।

उदाहरण- ऋभुक्षणम्, ऋभुक्षाणम्।

सूत्रार्थसमन्वय– उणादिप्रत्यय से निष् होने से ऋभुक्षिन्-शब्द से अम करने पर ऋभुक्षिन् अम् इस स्थिति में सुडनपुंसकस्य इस सूत्र से अम्-प्रत्यय की सर्वनाम स्थान संज्ञा होने पर इतोऽत्सर्वनामस्थाने इससे उपधा इकार के स्थान पर अकार करने पर ऋभुक्षन् अम् यह होता है। यहाँ ऋभुक्षन् इस नान्त पदसंज्ञक के अम्-रूप असमबुद्धिसर्वनामस्थान परे होने से उसकी उपधा के षपूर्व अकार को प्रकृतसूत्र से विकल्प से दीर्घ होने पर आकार करने पर अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि इससे नकार के स्थान पर णकार करने पर ऋभुक्षाणम् यह रूप सिद्ध होता है। यहाँ दीर्घ के अभाव में ऋभुक्षणम् यह अन्य रूप है।

21.5 जनिता मन्त्रे॥ (6.4.53)

सूत्रार्थ– इडादि तृच परे होने पर णिलोप का निपातन करते है।

सूत्रावतरण- मन्त्र में इडादितृच्परे णी का लोप विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से णी के इकार के लोप का विधान करते है। दो पद वाले इस सूत्र में जनिता यह प्रथमान्त पद है, मन्त्रे यह विषयसप्तम्यन्त पद है। अतो लोप: इस सूत्र से लोप: इस प्रथमान्त पद की, निष्ठायां सेटि इस सूत्र

टिप्पणी

से सेटि इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। तृचि इस सप्तम्यन्त पद की पूर्वसूत्र से अनुवृति है। पदयोजना- मन्त्रे णेः लोपः सेटि तृचि इति। यहाँ णि- इस पद से णिजादिप्रत्यय जानना चाहिए। उससे सूत्रार्थ है– मन्त्र विषय में णकार के इकार का लोप हो इडादि तृच के परे रहते।

उदाहरण- जनिता।

सूत्रार्थसमन्वय- जन्-धातु से णिच और तृच करने पर जनि तृ इस स्थिति में तृच्-प्रत्यय को इडागम करनी पर जनि इतृ इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से इडादितृच्परे होने से णकार के इकार का लोप होने पर और विभक्तिकार्य करने पर जनिता यह निपातन रूप सिद्ध होता है। लोक में तो णिलोप अभाव में जनयिता यह रूप बना।

21.6 छन्दस्यपि दृश्यते॥ (6.4.73)

सूत्रार्थ– अनजादियो को भी लुङ्-लङ्-लृङ् के परे आडागम हो।

सूत्रावतरण- छन्द में हलादि धातुओं को भी लुङ लङ और लृङ परे आडागम करने के लिए इस प्रकृत सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से आडागम का विधान है। इस सूत्र में तीन पद है छन्दसि यह विषय सप्तम्यन्त पद है, अपि यह अव्ययम्, दृश्यते यह तिङन्त पद है। अङ्गस्य इस पद का यहा अधिकार है। लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः इस सूत्र से लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु इन सप्तम्यन्त पद की यहाँ अनुवृति है। आडजादीनाम् इस सूत्र से आट् इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। अनजादीनाम् इस पद का यहाँ आक्षेप किया गया है। और इस प्रकार यहाँ पद योजना- छन्दसि अनजादीनाम् अपि लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु आट् दृश्यते इति। छन्द विषय में अनजादि धातुओं को भी अर्थात् हलन्त धातुओं को भी लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु परे आडागम हो यह सूत्रार्थ है।

उदाहरण- आनट्।

सूत्रार्थसमन्वय- नश्-धातु से कर्ता में लुङ तिप च्लि और च्लि का लोप होने पर नश् ति इस स्थिति में यहाँ लुङ्परे हलादि नश्-धातु से अनजादि होने से आडजादीनाम् इस सूत्र से आडागम का अभाव है। प्रकृतसूत्र से उस अनजादि होने से भी आडागम होने पर तिप के इकारलोप होने पर आनश् त् इस स्थिति में षकार के षत्व होने पर हलन्त परे ति इसके तकार का हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् इससे लोप होने पर आनष् इस स्थिति में और षकार को जश्त्व डकार को विकल्प से चर्त्व टकार करने पर आनट् यह रूप सिद्ध होता है। यहाँ चर्त्व अभावपक्ष में आनड् यह अन्य रूप भी सिद्ध होता है।

विशेष- लोक में लुङ्-लङ्-लृङ्परे होने से हलादि धातुओं को लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः

टिप्पणी

इस न सूत्र से अडागम होता है और अजादि धातुओं को आडजादीनाम् इस सूत्र से आडागम होता है। तउस हलादि धातुओं को आडागम नहीं होता है, अजादि धातुओं को अडागम नहीं होता है। यहा वेद में हलादि धातुओं को आडागम हो उसके लिए इस सूत्र की रचना की है।

21.7 बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि॥ (6.4.75)

सूत्रार्थ– छन्द में माङ्योग के होने पर हो और अमाङ्योग के होने पर बहुल करके अट्-आट आगम न हो।

सूत्रावतरण- छन्द में अर्थात् वेद में अमाङ्योग को बाहुल्य से लुङ लङ और लृङ परे धातुओं को अडागम और आडागम का निषेध करने के लिए, और माङ्-योग में उसका विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से माङ्योग होने पर अडागम और आडागम का विधान करते है, और माङ्-योग के अभाव में उनका अभाव है। इस सूत्र में बहुलम् यह प्रथमान्त पद है, छन्दसि अमाङ्योगे ये सप्तमी एकवचनान्त दो पद है, अपि यह अव्ययपद है। माङा योगः माङ्योगः, न माङ्योगः अमाङ्योगः, तस्मिन् अमाङ्योगे। अङ्गस्य इस पद का यहाँ अधिकार है। लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः इस सूत्र से लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु इन सप्तम्यन्त पद की, और अट् उदात्तः इस प्रथमान्त पद के परे, आडजादीनाम् इस सूत्र से आट् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। न माङ्योगे इस सूत्र से माङ्योगे इस सप्तम्यन्त पद, और न इस अव्यय की यहाँ अनुवृति है। और इस प्रकार यहाँ पदयोजना- छन्दसि बहुलं लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु माङ्योगे अपि अट् आट्, अमाङ्योगे न (स्तः) इति। उससे छन्द में बाहुल्य से लुङ्-लङ्-लृङ् के परे अडाट नहीं हो, माङ्योग में तो हो यह इस सूत्र का अर्थ है। यहाँ लुङ्-लङ्-लृङ् के परे अडाट नहीं हो, माङ्योग में हो इन दो वाक्य के साथ छन्द विषय में बहुल करके इस वाक्य का योग होता है।

उदाहरण- जनिष्ठाः, अवाप्सुः।

सूत्रार्थसमन्वय- जन्-धातु से कर्ता में थास करने पर जन् थास् इस स्थिति में धातु से च्लि और च्लि के स्थान पर सिच और सिच को इडागम होने पर जन् इस् थास् इस स्थिति में लुङ्परक होने से धातु को लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः इस सूत्र से अडागम की प्राप्ति होने पर प्रकृतसूत्र से उसका निषेध होने से सिच के सकार को षकार होने पर और थकार को ठकार होने पर विभक्ति कार्य करने पर **जनिष्ठाः** यह रूप है। लोक में **अजनिष्ठाः** यह रूप है।

वप्-धातु से कर्म में लुङ लकार के स्थान पर वप् प्रत्यय होने से झि होने पर वप् झि इस स्थिति में झि के स्थान पर जुस करने पर और अनुबन्धलोप होने पर धातु से च्लि और च्लि के स्थान पर सिच होने पर और अनुबन्धलोप होने पर वप् स् उस्

टिप्पणी

इस स्थिति में वदव्रजहलन्तस्याचः इस सूत्र से धातु के अकार को दीर्घ आकार करने पर माङ्योग के होने पर यहाँ धातु से लुङ्-लङ्-लृङ्क्ष्वडुदात्तः इससे धातु से प्राप्त अडागम होने पर न माङ्योगे इससे निषेध होने पर भी छन्द विषय में प्रयोगवश से प्रकृतसूत्र से धातु को अडागम होने पर प्रक्रिया के द्वारा मा **अवाप्सुः** यह रूप सिद्ध होता है।

विशेष– इस सूत्र में 'बहुलम्' इस पद ग्रहण से सूत्र के द्वारा विहित कार्य बहुल करके होते है।

21.8 छन्दस्युभयथा॥ (6.4.86)

सूत्रार्थ– भू सुधि को यण् हो और इयङुवङ।

सूत्रावतरण- लोक में अजादिसुप के परे भूशब्द को और सुधीशब्द को यण् नहीं होता है, अपितु यथाक्रम से उवङादेश और इयङादेश होता है। यहाँ वेद में इयङुवङादेश के साथ यणादेश का भी समुच्चयार्थ के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से यणादेश और इयङुवङादेश का विधान है। इस सूत्र में छन्दसि यहाँ पर विषयसप्तमी, और उभयथा यह अव्यय पद है। यहाँ न भूसुधियोः इस सूत्र से भूसुधियोः इस षष्ठीद्विवचनान्त पद की अनुवृति। और इस प्रकार यहाँ पदयोजना- छन्दसि भूसुधियोः उभयथा इति। यहाँ उभयथा क्या होता है ऐसा प्रश्न करने पर उत्तर दिया जाता है- इणो यण् इससे यण् इस प्रथमान्त पद की, ओः सुपि इससे सुपि इस सप्तम्यन्त पद, अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ इससे अचि सप्तम्यन्त पद की, इयङुवङौ इस प्रथमाद्विवचनान्त पद की इस सूत्र में अनुवृति है। उससे यहाँ सूत्र का अर्थ होता है– छन्द विषय में भू सुधि को अजादिसुप के परे यण् और इयङुवङादेश होता है।

उदाहरण - विभ्वम्- विभुवम्, सुध्यः- सुधियः।

सूत्रार्थसमन्वय - विभू-शब्द की प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर द्वितीया एकवचन में अम करने पर विभू अम् इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से ऊकार के स्थान में यण करने पर स्थान आन्तर्य से वकार करने पर विभ्वम् यह रूप, विकल्प से ऊकार के स्थान में उवङादेश होने पर **विभुवम्** यह अन्य रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **विभुवम्** यह रूप है।

सुधी-शब्द की प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर प्रथमा बहुवचन में जस करने पर अनुबन्धलोप होने पर सुधी अस् इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से ईकार के स्थान में यण करने पर स्थान आन्तर्य से यकार करने पर विभक्तिकार्य करने पर **सुध्यः** यह रूप, विकल्प से ईकार के स्थान में इयङादेश होने पर **सुधियः** यह अन्य रूप है। लोक में तो **सुधियः** यह रूप है।

टिप्पणी

21.9 श्रुशृणुपृकृवृभ्यश्छन्दसि॥ (6.4.102)

सूत्रार्थ- श्रु, शृ, णु, पृ, कृ, वृ- इनसे उत्तर हि को धि आदेश होता है छन्द विषय में।

सूत्रावतरण- वेद में श्रुशृणुपृकृवृ से उत्तर हि के स्थान में 'धि' इसका विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से हि के स्थान में 'धि' इसका विधान करते है। इस सूत्र में श्रुशृणुपृकृवृभ्यः यह पञ्चमीबहुवचनान्त पद है, छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। हुझल्भ्यो हेर्धिः इस सूत्र से हेः इस षष्ठ्यन्त पद की, और धिः इस प्रथमान्त पद की यहाँ अनुवृति है। यहाँ पदयोजना इस प्रकार है- छन्दसि श्रुशृणुपृकृवृभ्यः हेः धि : इति। उससे सूत्र का अर्थ होता है– छन्द विषय में श्रुशृणुपृकृवृ से परे हि के स्थान में धि हो।

उदाहरण- श्रुधी।

सूत्रार्थसमन्वय- श्रु-धातु से कर्ता में लोट सिप करने पर श्रु सि इस स्थिति में सेर्ह्यपिच्च इस सूत्र से सि के स्थान में 'हि' आदेश होने पर श्रु हि इस स्थिति में धातु से शप्-प्रत्यय करने पर बहुलं छन्दसि इससे शप का लुक होने पर प्रकृतसूत्र से श्रु-धातु के परे हि के स्थान में धि-आदेश होने पर अन्येषामपि दृश्यते इस सूत्र से धि के परे इकार को दीर्घ ईकार करने पर **श्रुधी** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **शृणु** यह रूप है।

इसी प्रकार अन्य उदाहरण को स्वय ही जानना चाहिए।

21.10 वा छन्दसि॥ (3.4.88)

सूत्रार्थ- छन्द में अपित् विकल्प से होता है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से हि को विकल्प से अपित् होता है। इस सूत्र में वा यह अव्ययपद है, छन्दसि यह विषय सप्तम्यन्त पद है। सेर्ह्यपिच्च इस सूत्र से यहाँ हि इस लुप्तप्रथमान्त पद, अपित् इस प्रथमान्त पद की यहाँ अनुवृति है। यहाँ पदयोजना- छन्दसि हिः अपित् वा इति। उससे सूत्र का अर्थ होता है- छन्द विषय में हि (आदेश) उसको विकल्प से अपित् हो।

उदाहरण - प्रीणाहि, प्रीणीहि।

सूत्रार्थसमन्वय - प्रीञ् तर्पणे इस धातु से कर्ता में लोट सिप करने पर प्री सि इस स्थिति में धातु से श्नाप्रत्यय करने पर अनुबन्धलोप होने पर प्री ना सि इस स्थिति में सिप के सि स्थान पर हि इत्यादेश होने पर प्री ना हि इस स्थिति में ई हल्यघोः इस सूत्र से हि के अपित्त्व होने से ना इसके आकार के स्थान में ईकार प्राप्त करने

टिप्पणी

पर प्रकृतसूत्र से हि को विकल्प से अपित्त अभाव में आकार के स्थान ईकार अभाव में नकार के स्थान में णकार करने पर **प्रीणाहि** यह रूप है। विकल्प से हि के अपित्त्वपक्ष में **प्रीणीहि** यह रूप। लोक में तो **प्रीणीहि** यह रूप है।

21.11 अङितश्च॥ (6.4.103)

सूत्रार्थ– हि को धि हो।

सूत्रावतरण- अङित हि के स्थान पर धि विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से हि के स्थान पर धि का विधान करते है। इस सूत्र में हुझल्भ्यो हेर्धिः इस सूत्र से हेः इस षष्ठ्यन्त पद की और धिः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। छन्दसि इस विषयसप्तम्यन्त पद की यहाँ अनुवृति है। यहाँ पदो का अन्वय इस प्रकार है- छन्दसि अङितः हेः धिः च इति। सूत्रार्थ– वेद में अङित हि के स्थान में धि हो।

उदाहरण - प्रयन्धि।

सूत्रार्थसमन्वय- प्रपूर्वक यम्-धातु से कर्ता में लोट सिप करने पर सि के स्थान पर हि इत्यादेश होने पर प्र यम् हि इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से अपित्त्व होने से अङित हि के स्थान में धि इत्यादेश होने पर प्र यम् धि इस स्थिति में नश्चापदान्तस्य झलि इससे मकार को अनुस्वार करने पर अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः इससे अनुस्वार को परसवर्ण नकार करने पर **प्रयन्धि** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **प्रयच्छ** यह रूप होता है।

21.12 मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः॥ (6.4.141)

सूत्रार्थ– आत्मन्शब्द के आदि आकार का लोप हो।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से आत्मन्-शब्द के आदि आकार के लोप का विधान करते है। इस सूत्र में मन्त्रेषु यह सप्तमी बहुवचनान्त पद है, आङि यह सप्तमी एकवचनान्त पद है, आदेः और आत्मनः ये षष्ठी एकवचनान्त पद है। अल्लोपोऽनः इस सूत्र से लोपः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। आङ् इसकी टी संज्ञा है। और इस प्रकार यहाँ पदयोजना- मन्त्रेषु आङि आत्मनः आदेः लोपः इति। सूत्रार्थ होता है–मन्त्र में आङ के परे आत्मन्शब्द के आदि आकार का लोप हो।

उदाहरण- त्मना देवेषु।

सूत्रार्थसमन्वय- आत्मन्-शब्द की प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर और टा-विभक्ति और अनुबन्ध

टिप्पणी

लोप करने पर आत्मन् आ इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से मन्त्र में आङ्परे होने से आत्मन्-शब्द के आदि आकार का लोप होने पर और सवर्णदीर्घ होने पर **त्मना** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **आत्मना** यह रूप है।

21.13 बहुलं छन्दसि॥ (7.1.8)

सूत्रार्थ– छन्द में झकार को बहुल करके रुडागम हो।

सूत्रावतरण- छन्द में झादेश के अकार को बहुल करके रुडागम करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से झादेश अत को रुडागम होता है। इस सूत्र में बहुलम् यह प्रथमान्त पद है, छन्दसि यह विषयसप्तम्यन्त पद है। झोऽन्तः इस सूत्र से झः इस षष्ठ्यन्त पद की, अतो भिस ऐस् इस सूत्र से अतः इस षष्ठ्यन्त पद की, शीङो रुट् इस सूत्र से रुट् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। यहाँ पदयोजना- छन्दसि झः अतः रुट् बहुलम् इति। सूत्र का अर्थ होता है– छन्द में झादेश अत को रुडागम हो, और वह आगम बहुल करके होता है।

उदाहरण - दुह्हे।

सूत्रार्थसमन्वय - दुह्-धातु से कर्ता में लट आत्मनेपद झ प्रत्यय करने पर दुह् झ (झ् अ) इस स्थिति में आत्मनेपदेष्वनतः इससे झादेश झकार के स्थान में अत् इत्यादेश होने पर दुह् अत् अ इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से अकार को रुडागम और अनुबन्धलोप होने पर दुह् र् त् अ इस स्थिति में लोप होने पर आत्मनेपदेषु इससे तकार का लोप होने पर टिसंज्ञक अकार के स्थान में एकार करने पर सभी वर्णों के मिलान करने पर दुह्हे यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो दुहते यह रूप है।

पाठगत प्रश्न-21.1

1. एवा यहाँ पर निपात को दीर्घ किस सूत्र से होता है?
2. अन्येषामपि दृश्यते इस सूत्र का एक उदाहरण बताइए?
3. छन्दस्युभयथा इस सूत्र में उभयथापद से किस का निर्देश है?
4. वा षपूर्वस्य निगमे इससे किसके परे विकल्प से दीर्घ होता है?
5. जनिता मन्त्रे इस सूत्र से किसके परे णिलोप का निपातन है?
6. छन्दस्यपि दृश्यते इस सूत्र से छन्द में क्या दिखाई देता है?

टिप्पणी

7. किसके परे धातुओं को आडागम और अडागम होता है?

8. छन्दस्युभयथा इस सूत्र से किसको यण् और इयङुवङ आदेश होता है?

9. वा छन्दसि इससे किसको विकल्प करते हैं?

10. अङितश्च इससे हि के स्थान में क्या आदेश होता है?

11. आत्मन्-शब्द के आदि आकार का लोप किस सूत्र से होता है?

12. दुह्हे यहाँ पर रुडागम किस सूत्र से होता है?

21.14 बहुलं छन्दसि॥ (7.1.10)

सूत्रार्थ– अकारान्त से उत्तर भिस को ऐस् हो।

सूत्रावतरण- छन्द में अकारान्त से परे भिस के स्थान में बाहुल्य से ऐस्-आदेश विधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से छन्द में अकारान्त से परे भिस के स्थान में बहुल करके ऐस् होता है। इस सूत्र में बहुलम् यह प्रथमान्त पद है, छन्दसि यह विषयसप्तम्यन्त पद है। अतो भिस ऐस् इस सूत्र से यहाँ अतः इस पञ्चम्यन्त पद की, भिसः इस षष्ठ्यन्त पद की, और ऐस् इस प्रथमान्त पद की यहाँ अनुवृति है। छन्दसि अतः भिसः ऐस् बहुलम् इति पदयोजना। उससे यहा सूत्र का अर्थ होता है– छन्द में अकारान्त के परे भिस के स्थान में एकादेश हो, और वह आदेश बहुल करके होता है।

उदाहरण - देवेभिः।

सूत्रार्थसमन्वय- देव-शब्द की प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर उस तृतीया एकवचन में भिस करने पर देव भिस् इस स्थिति में अतो भिस ऐस् इससे भिस के स्थान में ऐसादेश प्राप्त होने पर प्रकृतसूत्र से उसका निषेध होने पर बहुवचन में झल्येत् इस सूत्र से देव-इसके अकार के स्थान में एकार करने पर विभक्ति कार्य करने पर **देवेभिः** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो देवैः यह रूप है।

21.15 नेतराच्छन्दसि॥ (7.1.26)

सूत्रार्थ– सु और अम को अद्ड् आदेश न हो।

सूत्रावतरण- छन्द में क्लीबलिङ्ग में इतर-शब्द से परे सु, अम्-इनके स्थान में अद्ड्-आदेश का निषेध करने के लिए इस सूत्र की रचना आचार्य जी ने की है।

टिप्पणी

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से इतर-शब्द से परे सु और अम के स्थान पर अद्ड्-आदेश का निषेध होता है। तीन पद वाले इस सूत्र में न इतरात् छन्दसि ये पदच्छेद है। वहां न यह अव्यय है, इतरात् यह पञ्चम्यन्त पद और छन्दसि यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। इस सूत्र में स्वमोर्नपुंसकात् इस सूत्र से सु और स्वमो: यह षष्ठीद्विवचनान्त पद है, अद्ड्डतरादिभ्य: पञ्चभ्य: इस सूत्र से अद्ड् इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। अङ्गस्य इस पद का यहा अधिकार है। इतरात् इस पद का यहाँ अङ्गपद का विशेषण है, इसलिए यहाँ विभक्तिविपरिणाम से अङ्गपद पञ्चम्यन्त होता है। उससे यहाँ पदयोजना होती है- छन्दसि इतरात् अङ्गात् स्वमो: अद्ड् न इति। सूत्र का अर्थ है- छन्द विषय में इतरशब्द से उत्तर सु और अम को अद्ड् आदेश न हो।

उदाहरण- इतरम्।

सूत्रार्थसमन्वय– क्लीबलिङ्ग में इतरशब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु-प्रत्यय करने पर इतर सु इस स्थिति में अद्ड्डतरादिभ्य: पञ्चभ्य: इस सूत्र से सुप्रत्यय के स्थान में अद्डादेश प्राप्त होने पर प्रकृतसूत्र से उसका निषेध होने पर अतोऽम् इस सूत्र से सुप्रत्यय के स्थान में अमादेश होने पर इतर अम् इस स्थिति में अमि पूर्व: इस सूत्र से पूर्वरूप एकादेश अकारे करने पर इतर म् इस स्थिति में वर्ण सम्मेलन करने पर इतरम् यह रूप सिद्ध होता है लोक में तो इतरत् यह रूप है।

21.16 क्त्वापि च्छन्दसि॥ (7.1.38)

सूत्रार्थ- अनञ्पूर्व समास में क्त्वा आदेश होता है तथा ल्यब भी होता है।

सूत्रव्याख्या– इस विधिसूत्र में तीन पद है। क्त्वा अपि छन्दसि ये सूत्रगत पदच्छेद है। क्त्वा यह प्रथमान्त पद है। अपि यह अव्ययपद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। लोक में समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप् इस सूत्र से नञ्समास भिन्नसमास में क्त्वा के स्थान में ल्यबादेश का विधान है। इस सूत्र से वेद में नञ्समास से भिन्नसमास में क्त्वा के स्थान में क्त्वा यह आदेश होता है। सूत्र में अपि ग्रहण से ल्यब भी होता है समास में भी और असमास में भी।

उदाहरण- परिधापयित्वा।

सूत्रार्थसमन्वय- परिपूर्वक ण्यन्त धा धातु से णिच क्त्वाप्रत्यय करने पर परि धा णिच् क्त्वा इस स्थिति में इस सूत्र से क्त्वा के स्थान में क्त्वादेश होने पर प्रकियाकार्य करने पर परिधापयित्वा यह रूप सिद्ध होता है। सूत्र में अपिग्रहण से ल्यब भी सिद्ध होता है। जैसे- उद्धृत्य तान् जुहोति यहाँ पर ल्यप् किया गया है। अप्राप्त ल्यप को प्राप्त कराने के लिए अपिशब्द का प्रयोग किया है।

टिप्पणी

21.17 सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्यायाजालः॥ (7.1.39)

सूत्रार्थ– सुपो के स्थान में सुलुक्पूर्वसवर्णआआत्शेयाडाड्याच्आल् ये आदेश हो छन्द में।

सूत्रव्याख्या– यहाँ दो पद विद्यमान है। सुपाम् यह षष्ठ्यन्त पद है। सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्याजालः यह प्रथमान्त पद है। क्त्वाऽपि छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति है, यहाँ वैषयिक सप्तमी। उससे सूत्र का अर्थ होता है सुब्विभक्तियो के स्थान में सुलुक्पूर्वसवर्णआआत्शेयाडाड्याच्आल् ये आदेश हो छन्द विषय में।

उदाहरण- ऋजवः सन्तु पन्थाः। परमे व्योमन्।

सूत्रार्थसमन्वय- ऋजवः सन्तु पन्थाः लोक में पथिन्शब्द का प्रथमा बहुवचन की विवक्षा में जस्प्रत्यय करने पर पथिन् जस् इस स्थिति में इतोऽत्सर्वनामस्थाने इस सूत्र से इकार को अकार करने पर पथन् अस् इस स्थिति में पथन् अस् इस स्थिति में थो न्थः इस सूत्र से थकार को न्थादेश होने पर पन्थ् अन् अस् इस स्थिति में नान्त की उपधादीर्घ होने पर पन्थानः यह रूप हो परन्तु वेद में प्रयोग होने से प्रकृतसूत्र से जस के स्थान में सु आदेश और अनुबन्धलोप होने पर पथिन् स् इस स्थिति में पथिमथ्यृभुक्षामात् इस सूत्र से आकारान्तादेश होने पर पथि आ स् इस स्थिति में इतोऽत् सर्वनामस्थाने इस सूत्र से इकार को अकार करने पर पथ आ स् इस स्थिति में थो न्थः इस सूत्र से थकार के स्थान में पन्थादेश होने पर पन्थ् अ आ स् इस स्थिति में अकार आकार को सवर्णदीर्घ आकार करने पर पन्था स् इस स्थिति में सकार को रुत्व विसर्ग करने पर पन्थाः यह रूप सिद्ध होता है।

परमे व्योमन्- व्योमन्शब्द का सप्तमी एकवचनविवक्षा में ङिप्रत्यय करने पर व्योमन् ङि इस स्थिति में इसका वेद में प्रयोग होने से प्रकृतसूत्र से ङिप्रत्यय का लुक् होने पर **व्योमन्** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **व्योमनि, व्योम्नि** ये दो रूप सिद्ध होता है।

इसी प्रकार आगे भी जानना चाहिए।

21.17.1 (वा.) आङ्याजयारामुपसंख्यानम्म

वार्तिकार्थ– टा प्रत्यय के स्थान में आङ् अयाज् और अयार् आदेशा होते है ऐसा कहना चाहिए।

वार्तिकव्याख्या- आङ्याजयाराम् यह षष्ठ्यन्त पद है। उपसंख्यानम् यह अव्ययपद है। छन्दसि इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है, यहाँ वैषयिक सप्तमी है। सूत्र का अर्थ होता है– छन्द विषय में तृतीया एकवचन टा के स्थान में आङ् अयाच् अयार् ये आदेश होता है ऐसा कहना चाहिए।

टिप्पणी

उदाहरण- बाहवा सिसृतम्।

सूत्रार्थसमन्वय– बाहुशब्द से टाप्रत्यय करने पर बाहुना यह हो। किन्तु बाहु टा इस स्थिति में प्रकृतवार्तिक से टा इसके स्थान में आङ् आदेश होने ङकार के इत्संज्ञा और लोप होने पर बाहु आ इस स्थिति में आङ के ङित्त् होने से और उकारान्तबाहु शब्द की शेषो घ्यसखि इस सूत्र से घिसंज्ञा होने से हकार के उत्तर उकार की घेर्ङिति इस सूत्र से गुण ओकार करने पर बाहो आ इस स्थिति में ओकार के स्थान में एचोऽयवायावः इससे अवादेश होने पर **बाहवा** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **बाहुना** यह रूप है।

ऐसा ही अन्य जगह समझना चाहिए।

21.18 लोपस्त आत्मनेपदेषु॥ (7.1.41)

सूत्रार्थ– आत्मनेपद संज्ञक जो तकार उसका छन्द विषय में लोप हो जाता है।

सूत्रव्याख्या– इस सूत्र में तीन पद है। लोपः तः आत्मनेपदेषु यह सूत्र में आये पदच्छेद है। लोपः यह प्रथमान्त पद है। तः यह षष्ठ्यन्त पद है। आत्मनेपदेषु यह सप्तम्यन्त पद है, यहाँ वैषयिकसप्तमी है। क्त्वाऽपि छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस पद की अनुवृति है। सूत्र का अर्थ होता है- आत्मनेपद पद में जो तकार है उसका लोप हो वेद में।

उदाहर- देवा अदुह्व।

सूत्रार्थसमन्वय- देवा अदुह्व यह वैदिक प्रयोग है। इसलिए ही अदुह्व यहाँ पर तङानावात्मनेपदम् इस सूत्र से आत्मनेपदसंज्ञक त प्रत्यय का लोप होता है।

अदुह्व इस उदाहरण में दुह्धातु से लङ में झप्रत्यय करने पर आत्मनेपदेष्वनतः इस सूत्र से झकार के स्थान में अत् आदेश होने पर दुह् अत् इस स्थिति में बहुलं छन्दसि इस सूत्र से रुडागम और अनुबन्धलोप होने पर टित्त्व होने से आदि अवयव में दुह् र् अत् अ इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से तकार का लोप होने पर दुह् र् अ अ इस अवस्था में अतो गुणे इस सूत्र से अकार को पररूप एकादेश होने पर लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः इस सूत्र से अडागम होने पर अनुबन्धलोप होने पर अ दुह् र् अ इस स्थिति में सभी वर्णों के मिलान करने पर **अदुह्व** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **अदुहत** यह ही रूप है।

21.19 यजध्वैनमिति च॥ (7.1.43)

सूत्रार्थ– एनम इसके परे रहते ध्वम के अन्त लोप का निपातन किया जाता है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में चार पद हैं। यजध्व एनम् इति च ये सूत्रगत

पदच्छेद है। यजध्व यह तिङन्त पद है। एनम् यह लुप्तसप्तम्यन्त पद है। इति यह अव्ययपद है। च यह अव्ययपद है।

उदाहरण- यजध्वैनं प्रियमेधाः।

सूत्रार्थसमन्वय- (यजध्वम् एनम्) यजध्वैनम् इस प्रयोग का यह छान्दस होने से यजध्वम् इससे परे एनम् यह शब्द है। इसलिए प्रकृतसूत्र से मकार का लोप निपातन से करने पर यजध्व एनम् इस स्थिति में वृद्धिरेचि इस सूत्र से अकारैकार को वृद्धि ऐकार करने पर यजध्वैनमिति रूप सिद्ध होता है।

21.20 तस्य तात्॥ (7.1.44)

सूत्रार्थ– मध्यम पुरुष बहुवचन के स्थान में तात् आदेश हो।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। तस्य तात् ये सूत्रगतपदच्छेद है। तस्य यह षष्ठ्यन्त पद है। तात् यह प्रथमान्त विधेयबोधक पद है। क्त्वाऽपि छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। यजध्वैनमिति च इससे और, तप्-तनप्-तन-थनाश्च इससे पूर्वोत्तरसूत्र के साहचर्य से इस सूत्र में त इस मध्यमपुरुषबहुवचन का ग्रहण होता है, तङः का ग्रहण नहीं होता है। उससे सूत्र का अर्थ होता है- छन्द विषय में मध्यमपुरुष बहुवचन के स्थान में तात् यह आदेश हो।

उदाहरण- गात्रमस्या नूनं कृणुतात्।

सूत्रार्थसमन्वय- हिंसाकरणार्थक-कृवि-धातु से लोट मध्यम पुरुष बहुवचन में थप्रत्यय करने पर उसके स्थान में तस्थस्थमिपां तान्तन्तामः इस सूत्र से तकारादेश होने पर कृव् त इस स्थिति में अनेकाल् शित्सर्वस्य इस परिभाषा से परिष्कार करने पर प्रकृतसूत्र से उसके स्थान में तात् यह सर्वादेश करने पर कृव् तात् इस स्थिति में मिदचोऽन्त्यात्परः इस परिभाषा से परिष्कार करने पर उदितो नुम्धातोः इस सूत्र से नुमागम और अनुबन्धलोप करने पर कृ न् अ व् तात् इस स्थिति में धिन्विकृण्व्योर च इस सूत्र से उप्रत्यय करने पर वकार और अकार करने पर कृ न् अ उ तात् इस अवस्था में अतो लोपः इस सूत्र से अकार का लोप करने पर कृ न् उ तात् इस अवस्था में ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम् इस वार्तिक से नकार को णत्व करने पर कृ ण् अ उ तात् इस स्थिति में **कृणुतात्** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **कृणुत** यह रूप है।

21.21 इदन्तो मसि॥ (7.1.46)

सूत्रार्थ- मस् शब्द को इकारान्त होता है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। इदन्तः मसि ये सूत्रगतपदच्छेद है। इदन्तः यह प्रथमान्त पद है। मसि यह प्रथमान्त पद है यहाँ सकार में जो इकार

है वह उच्चारण के लिए। इत् अन्ते यस्य स इदन्तः। क्त्वापि छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है यहाँ वैषयिक सप्तमी। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द विषय में मस् यह शब्द इदन्त होता है। अर्थात् मस को इक्-आगम होता है। कित्त्व होने से अन्त्य अवयव को होता है। उससे मस यह इदन्त है।

उदाहरण- नमो भरन्त एमसि।

सूत्रार्थसमन्वय- एमसि यहाँ पर आ इमसि ये विच्छेद है। इमसि यहाँ पर इण् गतौ इस धातु से लट उत्तम पुरुष बहुचवन की विवक्षा में लकार के स्थान में मसादेश और शप आदेश होने पर और शप का लुक होने पर आ इ मस् इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से मस के इदन्त होने से आ इमसि इस स्थिति में आद् गुणः इस सूत्र से आकार इकार को गुण एकार होने पर एमसि यह रूप सिद्ध होता है। नमो भरन्त एमसि इसका अर्थ हम नमस्कार करके आये यह अर्थ है। लोक में तो (आ इमः) इमः यह रूप होता है।

21.22 क्त्वो यक्॥ (7.1.47)

सूत्रार्थ– छन्द में क्त्वा को यक् आगम होता है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। क्त्वः यक् ये सूत्रगत पदच्छेद है। क्त्वः यह षष्ठ्यन्त पद है। यक् यह प्रथमान्त पद है। क्वाऽपि छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। छन्द विषय में क्त्वा को यक् आगम होता है। यक के कित्त्व होने से आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा से आगमिन अन्त्य अवयव होता है।

उदाहरण- दिवं सुपर्णो गत्वाय।

सूत्रार्थसमन्वय- गमनक्रियावाची भ्वादिगण की गम्लृ-गतौ इस धातु से क्त्वाप्रत्यय करने पर और अनुबन्धलोप होने पर गम् त्वा इस स्थिति में अनुदात्तोपदेश-वनति-तनोत्यादीनामनुनासिकलोपो झलि क्ङिति इस सूत्र से अनुनासिक का लोप करने पर ग त्वा इस स्थिति में प्रकृत का छन्दोविषय होने से प्रकृतसूत्र से यगागम होने पर अनुबन्धलोप होने पर कित्त्व होने से अन्त्यावयव में ग त्वा य इस स्थिति में सभी वर्णो को मिलाने पर गत्वाय यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो गत्वा यह रूप है।

पाठगत प्रश्न-21.2

13. क्त्वापि च्छन्दसि इस सूत्र से क्या आदेश विहित है?

14. क्त्वापि च्छन्दसि इस सूत्र में अपि शब्द बल से क्या होता है?

15. क्त्वापि च्छन्दसि इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

16. आङ्याजयारामुपसंख्यानम् यह सूत्र है अथवा वार्तिक?

17. आङ्याजयारामुपसंख्यानम् इस वार्तिक का एक उदाहरण लिखिए।

18. लोपस्त आत्मनेपदेषु इससे किसके लोप का विधान है?

19. यजध्वैनमिति च इस सूत्र से किसके अन्तलोप का विधान है?

20. श्रीग्रामण्योश्छन्दसि इस सूत्र से किसको नुडागम विहित है?

21. गोः पादान्ते इस सूत्र का एक उदाहरण लिखिए।

पाठसार

इस पाठ में दीर्घविधिविषय की आदि में कुछ नियमों की आलोचन की है। निपातस्य च इस सूत्र से ऋचा विषय में निपातनो को दीर्घ विधान करते है। एवा इति उसका उदाहरण है। अन्येषामपि दृश्यते इस सूत्र से उन सबकी पूर्व आलोचना सूत्रों के द्वारा की है जहां दीर्घ प्राप्त नहीं होता है उन अवशिष्ट में दीर्घ का विधान करते है। नामि इससे नाम के परे विकल्प से दीर्घ का विधान करते है। जनिता मन्त्रे इस सूत्र से वेद में इडादि तृच के परे होने पर णी के इकार के लोप का विधान करते है। छन्दस्यपि दृश्यते इससे वेद में लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु परे हलादि धातुओं को भी आडागम का विधान करते है। बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि इससे बहुल अर्थ में लुङ्-लङ्-लृङ्क्षु के परे हलादि और अजादि धातुओं को अडागमाडागम के निषेध का विधान करते है, और माङ्योगे में भी अडागमाडागम का विधान करते है। छन्दस्युभयथा इससे भू सुधि को यणादेश और इयङुवङ का विधान करते है। और श्रुशृणुपृकृवृभ्यश्छन्दसि इत्यादि सूत्र के द्वारा हि को धि आदेशविषय में विशिष्ट नियमों को कहा है। मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः इस सूत्र से मन्त्र में आङ के परे आत्मन्शब्द के आदि आकार के लोप का विधान करते हैं। बहुलं छन्दसि इससे छन्द में झादेश को अत बाहुल्य से रुडागम का विधान करते हैं। बहुलं छन्दसि इस द्वितीय सूत्र से देवेभिः इत्यादि में अतो भिस ऐस् इससे प्राप्त ऐकादेश का निषेध करते है। लोक में क्लीबलिङ्ग में डतरादि पञ्च शब्दो से परे सु और अम के स्थान में अद्डादेश होता है, परन्तु वेद में नेतराच्छन्दसि इस सूत्र से उस अद्डादेश का निषेध होता है। क्त्वापि छन्दसि इस सूत्र से वेद में क्त्वा के स्थान में क्त्वादेश का विधान करते है। कैसे सुपां सुलुक् इत्यादि सूत्र से सु का लुक् होता है। और कैसे लोपस्त आत्मनेपदेषु इस सूत्र से तप्रत्यय के लोप का विधान किया गया है उन सब की यहाँ इस पाठ में आलोचना की है।

टिप्पणी

पाठान्त प्रश्न

1. निपातस्य च इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. छन्दस्युभयथा इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
3. ऋभुक्षाणम् यह रूप सिद्ध कीजिए।
4. आनट् इस रूप को सिद्ध कीजिए।
5. अवाप्सुः इस रूप को सिद्ध कीजिए।
6. सुधियः इस रूप को सिद्ध कीजिए।
7. प्रीणाहि इस रूप को सिद्ध कीजिए।
8. दुह्रे इस रूप को सिद्ध कीजिए।
9. देवेभिः यह रूप को सिद्ध कीजिए।
10. नेतराच्छन्दसि इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।
11. परिधापयित्वा इस रूप को सिद्ध कीजिए।
12. बाहवा इस रूप को सिद्ध कीजिए।
13. अदुह्र इस रूप को सिद्ध कीजिए।
14. कृणुतात् इस रूप की सूत्र सहित व्याख्या कीजिए।
15. नमो भरन्त एमसि यहाँ पर एमसि इस रूप की सिद्ध कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

21.1

1. निपातस्य च।
2. पूरुष।
3. यण् और इयङुवङ ये आदेश होते है।
4. असम्बुद्धौ सर्वनामस्थाने के परे।
5. इडादि तृच के परे रहते।

6. हलादि धातुओं को भी आडागम होता है।

7. लुङ्-लङ्-लृङ् के परे।

8. भुसुधियोः।

9. अपित को विकल्प से होता है।

10. धि आदेश होता है।

11. मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः इस सूत्र से।

12. बहुलं छन्दसि इस सूत्र से।

21.2

13. क्त्वादेश।

14. ल्यबादेश भी होता है।

15. परिधापयित्वा।

16. वार्तिक।

17. बाहवा सिसृतम्।

18. तप्रत्यय का।

19. ध्वम।

20. आम।

21. विद्मा हि त्वा गोपतिं शूर गोनाम्।

इक्कीसवां पाठ समाप्त

22

अष्टाध्यायी का सप्तम अध्याय

इस पाठ में अष्टाध्यायी के सातवें अध्याय के कुछ सूत्रों की व्याख्या करेंगे। इस पाठ में वेद में जो ये अनङादेश विषय में और इडागमविषय में इडागमनिषेधविषय में और जस्वादेशविषय में कुछ विशिष्ट नियम है उनकी आलोचना करते हैं। वेद में कैसे जस्प्रत्यय का असुगागम होता है ऐसा कहते है। उससे देवाः इसको देवासः यह वैदिकरूप कैसे होते हैं यह भी बताया गया है। श्रीशब्द को और ज्ञानशब्द को नुडागम कैसे होता है इसका भी प्रतिपादन करेंगे। पादान्त में स्थित गोशब्द को नुडागमविषय में नियमो को कहेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- वेद में असुगागम को जान पाने में;
- श्री और ज्ञान शब्द को नुडागमविषय के नियमों को जान पाने में;
- अस्थिदध्यादीनां को कैसे द्विवचन में ईकार होता है उसको जान पाने में;
- ऋकारान्त धातु को कैसे उकार होता है इस को जान पाने में।

22.1 आज्जसेरसुक्॥ (7.1.50)

सूत्रार्थ– अवर्णान्ताद अङ्ग से उत्तर जस को असुक् हो।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। आत् जसेः असुक् ये सूत्रगत पदच्छेद है। आत् यह पञ्चम्यन्त पद है, जसेः यह षष्ठ्यन्त पद है, असुक् यह प्रथमान्त पद है। क्वाऽपि छन्दसि इस

टिप्पणी

सूत्र से छन्दसि इस की अनुवृति है। अङ्गस्य इसका अधिकार है, और वह पञ्चमी का विपरिणाम है। अ-शब्द के पञ्चमी एकवन आत् इस पद की अनुवृति है। और उसका अवर्णा से यह अर्थ है। आत् यह अङ्गस्य इसका विशेषण है इसलिए येन विधि स्तदन्तस्य इस परिभाषा से तदन्तग्रहण होता है, और उससे अवर्णान्त अङ्ग से यह अर्थ प्राप्त होता है। आत् यह पञ्चम्यन्त होने से तस्मादित्युत्तरस्य इस परिभाषा से परे का यह अर्थ प्राप्त होता है। उससे सूत्र का अर्थ होता है छन्द विषय में अवर्णान्त अङ्ग से परे जसे को (जसः) असुगागम होता है।

उदाहरण- देवासः

सूत्रार्थसमन्वय– देवशब्द का प्रथमा बहुवचन की विवक्षा में जस्प्रत्यय करने पर अनुबन्ध लोप होने पर देव अस् इस स्थिति में अङ्गसंज्ञक देवशब्द की आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा के द्वारा परिष्कार होने से प्रकृतसूत्र से असुगागम और अनुबन्धलोप होने पर कित्त्व अन्त्यावयव होने से देव अस् अस् इस स्थिति में वकार से उत्तर अकार को और अस के अकार को सवर्णदीर्घ होने आकार होने पर देवासस् इस स्थिति में सकार को रुत्व विसर्ग होने पर **देवासः** यह रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार **ब्राह्मणासः** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो यथाक्रम **देवाः, ब्राह्मणाः** यह प्रयोग होता है।

22.2 श्रीग्रामण्योश्छन्दसि॥ (7.1.56)

सूत्रार्थ– छन्द में श्री ग्रामणी (पद के) आम को नुट् (आगम होता है)।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। श्रीग्रामण्योः यह षष्ठ्यन्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। ह्रस्वनद्यापो नुट् इस सूत्र से नुट् इसकी अनुवृति है। आमि सर्वनाम्नः सुट् इस सूत्र से आमि इसकी अनुवृति है। अङ्गस्य इसकी अनुवृत्ति आती है। नुट के उकारटकार की इत्सज्ञा होती है। और टित्त्व होने से नुट् आदि अवयव को होता है। उससे सूत्र का अर्थ होता है श्रीशब्द और ग्रामणी शब्द के परे आम को छन्द विषय में नुडागम होता है।

उदाहरण- श्रीणामुदारो धारुणो रयीणाम्।

सूत्रार्थसमन्वय– श्रीशब्द से आम करने पर श्री आम् इस स्थिति में वाऽमि इस सूत्र से विकल्प से नदीसंज्ञक होती है और उससे ह्रस्वनद्यापो नुट् इस सूत्र से नुडागम सिद्ध होता है। किन्तु नदीसंज्ञा अभावपक्ष में नुट की प्राप्ति नहीं होती है इसलिए **श्रीग्रामण्योश्छन्दसि** इस सूत्र से नुट् का विधान करते है नुट करने पर अनुबन्धलोप होने पर नुट के टित्त्व आद्यावयव को होने पर श्री न आम् इस स्थिति में रकार से परे नकार का अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि इस सूत्र से णत्व और प्रकियाकार्य करने पर श्रीणाम् यह रूप सिद्ध होता है।

टिप्पणी

22.3 गोः पादान्ते॥ (7.1.57)

सूत्रार्थ- गो इससे उत्तर आम को नुडागम हो पादान्त में।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। गोः पादान्ते ये सूत्रगत पदच्छेद है। गोः यह पञ्चम्यन्त पद है, पादान्ते यह सप्तम्यन्त पद है। गोः यह पञ्चम्यन्त होने से तस्मादित्युत्तरस्य इस परिभाषा से उत्तर यह अर्थ प्राप्त होता है। पादान्ते यह वैषयिक सप्तमी है इसलिए पादान्तविषय में गो के परे आम को नुडागम हो यह सूत्र का अर्थ होता है। नुट के उकार और टकार की इत्सज्ञा होती है। नुट के टित्त्व करने से स्थानि के आदि अवयव को हो उसके लिए।

उदाहरण- विद्मा हि त्वा गोपतिं शूर गोनाम्।

सूत्रार्थसमन्वय– यहाँ गोनाम् यह शब्द पादान्त में है इसलिए गो आम् इस स्थिति मं आद्यन्तौ टकितौ इस परिभाषा से परिष्कार करने पर प्रकृतसूत्र से नुडागम और अनुबन्ध लोप होने पर गो न् आम् इस स्थिति में प्रक्रिया करने पर **गोनाम्** यह रूप सिद्ध होता है।

विशेष– सूत्र में पादान्ते यह कहा है इसलिए गोशब्द पादान्त में न हो तो नुडागम नहीं होता है। जैसे गवां शता पृक्षयामेषु यहाँ पर गोशब्द पादान्त में नहीं है इसलिए गोशब्द से नुट् नहीं होता है। कही पर पादान्त में होने पर नुडागम नहीं होता है जैसे विराजं गोपति गवाम् यहाँ पर छन्द विषय में सभी वैकल्पिक होने से उसकी व्याख्या करते है।

22.4 छन्दस्यपि दृश्यते॥ (7.1.76)

सूत्रार्थ– अस्थ्यादि को अनङ् हो।

सूत्रावतरण- लोक में अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णाम् अजादि तृतीयादि विभक्ति के परे अनङ्-आदेश होता है। इसलिए छन्द विषय में उन शब्दो की अजादिविभक्ति के परे तथा हलादिविभक्ति को भी अनङ् हो उसके लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनङादेश का विधान करते है। इस सूत्र में छन्दसि यह विषय सप्तम्यन्त पद है, अपि यह अव्यय, और दृश्यते यह तिङन्त पद है। यहाँ अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः इस सूत्र से अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णाम् इस षष्ठीबहुवचनान्त पद, अनङ् इस प्रथमान्त पद की, और उदात्तः इस प्रथमान्त स्वरबोधक पद की अनुवृति है। और इस प्रकार यहाँ पदयोजना- छन्दसि अपि अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णाम् उदात्तः अनङ् दृश्यते इति। यहाँ हलादि विभक्ति के परे भी अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्ण को अनङादेश देखा जाता है यह विशेष है। उससे सूत्रार्थ होता है– छन्द विषय में अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्ण शब्दो को भी अनङादेश हो और वह उदात्त हो। अनङ् के ङित्करने से और ङिच्च इससे

अनङ् अन्त्यादेश होता है ऐसा जानना चाहिए।

उदाहरण- इन्द्रो दधीचो अस्थभिः।

सूत्रार्थसमन्वय- अस्थि-शब्द से तृतीयाबहुवचन की विवक्षा में भिस्-प्रत्यय करने पर अस्थि भिस् इस स्थिति में अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः इस सूत्र से अनङादेशाभाव करने पर प्रकृतसूत्र से अस्थि-शब्द के इकार के स्थान में अनङादेश और अनुबन्धलोप होने पर अस्थन् भिस् इस स्थिति में नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य इस सूत्र से नकार का लोप होने पर अस्थ भिस् इस स्थिति में और विभक्तिकार्य करने पर **अस्थभिः** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **अस्थिभिः** यह रूप होता है।

22.5 ई च द्विवचने॥ (7.1.77)

सूत्रार्थ– छन्द में अच और (हल) तृतीयादि द्विवचन में अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णाम् ई (आदेश) होता है।

सूत्रावतरण- छन्द में अस्थिदधिसक्थ्यक्ष शब्दो को द्विवचन परे ई-इत्यादेशविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से ईकारादेश होता है। तीन पद वाले इस सूत्र में ई यह प्रथमान्त पद, च यह अव्यय, द्विवचने यह सप्तम्यन्त पद है। इस सूत्र में छन्दस्यपि दृश्यते इस सूत्र से छन्दसि इस विषयसप्तम्यन्त पद की, अस्थिदधि सक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः इस सूत्र से अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णाम् इस षष्ठ्यन्त पद, अनङ् इस प्रथमान्त पद की, उदात्तः इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। उससे यहाँ पदयोजना- छन्दसि अस्थिदधि सक्थ्यक्ष्णां द्विवचने च ई इति। इस सूत्र में किस प्रकार के द्विवचन की विवक्षा करते है तो कहते है– यहाँ इकोऽचि नुम्विभक्तौ इस सूत्र से विभक्तौ यह सप्तम्यन्त पद, रधि-जभोरचि इस सूत्र से अचि यह सप्तम्यन्त पद, तृतीयदिषु भाषितपुंस्कं पुंवद्गालवस्य इस सूत्र से तृतीयादिषु यह सप्तमीबहुवचनान्त पद का यहाँ अनुवर्तन करना चाहिए। उससे सूत्रार्थ है- छन्द विषय में अस्थिदधिसक्थ्यक्ष शब्दों को अजादि और हलादि तृतीयादि विभक्ति द्विवचन में ईकारादेश होता है। और यह आदेश अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अस्थिदधिसक्थ्यक्ष शब्दों के अन्त्य अल के स्थान में ही होता है।

उदाहरण- अक्षीभ्याम्।

सूत्रार्थसमन्वय- अक्षि-शब्द की प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर उससे तृतीयाद्विवचन की विवक्षा में भ्याम्-प्रत्यय करने पर अक्षि भ्याम् इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से इकार के स्थान में ईकार करने पर अक्षी भ्याम् इस स्थिति में और सभी वर्णो के मिलाने पर **अक्षीभ्याम्** यह रूप सिद्ध होता है।

टिप्पणी

22.6 बहुलं छन्दसि॥ (7.1.103)

सूत्रार्थ- छन्द विषय में ऋकारान्त धातु के अङ्ग को बहुल करके उकारादेश होता है।

सूत्रावतरण- छन्द में ऋकारान्त धातु के अङ्ग को बहुल अर्थ में उकारादेशविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से उकारादेश का विधान है। इस सूत्र में बहुलम् यह प्रथमान्त पद, और छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। इस सूत्र में ऋत इद् धातोः इस सूत्र से ऋतः, और धातोः इन षष्ठ्यन्त पद, उदोष्ठ्यपूर्वस्य इस सूत्र से उत् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। अङ्गस्य इस षष्ठ्यन्त पद का अधिकार है। और इस प्रकार यहाँ पदयोजना- छन्दसि ऋतः धातोः अङ्गस्य बहुलम् उत् इति। ऋतः यह धातोः इसका विशेषण है इसलिए ऋदन्त धातु से यह अर्थ प्राप्त होता है। उससे सूत्रार्थ होता है- छन्द विषय में ऋदन्त धातु के अङ्ग को बहुल करके उकारादेश होता है।

उदाहरण- ततुरिः।

सूत्रार्थसमन्वय- तृ-धातु से किन्-प्रत्यय करने पर और उसको धातोः द्विर्वचनेऽचि इस सूत्र से स्थानिवद्भाव करने पर द्वित्व होने पर तृ तृ इ इस स्थिति में पूर्व तृ-इसकी अभ्याससंज्ञा होने पर और उसके अभ्यास के ऋकार के स्थान में उरत् इस सूत्र से रपर अकार करने पर तर् तृ इ इस स्थिति में हलादिः शेषः इससे अभ्यास के रेफ का लोप होने पर त तुर् इ इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से ऋकार के स्थान में रपर उकार करने पर त तुर् इ इस स्थिति में सभी वर्णों के मिलाने पर ततुरि यह समुदाय रूप होता है। और उस समुदाय के कृदन्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च इससे प्रातिपदिकसंज्ञा होने पर और विभक्तिकार्य करने पर ततुरिः यह रूप सिद्ध होता है।

22.7 ह्वु ह्वरेश्छन्दसि॥ (7.2.31)

सूत्रार्थः– ह्वृ को निष्ठा में ह्वु आदेश हो।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से ह्वृ-धातु के स्थान में ह्वु-इत्यादेश का विधान करते है। इस सूत्र में ह्वु यह प्रथमान्त पद, ह्वरेः यह षष्ठ्यन्त पद, छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। यहाँ श्वीदितो निरूठायाम् इस सूत्र से निष्ठायाम् इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। और इस प्रकार यहाँ पदयोजना- छन्दसि ह्वरेः ह्वु निष्ठायाम्। यहाँ निष्ठापद से क्तः क्तवतुः इन दो प्रत्ययो का ग्रहण है। और इस प्रकार सूत्रार्थ होता है- छन्द विषय में निष्ठा के परे ह्वृ-धातु के स्थान पर ह्वु-इत्यादेश होता है।

उदाहरण - अह्वुतम्।

सूत्रार्थसमन्वय- ह्वृ-धातु से निष्ठासंज्ञक क्तप्रत्यय करने पर अनुबन्धलोप करने पर ह्वृ

त इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से ह्वृ-धातु के स्थान पर ह्रु-इत्यादेश होने पर और विभक्तिकार्य करने पर ह्रुतम् यह रूप बनता है। उससे न ह्रुतम् ऐसा विग्रह करने पर नञ्तत्पुरुषसमास करने पर और विभक्ति कार्य करने पर **अह्रुतम्** यह रूप सिद्ध होता है।

विशेष- क्त क्तवतू निष्ठा इस सूत्र से क्तप्रत्यय की और क्तवतुप्रत्यय की निष्ठासंज्ञा होती है।

22.8 ग्रसित-स्कभित-स्तभितोत्तभित-चत्त-विकस्ता-विशस्तृ-शंस्तृ-शास्तृ-तरुतृ- तरूतृ-वरुतृ-वरूतृ-वरूत्री-रुज्वलिति-क्षरिति-वमित्यमितीति च॥ (7.2.34)

सूत्रार्थ– इन अट्ठारह रूपों का निपातन करते है।

सूत्राव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से ग्रसितादिरूपो का निपातन विधान करते है। यहाँ ग्रसित-स्कभित-स्तभितोत्तभित-चत्त-विकस्ता-विशस्तृ-शंस्तृ-शास्तृ-तरुतृ- तरूतृ-वरुतृ-वरूतृ-वरूत्री-रुज्वलिति-क्षरिति-वमित्यमिति इति च ये पदच्छेद है। इस सूत्र में ग्रसित-स्कभित-स्तभितोत्तभित-चत्त-विकस्ता-विशस्तृ-शंस्तृ-शास्तृ-तरुतृ-तरूतृ-वरुतृ-वरूतृ-वरूत्री-रुज्वलिति-क्षरिति-वमित्यमिति ये प्रथमान्त समस्त पद है, इति यह अव्यय और च यह भी अव्यय। ह्रु ह्वरेश्छन्दसि इस सूत्र से यहाँ छन्दसि इ सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। और यहाँ पदयोजना- छन्दसि ग्रसित-स्कभित-स्तभितोत्तभित-चत्त-विकस्ता-विशस्तृ- शंस्तृ-शास्तृ-तरुतृ-तरूतृ-वरुतृ-वरूतृ-वरूत्री-रुज्वलिति-क्षरिति-वमित्यमिति इति च इति।

यहाँ ग्रसित-स्कभित-स्तभितोत्तभित- यहाँ पर ग्रसु-स्कम्भु-स्तम्भुधातु के उकार की इत्संज्ञा होती है, इसलिए उनके उदित्त होने से इडागमाभाव करने पर प्रकृतसूत्र से उनकी इट्सहित रूपों का निपातन करते है। चत्त-विकस्ता-यहाँ दोनों धातुओं से क्तप्रत्यय करने पर और उनको वेद में इडागम करने पर प्राप्त प्रकृतसूत्र से वहां पर इडागम आभावविशष्ट दो रूपों का निपातन करते है। विशस्तृ-शंस्तृ-शास्तृ इन धातुओं के तृच्परे होने पर और रक होने से इडागम प्राप्त करने पर प्रकृतसूत्र से उस इडागम अभाव में विशिष्ट रूपों का निपातन करते है। तरुतृ-तरूतृ-वरुतृ-वरूतृ-वरूत्री-यहाँ पर भी धातुओं को इडागम प्राप्त होने पर प्रकृतसूत्र से वहा निपातन से इडागम का निषेध करते है। उज्वलिति-क्षरिति-वमित्यमिति-यहाँ पर और उत्-पूर्वक ज्वल्-धातु को और क्षर्-वम्-अम्- इन धातुओं से परे शप्-प्रत्यय को प्रकृतसूत्र से इडागम का विधान करते है। यहाँ सूत्रार्थ होता है छन्द विषय में ग्रसितस्कभित-स्तभितोत्तभित-चत्त-विकस्ता-विशस्तृ-शंस्तृ-शास्तृ-तरुतृ-तरूतृ-वरुतृ- वरूतृ-वरूत्री-रुज्वलिति-क्षरिति-वम इन सभी के ये रूप निपातन से होते है।

उदाहरण- उत्तभितम्, चत्तम्, तरूता, क्षरिति।

सूत्रार्थसमन्वय- उत्पूर्वक स्तम्भु-धातु के उकार की इत्संज्ञा होने पर स्तम्भ-धातु के सकार

टिप्पणी

के स्थान में उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य इससे आदेः परस्य इस परिभाषा के द्वारा परिष्कार करने से सकार के स्थान में स्थान आन्तर्य से थकार करने पर झरो झरि सवर्णे इससे उस थकार का लोप करने पर उत्तम्भ- धातु से क्त-प्रत्यय करने पर और अनुबन्धलोप होने पर उत्तम्भ् त इस स्थिति में अनिदिताम् हल उपधायाः क्ङिति इससे मकार का लोप होने पर यस्य विभाषा इससे निष्ठाक्तप्रत्यय को इडागम अभाव में प्रकृतसूत्र से उस क्तप्रत्यय को इडागम होने पर और प्रक्रिया के द्वारा **उत्तभितम्** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **उत्तब्धम्** यह रूप बनता है।

चत्-धातु से क्तप्रत्यय करने पर और अनुबन्धलोप होने पर चत् त इस स्थिति में क्तप्रत्यय की आर्धधातुक संज्ञा होने पर आर्धधातुकस्येड् वलादेः इससे धातु को इडागम प्राप्त होने पर प्रकृतसूत्र से उसका निषेध करने पर और प्रक्रिया कार्य के द्वारा चत्तम् रूप बनता है।

तृ-धातु से परे तृच्प्रत्यय करने पर और अनुबन्धलोप होने पर तृ तृ इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से तृचः उट अनुबन्धलोप होने पर तृ उ तृ इस स्थिति में ऋकार को गुण अकार करने पर रपरत्व होने से त् अर् उ तृ इस स्थिति में तृच्-प्रत्यय की आर्धधातुकसंज्ञा होने से आर्धधातुकस्येड् वलादेः इस सूत्र से धातु को इडागम प्राप्त करने पर प्रकृतसूत्र से उसका निषेध करने पर और वर्णों के मिलान करने पर तरुतृ यह स्थिति होने पर प्रक्रिया कार्य करने पर तरुता यह रूप सिद्ध होता है। और ऊट करने पर तरूता यह रूप बनता है। लोक में तो तरिता यह रूप है।

क्षर्- धातु से कर्ता में लट तिप करने पर क्षर् ति इस स्थिति में धातु से शप्- प्रत्यय करने पर अनुबन्धलोप करने पर क्षर् अ ति इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से शप के अकार को इकार करने पर और सभी वर्णों के मिलान करने पर **क्षरिति** यह वैदिक रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **क्षरति** यह रूप है।

22.9 मीनातेर्निगमे॥ (7.3.81)

सूत्रार्थ– शित परे रहते ह्रस्व हो।

सूत्रावतरण- वेद में शित प्रत्यय के परे मी-धातु के अङ्ग को ह्रस्वविधान करने के लिए इस सूत्र की रचना की।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से ह्रस्व का विधान करते है। इस सूत्र में मीनातेः यह षष्ठ्यन्त पद है निगमे यह सप्तम्यन्त पद है। यहाँ प्वादीनां ह्रस्वः इस सूत्र से ह्रस्वः इस प्रथमान्त पद की, ष्ठिवु-क्लमु-चमां शिति इस सूत्र से शिति इस सप्तम्यन्त पद की अनुवृति है। अङ्गस्य इस षष्ठ्यन्त पद का यहाँ अधिकार है। और इस प्रकार यहाँ निगमे मीनातेः अङ्गस्य शिति ह्रस्वः इति पद योजना है। यहाँ मीनाते इस पद से मी-धातु का ग्रहण है। उससे यहाँ सूत्रार्थ होता है– वेद में मी-धातु अङ्ग को शित

प्रत्यय के परे ह्रस्व हो।

उदाहरण- प्रमिणन्ति।

सूत्रार्थसमन्वय- प्र-पूर्वक मीञ- धातु से कर्ता में लट में झि करने पर प्रमी झि इस स्थिति में झोऽन्तः इस सूत्र से झकार के स्थान में अन्त् आदेश होने पर प्रमी अन्त् इ इस स्थिति में क्र्यादिभ्यः श्ना इस सूत्र से धातु से श्नाप्रत्यय करने पर और अनुबन्ध लोप होने पर प्रमी ना अन्ति इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से धातु से ईकार को ह्रस्व इकार करने पर श्नाभ्यस्तयोरातः इस सूत्र से ना- इसके आकार का लोप होने पर और श्नाप्रत्यय के नकार को णत्व णकार करने पर सभी वर्णों के मिलान करने पर प्रमिणन्ति यह रूप सिद्ध होता है।

22.10 बहुलं छन्दसि॥ (7.3.97)

सूत्रार्थ– छन्द में अस्तिसिच के परे अपृक्त को बहुल करके इट् हो।

सूत्रावतरण- छन्द विषय में अस्ति तथा सिच के परे अपृक्त को नित्य ईडागम प्राप्त होने पर उसको विकल्प से विधान करने के लिए अथवा निषेध करने के लिए इस सूत्र की रचना की है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से इडागम का विधान करते है। इस सूत्र में बहुलम् यह प्रथमान्त पद है, छन्दसि यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। यहाँ अस्तिसिचोऽपृक्ते इस सूत्र से अस्तिसिचः इस पञ्चम्यन्त पद की, अपृक्ते इस सप्तम्यन्त पद की, ब्रुव ईट् इस सूत्र से ईट् इस प्रथमान्त पद की अनुवृति है। यहाँ पदयोजना- छन्दसि अस्तिसिचः अपृक्ते बहुलम् ईट् इति। यहाँ अस्तिसिचः यहाँ पर पञ्चमीविधान होने से तस्मादित्युत्तरस्य इस परिभाषा के द्वारा अस्तिसिच से परे यह अर्थ प्राप्त होता है। उभयनिर्देशे पञ्चमीनिर्देशो बलीयान् इस परिभाषा के द्वारा यहाँ अस्तिसिच के परे अपृक्त का ईट् यह अर्थ प्राप्त होता है। सूत्रार्थ होता है- छन्द विषय में अस्ति तथा सिच के परे अपृक्तसंज्ञक प्रत्यय को बहुल करके ईट् हो। और इस सूत्र से सार्वधातुकसंज्ञक और अपृक्तसंज्ञक प्रत्यय को ईडागम होता। बहुलग्रहण से ईडागम कही पर होता है और कही पर नहीं होता है। बहुलम् क्या होता है तो कहा गया है। अपृक्त एकाल्प्रत्ययः इससे एकाल्प्रत्यय की अपृक्तसंज्ञा होती है। और उस अपृक्तसंज्ञक प्रत्यय को प्रकृतसूत्र से ईडागम होता है।

उदाहरण- आः। अक्षाः।

सूत्रार्थसमन्वय– अदादिगण में पढ़े होने से अस्-धातु से कर्ता में लङ तिप करने पर अस् ति इस स्थिति में अस्-धातु के शप का अदिप्रभृतिभ्यः शपः इस सूत्र से शप का लुक होने पर और धातु को आडागम और अनुबन्धलोप होने पर आ अस् ति इतश्च इससे इकार का लोप करने पर आ अस् त् इस स्थिति में अस्तिसिचोऽपृक्ते इससे तकार को ईडागम प्राप्त करने पर प्रकृतसूत्र से उसका निषेध करने पर आटश्च इससे वृद्धि

टिप्पणी

एकादेश करने पर आस् त् इस स्थिति में हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् इससे तकार का लोप होने पर और विभक्तिकार्य करने पर **आः** यह रूप सिद्ध होता है। लोक में तो **आसीत्** यह रूप। इसी प्रकार अन्य जगह पर स्वयम् ऊह्यम् में भी जानना चाहिए।

और कही पर ईडागम होता है जैसे अभैषीर्मा पुत्रक इति।

22.11 नित्यं छन्दसि॥ (7.4.8)

सूत्रार्थ- छन्द विषय में चङ् उपधा के ऋवर्ण को ऋन्नित्य ही होता है।

सूत्राव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से छन्द विषय में चङ् उपधा के ऋवर्ण को ऋत्व विधान करते है। इस सूत्र में दो पद है। नित्यम् यह अव्ययपद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः इस सूत्र से णौ चङ्युपधाया इन दो पद की अनुवृति है। उर्ङत् इस सुत्र से उः ऋत् इन दो पद की अनुवृति है। अङ्गस्य इस अधिकार में इस सूत्र को पढ़ा गया है। उससे सूत्रार्थ होता है छन्द विषय में चङ्-परे णी परे धातु की उपधा के ऋवर्ण को नित्य ऋकारादेश हो।

उदाहरण - अवीवृधात्।

सूत्रार्थसमन्वय- वृध्-धातु से णिच्प्रत्यय करने पर सनाद्यन्ता धातवः इस सूत्र से धातुसंज्ञा करने पर लुङ्लकार में तिप और अनुबन्धलोप होने पर वृध् इ ति इस स्थिति में च्लिप्रत्यय करने पर च्लि के स्थान में चङादेश और अनुबन्धलोप होने पर वृध् इ अ ति इस स्थिति में चङि इससे धातु को द्वित्व करने पर दो बार कहे गए पूर्वभाग की अभ्यास संज्ञा होने पर उरत् इससे अभ्यास के ऋकार को अकार करने पर रपरत्वे होने पर वर् ध् वृध् इ अ ति इस स्थिति में हलादिः शेषः इस सूत्र से आदिहल वकार के शेष रहने पर व वृध् इ अ ति इस स्थिति में चङ्प्रत्यय की आर्धधातुकसंज्ञा होने पर णेरणिटि इस सूत्र से णी का लोप होने पर धातु को अडागम प्रकृतसूत्र से करने पर ऋवर्ण के स्थान में ऋकारादेश होने पर और सन्वद्भाव करने पर सन्यतः इस सूत्र से अभ्यास के अकार को इकार करने पर दीर्घो लघोः इस सूत्र से इकार को दीर्घ करने पर इतश्च इससे तिप के इकार का लोप होने पर **अवीवृधत्** यह रूप सिद्ध होता है।

22.12 दुरस्युद्रविणस्युर्वृषण्यतिरिषण्यति॥

सूत्रार्थ– इनको क्यच निपातन करते है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से कहे हुए पदों को क्यच निपातन करते है। इस सूत्र में एक ही पद है। ''क्यचि च'' इस सूत्र से क्यचि इस पद की अनुवृति

है। सूत्रार्थ होता है क्यच के परे दुरस्यु द्रविणस्यु वृषण्यति रिषण्यति इन पदों का निपातन करते है।

उदाहरण- दुरस्युः, द्रविणस्युः, वृषण्यति, रिषण्यति।

सूत्रार्थसमन्वय- दुष्टम् आत्मनः इच्छति इस अर्थ में दुष्टशब्द से ''सुप आत्मनः क्यच्'' इस सूत्र से क्यच्-प्रत्यय करने पर दुष्ट य इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से दुष्टशब्द के स्थान में दुरस् इसका निपातन करते है। उससे ''क्याच्छन्दसि'' इस सूत्र से उप्रत्यय करने पर दुरस् य उ इस स्थिति में यचि भम् इससे भसंज्ञा करने पर ''यस्येति च'' इससे यकार से उत्तरवर्ति अकार का लोप होने पर दुरस्यु इस स्थिति में सुविभक्ति के परे **दुरस्युः** यह रूप बनता है। इसी प्रकार द्रविणशब्द से क्यच्-प्रत्यय करने पर **द्रविणस्युः** यह रूप बनता है। वृष् इस शब्द से क्यच्प्रत्यय करने पर निपातन होने से **वृषण्यति** यह रूप बनता है। रिष्टशब्द से क्यच्प्रत्यय करने पर निपातन से **रिषण्यति** यह रूप बनता है। भाषा में तो उप्रत्यय अभाव से यथाक्रम **दुष्टीयति, द्रविणीयति, वृषीयति, रिष्टीयति** ये रूप बनते है।

पाठगत प्रश्न-22.1

1. आज्जसेरसुक् इस सूत्र से किसका विधान करते है?
2. गोः पादान्ते इस सूत्र से किसका विधान करते है?
3. छन्दस्यपि दृश्यते इस सूत्रों से किसका विधान करते है?
4. हलादिविभक्ति के परे वेद में अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्ण को अनङ् किस सूत्र से होता है?
5. छन्दसि अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णां शब्दों को किसके परे ईकारादेश होता है?
6. ऋकारान्त धातु को उकारादेश किस सूत्रों से होता है?
7. ह्वृ-धातु को किसके परे ह्रु-इत्यादेश होता है?
8. ग्रसित... इत्यादिसूत्र से कितने रूपों का निपातन करते है?
9. मीनातेर्निगमे इससे किस धातु को ह्रस्व होता है?
10. छन्द में किस से परे अपृक्त को ईडागम होता है?
11. अपृक्तसंज्ञा किस सूत्र से होती है?
12. नित्यं छन्दसि इस सूत्र से किसका विधान करते है?
13. रिषण्यति इसका लौकिक रूप क्या है?

टिप्पणी

22.13 विभाषा छन्दसि॥ (7.4.44)

सूत्रार्थ– छन्द में क्तिव के परे ओहाक त्यागे धातु को विकल्प से हि हो।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से छन्द विषय में क्तवाप्रत्यय के परे जहाते को विकल्प से हि आदेश का विधान करते है। इस सूत्र में दो पद है। विभाषा यह अव्ययपद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। यह सूत्र ''अङ्गस्य'' इसके अधिकार में पढ़ा गया है। ''दधातेर्हि:'' इस सूत्र से हि: इसकी अनुवृति है। और ''जहातेश्च क्त्वि'' इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृति है। इसलिए सूत्रार्थ होता है छन्द विषय में क्त्वाप्रत्यय करने पर हाधातु को विकल्प से हि इत्यादेश होता है। ''अनेकाल्शित्सर्वस्य'' इस परिभाषा के द्वारा यह आदेश सम्पूर्ण हाधातु के स्थान पर होता है।

उदाहरण- हित्वा शरीरम्। हीत्वा वा।

सूत्रार्थसमन्वय– हाधातु को क्त्वाप्रत्यय के परे प्रकृतसूत्र से विकल्प से हाधातु को हि इत्यादेश होने पर हित्वा यह रूप बनता है। पक्ष में घुमास्थागापाजहातिसां हलि इस सूत्र से ईकारादेश करने पर हीत्वा यह रूप बनता है। छान्दस होने से ईकार अभाव में हात्वा यह रूप भी बनता है।

22.14 सुधितवसुधित नेमधितधिष्व धिषीय च॥ (7.4.45)

सूत्रार्थ- सु वसु नेम ये पूर्व धा धातु को क्तप्रत्यय के परे इत्व का निपातन करते है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से इत्व का निपातन करते है। इस सूत्र में दो पद है। सुधितवसुधितनेमधितधिष्वधिषीय यह प्रथमान्त पद है। च यह अव्ययपद है। विभाषा छन्दसि इस सूत्र से छन्दसि इसकी अनुवृति है। सूत्रार्थ होता है छन्द विषय में सुधित वसुधित नेमधित धिष्व धिषीय इनका निपातन करते है। वहा पुन: क्तप्रत्यय के परे होने पर सु-वसु-नेमपूर्वक धाधातु को इकार निपातन करते है यह अर्थ जानना चाहिए। धीष्व धिषीय यहाँ पर भी धाधातु को इत्व निपातन करते है।

उदाहरण- गर्भं माता सुधितं दक्षिणासु। वसुधितमग्नौ। नेमधिता न पौंस्या।

सूत्रार्थसमन्वय- सु-पूर्वक धाधातु को क्तप्रत्यय करने पर प्रकृतसूत्र से निपातन होने से धाधातु को इत्व करने पर सुविभक्ति में सुधितम् यह रूप बनता है। इसी प्रकार वसुधि तम्, नेमधितम् इन रूपों को भी जानना चाहिए।

धिष्व यहाँ पर धाधातु से लोट्लकार आत्मनेपद मध्यमपुरुष एकवचन में थास्-प्रत्यय करने पर प्रकृतसूत्र से निपातन होने से इत्व करने पर धि थास् इस स्थिति में थास: से इससे थास को से आदेश करने पर सकार से उत्तर ऐकार को सवाभ्यां वामौ इससे वकार

और सकार को षकार करने पर धिष्व यह रूप बनता है।

धिषीय यहाँ पर भी धाधातु से आशीर्लिङ उत्तमपुरुष एकवचन में आत्मनेपदसंज्ञक-इट्-विभक्ति को प्रकृतसूत्र से निपातन होने से इत्व करने पर धि इ इस स्थिति में इटोऽत् इस सूत्र से इकार को अकार करने पर लिङः सीयुट् इससे सीयुडागम होने पर सकार को षत्व करने पर **धिषीय** यह रूप बनता है।

22.15 दाधर्तिदर्धर्तिदर्धर्षिबोभूतुतेतिक्तेऽलर्ष्यापनीफणत्संस निष्यदत्क रिक्रत्कनिक्रदद्भरिभ्रद्दविध्वतोदविद्युतत्तरित्रतः सरीसृपतं वरीवृजन्मर्मृज्यागनीगन्तीति च॥ (7.4.42)

सूत्रार्थ– इन अट्ठारह का निपातन करते है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से उक्तपदो का निपातन करते है। इस सूत्र में चार पद है। ''कृषेश्छन्दसि'' इस सूत्र से छन्दसि इसकी अनुवृति है। ''अत्र लोपोऽभ्यासस्य'' इस सूत्र से अभ्यासस्य इसकी अनुवृति है। अङ्गस्य इसका अधिकार आ रहा है। इस सूत्र से दाधर्ति इत्यादि अट्ठारह पदों का निपातन करते है।

उदाहरण- दाधर्ति, दधर्ति, दर्धर्षि इत्यादीनि।

सूत्रार्थसमन्वय- दाधर्ति-धृधातु से णिच्प्रत्यय करने पर लट धातु से आत्मनेपद में भी निपातन होने से परस्मैपद में तिप शप करने पर ''बहुलं छन्दसि'' इससे शप का श्लु होने पर ''णेरनिटि'' इससे णिच का लुक करने पर '' श्लौ'' इस सूत्र से धातु को द्वित्व करने पर धृ धृ ति इस स्थिति में दो बार कहे हुए प्रथम धृ इसकी ''पूर्वोऽभ्यासः'' इस सूत्र से अभ्याससंज्ञा होने पर ''उरत्'' इस सूत्र से ऋकार को अकार करने पर ''उरण् रपरः'' इस सूत्र से रपरत्व करने पर धर् धृ ति इस स्थिति में ''हलादिः शेषः'' इस सूत्र से अभ्यास के आदि हल धकार के शेष होने पर ''अभ्यासे चर्च'' इस सूत्र से धकार को चर्त्व दकार करने पर द धृ ति इस स्थिति में ''सार्वधातुकार्धधातुकयोः'' इस सूत्र से ऋकार को गुण रपरत्व करने पर द धर् ति इस स्थिति में निपातन से अभ्यास के अकार को दीर्घ करने पर दाधर्ति यह रूप बनता है।

दर्धर्ति- धृधातु से लट तिप शप और शप का श्लु करने पर धातु को द्वित्व करने पर अभ्यास को रुगागम करने पर प्रक्रिया के द्वारा दर्धर्ति यह रूप बनता है।

दर्धर्षि- धृधातु से लट तिप शप करने पर प्रक्रिया कार्य करने पर दर्धर्षि यह रूप बनता है।

बोभूतु- भूधातु से यङ्लुक लोट तिप करने पर यह रूप बनता है। यहाँ धातु को गुणाभाव का निपातन करते है। लोक में तो **बोभोतु** यह रूप होता है।

तेतिक्ते- तिज्धातु से यङ्लुक करने पर लोट करने पर आत्मनेपद में तप्रत्यय करने पर तेतिक्ते यह रूप है। यहाँ धातु से आत्मनेपद का निपातन करते है।

अलर्षि- ऋधातु से लट सिप का यह रूप है।

आपनीफणत्- आङ् इस उपसर्गपूर्वक फण्-धातु से यङ और यङ्लुक करने पर शतृप्रत्यय करने पर अभ्यास को नीगागम करने पर आपनीफणत् यह रूप बनता है। यहाँ नीक्-आगम का निपातन करते है।

संसनिष्यदत्- सम इत्युपसर्गपूर्वक स्यन्द्-धातु से यङ और यङ्लुक करने पर धातु को द्वित्व करने पर शतृप्रत्यय करने पर निगागम करने पर धातु के सकार को षत्व करने पर यह रूप बनता है। यहाँ निक्-आगम धातु के सकार को षत्व निपातन करते है।

करिक्रत्- कृधातु से यङ् और यङ्लुक शतृप्रत्यय करने पर धातु से द्वित्व और अभ्यासकार्य करने पर रिगागम करने पर करिक्रत् यह रूप बनता है। यहाँ कुहोश्चुः इस सूत्र से प्राप्त अभ्यास के ककार को चुत्व के अभाव का निपातन करते है। और रिक्-आगम भी निपातन करते है।

कनिक्रदत्- क्रन्द्-धातु से लुङ् तिप च्लि और च्लि को अङ करने पर धातु से द्वित्व करने पर निगागम और नलोप और इकारलोप करने पर कनिक्रदत् यह रूप बनता है। यहाँ अडाभाव, धातु को द्वित्व, अभ्यास को चुत्वाभाव, और निक्क्-आगम निपातन करते है।

भरिभ्रत्- भृधातु से यङ् यङ्लुक धातु से द्वित्व शतृप्रत्यय करने पर उरत् इस सूत्र से अभ्यास के ऋकार को अत्व रपरत्व करने पर भर् भृ अत् इस स्थिति में रेफ का लोप होने पर भ भृ अत् इस स्थिति में इत्वाभाव का, जश्त्वाभाव का, और अभ्यास को रिगागम प्रकृतसूत्र से निपातन से यणसंधि करने पर भरिभ्रत् यह रूप बनता है। भृञामित् इस सूत्र से इत्त्व की प्राप्ति, अभ्यासे चर्च इससे जश्त्व की प्राप्ति। उन दोनों का अभाव इससे निपातन करते है।

दविध्वतः- ध्वृधातु से यङ यङ्लुक करने पर धातु से द्वित्व करने पर शतृप्रत्यय करने पर अभ्यास को जश्त्व करने पर रिगागम और जस के सकार को रुत्व विसर्ग करने पर यह रूप बनता है। यहाँ धातु के ऋकारलोप और नुमाभाव का निपातन करते है।

दविद्युतत्- द्युत्-धातु से यङ् और यङ्लुक करने पर शतृप्रत्यय करने पर धातु को द्वित्व करने की प्रक्रिया के द्वारा यह रूप बनता है। यहाँ द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम् इस सूत्र से प्राप्त अभ्यास को सम्प्रसारण का अभाव, अभ्यास के उकार का और अकार का निपातन करते है।

तरित्रतः- तृधातु से शतृप्रत्यय करने पर शप धातु से तृ अ अत् इस अवस्था में व्यत्ययो बहुलम् इस सूत्र से शप को श्लु-आदेश होने पर श्लौ इस सूत्र से धातु को द्वित्व

टिप्पणी

करने पर उरत् इस सूत्र से अभ्यास के ऋकार को अकार करने पर रपरत्व होने पर हलादिः शेषः इस सूत्र से रेफ का लोप होने पर और निपातन से रिगागम करने पर प्रातिपदिकसंज्ञा में ङस करने पर तरित्रतः यह रूप है। यहाँ रिगागम निपातन करते है।

सरीसृपतम्- सृप्-धातु से शतृप्रत्यय करने पर अभ्यास को रिगागम होने पर अम्-विभक्ति का यह रूप है। यहाँ अभ्यास को रिगागम निपातन करते है।

वरीवृजत्- वृज्-धातु से शतृप्रत्यय करने पर और शप करने पर शप को श्लावादेश होने पर धातु से द्वित्व करने पर अभ्यास के ऋकार को अत्व रपरत्व करने पर वर्ज् वृज् अत् इस स्थिति में हलादिः शेषः इस सूत्र से रेफ के जकार का लोप होने पर निपातन से रीगागम होने पर वरीवृजत् यह रूप है। यहाँ रीगागम का निपातन करते है।

मर्मृज्य- मृज्-धातु से लिट तिप णल करने पर धातु से द्वित्व अभ्यास को ऋकार और अकार करने पर रपरत्व होने पर मर् ज मृज् अ इस स्थिति में हलादिः शेषः इस सूत्र से रेफ और जकार का लोप होने पर म मृज् अ इस स्थिति में निपातन से अभ्यास को रीगागम होने पर धातु से युगागम होने पर मर्मृज्य यह रूप बनता है। यहाँ अभ्यास को रीगागम धातु से युगागम निपातन के द्वारा किया जाता है। लोक में तो **ममार्ज** यह रूप है।

आगनीगन्ति- आङ्पूर्वक गम्धातु से लट तिप शप और शप का श्लु करने पर धातु से द्वित्व होने पर अभ्यास के मकार का लोप निपातन से अभ्यास को नीगागम करने पर सन्धि में आगनीगन्ति यह रूप है। यहाँ अभ्यास को कुहोश्चुः इस सूत्र से प्राप्त चुत्व का अभाव, और अभ्यास को नीगागम का निपातन करते है।

22.16 ससूवेति निगमे॥ (7.4.74)

सूत्रार्थ- सूतेर्लिट परस्मैपद को वुगागम और अभ्यास को अत्व निपातन किया जाता है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में तीन पद है। ससूव यह प्रथमान्त पद है। इति यह अव्ययपद है। निगमे यह सप्तम्यन्त पद है। ''भवतेरः'' इस सूत्र से अः इसकी अनुवृति है। ''व्यथो लिटि'' इस सूत्र से लिटि की अनुवृति है। ''अत्र लोपोऽभ्यासस्य'' इस सूत्र से अभ्यास की अनुवृति है। यह सूत्र ''अङ्गस्य'' इसके अधिकार में पढ़ा गया है। सूत्र का अर्थ होता है हि सू-धातु से लिट परस्मैपद को वुगागम और अभ्यास को अत्व निपातन करते है।

उदाहरण- गृष्टिः ससूव स्थविरम्।

सूत्रार्थसमन्वय- सू-धातु से लिट निपातन होने से परस्मैपद में तिप करने पर और तिप को णल करने पर सू अ इस स्थिति में धातु को द्वित्व करने पर ह्रस्वः इससे अभ्यास के अच को ह्रस्व करने पर सु सू अ इस स्थिति में निपातन से अभास के उकार को अकार करने पर और वुगागम करने पर **ससूव** यह रूप होता है।

टिप्पणी

22.17 बहुलं छन्दसि॥

सूत्रार्थः– अभ्यास को इकार हो छन्द में।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से श्लु को बहुल करके इत् का विधान करते है। इस सूत्र में दो पद है। बहुलम् यह प्रथमान्त पद है। छन्दसि यह सप्तम्यन्त पद है। ''अत्र लोपोऽभ्यासस्य'' इस सूत्र से अभ्यासस्य इस पद की अनुवृति है। ''निजां त्रयाणां गुणः श्लौ'' इस सूत्र से श्लौ इस पद की अनुवृति है। ''भृञामित्'' इस सूत्र से इत् इसकी अनुवृति है। उससे सूत्रार्थ होता है छन्द विषय में श्लु के परे अभ्यास को बहुल करके इकार होता है। अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा के द्वारा अभ्यास के अन्त्य अल को ही इत्व होता है।

उदाहरण- पूर्णा विवष्टि।

सूत्रार्थसमन्वय- वश्-धातु से लट तिप शप करने पर वश्-धातु अदादि होने से अदिप्रभृतिभ्यः शपः इससे शप का लुक प्राप्त होने पर व्यत्यय से शप को श्लु होने पर धातु को द्वित्व करने पर वश् वश् ति इस स्थिति में अभ्यास के शकार का लोप होने पर व वश् ति इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से अभ्यास के अकार को इकार करने पर वि वश् ति इस स्थिति में शकार को ''व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राजच्छशां षः'' इस सूत्र से षत्व करने पर **विवष्टि** यह रूप है।

पाठगत प्रश्न-22.2

14. ''विभाषा छन्दसि'' इस सूत्र से किसका विधान करते है?
15. हाधातु से क्त्वाप्रत्यय करने पर छन्द में कुछ रूप होते है। और वे कौनसे होते है?
16. सुधितम् यहाँ पर धाधातु से इत्त्व कैसे होता है?
17. धिषीय यह किस लकार में रूप होता है?
18. छन्द में सूधातु से लिट प्रथमपुरुष एकवचन में क्या रूप बनता है?
19. वश्-धातु से लिट में अभ्यास को इकार किस सूत्र से होता है?

पाठसार

लोक में जैसे अजादिविभक्ति के परे अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णाम् अनङ्- आदेश होता है, वैसे ही वेद में भी होता है। यहाँ हलादि विभक्ति के परे भी छन्दस्यपि दृश्यते इस सूत्र

से अनङ्-आदेश का विधान दिखाई देता है। ई च द्विवचने इस सूत्र से अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्ण शब्दो ककी द्विवचन के परे ईकारादेश का विधान करते है। ह्रु ह्वरेश्छन्दसि इस सूत्र से निष्ठा के परे ह्वृ-धातु के स्थान में ह्रु इत्यादेश होता है। ग्रसित-स्कभितादिसूत्र से छन्द में इट्सहित और इड्-रहित अट्ठारह रूपों का निपातन किया है। मीनातेर्निगमे इससे शित प्रत्यय के परे मीञ् धातु के ईकार को ह्रस्व का विधान करते है। बहुलं छन्दसि इससे छन्द में अस्तिसिच के परे अपृक्त का बहुल अर्थ में इडागम होता है। छन्द विषय में चङ् की उपधा ऋवर्ण को ऋत् नित्य होता है। छन्द में श्लु के परे अभ्यास को बहुल करके इकार आदेश होता है ''बहुलं छन्दसि'' इस सूत्र से जैसे- विवष्टि।

पाठान्त प्रश्न

1. अस्थभि: इस रूप को सिद्ध कीजिए।
2. ततुरि: इस रूप को सिद्ध कीजिए।
3. उत्तभितम् इस रूप को सिद्ध कीजिए।
4. प्रमिणन्ति इस रूप को सिद्ध कीजिए।
5. अक्षा: इस रूप को सिद्ध कीजिए।
6. अवीवृधत् इस रूप को सिद्ध कीजिए।
7. ''विभाषा छन्दसि'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

22.1

1. आज्जसेरसुक् इस सूत्र से असुगागम का विधान करते है।
2. पादान्त गोशब्द को नुडागम का विधान करते है।
3. अस्थ्यादीनामनङ्
4. छन्दस्यपि दृश्यते।
5. द्विवचन में अजादि और हलादि विभक्ति के परे।
6. बहुलं छन्दसि।
7. निष्ठायाम्।

टिप्पणी

8. अट्ठारह।

9. मीञ्-धातु से।

10. अस्ति तथा सिच के परे।

11. अपृक्त एकाल्प्रत्ययः।

12. नित्यं छन्दसि सूत्र से छन्द विषय में चङ् उपधा के ऋवर्ण को ऋत्व का विधान करते है।

13. रिषण्यति इसका लौकिक रूप रिष्टीयति है।

22.2

14. ''विभाषा छन्दसि'' इस सूत्र से छन्द में क्त्वाप्रत्यय के परे जहाते को विकल्प से हि आदेश का विधान करते है।

15. हाधातु से छन्द में क्त्वाप्रत्यय करने पर तीन रूप होते है। हित्वा, हीत्वा और हात्वा।

16. सुधितम् यहाँ पर धाधातु से इत्व निपातन से होता है।

17. धिषीय यह आशार्लिङ्-लकार में रूप है।

18. छन्द में सूधातु से लिट प्रथमपुरुष एकवचन में ससूव यह रूप है।

19. वश्-धातु से लिट में अभ्यास के इकार को ''बहुलं छन्दसि'' इस सूत्र से होता है।

बाइसवाँ पाठ समाप्त

23

अष्टाध्यायी अष्टम अध्याय-1

इस पाठ में नुट् के विधान से सम्बन्धित अनेक सूत्रों का उल्लेख करेंगे। किस शब्द से कब नुट् होता है तथा उसकी प्रक्रिया क्या है इस विषय में सविस्तार व्याख्या करेंगे। उसके बाद भुवः प्रातिपदिक से रेफविधान और रुविधान इन दोनों विषयों के वैकल्पिक विधान विषय में आलोचना करेंगे। और भी ओमभ्यादाने इत्यादि सूत्रों से वेद में कैसे स्वरविधान होता है इस विषय को भी स्पष्ट करेंगे। इस पाठ में कहे गये प्रत्ययों का किन अर्थों में प्रयोग होगा ये भी बताएंगे।

उद्देश्य

इस पाठ पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- नुट आदि प्रत्ययविधान के विषय में स्पष्ट ज्ञान अर्जन कर पाने में;
- वेद में स्वरविधान की प्रक्रिया जान पाने में;
- वेद में विभिन्न प्रातिपदिकों के लिए प्रत्यय होते है, ये भी जान पाने में;
- किन अर्थों में प्रातिपदिकों से प्रत्यय होते है ये जान पाने में।

23.1 प्रसमुपोदः पादपूरणे॥ (8.1.6)

सूत्रार्थ– प्र,सम्, उप उत् उपसर्गों को द्वित्व हो जाता है पाद पूर्ति करनी हो तो।

सूत्राव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से द्वित्व होता है। इस सूत्र में दो पद है। प्रसमुपोदः ये षष्ठ्यन्त पद है। पादपूरणे ये सप्तम्यन्तपद है। ''सर्वस्य द्वे'' इस सूत्र से

टिप्पणी

द्वे पद के अनुवृत्ति आती है। सूत्रार्थ होगा कि प्र, सम्, उप, उद् उपसर्गों का पादपूरण अर्थ में द्वित्वरूप होता है। यहाँ छन्दसि पद का पाठ नहीं है फिर भी लोक में प्र इत्यादि का द्वित्वरूप नहीं दिखता है। इसलिए छन्दसि अर्थात् वेद में ही ये कार्य होता है, ऐसा जानना चाहिए। लोक में तो अधः परि उपरि इनकी ही द्विरुक्ति दिखती है।

उदाहरण- प्रप्रायमग्निर्भरतस्य शृण्वे। संसमि द्युवसे वृषन्। उपोप मे परामृश। किं नोदुदु हर्षसे।

सूत्रार्थसमन्वयः– प्रप्रायमित्यादि मन्त्र में त्रिष्टुप्-छन्द है और उसके लिए एकादश अक्षर अपेक्षित है। यहाँ प्र को द्वित्व करने पर ये संख्या पूरी हुई। ऐसे ही संसमि द्युवसे इत्यादि मन्त्र में गायत्रीछन्द होने से अष्ट अक्षर अपेक्षित है। सम् को द्वित्व करने पर ये संख्या पूरी हुई। ऐसे ही उपोप मे परामृश मन्त्र में और नोदुदु हर्षसो मन्त्र में भी जाने।

23.2 छन्दसीरः (8.2.15)

सूत्रार्थः– इवर्णान्त और रेफान्त पद के बाद मतुप् के म के स्थान पर व हो जाए।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से वेद में इवर्णान्तऔर रेफान्तपरक मतुप् के मकार के स्थान पर वकार होता है। इस सूत्र में दो पद है। छन्दसि सप्तम्यन्त पद है। इरः पञ्चम्यन्त पद है। ''मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्यः'' सूत्र से मतोः और वः दो पदों की अनुवृति हुई। ''पदस्य'' की भी अनुवृत्ति हुई। और उस पदात् शब्द से पञ्चम्यन्त का ग्रहण होता है। इरः पदात् का विशेषण होने से तदन्तविधि होती होती है। उससे इवर्णान्तात् रेफान्तात् अर्थ वाले पद बने। अतः सूत्रार्थ होगा कि इवर्णान्त और रेफान्त से उत्तर मतुप्प्रत्यय के मकार के स्थान पर वकार हो जाए।

उदाहरण- हरिवते हर्यश्वाय। गीर्वान्।

सूत्रार्थसमन्वय- हरयः विद्यन्ते यस्य इस विग्रह में हरि जस् इस प्रथमान्त प्रातिपदिक से मतुप्प्रत्यय होने पर हरि जस् मत् इस स्थिति में इस समुदाय के तद्धितान्त होने से प्रातिपदिकसंज्ञा हो ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' सूत्र से सुप् का लुक् होकर हरि मत् इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से इकारान्त हरिशब्दात् से परे मतुप् के मकार के स्थान पर वकार होने पर हरिवत् होने पर प्रातिपदिक होने से चतुर्थ्येकवचन में ङे विभक्ति से हरिवते रूप बना।

गीः अस्ति अस्य विग्रह होने पर गिर् सु प्रथमान्तप्रातिपदिक से मतुप्प्रत्यय में गिर् सु मत् इस स्थिति में समुदाय के तद्धितान्त होने पर प्रातिपदिकसंज्ञा में ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' सूत्र से सुप् का लुक् होकर गिर् मत् होने पर प्रकृतसूत्र से रेफान्त गिर्-शब्दपरक मतुप्प्रत्यय के मकार के स्थान पर वकार होकर गिर्वत् इस स्थिति में ''र्वोरुपधाया दीर्घ इकः'' सूत्र से उपधा के इक के स्थान पर दीर्घ होकर गीर्वत् तथा प्रातिपदिक होकर प्रथमैकवचन में गीर्वान् रूप बना।

23.3 अनो नुट्॥ (8.2.16)

सूत्रार्थ:–अन् अन्त वाले शब्द से उत्तर मतुप् को नुट आगम होता है।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से अन् अन्त वाले शब्द से उत्तर मत् को नुट् आगम होता है। इस सूत्र में दो पद है। अन: पञ्चम्यन्त पद है। नुट् प्रथमान्त पद है। ''छन्दसीर:'' सूत्र से छन्दसि पद की अनुवृत्ति हुई। ''मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्य:'' सूत्र से मतो: पद की अनुवृत्ति हुई। ये सूत्र ''पदस्य'' के अधिकार में है और वो पञ्चम्यन्त में बदल जाता है। उसका अन् विशेषण है। विशेषण होने से तदन्तविधि होती है। जिससे अन्नन्तात् ऐसा अर्थ हुआ। अत: सूत्रार्थ होगा कि अन् अन्त वाले शब्द से उत्तर मतुप् को नुट आगम होता है। टित् होने से नुट् हुआ और वो नुट ''आद्यन्तौ टकितौ'' परिभाषा से मतुप्प्रत्यय के आदीभाग को होता है।

उदाहरणम्- अक्षण्वन्त:। कर्णवन्त:। अस्थण्वतं यदनस्था।

सूत्रार्थसमन्वय:- अक्षिणी स्त: अस्य ऐसा विग्रह होने पर अक्षि औ प्रथमान्त शब्द से मतुप्प्रत्यय होकर अक्षि मत् इस स्थिति में ङिच्च इस परिभाषा से परिष्कृत ''छन्दस्यपि दृश्यते'' सूत्र से इकार से उत्तर अनङादेश होकर अक्षन् मत् इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से मतुप् को नुडागम और अनुबन्धलोप होने पर अक्षन् न् मत् होकर ''न लोप: प्रातिपदिकान्तस्य'' सूत्र से अक्षन् के नकार के लोप होने पर ''मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्य:'' सूत्र से मतुप् के मकार के स्थान पर वकार होकर ''अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि'' सूत्र से नकार के स्थान पर णत्व होने पर अक्षण्वत् ऐसा रूप होकर प्रथमाबहुवचन में जस् होकर **अक्षण्वत:** रूप बना।

अस्थि अस्ति अस्य इस अर्थ में अस्थि सु इस प्रथमान्त शब्द से मतुप्प्रत्यय होकर अस्थि मत् इस स्थिति में ङिच्च इस परिभाषा से परिष्कृत **छन्दस्यपि दृश्यते** सूत्र से इकार से स्थान पर अनङादेश होकर अस्थन् मत् इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से मतुप् होकर नुडागम और अनुबन्धलोप होकर अस्थन् न् मत् बना और नलोप: प्रातिपदिकान्तस्य सूत्र से अस्थन् के नकार का लोप होने पर मादुपधायाश्च मतोर्वोऽयवादिभ्य: सूत्र से मतुप् के मकार के स्थान पर वकार होकर अस्थन्वत् रूप होकर अम्-विभक्ति में **अस्थन्वतम्** रूप बना।

23.4 नाद्घस्य॥ (8.2.17)

सूत्रार्थ:–नकारान्त शब्द से उत्तर घसंज्ञक को नुट् आगम होता है।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से नकारान्त शब्द से उत्तर घसंज्ञक को नुडागम होता है। इस सूत्र में दो पद है। नाद् पञ्चम्यन्त पद है। घस्य षष्ठ्यन्त पद है। ''तरप्तमपौ घ:'' सूत्र से तरप्प्रत्यय और तमप्प्रत्यय की घसंज्ञा। ''छन्दसीर:'' सूत्र से छन्दसि पद अनुवृत्ति हुई। ''अनो नुट्'' सूत्र से नुट् पद की अनुवृत्ति। पदस्य का अधिकार। और

टिप्पणी

वो पद पञ्चम्यन्त में बदल जाता है। नाद् पद पदात् का विशेषण होने से तदन्तविधि होती है, जिससे नान्तात् ऐसा अर्थ हुआ। अतः सूत्रार्थ होता है- नकारान्त शब्द से उत्तर घसंज्ञक को नुट् आगम होता है। टित् होने से नुट् **आद्यन्तौ टकितौ** सूत्र से घसंज्ञक पद के आदीभाग में होता है।

उदाहरण- सुपथिन्तरः।

सूत्रार्थसमन्वय- सुपथिन्-शब्द से ''द्विवचनविभज्योपपदे'' सूत्र से तरप्प्रत्यय होकर प्रकृतसूत्र से तरप् से नुडागम आदीभाग को और अनुबन्धलोप होकर सुपथिन् न् तर होकर ''नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य'' सूत्र से सुपथिन् के नकार का लोप होने पर सुपथिन् तर ऐसा होने पर नकार से उत्तर अनुस्वार होने पर और अनुस्वार के परसवर्ण होने पर सुपथिन्तर होकर सुविभक्ति होने पर **सुपथिन्तरः** रूप बनता है।

23.5 नसत्तनिषत्तानुत्तप्रतूर्तसूर्तगूर्तानि छन्दसि॥ (8.2.61)

सूत्रार्थः– नञ् पूर्वक सद् धातु से और निपूर्वक सद् धातु से निष्ठा से क्तप्रत्यय होने से नत्वाभाव निपातन होता है।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। नसत्तनिषत्तानुत्तप्रतूर्तसूर्तगूर्तानि प्रथमान्त पद है। छन्दसि सप्तम्यन्त पद है। इस सूत्र से वेद विषय में नसत्त, निषत्त, अनुत्त, प्रतूर्त, सूर्त, गूर्त ये शब्द निपातन किये जाते है।

उदाहरण- नसत्तमञ्जसा। निषत्तमस्य चरतः।

सूत्रार्थसमन्वयः- नञ्पूर्वक-सद्-धातु से क्तप्रत्यय होने पर प्रक्रियादशा में ''रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः'' सूत्र से क्तप्रत्यय के तकार से उत्तर नकार के प्राप्त होने पर इस सूत्र से नत्वाभाव निपातन से है। जिससे **नसत्तम्** रूप बनता है। लोक में तो **असन्नम्** बनता है। इस प्रकार निपूर्वक सद् धातु से क्तप्रत्यय होने पर वेद में **निषत्तम्** रूप होता है। लेकिन लोक में तो **निषण्णम्** ही होता है। नञ्पूर्वकद् धातु से क्तप्रत्यय होकर वेद में **अनुत्तम्** रूप बना। लोक में तो **अनुन्नम्** ही रूप होता है। प्रपूर्वक त्वर्-धातु से उया तुर्वी धातु से क्तप्रत्यय होकर वेद में **प्रतूर्तम्** रूप बना। लोक में तो **प्रतूर्णम्** रूप बनता है। सृ धातु से क्तप्रत्यय होकर वेद में **सूर्तः** रूप बना। लोक में तो सृतम् रूप बनता है। गूरी धातु से क्तप्रत्यय होकर वेद में **गूर्तम्** रूप बना। लोक में तो **गूर्णम्** रूप बनता है।

23.6 अम्नरूधरवरित्युभयथा छन्दसि॥ (8.2.70)

सूत्रार्थ- अम्नस् ऊधस् अवस् इन शब्दों के सकार के स्थान पर वेद विषय में विकल्प से रुत्व होता है और पक्ष में रेफ भी होता है।।

टिप्पणी

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से रु और रेफ दोनों होते है। इस सूत्र में चार पद है। अम्नरूधरवः प्रथमान्त पद है। इति, उभयथा इत्युभयम् ये अव्यय है। छन्दसि सप्तम्यन्तपद है। ''रोऽसुपि'' सूत्र से रः पद की अनुवृत्ति हुई। ''ससजुषो रुः'' सूत्र से रुः की अनुवृत्ति हुई। अम्नर् ऊधर् अवर् यहाँ अम्नस् ऊधस् अम्नस् ऊधस् अवस् इन शब्दों के सकार के स्थान पर वेद विषय में विकल्प से रुत्व होता है द्य पक्ष में रेफ भी होता है। अवस् इन पदों को रुत्व करके निर्देश किया है। उभयथा के ग्रहण से रुत्वाभाव भी होता है, ऐसा जाने। उसको विकल्प से रेफ भी होता है। अतः सूत्रार्थ होता है अम्नस् शब्द ईषद् अर्थ में है। अवः का अर्थ रक्षण है।

उदाहरण- अम्न एव। अम्नरेव। ऊध एव। ऊधरेव। अव एव। अवरेव।

सूत्रार्थसमन्वय- अम्नस् एव ऐसी स्थिति में प्रकृतसूत्र से स के स्थान पर रुत्व होने पर अम्नर एव होकर ''भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि'' सूत्र से र के स्थान पर यकारादेश होकर अम्नय् एव ऐसा होने पर ''लोपः शाकल्यस्य'' सूत्र से यकार का लोप होकर **अम्न** एव रूप बना। पक्ष में अम्नस् एव इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से सकार के स्थान पर रेफ होकर **अम्नरेव** रूप होता है।

ऐसे ही ऊधस् एव इसमें रुत्वपक्ष में **ऊधरेव** रूप बना। रेफपक्ष में **ऊध एव** रूप होता है। इसी प्रकार अवस् एव इस स्थिति में रुत्वपक्ष में **अव एव** रूप बना और रेफपक्ष में **अवरेव** रूप बनता है।

23.7 भुवश्च महाव्याहृतेः॥ (8.2.71)

सूत्रार्थ- वेद विषय में भुवस् महाव्याहृति के सकार के स्थान पर रुत्व होता है और रेफ भी।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से महाव्याहृति भुवस् शब्द के सकार के स्थान पर रुत्व एवं रेफ दोनों होते है। इस सूत्र में तीन पद है। भुवः ये षष्ठीप्रतिरूपक अव्ययपद। च अव्ययपद है। महाव्याहृतेः षष्ठ्यन्त पद है। तीन महाव्याहृतियां है- भूः, भुवः और स्वः। इस सूत्र में भुवस् शब्द के ग्रहण से मध्यम का ग्रहण है। भुवः का अर्थ अन्तरिक्ष है। ''अम्नरूधरवरित्युभयथा छन्दसि'' सूत्र से इति, उभयथा और छन्दसि तीन पदों की अनुवृत्ति हुई। ''रोऽसुपि'' सूत्र से रः पद की अनुवृत्ति हुई। ''ससजुषो रुः'' सूत्र से रुः की अनुवृत्ति। ये सूत्र ''पदस्य'' के अधिकार में है। अलोऽन्त्यस्य परिभाषा यहाँ कार्य करेगी और सूत्रार्थ होता है– वेदविषय में भुवस् महाव्याहृति के सकार के स्थान पर रुत्व होता है और रेफ भी।

उदाहरण- भुव इत्यन्तरिक्षम्, भुवरित्यन्तरिक्षम्।

सूत्रार्थसमन्वय- भुवस् इति इस अवस्था में प्रकृतसूत्र से रुत्व होकर भुवर् इति और

टिप्पणी

''भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि'' सूत्र से र के स्थान पर यकारादेश होने पर भुवय् इति बना। ''लोपः शाकल्यस्य'' सूत्र से यकार का लोप होने पर **भुव इति** रूप बना। पक्ष में भुवस् इति इस अवस्था में प्रकृतसूत्र से सकार के स्थान पर रेफ होने पर **भुवरिति** रूप भी बनेगा।

विशेष- प्रकृतसूत्र से भुवस् महाव्याहृति में ही सकार के स्थान पर रुत्व एवं रेफ होता है। महाव्याहृति से भिन्न भुवस्-शब्द के सकार के स्थान पर रुत्व एवं रेफ नहीं होता है। इस प्रकृतसूत्र में महाव्याहृतेः पद के ग्रहण से ही ये ज्ञात होता है। जैसे ''भुवो विश्वेषु सवनेषु'' मन्त्र में भुवः तिङन्त पद है न कि महाव्याहृतिसंज्ञक। अतः यहाँ भुवस् के सकार के स्थान पर प्रकृतसूत्र से रुत्व या विसर्ग नहीं होता है। वैसे ही भू धातु में ''छन्दसि लुङ्लङ्लिटः'' सूत्र से वर्तमान में लङ, सिप् और शप् होने पर तथा वेद विषयक होने से गुणाभाव होकर भू अ सि इस स्थिति में उवङादेश होकर भुवसि रूप तथा इतश्च सूत्र से सकारोत्तर इकार के लोप होने पर भुवस् और सकार के स्थान पर ''ससजुषो रुः'' सूत्र से रुत्व और विसर्ग होने पर **भुवः इति** रूप बना।

23.8 ओमभ्यादाने॥ (8.2.87)

सूत्रार्थः- ओम्शब्द को प्लुत हो आरम्भ में॥

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से ओम्-शब्द को प्लुत होता है। इस सूत्र में दो पद है। ओम् प्रथमान्त पद है। अभ्यादाने सप्तम्यन्त पद है। ''वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः'' सूत्र से प्लुतः पद की अनुवृत्ति हुई। अभ्यादान अर्थात् प्रारम्भ में ओम् प्लुत हो। अभ्यादन का अर्थ प्रारम्भ है। यहाँ किसके प्रारम्भ की बात की गई है, तो कहते है- स्वाध्याय या मन्त्र के प्रारम्भ की। तो सूत्रार्थ हुआ कि ओम्शब्द को प्लुत हो आरम्भ में। अचश्च सूत्र से ओम् के ओकार के ही स्थान पर प्लुत होवें ऐसा जानना चाहिए। त्रिमात्रिक अच् की प्लुतसंज्ञा होती है। इस विषय में कहा है-

''एकमात्रो भवेद्ह्रस्वो द्विमात्रो दीर्घ उच्यते।

त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनञ्चार्धमात्रकम्॥'' इतिम॥

उदाहरण- ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितम्।

सूत्रार्थसमन्वय- ऋग्वेदीय अग्निसूक्त ''अग्निमीळे पुरोहितम्'' मन्त्र से आरम्भ होता है। अतः उसका पूर्ववर्ति होने से ओम् के ओकार को प्लुत होता है प्रकृतसूत्र से।

विशेष- जहां मन्त्र के प्रारम्भ में ओम्शब्द नहीं होता वहां प्लुत भी नहीं होता है। यथा ओमित्येकाक्षरम् इस श्लोक के प्रारंभ में ओम्शब्द है। अतः यहां प्लुत नहीं होता है।

पाठगत प्रश्न-23.1

1. प्र सम् उप उत् इनको द्वित्व कब होता है?
2. वेद में इवर्णन्त और रेफान्त शब्द से मतुप् के म् के स्थान पर व किस सूत्र से होता है?
3. अक्षण्वन्तः में नुडागम किस सूत्र से होता है?
4. ''नाद्धस्य'' सूत्र से क्या होता है?
5. अम्नरेव का वैकल्पिक रूप ह्या होगा?
6. महाव्याहृतियां कौन सी है?
7. ओम्शब्द के स्थान पर प्लुत कब होता है?।

23.9 छन्दसि घस्॥ (5.1.106)

सूत्रार्थ- ऋतुशब्द से तद् अस्य प्राप्तम् इस अर्थ में घस्-प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। छन्दसि सप्तम्यन्त पद है और इसमें वैषयिकसप्तमी है। घस् प्रथमान्त पद है। **समयस्तदस्य प्राप्तम्** सूत्र से तत् प्रथमान्तंपद, अस्य षष्ठ्यन्तपद और प्राप्तम् प्रथमान्त पदों की अनुवृत्ति हुई। ऋतोरण् सूत्र से ऋतोः पञ्चम्यन्तपद की अनुवृत्ति हुई। प्रत्ययः और परश्च सूत्रों का अधिकार। अतरू सूत्रार्थ हुआ कि तत् अस्य अस्ति अर्थ में ऋतुशब्द से परे घस्प्रत्यय होता है छन्दसि विषय में। ये ऋतोरण् सूत्र का अपवाद है।

उदाहरण- भाग ऋत्वियः।

सूत्रार्थसमन्वय- तदस्य अस्ति इस अर्थ में ऋतुशब्द से ऋतोरण् से अण के प्राप्त होने पर उसे बाध कर प्रकृतसूत्र से घस्प्रत्यय होकर सकार का हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा और तस्य लोपः से लोप करने पर ऋतु घ इस स्थिति में घस् के सित् होने से सिति च सूत्र से पदसंज्ञा होने पर पदसंज्ञा का घसंज्ञापवाद होने से ओर्गुणः से गुण के अप्राप्त होने पर इको यणचि सूत्र से उकार के स्थान पर यणादेश और वकार होकर ऋत् व् घ इस स्थिति में घकार के स्थान पर अनेकाल् शित् सर्वस्य परिभाषा द्वारा आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् सूत्र से इयादेश होकर ऋत् व इय् अ इस स्थिति में सब वर्णों को मिलाकर ऋत्विय समुदाय की कृत्तद्धितसमासाश्च सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई। स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् सूत्र से खले कपोतन्याय से एकविंशतिस्वादि प्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमपुरूष एकवचन की विवक्षा में सु के उकार की उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्र से उकार की इत्संज्ञा तस्य लोपः से लोप होकर ऋत्विय

टिप्पणी

स् इस स्थिति में स् के स्थान पर ससजुषो रु: से रुत्व और अनुबन्धलोप होने पर ऋत्विय र् बना, अब रेफ के स्थान पर खरवसानयोर्विसर्जनीय: सूत्र से विसर्ग होकर ऋत्विय: रूप सिद्ध हुआ।

23.10 मये च (4.4.138)

सूत्रार्थ:- वेदविषय में सोमशब्द से य प्रत्यय होता है। विकार और अवयव में मयट् प्रत्यय को आगत और प्रकृत अर्थ में कहा है।।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र में दो पद है। मये सप्तम्यन्त पद और च अव्ययपद है। सोममर्हति य: सूत्र से सोमम् और य: पदों की अनुवृत्ति हुई, सोमम् पद पञ्चम्यन्त अर्थ का प्रतिपादक होने सोमात् पद बना। भवे छन्दसि सूत्र से छन्दसि सप्तम्यन्तपद की अनुवृत्ति हुई। तद्धिता:, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्यय:, और परश्च सूत्रों का अधिकार है। छन्दसि में वैषयिक सप्तमी है। अतरू सूत्रार्थ हुआ– वेदविषय में सोमशब्द से य प्रत्यय होता है विकार और अवयव में मयट् प्रत्यय को आगत और प्रकृत अर्थ में कहा है।

सूत्रार्थसमन्वय- सोम्यं मधु।

उदाहरण– सोमशब्द से तद्धितसंज्ञक मयडर्थक य प्रत्यय होने पर सोम य इस स्थिति में मकारोत्तर अकार के लोप होकर सोम्य, इस स्थिति में समुदाय के तद्धितान्त होने से कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिकसंज्ञा, ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्यय:, परश्च के अधिकार में स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् सूत्र में खले कपोतन्याय से एकविंशति स्वादि प्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में सु के स्थान पर अतोऽम् सूत्र से अमादेश होने पर अमि पूर्व: से पूर्वरूप एकादेश होकर सोम्यम् रूप सिद्ध हुआ।

23.11 विचार्यमाणानाम्।। (8.2.97)

सूत्रार्थ:- विचार्यमाण वाक्यों के टिभाग को प्लुत स्वर होता है।

सूत्रावतरणम्- वेदे विचार्यमाणानां वाक्यानां टिभागस्य प्लुतविधानार्थं सूत्रमिदं प्रणीतमाचार्येण।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से विचार्यमाण वाक्यों के के टिभाग को प्लुत उदात्त होता है। इस सूत्र में एक ही पद है। विचार्यमाणानाम् षष्ठीबहुवचनान्त पद है। यहाँ वाक्यस्य टे: और प्लुत उदात्त: सूत्र से टे: षष्ठी एकवचनान्त पद और प्लुत: प्रथमा एकवचनान्त पद अनुवृत्त हुए। वाक्य के वाचक वर्तमान पद के विभक्ति विपरिणाम होने से वाक्यानाम् रूप बना। अतरू पदयोजना– विचार्यमाण वाक्यों के टी को प्लुत उदात्त होता है। इसलिए सूत्रार्थ होगा कि- विचार्यमाण वाक्यों के टिभाग को प्लुत स्वर होता है।

उदाहरण- होतव्यं दीक्षितस्य गृहा3 इ इति।

सूत्रार्थसमन्वय- होतव्यं दीक्षितस्य गृहा3 इ इस वाक्य में गृहे (गृह इ) इस स्थिति में प्रकृतसूत्र के सहचर्य से एचोऽप्रगृहस्यादूराद्धूते पूर्वस्यार्धस्यादुत्तरस्येदुतौ सूत्र से गृह- शब्द के अकार के स्थान पर प्लुत होने पर आ3कारे गृहा3 होने पर दूराद्धूते च सूत्र से उसमे सन्धि के अभाव में गृहा3 इ रूप सिद्ध होता है।

इस प्रकार होतव्यम् अथवा न होतव्यम् आदि में विचार्यमाण वाक्य होने पर प्रकृतसूत्र से प्लुत स्वर होता है।

23.12 नित्यं छन्दसि (4.1.46)

सूत्रार्थ- बह्वादि अनुपसर्जन प्रतिपदिकों से स्त्रीलिंग में नित्य ङीष् प्रत्यय होता है वेदविषय में।

सूत्रावतरण- लोक में बह्वादिभ्यश्च सूत्र से बह्वादियों में विकल्प से ङीष्- प्रत्यय होता है। ये सूत्र वेद में तो बह्वादियों से ङीष्- प्रत्यय नित्य विधान करने वाला है।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से वेद में बह्वादि प्रतिपदिकों से नित्य ङीष- प्रत्यय होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में नित्यम् प्रथमान्त पद और छन्दसि विषयसप्तम्यन्त पद है। इस सूत्र में अन्यतो ङीष् सूत्र से ङीष् प्रथमान्त प्रत्ययबोधक पद की अनुवृत्ति हुई। ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से प्रातिपदिकात् पञ्चम्यन्त पद यहाँ वचन के परिवर्तन होने से प्रातिपदिकेभ्यः रूप बना। अनुपसर्जनात् इस पद का यहाँ वचन भेद से अनुपसर्जनेभ्यः रूप बना। स्त्रियाम्, प्रत्ययः और परश्च इन तीनों पदों का अधिकार है। इस प्रकार यहाँ पदयोजना- अनुपसर्जनेभ्यः बह्वादिभ्यः प्रातिपदिकेभ्यः परः नित्यं ङीष् प्रत्ययः स्त्रियाम् इति। अतरू सूत्रार्थ होता है - बह्वादि अनुपसर्जन प्रतिपदिकों से स्त्रीलिंग में नित्य ङीष् प्रत्यय होता है वेद विषय में।

उदाहरणम्- बह्वी।

सूत्रार्थसमन्वयः- बह्वादिगण में पठित बहु शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा होकर प्रकृतसूत्र से ङीष-प्रत्यय हुआ। ङीष्-प्रत्यय के आदी ङकार का लशक्वतद्धिते सूत्रण से इत्संज्ञा और षकार की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा होकर तस्य लोपः सूत्र से षकार और ङकार का लोप होकर बहु ई इस स्थिति में उकार के स्थान पर इको यणचि सूत्र से यणादेश वकार होकर बह्वी बना। उस बह्वी-शब्द के ङ्यन्त होने से ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च के अधिकार से वर्तमान स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् सूत्र से खले कपोतन्याय से एकविंशति स्वादि प्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा से सुप्रत्यय होकर बह्वी सु। पाणिनीय प्रतिज्ञा से अनुनासिक होने पर सुप्रत्यय के अन्त्य उकार का उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्र से इत्संज्ञा होकर तस्य लोपः से उस इत्संज्ञक उकार का

टिप्पणी

लोप होकर बह्वी स् ऐसी स्थिति होने पर हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से ङ्यन्त के परे सकार का लोप होकर **बह्वी** रूप सिद्ध होता है।

23.13 मायायामण् (4.4.124)

सूत्रार्थ- असुर की अपनी माया अभिधेय हो तो षष्ठी समर्थ असुर प्रातिपदिक से अण्-प्रत्यय होता है वेद विषय में।

सूत्रावतरण- असुर प्रातिपदिक से मायार्थ में अण-प्रत्यय के विधान के लिए ये सूत्र है।

सूत्राव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे अण-प्रत्यय होता है। ये द्विपदात्मक सूत्र है। मायायाम् सप्तम्यन्त पद और अण् प्रथमान्त पद है। असुरस्य स्वम् सूत्र से असुरस्य षष्ठ्यन्त पद और स्वम् प्रथमान्त पद, भवे छन्दसि सूत्र से छन्दसि विषयसप्तम्यन्त पद, अग्राद्यत् सूत्र से यत् प्रथमान्त पद और ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से प्रातिपदिकात् पञ्चम्यन्त पदों की अनुवृत्ति हुई। तद्धिताः, प्रत्ययः, परश्च तीनों सूत्रों का अधिकार भी है। इस सूत्र में असुरस्य षष्ठ्यन्त पद, असुरात् पञ्चमी एकवचनान्त में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार पदयोजना हुई– छन्दसि असुरात् प्रातिपदिकात् परः मायायाम् अण्-प्रत्ययः इति। अर्थात्- असुर की अपनी माया अभिधेय हो तो षष्ठी समर्थ असुर प्रातिपदिक से अण्-प्रत्यय होता है वेद विषय में।

उदाहरणम्- आसुरी माया।

सूत्रार्थसमन्वयः- असुर-शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा हुई **मीयते अनया इति माया** असत् अर्थ के प्रकाशन की शक्ति। उस वाच्य अर्थ में असुर प्रातिपदिक से प्रकृतसूत्र से अण्-प्रत्यय होकर असुर अण् हुआ। अण्-प्रत्यय के अन्तिम णकार का हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा तथा तस्य लोपः सूत्र से लोप होकर असुर अ बना और तद्धितेष्वचामादेः सूत्र से असुरशब्द के आदी अकार को वृद्धी आकार होकर आसुर अ। यचि भम् सूत्र से आसुरशब्द की भसंज्ञा होकर यस्येति च सूत्र से आसुर के अन्त्य अकार लोप होने पर आसुर् अ इति सभी वर्णसम्मेलन होकर आसुर शब्द बना तथा अब अण्- प्रत्ययान्त होने से आसुर-शब्द के स्त्रीत्वविवक्षा में टिड्-ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः सूत्र से ङीप्-प्रत्यय तथा ङीप्-प्रत्यय के आदी ङकार का लशक्वतद्धिते सूत्र से इत्संज्ञा और पकार की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा, तस्य लोपः सूत्र से पकार और ङकार का लोप होने पर आसुर ई होकर आसुर-शब्द की यचि भम् सूत्र से भसंज्ञा होकर उसके अन्त्य अकार की यस्येति च सूत्र से लोप हुआ। सभी वर्णों के मेल से आसुरी बना तथा ङ्यन्त होने से ङ्याप्प्रातिपदिकात् से प्रातिपदिक संज्ञा, स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् सूत्र से खले कपोतन्याय से एकविंशति स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा

टिप्पणी

में सुप्रत्यय होने पर आसुरी सु इस स्थिति में पाणिनीयप्रतिज्ञा से अनुनासिक होने पर सुप्रत्यय के अन्त्य उकार का उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्र से इत्संज्ञा होकर तस्य लोपः से उस इत्संज्ञक उकार का लोप होकर आसुरी स् होने पर हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् सूत्र से ङ्यन्त से परसकार का लोप होकर **आसुरी** रूप सिद्ध हुआ।

23.14 अश्विमानण् (4.4.126)

सूत्रार्थः- अश्विमत् शब्द से अण् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण- अश्विमत् शब्द से अण्-प्रत्यय का विधान करने के लिए ये सूत्र आचार्य ने बनाया।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे अण्-प्रत्यय होता है। इस सूत्र में दो पद है, अश्विमान् प्रथमा एकवचनान्त पद और अण् भी प्रथमैकवचनान्त पद। यहाँ भवे छन्दसि सूत्र से छन्दसि विषयसप्तम्यन्तपद, ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से प्रातिपदिकात् पञ्चम्यन्तपद के अनुवृत्ति होती है। तद्धिताः, प्रत्ययाः, और परश्च से तीनपद भी यहाँ अधिकृत है। तद्वानासामुपधानो मन्त्र इतीष्टकासु लुक् च मतोः सूत्र से यहाँ तद्वान् प्रथमान्त पद, आसाम् षष्ठीबहुवचनान्त पद, उपधानः प्रथमान्त पद, मन्त्रे सप्तम्येकवचनान्त पद, इति अव्ययपद, इष्टकासु सप्तमीबहुवचनान्त पद, लुक् प्रथमान्त पद, च अव्ययपद और मतोः षष्ठ्येकवचनान्त पदों की यहाँ अनुवृत्ति हुई। यहाँ मतु-पद से मतुप्-प्रत्यय का बोध होना चाहिए। अतरू पदयोजना ऐसे हुई - तद्वानासामुपधानो मन्त्र इतीष्टकासु (वाच्यासु) अश्विमान् प्रातिपदिकात् परः तद्धितः अण् प्रत्ययः छन्दसि मतोः लुक् च इति। अर्थात्– उपधान मन्त्र समानाधिकरणवाले प्रथमासमर्थ मतुबन्त अश्विमान् प्रातिपदिक से षष्ठी के अर्थ में ईट का अभीधेय होने पर वेद विषय में अण प्रत्यय मतुप् प्रत्यय का लुक् हो जाता है।

उदाहरण- आश्विनीः उपदधाति।

सूत्रावतरण- अश्व-शब्दः अस्मिन् मन्त्रे अस्ति इति अश्विमान्। अश्विमत्-प्रातिपदिक से प्रकृतसूत्र से अण्-प्रत्यय और मतुप् का लुक होकर इनण्यनपत्ये सूत्र से प्रकृतिवद्भाव होकर अश्विन् अण् इस स्थिति में अण्-प्रत्यय के अन्त्य णकार का लोप होने पर अश्विन् अ इति, तद्धितेष्वचामादेः सूत्र से अश्विन्-शब्द के आदी अकार को वृद्धी आकार होकर आश्विन् अ ऐसा होने पर सभी वर्णसम्मेलन से निष्पन्न आश्विन शब्द के अण्-प्रत्ययान्त होने पर टिड्-ढाणञ्-द्वयसज्-दघ्नञ्-मात्रच्-तयप्-ठक्-ठञ्-कञ्-क्वरपः सूत्र से ङीप्-प्रत्यय होकर ङीप्-प्रत्यय के आदि ङकार का लशक्वतद्धिते सूत्र से इत्संज्ञा और पकार का हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा, तस्य लोपः सूत्र से पकार और ङकार का लोप होने पर आश्विन ई इस स्थिति में आश्विन-शब्द की यचि भम् सूत्र से भसंज्ञा होकर उसके अन्त्य अकार का यस्येति च सूत्र से लोप होकर सभी वर्ण मिलाकर आश्विनी बना आश्विनी शब्दस्वरूप के ङ्यन्त होने से ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च के अधिकार में

टिप्पणी

स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् सूत्र से खले कपोतन्याय से एकविंशति स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर द्वितीयाबहुवचन की विवक्षा में शस्-प्रत्यय के होने पर शस्-प्रत्यय के आदि शकार का लशक्वतद्धिते सूत्र से इत्संज्ञा होकर तस्य लोपः सूत्र से इत्संज्ञक शकार का लोप होने पर आश्विनी अस् इस स्थिति में प्रथमयोः पूर्वसवर्णः सूत्र से ईकार और अकार के स्थान पर पूर्वसवर्णदीर्घ एकादेश होकर ईकार होने पर आश्विनी स् हुआ और इस समुदाय के सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् से उसकी पदसंज्ञा होकर उसके अन्त्य सकार के स्थान पर ससजुषो रुः से रु- आदेश और अनुबन्धलोप होकर आश्विनी र् हुआ । अब समुदाय के अन्त्य रु के स्थान पर खरवसानयोर्विसर्जनीयः से विसर्गादेश होने पर सर्ववर्णसम्मेलन से **आश्विनीः** रूप सिद्ध होता है।

23.15 समुद्राभ्राद्घः (4.4.118)

सूत्रार्थः- वेदविषय में 'तत्र भवः' इस अर्थ में समुद्र और अभ्र प्रातिपदिक से परे तद्धित घ प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरण- वेदविषय में 'तत्र भवः' इस अर्थ में समुद्र और अभ्रशब्द से भवे छन्दसि सूत्र से यत्-प्रत्यय प्राप्त होने पर उसको बाधकर घप्रत्यय के विधानार्थ ये सूत्र आचार्य ने बनाया।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इससे घ-प्रत्यय होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में समुद्राभ्राद् पञ्चमी एकवचनान्त पद और घः प्रथमा एकवचनान्त पद है। समुद्रश्च अभ्रश्च समुद्राभ्रम्, तस्मात् समुद्राभाद् इति समाहारद्वन्द्वः। इस सूत्र में भवे छन्दसि सूत्र से भवे सप्तम्यन्त पद, छन्दसि सप्तम्यन्त पद, तत्र साधुः सूत्र से तत्र त्रल्प्रत्ययान्त पद और ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से प्रातिपदिकात् पञ्चम्यन्त पद की अनुवृत्ति हुई। तद्धिताः, प्रत्ययः परश्च पदत्रय का यहाँ अधिकार है। इस प्रकार से पद योजना हुई- छन्दसि तत्र भवे समुद्राभ्रात् प्रातिपदिकात् परः घः तद्धितः प्रत्ययः इति। उसके बाद सूत्रार्थ होता है– वेदविषय में 'तत्र भवः' इस अर्थ में समुद्र और अभ्र प्रातिपदिक से परे तद्धित घ प्रत्यय होता है।

उदाहरणम्- समुद्रियाः।

सूत्रार्थसमन्वयः- समुद्र शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा होकर 'समुद्रे भवः' विग्रह में प्रकृतसूत्र से घप्रत्यय होने पर समुद्र घ इति स्थिति में आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम् सूत्र से घ-प्रत्यय के स्थान पर इय्-आदेश होकर समुद्र इय् अ इस स्थिति में समुद्रशब्द की यचि भम् सूत्र से भसंज्ञा और तदन्त्य अकार का यस्येति च सूत्र से लोप होकर सर्ववर्णसम्मेलन होने पर समुद्रिय बना । अब इस शब्द की स्त्रीत्वविवक्षा होने से अजाद्यतष्टाप् सूत्र से टाप्-प्रत्यय तथा टाप्प्रत्यय के आदी टकार की चुटू सूत्र से इत्संज्ञा और पकार की हलन्त्यम् सूत्र से इत्संज्ञा, तस्य लोपः सूत्र से टकार और पकार का लोप होने पर समुद्रिय आ इति स्थिति में सवर्णदीर्घ होकर

समुद्रिया हुआ। अब इस शब्द के टाप्प्रत्ययान्त होने से ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च के अधिकार से वर्तमान अर्थ में स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङेसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् सूत्र से खले कपोतन्याय से एकविंशति स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमपुरुष बहुवचन की विवक्षा में जस् तथा जस्-प्रत्यय के आदि जकार की चुटू सूत्र से इत्सज्ञा होकर तस्य लोपः सूत्र से उस इत्संज्ञक जकार का लोप होने पर समुद्रिया अस् इस स्थिति में प्रथमयोः पूर्वसवर्णः सूत्र से आकार और अकार के स्थान पर पूर्वसवर्णदीर्घएकादेशआकार के होकर सर्ववर्णसम्मेलन से समुद्रियास् ऐसा होकर समुदाय के सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् से उसकी पदसंज्ञा हुई तथ उसके अन्त्य सकार के स्थान पर ससजुषो रुः से रु- आदेश और अनुबन्धलोप होकर समुद्रिया र् इस स्थिति में समुदाय के अन्त्य रु के स्थान पर खरवसानयोर्विसर्जनीयः से विसर्गादेश होकर सर्ववर्णसम्मेलन से **समुद्रियाः** रूप सिद्ध होता है।

23.16 पाथोनदीभ्यां ङ्यण् (4.4.111)

सूत्रार्थः– वेदविषय में पाथस् और नदी अनुपसर्जन प्रातिपदिकों से 'तत्र भवः' इस अर्थ में ङ्यण् प्रत्यय होता है।

सूत्रावतरणम्– 'तत्रा भवः' इत्यस्मिन्नर्थे पाथश्शब्दात् नदीशब्दाच्च् ङ्यण्-प्रत्ययस्य विधानार्थं सूत्रमिदं प्रणीतमाचार्येण।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इससे ङ्यण-प्रत्यय होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में पाथोनदीभ्याम् पञ्चमी द्विवचनान्त पद, ङ्यण् प्रथमैकवचनान्त पद है। यहाँ ङ्याप्प्रातिपदिकात् सूत्र से प्रातिपदिकात् पञ्चम्येकवचनान्त पद, भवे छन्दसि सूत्र से भवे और छन्दसि सप्तम्येकवचनान्त दोनों पद अनुवृत्त हुए। तद्धिताः, अनुपसर्जनात्, प्रत्ययः परश्च का यहाँ अधिकार है। इस प्रकार यहाँ पदयोजना हुई- छन्दसि अनुपसर्जनात् पाथोनदीभ्यां प्रतिपदिकात् परः ङ्यण् तद्धितः प्रत्ययः इति। यहाँ विभक्तिविपरिणाम से अनुपसर्जनाभ्यां प्रातिपदिकाभ्याम् ऐसा रूप होता है। विभक्तिविपरिणाम से बना रूप तद्धितः प्रथमैकवचनान्त पद यहाँ ङ्यण् का विशेषण है। अतरू सूत्रार्थ होता है– वेदविषय में पाथस् और नदी अनुपसर्जन प्रातिपदिकों से तद्धित अर्थ में ङ्यण् प्रत्यय होता है। अर्थात् प्रकृतसूत्र से पाथस् और नदी शब्दों में प्रकृतसूत्र से ङ्यण् तद्धितप्रत्यय पर में होता है।

उदाहरण- पाथ्यः।

सूत्रार्थसमन्वय- पाथ्स्- शब्द की अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् सूत्र से प्रातिपदिकसंज्ञा' पाथसि भवः' इस अर्थ में प्रकृतसूत्र से ङ्यण्-प्रत्यय और उस ङ्यण्-प्रत्यय के आदि डकार की चुटू सूत्र से इत्संज्ञा, हलन्त्यम् सूत्र से णकार की इत्संज्ञा, तस्य लोपः सूत्र से उन इत्संज्ञक डकार णकार का लोप होकर पाथस् य इस स्थिति में पाथस्-शब्द के अस्-भाग की अचोऽन्त्यादि टि सूत्र से टिसंज्ञा होकर ङ्यण्-प्रत्यय डित् होने से टेः सूत्र से उस टिसंज्ञक अस् का लोप होने पर पाथ् य इस स्थिति में सर्ववर्णसम्मेलन से निष्पन्न पाथ्य

टिप्पणी

शब्द के तद्धितप्रत्ययान्त होने से ङ्याप्प्रातिपदिकात्, प्रत्ययः, परश्च के अधिकार में वर्तमान अर्थ में स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप् सूत्र से खले कपोतन्याय से एकविंशति स्वादिप्रत्यय प्राप्त होने पर प्रथमैकवचन की विवक्षा में सुप्रत्यय के होने पर पाथ्य सु इस स्थिति में में पाणिनीयप्रतिज्ञा से अनुनासिक होने पर सुप्रत्यय के अन्त्य उकार का उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्र से इत्संज्ञा होकर तस्य लोपः से उस इत्संज्ञक उकार का लोप होकर पाथ्य स् ऐसा बनने पर समुदाय के सुबन्त होने से सुप्तिङन्तं पदम् से उस पदसंज्ञा होने पर उसके अन्त्य सकार के स्थान पर ससजुषो रुः से रु आदेश और अनुबन्धलोप होकर पाथ्य र् ऐसा होने से समुदाय के अन्त्य रेफ के स्थान पर खरवसानयोर्विसर्जनीयः से विसर्गादेश और सर्ववर्णसम्मेलन से पाथ्यः रूप सिद्ध हुआ।

पाठगत प्रश्न-23.2

8. छन्दसि घस् सूत्र से कौन सा प्रत्यय होता है?
9. छन्दसि घस् सूत्र में ऋतोः पद की अनुवृत्ति कहाँ से हुई?
10. छन्दसि घस् सूत्र किसका अपवाद है?
11. सोमशब्द से यप्रत्यय किससे होता है?
12. सोमशब्द से यप्रत्यय किस अर्थ में होता है?
13. मयडर्थक कौन से प्रत्यय हैं?
14. विचार्यमाण वाक्यों के टी के प्लुत किस सूत्र से होता है?
15. बह्वादि प्रतिपदिकों को नित्य ङीष् किस सूत्र से होता है?
16. असुरशब्द से अण्-प्रत्यय किस सूत्र से होता है?
17. अश्विमत् शब्द में अण्-प्रत्यय किस सूत्र से होता है?
18. समुद्र शब्द और अभ्रशब्द में किस सूत्र से घ- प्रत्यय होता है?
19. पाथस् शब्द और नदीशब्द में किस सूत्र से ङ्यण्- प्रत्यय हुआ?

पाठसार

वेदविषय में पादपूरण अर्थ में प्र, सम्, उप, उत् इन उपसर्गों को द्वित्व होता है। ''छन्दसीरः'' इवर्णान्त और रेफान्त प्रतिपदिकों से पर के मतुप् के मकार के स्थान पर व् होता है। ''अनो नुट्'' सूत्र से अन् अन्त वाले मतुप् के नुट होता है। नान्त के परे घ को नुडागम

होता है ''नाद्धस्य'' सूत्र से। वेद विषय में भुवस् महाव्याहृति के सकार को रु होता है विकल्प से रु भी। शब्द के स्थान पर प्लुत होता है आरम्भ में। विचार्यमाणानाम् सूत्र से विचार्यमाण वाक्यों के टी के स्थान पर प्लुत होता है। नित्यं छन्दसि सूत्र से बह्वादि प्रतिपदिकों से नित्य ङीष् होता है। मायायामण् सूत्र से असुरशब्द से अण्-प्रत्यय होता है। अश्विमानण् सूत्र से अश्विमत् शब्द से अण्- प्रत्यय होता है। समुद्राभ्राद्धः सूत्र से समुद्र शब्द और अभ्रशब्द से घ-प्रत्यय होता है। पाथोनदीभ्यां ड्यण् सूत्र से पाथस् और नदीशब्द से ड्यण्-प्रत्यय होता है।

पाठान्त प्रश्न

1. प्रसमुपोदः पादपूरणे सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. हरिवते रूप को सिद्ध कीजिए।
3. अक्षण्वन्तः रूप को सिद्ध कीजिए।
4. नाद्धस्य सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. भूवो विश्वेषु सवनेषु यहाँ भुवस् के सकार के स्थान पर ''भुवश्च महाव्याहृतेः'' सूत्र से रेफ क्यों नहीं हुआ।
6. ओमभ्यादाने सूत्र का अर्थ बताइए।
7. ऋत्वियः रूप की सिद्धि करो कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

23.1

1. प्र सम् उप उत् इसको द्वित्व पादपूरण की अवस्था में होता है।
2. वेद विषय में इवर्णन्त और रेफान्त प्रतिपदिकों से मतुप् के म के स्थान पर व् ''छन्दसीरः'' सूत्र से होता है।
3. अक्षण्वन्तः में नुडागम ''अनो नुट्'' सूत्र से।
4. नाद्धस्य सूत्र से नान्त से परे घ को नुडागम होता है।
5. अम्नरेव का वैकल्पिक रूप अम्न एव ही होगा।
6. तीन महाव्याहृतियां है और वे भूः, भुवः, स्वः है।
7. मन्त्र के आरम्भ में ओम् शब्द को प्लुत होता है।

टिप्पणी

23.2

8. घस्प्रत्यय।

9. ऋतोरण् सूत्र से अनुवृत्ति हुई।

10. ऋतोरण् सूत्र का अपवाद है।

11. मये च सूत्र से।

12. मयट्- अर्थ में।

13. आगतविकारावयाप्रकृता:

14. विचार्यमाणानाम्।

15. नित्यं छन्दसि।

16. मायायामण्।

17. अश्विमानण्।

18. समुद्राभ्राद्धः।

19. पाथोनदीभ्यां ड्यण्।

--तेइसवां पाठ समाप्त--

24

अष्टाध्यायी का अष्टम अध्याय-2

इस प्रकार आप पूर्वतन पाठो में वैदिक शब्द रूपो की प्रक्रिया को जाना। इस पाठ में स्वरप्रक्रिया को प्रदर्शित करेंगे। ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत ये उच्चारणकाल का बोध कराने वाले स्वर है। ये किस स्वरवर्ण का कितने काल तक उच्चारण करना उचित है यह बोध कराते है। इस अन्तिम पाठ में आदि में प्लुतस्वरविषय में आलोचना करेंगे। तीन मात्रा प्लुत होता है इस पाणिनीयशिक्षा वचन से इससे प्लुत की तीन मात्रिक उच्चारणकाल जानना चाहिए। और पाठान्तभाग में सत्व-णत्व-षत्वविषय में आलोचना करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- कब प्लुतस्वर होता है इस विषय को जान पाने में;
- प्लुतस्वरविधायक सूत्रो का परिचय जान पाने में;
- वेद में कब विसर्ग को सकार होता है उसको जान पाने में;
- वेद में कब नकार को णकार होता जान पाने में;
- वेद में कब सकार को षकार होगा उसको जान पाने में।

24.1 ये यज्ञकर्मणि॥ (8.2.88)

सूत्रार्थ– ये इसको यज्ञकर्म में प्लुत होता है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से यज्ञकर्म में ये इसको प्लुत विधान करते

है। इस सूत्र में ये यह प्रथमान्त पद है। यज्ञकर्मणि यह सप्तम्यन्त पद है। कर्मशब्द क्रियावाची है। इसलिए यज्ञकर्मणि इसका यज्ञक्रिया में यह अर्थ है। यज्ञसम्बन्धिक्रिया में। ''वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः'' इस सूत्र से प्लुतः इस पद की अनुवृति है। यज्ञकर्म में ये इसको प्लुत होता है यह सूत्रार्थ होता है। ''अचश्च'' इस परिभाषा के द्वारा ये इसके अच को ही प्लुत होता है।

उदाहरण- येऽऽऽ यजामहे।

सूत्रार्थसमन्वय– श्रौतयज्ञकर्म में जिस मन्त्र से आहुति दी जाती है वह मन्त्र याज्या कहलाते है। यज्ञकर्म में याज्या मन्त्र के आदि में ''येऽऽऽ यजामहे'' इस वाक्य का प्रयोग करते है। इसलिए यज्ञकर्म में प्रयुक्त होने से ये इसके एकार को प्रकृतसूत्र से प्लुत का विधान करते है।

विशेष- यदि यज्ञकर्म नहीं होता है तो ये इसके अच को प्लुत प्रकृतसूत्र से नहीं होता है। जैसे स्वाध्यायकाल में ''ये यजामह इति पञ्चाक्षरम्'' इत्यादि ये इसको प्लुत नहीं होता है।

24.2 अग्नीत्प्रेषणे परस्य च (8.2.92)

सूत्रार्थ– अग्नीध के प्रेषण में आदि को प्लुत और उससे परे को भी होता है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्लुत को विधान करते है। इस सूत्र में तीन पद है। अग्नीत्प्रेषणे परस्य च यह सूत्रगत पदच्छेद है। अग्नीत्प्रेषणे यह सप्तम्यन्त पद है। अग्नीधः प्रेषणमिति अग्नीत्प्रेषणम्, तस्मिन् अग्नीत्प्रेषणे इति। परस्य यह षष्ठ्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। ब्रूहिप्रेष्यशौषड्वौषडावहानामादेः इस सूत्र से आदेः इस पद की, ये यज्ञकर्मणि इस सूत्र से यज्ञकर्मणि इस पद की अनुवृति है। वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः इस सूत्र से प्लुतः इस पद की अनुवृति से उससे तेन अचश्च इस परिभाषा के द्वारा अचः यह भी प्राप्त होते है। उससे सूत्र का अर्थ होता है अग्नीध के प्रेषण में आदि के अच को प्लुत और उससे परे को भी प्लुत होता है यज्ञकर्म में। आग्नीध्राख्य को ऋत्विज के प्रति अध्वर्यु प्रेषण में अर्थात् उसके प्रति उपदेश वाक्य में अथवा निर्देश वाक्य में आदि अच को, उससे (आदिभूत से) परे अच को प्लुत होता है यह सरलार्थ है।

उदाहरण– ओ3श्रा3वय इति।

सूत्रार्थसमन्वय- ओऽऽऽश्राऽऽऽवय इस आग्नीध्राख्य ऋत्विज के प्रति अध्वर्यु के निर्देशवाक्य को। उससे यहाँ आदि अच के ओकार को और उससे परे अच आकार को (श्रा-इसके) इस सूत्र से प्लुत होता है।

विशेष- सूत्र में प्रेषणे यह कहा है की उससे भिन्न व्यापार में प्लुत नहीं होता है। जैसे- अग्नीदग्नीन् विहर, इत्यादि में और बहिस्तृणोहि इत्यादि में प्लुत नहीं होता है।

यज्ञ कर्मणि इसके कहने से यज्ञकर्म भिन्न स्थल में प्लुत नहीं होता है, उससे आश्रावयास्तश्रौषट् इत्यादि में प्लुत नहीं होता है।

24.3 विभाषा पृष्टप्रतिवचने हेः॥ (8.2.93)

सूत्रार्थ– पूछे हुए प्रश्न के प्रत्युतर में हि को विकल्प से प्लुत होता है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्लुत का विधान करते है। इस सूत्र में तीन पद है। विभाषा यह प्रथमा एकवचनान्त, पृष्टप्रतिवचने यह सप्तमी एकवचनान्त, हेः यह षष्ठी एकवचनान्त पद। विभाषा इसका विकल्प से यह अर्थ है। पृष्टप्रतिवचने यहाँ पर पृष्टस्य प्रतिवचनम् आख्यानं पृष्टप्रतिवचनं, तस्मिन् इति षष्ठीतत्पुरुष। वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः इस सूत्र से प्लुतः इस पद की अनुवृति है, उस अचश्च इस परिभाषा के द्वारा अचः यह प्राप्त होता है। इसी प्रकार सूत्र का अर्थ होता है पृष्ट के प्रतिवचन में (प्रत्युत्तर में) हि के अच को विकल्प से प्लुत होता है।

उदाहरण– इसका उदाहरण है अकार्षं हि3, अकार्षं हि इति च।

सूत्रार्थसमन्वय- अकार्षीः कटम् ऐसे पूछने पर प्रश्न का उत्तर होता है अकार्षं हि इति। उससे यहाँ प्रत्युत्तरवाक्य में हि के अच इकार को विकल्प से प्लुत होता है। इसी प्रकार प्लुतपक्ष में अकार्षं हि3 इसके अभावपक्ष में अकार्षं हि यह होता है।

विशेष- सूत्र में पृष्टप्रतिवचन में कहने से प्रत्युत्तर भिन्नवाक्य में हि अच को प्लुत नहीं होता है, उससे कट को करोगे हि इत्यादि में सामान्यवाक्य में हि को प्लुत नहीं होता है। सूत्र में हि ऐसा कहने से करता हूँ इत्यादि में प्रत्युत्तर होने पर भी हिभिन्न ननु-इत्यादि को प्लुत नहीं होता है।

24.4 आम्रेडितं भर्त्सने॥ (8.2.95)

सूत्रार्थ– भर्त्सन में आम्रेडित को प्लुत होता है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्लुत का विधान करते है। इस सूत्र में दो पद है। आम्रेडितम् यह प्रथमा एकवचनान्त, भर्त्सने यह सप्तमी एकवचनान्त। वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः इस सूत्र से टेः इस और प्लुतः इसकी अनुवृति है, प्लुत इसकी आम्रेडितम् इसका विशेषण, उससे उसकी नपुंसकत्व। प्लुतः इसकी अनुवर्त से अचश्च इस परिभाषा के अच को यह भी प्राप्त होता है। भर्त्सन नाम अपकार शब्द के द्वारा भय उत्पादन को। तस्य परमाम्रेडितम् इस सूत्र से कहा की आम्रेडितम इसको ग्रहण नहीं करना चाहिए। यहाँ आम्रडितपद को पूर्व और परे दोनों का उपलक्षणार्थ है। अमरकोष में भी कहा की आम्रेडित को दो बार कहा गया। उससे सूत्र का अर्थ होता है भर्त्सन अर्थ में आम्रेडित के (पूर्व और परे को) टी के अच को प्लुत होता है।

टिप्पणी

उदाहरण– इसका उदाहरण होता है दस्योऽऽऽ दस्योऽऽऽ घातयिष्यामि त्वाम् इति।

सूत्रार्थसमन्वय– यहाँ वाक्य आदि के आमन्त्रित असूय असम्मति कोप कुत्स्न भर्त्सन में इससे भर्त्सन अर्थ गम्यमान में दस्युशब्द को द्वित्व होता है। उन दोनों दस्यु के टी के अच ओकार को प्रकृतसूत्र से प्लुत होता है।

24.5 अङ्गयुक्तं तिङाकाङ्क्षम्॥ (8.2.96)

सूत्रार्थ– छन्द में भर्त्सन में अङ्गयुक्त तिङाकाङ्क्ष को प्लुत होता है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्लुत का विधान होता है। इस सूत्र में दो पद है। अङ्गयुक्तम् यह प्रथमान्त, तिङाकाङ्क्षम् यह भी प्रथमान्त पद है। अङ्गयुक्त इसका अङ्गशब्द से युक्त यह अर्थ है। तिङाकाङ्क्षमित्यस्य साकाङ्क्ष तिङ् यह अर्थ है। इस सूत्र में आम्रेडितं भर्त्सने इस सूत्र से भर्त्सने इस, वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः इससे टेः, और प्लुतः इन दो पदों की अनुवृति है। प्लुत इसकी अनुवृति से अचश्च इस परिभाषा के द्वारा अचः यह भी जोड़ा गया है। उससे सूत्रार्थ होता है अङ्गशब्द से युक्त साकाङ्क्ष जो तिङ् उसके टी के अच को प्लुत होता है।

उदाहरण– यह इसका उदाहरण है अङ्ग कूजऽऽऽ इदानीं ज्ञास्यसि जाल्म इति।

सूत्रार्थसमन्वय- अङ्ग कूज3 इदानीं ज्ञास्यसि जाल्म इसका यह अर्थ है कि मूर्ख अब अपशब्द कथन के फल को प्राप्त करेगा। यहाँ अङ्ग यह रोषपूर्वक सम्बोधन है। यहाँ कूज यह अब दुष्ट तुझे जान लूंगा इस वाक्य में स्थित ज्ञास्यसि इस तिङन्त पद की आकाङ्क्ष करता है इसलिए कूज यह साकाङ्क्ष तिङ् है। और यह अङ्गशब्द से युक्त है। और यहाँ गम्यमान भर्त्सन और अङ्गशब्द से युक्त साकाङ्क्ष तिङ् कूज यह है, उससे प्रकृतसूत्र से कूज इसके टी के अच को प्लुत होता है।

विशेष- सूत्र में साकाङ्क्षतिङ ग्रहण से अङ्ग देवदत्त मिथ्या वदसि इत्यादि में भर्त्सन अर्थ के होने पर भी अङ्गशब्द से युक्त देवदत्त यह सुबन्त है यहाँ पर प्लुत नहीं होता है।

अङ्ग पच इत्यादि में पच यह तिङन्त स्वार्थ प्रतिपादन में कुछ भी अपेक्षा नहीं करता है, इसलिए यहाँ आकाङ्क्षा के असत्त्व होने से प्रकृतसूत्र से प्लुत नहीं होता है।

भर्त्सना गम्यमान होने पर ही साकाङ्क्षतिङ को प्लुत होता है, उससे अङ्गाधीष्व भक्त तेरो को देता हूँ है (पठ अन्न तुझको देता हूँ) इत्यादि में अधीष्व यह तिङन्त को देता हूँ इस तिङन्त के साथ सम्बन्ध होने पर भी भर्त्सनार्थ के अभाव से प्लुत नहीं होता है।

24.6 पूर्वं तु भाषायाम्॥ (8.2.98)

सूत्रार्थ– विचार्यमानो के टी को प्लुत होता है।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्लुत का विधान करते है। इस सूत्र में तीन पद है। पूर्वम यह प्रथमा एकवचनान्त, तु यह अव्ययपद, भाषायाम यह सप्तमी एकवचनान्त। विचार्यमाणानाम् इस सूत्र सेविचार्यमाणानाम इस पद की अनुवृति है। वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः इस सम्पूर्ण की भी यहाँ इस सूत्र में अनुवृति है। प्लुतः इसकी अनुवृति से अचश्च इस परिभाषा के द्वारा अच यह भी प्राप्त होता है। भाषायाम इसका लौकिक संस्कृत में यह अर्थ है। पूर्वम का पूर्व विद्यमान यह अर्थ है। उससे लौकिक संस्कृत में विचार्यमानो का (वाक्यो का) मध्य में पूर्व विद्यमान जो वाक्य उसके टी के अच को प्लुत होता है, और उसको उदात्तस्वर होता है यह सूत्र का आशय है। यहाँ वाक्य में जिसका पूर्व प्रयोग उसके ही पूर्वत्व को जानना चाहिए।

उदाहरण– अहिर्नु३३३ रज्जुर्नु।

सूत्रार्थसमन्वय– इसका उदाहरणवाक्य सर्पो वा रज्जुर्वा इत्यर्थ। नु यह वितर्क अर्थ में अव्यय। यहाँ विचार्यमाण वाक्यो के मध्य में पूर्व विद्यमान जो अहिर्नु इस वाक्य के टी के अच उकार की इस सूत्र से प्लुत और उदात्तस्वर होता है।

विशेष- इस सूत्र से पूर्व सूत्र है विचार्यमाणानाम् इति, उससे भी यह ही कार्य होता है। परन्तु इस सूत्र में भाषायाम् यह पद है, उस पूर्व सूत्र को वैदिकप्रयोग विषय में प्रवृत्त है और इससे लौकिक प्रयोग विषय में प्रवृत्त है ऐसा जानना चाहिए।

24.7 अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः॥ (8.2.100)

सूत्रार्थ- अनुदात्त प्लुत हो।

सूत्रव्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्लुत को अनुदात्त स्वर का विधान करते है। इस सूत्र में दो पद है। अनुदात्तम यह प्रथमा एकवचनान्त विधायक पद है। प्रश्नान्ताभिपूजितयोः यह सप्तमी द्विवचनान्त पद है। वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः इससे वाक्यस्य टेः प्लुतः इन तीन पद की यहाँ अनुवृति है। प्लुत की अनुवृति से अचश्च इस परिभाषा के द्वारा अच की भी प्राप्ति होती है। प्रश्न शब्द का प्रश्नार्थ वाक्य को यह अर्थ, तस्य अन्तः प्रश्नान्तः इति षष्ठीतत्पुरुषः प्रश्नार्थ वाक्य के अन्तिम को यह अर्थ है। अभिपूजित शब्द का सत्कार यह अर्थ। उससे सूत्र का अर्थ होता है प्रश्नार्थक और सत्कारार्थक वाक्य के अन्त टी प्लुत अच को अनुदात्तस्वर होता है। वहाँ प्रश्नार्थ वाक्य में अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः इस सूत्र से विहित प्लुत को, अभिपूजितार्थे, वाक्ये च दूराद्धूते च इत्यादि से विहित प्लुत को इस सूत्र से अनुदात्तस्वर होता है।

उदाहरण– यहाँ प्रश्नान्त का उदाहरण है अग्निभूत3इ इति पट3उ इति च। अभिपूजित का उदाहरण शोभनः खल्वति माणवक3 इति है।

सूत्रार्थसमन्वय- अत्र अगमः पूर्वं ग्रामान् अग्निभूते। इति प्रश्नार्थकं वाक्यम्। तस्य अन्तस्य टेः एकारस्य (अ इ) अनन्त्यस्य अकारस्य अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः इत्यनेन प्लुतत्वम्। वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः इत्यनेन प्लुतस्य उदात्तत्वे प्राप्ते, तस्य प्रकृतसूत्रेण अनुदात्तस्वरः, तेन अग्निभूत3इ इति रूपम्। पटो इत्यत्र टेः उकारस्य अनन्त्यस्य अकारस्य अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः इत्यनेन प्लुतत्वम्। वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः इत्यनेन प्लुतस्य उदात्तत्वे प्राप्ते, तस्य प्रकृतसूत्रेण अनुदात्तस्वरः, तेन पट3उ इति रूपम्। शोभनः खल्विति माणवकः इत्यत्र अन्तस्य टेः अचः अकारस्य दूराद्धूते च इत्यनेन प्लुतस्वरः। तस्य प्रकृतसूत्रेण अनुदात्तस्वरः, तेन माणवक3 इति रूपम्।

24.8 उपरिस्विदासीदिति च॥ (8.2.102)

सूत्रार्थः- उपरिस्विदासीत् इसके टी को भी प्लुत अनुदात्त होता है।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुदात्तस्वर होता है। इस सूत्र में तीन पद है। उपरिस्विदासीत् इति च ये पदच्छेद है। इसमें तीनों पद अव्यय है। इस सूत्र में अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः से अनुदात्तम् पद, वाक्यस्य टेः प्लुत उदात्तः सूत्र से वाक्यस्य, टेः और प्लुतः तीन पदों की अनुवृत्ति हुई। अतरू सूत्रार्थ है- उपरिस्विदासीत् वाक्य के टी को भी प्लुत अनुदात्तस्वर होता है।

उदाहरण– उपरिस्विदासीऽद् इति।

सूत्रार्थसमन्वय- 'अधः स्विदासी 3 दुपरिस्विदासी 3 त्' ये ऋग्वेद का मन्त्र है। यहाँ अधः स्विदासी 3 द् एक वाक्य और उपरिस्विदासी 3 द् दूसरा वाक्य है। इस जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व जो तमस् (प्रकृति) था वो स्रष्टा के उपरि(उससे अधिक) था अथवा अल्प था? इस प्रकार यहाँ दो वाक्य है। विचार्यमाणानाम् सूत्र से दोनों वाक्य में टी के अच् के स्थान पर प्लुतस्वर और उदात्त होता है। इस प्रकार उपरिस्विदासीऽद् में प्लुत के अच् को उदात्त को बाध कर प्रकृतसूत्र से अनुदात्तस्वर होता है।

विशेष- सूत्र में उपरिस्विदासीऽद् ग्रहण से अधः स्विदासीऽद् में प्लुत को अनुदात्तस्वर नहीं हुआ।

24.9 अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः। (8.2.105)

सूत्रार्थः-प्रश्न और उत्तर(आख्यान) या वस्तु स्थिति वर्णन होने पर वाक्यस्थ अन्त्य और अनन्त्य पद की टी को भी स्वरित स्वर और प्लुत होता है।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्लुत होता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। अनन्त्यस्य

षष्ठ्येकवचनान्त, अपि अव्यय, प्रश्नाख्यानयोः सप्तमीद्विवचनान्त। अन्ते भवः अन्त्यः, न अन्त्यः अनन्त्यः, तस्य अनन्त्यस्य इति नञ्तत्पुरुषसमास अर्थात अन्त्य से भिन्न। प्रश्नश्च आख्यानञ्च प्रश्नाख्याने, तयोः प्रश्नाख्यानयोः इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः। इस सूत्र में स्वरितमाम्रेडितेऽसूया-सम्मति-कोप-कुत्सनेषु सूत्र से स्वरितम् पद, **वाक्यस्य टेः** प्लुत उदात्तः सूत्र से वाक्यस्य, टेः और प्लुत इन पदों की अनुवृत्ति हुई। **प्लुतग्रहणाद् अचश्च** परिभाषा से अच् का भी ग्रहण होता है। पदस्य की भी अनुवृत्ति होती है। अनन्त्यस्यापि में अपि शब्द है जिससे अन्त्य का भी ग्रहण होता है। इस प्रकार जैसे अन्त्यस्य है वैसे ही अनन्त्यस्यापि को जानना चाहिये। आख्यान कथन उत्तर को कहते है। इस सूत्र का सरलार्थ होता है प्रश्न और उत्तर(आख्यान) या वस्तुस्थितिवर्णन होने पर वाक्यस्थ अन्त्य और अनन्त्य पद की टी को भी स्वरितस्वर और प्लुत होता है।

उदाहरण- इसका उदाहरण है -**प्रश्ने**- अगमः3 पूर्वाऽन् ग्रामाऽन् इति, **आख्याने**- अगम3म् पूर्वा3न् ग्रामा3न् इति।

सूत्रार्थसमन्वय- अगमरू3 पूर्वा3न् ग्रामा3न् का अर्थ क्या तु पूर्व के ग्रामों में गया? ये प्रश्नार्थक वाक्य है अतः यहाँ अन्त्यपद और अन्त्यभिन्न पदों के टि के अच् के स्थान पर प्रकृतसूत्र से स्वरितस्वर और प्लुत होता है। अगमऽम् पूर्वाऽन् ग्रामाऽन् अर्थात् हाँ, मैं पूर्व के ग्रामों में गया, ये उत्तरार्थक वाक्य है। अतः यहाँ भी पूर्ववद् अन्त्यस्य पद और अन्त्यभिन्न पदों के टि के अच् के स्थान पर प्रकृतसूत्र से स्वरितस्वर और प्लुत होता है।

विशेषः- यद्यपि प्रश्नार्थवाक्य के अन्त्य पद के टि के अच् के स्थान पर अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः से अनुदात्तस्वर और प्लुत होता है फिर भी प्रकृतसूत्र में अपिशब्द से अन्त्यस्यापि के ग्रहण से प्रश्नार्थक वाक्य के अन्त्य के स्थान पर प्रकृतसूत्र से स्वरितस्वर भी होता है। और इस प्रकार विकल्प से प्रश्नान्त के में स्वरितस्वर और अनुदात्तस्वर होता है।

24.10 दीर्घादटि समानपादे॥ (8.3.9)

सूत्रार्थः- ऋग्वेद मन्त्रों में एक पाद में दीर्घ वर्ण से उत्तर नकारान्त पद को रु विकल्प से होरा है अट्प्रत्याहार के वर्ण के परे रहते संहिता विषय में।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से नकारान्त पद को रु होता है। इस सूत्र में तीन पद है। दीर्घात् पञ्चम्यन्त, अटि सप्तम्यन्त, समानपदे सप्तम्यन्तपद है। अट् प्रत्याहार है। समानश्च असौ पादश्च समानपादः, तस्मिन् इति कर्मधारयसमासः। यहाँ समानपादे का अर्थ एकपाद में है। यहाँ, **उभयथर्क्षु** से उभयथा और ऋक्षु दो पद, **नश्छव्यप्रशान्** से नः षष्ठ्यन्तपद, **मतुवसो रु संबुद्धौ छन्दसि** से रुः प्रथमान्तपद, **तयोर्य्वावचि संहितायाम्** से संहितायाम् पदों की अनुवृत्ति हुई। उभयथा का अर्थ उभय है (एक पक्ष में रु दुसरे

पक्ष में नकार)। ऋक्षु अर्थात् ऋग्वेद के मन्त्रों में। अतरू इसका सरलार्थ होता है कि ऋग्वेदमन्त्रों में एक पाद में दीर्घ वर्ण से उत्तर नकारान्त पद को रु विकल्प से होरा है अट्प्रत्याहार के वर्ण के परे रहते संहिताविषय में।

उदाहरण– देवाँ अच्छा सुमती (ऋ.4.1.2), महाँ इन्द्रो य ओजसा (ऋ.8.6.1)।

सूत्रार्थसमन्वय– रुत्वपक्ष में देवान् अच्छा इस स्थिति में, महान् इन्द्रो में ऋमन्त्र के एक पाद में ही दीर्घ से उत्तर नकारान्त पद को, उससे पर में अट्प्रत्याहारस्थवर्ण के विद्यमान होने से संहिता विषय में नकार के स्थान पर रुत्व होने पर आतोऽटि नित्यम् से रु के पूर्व अच् के अनुनासिक होने पर भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि से रु को यादेश और लोपः शाकल्यस्य से उसका लोप होने पर देवाँ अच्छा और महाँ इन्द्रो दो रूप सिद्ध होते है। इस सूत्र के वैकल्पिक होने से रुत्वाभावपक्ष में संयोग होने पर देवानच्छ और महानिन्द्रो भी रूप होगा।

विशेष- वाक्य में संहिता (सन्धि) करना इच्छाधीन होती है। अतः वाक्य में संहिता विवक्षा में ही होगी। अविवक्षा अर्थ में तो संहिता का अभाव। इस प्रकार इस सूत्र का वैकल्पिकत्व तो सिद्ध ही है, फिर भी पूर्वसूत्र से उभयथा पद के ग्रहण से वैकल्पिकत्व विधान से कहीं पर रुत्व नहीं होता है, तेन आदित्यान् याचिषामहे यहाँ सूत्रोक्त सभी विषयों के होने पर भी नकारान्त पद को रुत्व नहीं होता है।

पाठगत प्रश्न-24.1

1. ये यहाँ कब प्लुतस्वर होता है?
2. अग्नीधः प्रेषणे इसमे प्रेषणे शब्द का क्या अर्थ है?
3. हि शब्द को प्लुतस्वर कब होता है?
4. किस अर्थ में आम्रेडित को प्लुतस्वर होता है?
5. किस शब्द से युक्त तिङन्त पद च्युत हो जाता है?
6. भाषायाम् शब्द का क्या अर्थ है?
7. अभिपूजितशब्द का क्या अर्थ है?
8. अनन्त्यस्यान्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः में अपिशब्द से किसका ग्रहण किया है?
9. वेद में दीर्घ से उत्तर नकारान्त पद को रुत्व विधायक सूत्र कौन सा है?

टिप्पणी

24.11 आतोऽटि नित्यम्॥ (8.3.3)

सूत्रार्थः– अट् के परे रहते रु से पूर्व आकार के स्थान पर नित्य अनुनासिक आदेश होता है।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से अनुनासिक स्वर होता है। इस सूत्र में तीन पद है। आतः षष्ठ्यन्त पद है। अटि सप्तम्यन्त पद है। नित्यम् प्रथमान्त पद है। आतः का अर्थ आकार है। अट् प्रत्याहार है। यहाँ **अनुनासिक पूर्वस्य तु वा** सूत्र से अनुनासिकः और पूर्वस्य दो पद, **मतुवसो रु संबुद्धौ छन्दसि** से रुः, **तयोर्य्वावचि संहितायाम्** से संहितायाम् पद की अनुवृत्ति हुई। अतरू सूत्रार्थ होता है– रु से पूर्व आकार के स्थान पर नित्य अनुनासिक स्वर होता है यदि पर में अट्प्रत्याहारस्थवर्ण हो तो।

उदाहरण– महाँ इन्द्रो य ओजसा इति।

सूत्रार्थसमन्वय- महान् इन्द्रः इसमें **दीर्घादटि समानपादे** से नकार के स्थान पर रुत्व होता है। फिर महारु इन्द्रः इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से रु से पूर्व आकार के स्थान पर नित्य अनुनासिक स्वर होता है, पर में अट्प्रत्याहारस्थवर्ण इकार के होने से। फिर **भोभगोअघोअपूर्वस्य** योऽशि से र के स्थान पर यादेश होकर **लोपः शाकल्यस्य** से यकार के लोप होने पर महाँ इन्द्रः सिद्ध होता है।

विशेष- यहाँ **अनुनासिकः पूर्वस्य तु वा** से र से पूर्व आकार के स्थान पर विकल्प से अनुनासिकस्वर प्राप्त है परन्तु उसको बाधकर प्रकृतसूत्र से रु से पूर्व नित्य अनुनासिक स्वर होता है। परन्तु फिर भी तैतिरीयशाखाध्यायी महान् इन्द्रः में अनुस्वार (महां) पढ़ते है। यहाँ अनुस्वार कथं सिद्ध होता है लेकिन **व्यत्ययो बहुलम्** सूत्र से व्यत्यय होता है। इस प्रकार यहाँ पुनः विकल्प विधान से प्रकृतसूत्र से नित्य अनुनासिक विधान व्यर्थ हो जाता है इसलिए प्रकृतसूत्र का प्रयोजन चिन्तन करने योग्य है।

24.12 छन्दसि वाऽप्राम्रेडितयोः॥ (8.3.49)

सूत्रार्थः- वेद में विसर्ग के स्थान पर सकार विकल्प से होता है यदि कवर्ग या पवर्ग पर में हो तो परन्तु यदि पर में प्रशब्द या आम्रेडितम् हो तो नहीं होता है।

सूत्रव्याख्या- ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से विसर्ग को सकार आदेश होता है। इस सूत्र में तीन पद है– छन्दसि, वा, अप्राम्रेडितयोः। छन्दसि सप्तम्येकवचनान्त, वा अव्ययपदम्, अप्राम्रेडितयोः सप्तमीद्विवचनान्त पद। छन्दसि का अर्थ वेद विषय में। प्रश्च आम्रेडितञ्च प्राम्रेडिते, न प्राम्रेडिते अप्राम्रेडिते, तयोः अप्राम्रेडितयोः। अर्थात् प्रशब्द और आम्रेडितशब्द को छोड़कर। आम्रेडितशब्द का अर्थ द्विरुक्ति है। इस सूत्र में विसर्जनीयस्य सः सम्पूर्ण सूत्र अनुवर्तित है। विसर्जनीयशब्द का अर्थ विसर्ग है। क पौ च कुपू तयोः कुप्वोः सप्तम्यन्त है, **तयोर्य्वावचि संहितायाम्** से संहितायाम् पदों की अनुवृत्ति हुई। कुशब्द का अर्थ

कवर्ग है, पुशब्द का पवर्ग। सूत्र का आशय है कि वेद में विसर्ग के स्थान पर सकार विकल्प से होता है यदि कवर्ग या पवर्ग पर में हो तो परन्तु यदि पर में प्रशब्द या आम्रेडितम् हो तो नहीं होता है।

उदाहरण– अग्ने त्रातर्ऋतस्कविः इति गिरिर्न विश्वतस्पृथुः इति च।

सूत्रार्थसमन्वय– त्रातः कविः में कवर्गस्थवर्ण पर में है, जिससे विसर्ग के स्थान पर विकल्प से सकार होकर त्रातस्कविः रूप बना। ऐसे ही विश्वतः पृथुः में पवर्गस्थवर्ण पर में है, जिससे विसर्ग के स्थान पर विकल्प से सकार होकर विश्वतस्पृथुः रूप बना।

विशेष- इस सूत्र से विकल्प से सकार होता है। कहीं पर विसर्ग के स्थान पर सकार प्रयुक्त होता है और कहीं विसर्ग ही एव प्रयुक्त होता है। इस प्रकार वसुनः पूर्व्यस्पतिः (ऋग्वेद:10.48.1) में यद्यपि पवर्गस्थवर्ण पर में है। किन्तु यदि प्रशब्द पर में हो तो विसर्ग के स्थान पर सकार नहीं होता है। जैसे अग्निः प्र विद्वान् (अथर्ववेदः 5.26.1) यहाँ प्रशब्द के परे रहते विसर्ग के स्थान पर सकार नहीं होगा। आम्रेडित यदि पर में हो तो भी विसर्ग के स्थान पर सकार नहीं होता है। जैसे पुरुषः पुरुषः परि यहाँ द्वितीय पुरुष शब्द **की तस्य परमाम्रेडितम्** से आम्रेडितसंज्ञा होती है। वो आम्रेडितसंज्ञक पुरुषशब्द पर में है अतः विसर्ग के स्थान पर सकार नहीं होगा।

24.13 कःकरत्करतिकृधिकृतेष्वनदितेः॥ (8.3.50)

सूत्रार्थः– विसर्ग के स्थान पर सकार हो।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से विसर्ग के स्थान पर सकार होता है। इस सूत्र में दो पद है। कःकरत्करतिकृधिकृतेषु सप्तमीबहुवचनान्त, अनदितेः षष्ठ्येकवचनान्त पद है। कस् च करत् च करतिश्च कृधिश्च कृतश्च कःकरत्करतिकृधिकृताः तेषु कःकरत्करतिकृधिकृतेषु इति। न अदिति अनदितिः तस्य अनदितेः। अर्थात् अदितिशब्द के विसर्ग को छोड़कर। **छन्दसि वाप्राम्रेडितयोः** सूत्र से छन्दसि की अनुवृत्ति हुई। छन्दसि का अर्थ वेद विषय में। यहाँ विसर्जनीयस्य सः सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति हुई। विसर्जनीयशब्द का अर्थ विसर्ग है। **तयोर्य्वावचि संहितायाम्** सूत्र से संहितायाम् पद की अनुवृत्ति हुई। अतः सूत्रार्थ हुआ– वेद में संहिता विषय में विसर्ग के स्थान पर सकार होता है कः, करत्, करति, कृधि, कृत के परे रहते अदिति शब्द के विसर्ग के स्थान पर सकार नहीं होता है।

उदाहरण–'प्रदिवो अपस्कः', 'यथा नो वस्यसस्करत्', 'सुपेशसस्करोति', 'उरुणस्कृधि', 'सोमं न चारु मघवत्सु नस्कृतम्'।

सूत्रार्थसमन्वय– कृ धातु से लुङ्लकार में प्रथमा एकवचन में वेद में कः और करत् दो रूप होते है, लट में करति, लोट में कृधि रूप बनते है। कृ धातु से क्तप्रत्यय

और विभक्ति होकर कृतम् रूप बना। इस प्रकार अपः कः, वस्यसः करत्, सुपेशसः करति, उरुणः कृधि, नः कृतम् इन स्थितियों में प्रकृतसूत्र से सर्वत्र विसर्ग के स्थान पर सकार होता है।

विशेषः- प्रकृतसूत्र में अनदितेः के पाठ होने से अदितिशब्द के विसर्ग के स्थान पर कःकरत्करतिकृधिकृत के परे रहते हुए भी सकारादेश नहीं होता है। जैसे नो अदितिः करत् इत्यादि मन्त्र में अदितिः करत् में विसर्ग के स्थान पर सकार नहीं हुआ।

24.14 पातौ च बहुलम्॥ (8.3.52)

सूत्रार्थः- छन्दसि पञ्चम्याः विसर्गस्य सः स्यादुपरिभवार्थे परिशब्दे परतः।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से विसर्ग के स्थान पर सकार होता है। इस सूत्र में तीन पद है। पातौ ये सप्तम्यन्त पद है और च अव्ययपद है। बहुलम् प्रथमान्त पद है। इस सूत्र में **पञ्चम्याः परावध्यर्थे** सूत्र से पञ्चम्याः पद, **छन्दसि वाऽम्रेडितयोः** सूत्र से छन्दसि पद, **सोऽपदादौ** से सः प्रथमान्त पद, **तयोर्य्वावचि संहितायाम्** सूत्र से संहितायाम् सप्तम्यन्तपदों की अनुवृत्ति हुई। विसर्जनीयस्य की भी अनुवृत्ति हुई। छन्दसि का अर्थ वेद विषय में। संहिताशब्द सन्धि के अर्थ में। अतःसूत्रार्थ होता है कि– वेद में संहिता विषय में पञ्चमी के विसर्ग को सकारादेश होता है यदि पर में पाधातु हो तो।

उदाहरण– सूर्यो नो दिवस्पातु।

सूत्रार्थसमन्वय- सूर्यो नो दिवस्पातु (ऋ.10.158.1) इस मन्त्रांश में दिवः पञ्चम्यन्त है, उसके परे पा धातु का रूप पातु है, उस पञ्चम्यन्त दिवः के विसर्ग के स्थान पर सकार होने पर दिवस्पातु रूप बना।

विशेषः- सूत्र में बहुलम् पद है। बहुल के ग्रहण से सभी जगह प्राप्ति का निषेध होता है। अर्थात् कहीं- कहींनहीं भी होता है। कहीं पाधातु के परे रहते हुए भी पञ्चमी के विसर्ग के स्थान पर सकार नहीं होता है। इसका उदाहरण है परिषदः पातु, यहाँ पञ्चमी के विसर्ग के स्थान पर सकार नहीं होगा।

24.15 षष्ठ्याः पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषेषु॥ (8.3.53)

सूत्रार्थः– वेद विषय में पति, पुत्र, पृष्ठ, पार, पद, पयस् पोष के परे रहते षष्ठ्यन्तपद के विसर्जनीय के स्थान पर सकार आदेश होता है।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से विसर्ग के स्थान पर सकार आदेश होता है। सूत्र में दो पद है। षष्ठ्याः षष्ठ्येकवचनान्त पद और पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषेषु सप्तमी

टिप्पणी

बहुवचनान्त पद है। पतिश्च पुत्रश्च पृष्ठश्च पारश्च पदञ्च पयः च पोषश्च इति पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषाः, तेषु पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषेषु इति, इनके परे रहते। इस सूत्र में छन्दसि वाऽप्रेडितयोः सूत्र से छन्दसि पद, सोऽपदादौ से सः प्रथमान्तपद, तयोर्य्वावचि संहितायाम् सूत्र से संहितायाम् सप्तम्यन्तपद की अनुवृत्ति हुई। विसर्ग की भी अनुवृत्ति हुई है। छन्दसि का अर्थ वेद विषय में और संहिता शब्द का अर्थ सन्धि है। अतरू सूत्रार्थ है कृवेद में संहिताविषय में षष्ठी विभक्ति के विसर्ग के स्थान पर सकार होता है यदि परे पति, पुत्र, पृष्ठ, पार, पद, पयस् पोष में से कोई भी हो तो।

उदाहरण- वाचस्पतिं विश्वकर्माणम् (ऋ.10.81.7), दिवस्पुत्राय सूर्याय (ऋ.10.17.1), दिवस्पृष्ठं भन्दमानः (ऋ.3.2.12), तमसस्पारमस्य (ऋ.1.92.6), परिवीत इळस्पदे (ऋ. 1.128.1), दिवस्पयो दिधिषाणाः (ऋ.10.114.1), रायस्पोषं यजमानेषु धनम् (ऋ.8.49. 7) इत्येतानि।

सूत्रार्थसमन्वय- वाचस्पतिम् में वाचः पतिम् इस दशा में पतिशब्द पर में है, उससे पूर्व के वाचः षष्ठ्यन्तपद के विसर्ग के स्थान पर इस सूत्र से सकार आदेश हुआ। दिवस्पुत्राय में दिवः पुत्राय इस दशा में पुत्रशब्द पर में है, जिससे पूर्व के दिवः षष्ठ्यन्तपद के विसर्ग के स्थान पर इस सूत्र से सकार होगा। दिवस्पृष्ठम् में दिवः पृष्ठम् इस दशा में यहाँ पृष्ठशब्द पर में है, उससे पूर्व दिवः षष्ठ्यन्तपद के विसर्ग के स्थान पर इस सूत्र से सकार आदेश हुआ। तमसस्पारम् में तमसः पारम् इस दशा में यहाँ पारशब्द पर में है, उससे पूर्व तमसः षष्ठ्यन्तपद के विसर्ग के स्थान पर इस सूत्र से सकार हुआ। परिवीत इळस्पदे इस मन्त्रांश के इळस्पदे में इडः पदे इस दशा में यहाँ पदशब्द पर में है, उससे पूर्व इळः षष्ठ्यन्तपद के विसर्ग के स्थान पर इस सूत्र से सकार आदेश हुआ। दिवस्पयः में दिवः पयः दशा में यहाँ पयस्-शब्द पर में है, उससे पूर्व दिव षष्ठ्यन्तपद के विसर्ग के स्थान पर इस सूत्र से सकार होता है। रायस्पोषम् में रायः पोषम् दशा में यहाँ पोषशब्द पर में है, उससे पूर्व रायः षष्ठ्यन्तपद के विसर्ग के स्थान पर इस सूत्र से सकार आदेश होता है।

विशेषः- प्रकृतसूत्र में षष्ठ्यन्तपद के ही विसर्ग के स्थान पर सकार कहा है। जिससे मनुः पुत्रेभ्यः दायम् में मनुशब्द प्रथमान्त है, उससे परे पुत्रशब्द के विद्यमान रहते हुए भी पूर्व के विसर्ग के स्थान पर सकार नहीं हुआ।

24.16 इडाया वा॥ (8.3.54)

सूत्रार्थः– वेद विषय में पति, पुत्र, पृष्ठ, पार, पद, पयस् पोष प्रे रहते षष्ठ्यन्त पद के विसर्जनीय के स्थान पर विकल्प से सकार होता है।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से विसर्ग के स्थान पर सकार होता है। सूत्र में दो पद है। इडायाः षष्ठ्यन्तपद और वा अव्ययपद है। इस सूत्र में **छन्दसि वाऽप्रेडितयोः**

सूत्र से छन्दसि पद, **सोऽपदादौ** से सः प्रथमान्तपद, **तयोर्य्वावचि संहितायाम्** सूत्र से संहितायाम् सप्तम्यन्त पद, **षष्ठ्याः पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषेषु** पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषेषु सप्तम्यन्त पद की अनुवृत्ति हुई। विसर्जनीय की भी अनुवृत्ति हुई और उसका अर्थ विसर्ग है। छन्दसि अर्थात वेद विषय में। संहिता शब्द का अर्थ सन्धि है। अतरू सूत्रार्थ होता है– वेद में संहिता के विषय में षष्ठ्यन्तपद इडाशब्द के विसर्ग के स्थान पर सकार विकल्प से होता है यदि पर में पति, पुत्र, पृष्ठ, पार, पद, पयस् पोष में से कोई हो तो।

उदाहरण– इळायास्पुत्रः, इळायाः पुत्रः, इळायास्पदे, इळायाः पदे।

सूत्रार्थसमन्वय– इढायाः पुत्रः, इढायाः पदे में पुत्रशब्द और पदशब्द है, इसलिए प्रकृतसूत्र से षष्ठ्यन्तपद इढाशब्द के विसर्ग के स्थान पर विकल्प से सकार होता है। इसी प्रकार सकारपक्ष में इळायास्पुत्रः, इळायास्पदे में और सकाराभावपक्ष में इळायाः पुत्रः, इळायाः पदे रूप होते है।

वार्तिक– निसस्तपतावनासेवने।

वार्तिकार्थ– निस् के सकार के स्थान पर मूर्धन्य आदेश हो।

वार्तिकव्यख्या– निसः षष्ठ्यन्तपद, तपतौ सप्तम्यन्तपद, अनासेवने सप्तम्यन्तपद। तपति से श्तिप धातु का निर्देश है। आसेवनं नाम पुनः पुनः करने का है। न आसेवनम् अनासेवनम् तस्मिन् इति अनासेवने, पुनः पुनः नहीं करने के अर्थ में। इस प्रकार पुनः पुनः अकरण अर्थ में निस् के सकार के स्थान पर मूर्धन्यादेश होता है यदि पर में तप्-धातु हो तो।

उदाहरण– निष्टप्तं रक्षो निष्टप्ता अरातयः।

वार्तिकार्थसमन्वय– निष्टप्तम् में निस् से पर में तप् धातु का क्तान्त रूप है। निस् के सकार के स्थान पर प्रकृतवार्तिक से मूर्धन्यादेश होकर **ष्टुना ष्टुः** से तकार के टकार के स्थान पर निष्टप्तम् रूप होता है।

विशेष– वार्तिक में अनासेवने के पाठ होने से पुनः पुनः करण अर्थ में निस् के सकार के स्थान पर मूर्धन्यादेश नहीं होता है। जैसे निस्तपति (पुनः पुनः तपति) में निस् के स ke स्थान पर मूर्धन्यादेश नहीं हुआ।

24.17 सनोतेरनः॥ (8.3.108)

सूत्रार्थः– अनकारान्त सन् धातु के सकार के स्थान पर मूर्धन्यादेश हो।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से सकार होता है। सूत्र में दो पद है। सनोतेः षष्ठ्यन्त पद और अनः भी षष्ठी में। अविद्यमानो नकारो यस्य स अन्, तस्य अनः। यहाँ सनोतेः इति श्तिप से धातुनिर्देश है। इस सूत्र में **पूर्वपदात्** सूत्र से पूर्वपदात्,

टिप्पणी

स्तुतस्तोमयोश्छन्दसि सूत्र से छन्दसि, **सहेः साडः सः से** सः षष्ठ्यन्तपद, इण्कोः से इण्कोः, तयोर्य्वावचि संहितायाम् से संहितायाम् पदों की अनुवृत्ति हुई। **नुम्विसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि** और **अपदान्तस्य मूर्धन्यः** सूत्रों की भी अनुवृत्ति होती है। अनः सनोतेः का विशेषण है, तदन्तविधि से अन्नन्त के स्थान पर सनोतेः इति होता है। अतरू सूत्रार्थ हुआ- वेद में संहिता के विषय में पूर्वपद से उत्तर इण् और कवर्ग के रहते र अन्नन्त वाली सनोतेः धातु के सकार के स्थान पर मूर्धन्यआदेश होता है, नुम्-विसर्जनीय-शर् के व्यवधान होने पर भी।

उदाहरण- गोषा इन्द्रो नृषा असि (ऋ.9.2.10)।

सूत्रार्थसमन्वय- गाः सनोतीति गोषाः। यहाँ गोकर्मक सन् धातु में **जनसनखनक्रमगमो विट्** से विट्प्रत्यय होकर, विट्प्रत्यय का सर्वाहरी लोप होकर सन् के नकार के स्थान पर **विड्वनोरनुनासिकस्यात्** से आकार होने पर गो सा इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से इण (गकारोत्तर ओकार से) परक अन्नन्त के स्थान पर सन् धातु से सकार के स्थान पर मूर्धन्यादेश होकर गोषा रूप बना। इस प्रकार नरं सनोति इस विग्रह में नृपूर्वक सन् धातु से पूर्ववद् विट्प्रत्यय और उसका सर्वहारी लोप होकर नकार के स्थान पर आकार होने पर नृ सा इस स्थिति में प्रकृतसूत्र से इण के ऋकार से उत्तर अन्नन्त वाले सनोति के स के स्थान पर मूर्धन्यादेश होकर नृषा रूप सिद्ध होता है।

विशेष- इस सूत्र में अनः से अनकारान्त सन् धातु गृहीत है। गोसनिः में स के स्थान पर ष नहीं हुआ। इसमें गां सनोति विग्रह होने पर गोपूर्वक सन् धातु से वेद विषय में **वनसनरक्षिमथाम्** से इन्प्रत्यय होकर (सन् इन्) गो सनि इस स्थिति में नान्त सन् के नान्त होने से प्रकृतसूत्र से यहाँ स के स्थान पर मूर्धन्यादेश नहीं हुआ।

24.18 छन्दस्यृदवग्रहात्॥ (8.4.26)

सूत्रार्थः-ऋकारान्तादवग्रहात्परस्य नस्य णः।

सूत्रव्याख्या– ये विधिसूत्र है। इस सूत्र से नकार के स्थान पर णकार होता है। सूत्र में दो पद है। छन्दसि सप्तम्येकवचनान्तपद और अवग्रहात् पञ्चम्येकवचनान्तपद है। छन्दसि का अर्थ वेद में है। ऋदवग्रहाद् इत्यस्य ऋच्च असौ अवग्रहश्च ऋदवग्रहः, तस्माद् इत्यर्थः। अवच्छिद्य विच्छिद्य पठ्यते इति अवग्रहः। यहाँ अवग्रह का अर्थ पदपाठ काल में पद को अलग-अलग किया जाने से है। इस प्रकार से संहितापाठ में विच्छेद करके पढ़ने की योग्यता होती है और पदपाठ में विच्छेद करके पढ़ने की योग्यता नहीं होती है। इस सूत्र में **रषाभ्यां नो णः** से नो और णः दो पद, **तयोर्य्वावचि संहितायाम्** से संहितायाम् पद, **पूर्वपदात् संज्ञायामगः** से पूर्वपदात् इन पदों की अनुवृत्ति हुई। **अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि** सम्पूर्ण सूत्र की भी यहाँ अनुवृत्ति हुई। अतरू सूत्रार्थ होता है– वेद में संहिता के विषय में अवग्रहविषय-ऋकारान्तपूर्वपद से उत्तर नकार के स्थान पर णः होता है अट्-कु-पु-आङ्-नुम् इनका व्यवधान होने पर भी।

उदाहरण- नृमणाः, पितृयाणम्।

सूत्रार्थसमन्वय- नृषु मनो यस्य इति विग्रहे नृमणाः इति। यहाँ संहितापाठ में पूर्वपद नृ ऋकारान्त है और उसमें विच्छेद करके पठनयोग्यता भी है। उस अवग्रह ऋकारान्त से परे के नकार के स्थान पर पवर्ग के व्यवधान होने पर भी प्रकृतसूत्र से णकार होता है। इसी प्रकार पितृणां यानम् विग्रह होकर पितृयाणम् भी है। यहाँ संहितापाठ में पूर्वपद पितृ ऋकारान्त है और उसकी विच्छेद करके पठनयोग्यता भी है, अतरू उस अवग्रह ऋकारान्तपद के परे नकार के स्थान पर अट्प्रत्याहारस्थवर्ण के व्यवधान होने पर भी प्रकृतसूत्र से णकार होता है नृऽमनाः पदपाठ में विच्छेद करके पठनयोग्यता नहीं है अतः ऋकारान्त नृ-से परे नकार के स्थान पर णकार नहीं हुआ। इसी प्रकार पितृऽयानम् में भी पूर्ववत् विच्छेद करके पठनयोग्यता नहीं है अतः ऋकारान्त पितृ-पद के बाद के नकार के स्थान पर णकार नहीं हुआ।

पाठगत प्रश्न-24.2

10. वेद में रु के पूर्व आत् के स्थान पर नित्य अनुनासिक किस सूत्र से होता है?
11. अप्राग्रेडितयोः का विग्रह कीजिए।
12. प्रदिवो अपस्कः यहाँ किस सूत्र से विसर्ग के स्थान पर सकार हुआ?
13. अनदितेः में कौन सी विभक्ति है?
14. पञ्चम्यान्तपद में विसर्ग के स्थान पर पकार और तवर्ग के परे रहते सकार किस सूत्र से होता है?
15. पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषेषु का विग्रह वाक्य क्या है?
16. इडायाः वा से किस विसर्ग के स्थान पर सकार होता है?
17. वेद में अन्नन्तपद सनोति के सकार के स्थान पर मूर्धन्यादेश विधायक सूत्र क्या है?
18. वेद में ऋकारान्त अवग्रह से परे नकार के स्थान पर णविधायक सूत्र क्या है?

पाठसार

इस पाठ में अष्टाध्यायी के अष्टमाध्याय के द्वितीयपाद और तृतीयपाद में विद्यमान विशेषसूत्रों की व्याख्या विहित है। प्लुतस्वर, विसर्ग के स्थान पर सत्वविधान, नकार के स्थान पर णकारविधान, स को षत्वविधान आदि कुछ मुख्य विषय यहाँ प्रस्तुत है। प्लुतस्वर कैसे होता है इस विषय में ये यज्ञकर्मणि, अग्नीत्प्रेषणे परस्य च, विभाषा पृष्टप्रतिवचने हेः,

टिप्पणी

आम्रेडितं भर्त्सने, अङ्गयुक्तं तिङाकाङ्क्षम्, पूर्वं तु भाषायाम्, अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः, उपरिस्विदासीदिति च, अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः इन सूत्रों के माध्यम से बताया है। विसर्ग के स्थान पर कैसे सत्वविधान होता है? इस विषय में छन्दसि वाऽप्राम्रेडितयोः, कः करत्करतिकृधिकृतेष्वनदितेः, पातौ च बहुलम्, षष्ठ्याः पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषेषु, इडाया वा इन सूत्रों द्वारा बताया है। सनोतेरनः सूत्र से और निसस्तपतावनासेवने वार्तिक से षत्वविधान कहा है। कैसे रकार के स्थान पर विकल्प से रुत्व होता है, इसको दीर्घादटि समानपादे सूत्र से बताया है। आतोऽटि नित्यम् सूत्र से अट के परे रहते रु से पूर्व आत् के स्थान पर कैसे नित्य अनुनासिक स्वर होता है, वो भी बताया है और कैसे छन्दस्यृदवग्रहात् सूत्र नकार के स्थान पर णत्व करता है इन सब विषयों का इस पाठ में आलोचन किया है।

पाठान्त प्रश्न

1. अग्नीत्प्रषणे परस्य च सूत्र की व्याख्या कीजिए।
2. विभाषा पृष्टप्रतिवचने हेः सूत्र की व्याख्या कीजिए।
3. आम्रेडितं भर्त्सने सूत्र की व्याख्या कीजिए।
4. दीर्घादटि समानपदे सूत्र की व्याख्या कीजिए।
5. पातौ च बहुलम् सूत्र की व्याख्या कीजिए।
6. निसस्तपतावनासेवने वार्तिक की व्याख्या कीजिए।
7. सनोतेरनः सूत्र के व्याख्या कीजिए।

पाठगतप्रश्नानाम् उत्तराणि

24.1

1. यज्ञकर्मणि
2. उपदेशवाक्य या निर्देशवाक्य में।
3. पृष्टप्रतिवचन में।
4. भर्त्सना अर्थ में।
5. अङ्गशब्द से युक्त तिङन्त।
6. लौकिकसंस्कृत में।

7. सत्कार इत्यर्थः।

8. अन्त्य का ग्रहण।

9. दीर्घादटि समानपदे इति।

24.2

10. आतोऽटि नित्यम् से।

11. प्रश्च आम्रेडितञ्च प्राम्रेडिते, नप्राम्रेडिते अप्राम्रेडिते, तयोः अप्राम्रेडितयोः इति।

12. कः करत्करतिकृधिकृतेश्वनदितेः इत्यनेन।

13. षष्ठी विभक्ति।

14. पातौ च बहुलम्।

15. पतिश्च पुत्रश्च पृष्ठश्च पारश्च पदञ्च पयः च पोषश्च इति पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषाः, तेषु पतिपुत्रपृष्ठपारपदपयस्पोषेषु इति

16. षष्ठ्याः।

17. सनोतेरनः।

18. छन्दस्यृदवग्रहात् इति।

--चौबिसवां पाठ समाप्त--

टिप्पणी

इस पुस्तक में स्थित सूत्रों की सूची

(अकारादिक्रम से)

पाठ में स्थित - सूत्र - अष्टाध्ययीक्रम

(24.2) अग्नीत्प्रेषणे परस्य च (8.2.92)

(21.11) अङितश्च।। (6.4.103)

(20.13) अङ्ग इत्यादौ च।। (6.1.119)

(24.5) अङ्गयुक्तं तिङाकाङ्क्षम्।। (8.2.96)

(24.9) अनन्त्यस्यापि0। (8.2.105)

(24.7) अनुदात्तं प्रश्नान्ताभि0। (8.2.100)

(23.3) अनो नुट्।। (8.2.16)

(17.14) अन्येभ्योऽपि दृश्यते।। (3.3.130)

(21.2) अन्येषामपि दृश्यते।। (6.3.137)

(20.3) अमु च छन्दसि।। (5.4.12)

(23.6) अम्ररूधरवरित्युभयथा0।। (8.2.70)

(16.4) अयस्मयादीनि च्छन्दसि।। (1.4.20)

(20.14) अवपथासि च।। (6.1.121)

(17.9) अवयाः श्वेतवाः पुरोडाश्च।। (8.2.67)

(17.8) अवे यजः।। (3.2.72)

(23.14) अश्विमानण्

(22.1) आज्जसेरसुक्।। (7.1.50)

(17.19) आत ऐ।। (3.4.95)

(17.11) आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च।। (3.2.74)

(24.11) आतोऽटि नित्यम्।। (8.3.3)

(24.4) आम्रेडितं भर्त्सने।। (8.2.95)

(20.22) इकः सुञि।। (6.3.134)

(24.16) इडाया वा।। (8.3.54)

(17.16) इतश्च लोपः परस्मैपदेषु।। (3.4.97)

(21.21) इदन्तो मसि।। (7.1.46)

(22.5) ई च द्विवचने।। (7.1.77)

(18.8) ईश्वरे तोसुन्कसुनौ। (3.4.13)

(24.8) उपरिस्विदासीदिति च।। (8.2.102)

(19.12) उपसर्गाच्छन्दसि0।। (5.1.118)

(18.1) उपसंवादाशङ्कयोश्च।। (3.4.8)

(20.6) ऋतश्छन्दसि।। (5.4.158)

(19.3) ओजसोऽहनि यत्खौ।।

टिप्पणी

(4.4.126)

(23.8) ओमभ्यादाने।। (8.2.87)

(20.21) ओषधेश्च विभक्ताव0।।

(6.3.132)

(24.13) क:करत्करतिकृधिकृ0।।

(8.3.50)

(18.14)

कद्रुकमण्डल्वोश्छन्दसि।।

(4.1.71)

(16.15) कृमृदुरुहिभ्यश्छन्दसि।।

(3.1.59)

(21.16) क्त्वापि च्छन्दसि।।

(7.1.38)

(21.22) क्त्वो यक्।। (7.1.47)

(19.5) ख च।। (4.4.132)

(20.9) खिदेश्छन्दसि।। (6.1.52)

(22.3) गो: पादान्ते।। (7.1.57)

(22.8) ग्रसित-स्कभित0।।

(7.2.34)

(16.9) चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि।।

(2.3.63)

(17.13) छन्दसि गत्यर्थेभ्य:।।

(3.3.126)

(23.9) छन्दसि घस्।। (5.1.106)

(20.5) छन्दसि च।। (5.4.142)

(20.19) छन्दसि च।।

(6.3.126)

(18.15) छन्दसि ठञ्।।

(4.3.19)

(17.1) छन्दसि निष्टर्क्यदेवहूय0।।

(4.4.130)

(16.5) छन्दसि परेऽपि।। (1.4.81)

(16.1) छन्दसि

पुनर्वस्वोरेकवचनम्।। (1.2.61)

(17.2) छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्।।

(3.2.27)

(24.12) छन्दसि

वाऽप्राम्रेडितयो:।। (8.3.49)

(18.2) छन्दसि शायजपि।।

(3.1.84)

(17.3) छन्दसि सह:।। (3.2.63)

(23.2) छन्दसीर:।। (8.2.15)

(21.6) छन्दस्यपि दृश्यते।।

(6.4.73)

(22.4) छन्दस्यपि दृश्यते।।

(7.1.76)

(18.4) छन्दस्युभयथा।। (3.4.117)

(21.3) छन्दस्युभयथा।। (6.4.5)

(21.8) छन्दस्युभयथा।। (6.4.86)

(24.18) छन्दस्यृदवग्रहात्।।

(8.4.26)

(17.6) जनसनखनक्रमगमो विट्।।

(3.2.87)

(21.5) जनिता मन्त्रे।। (6.4.53)

(18.2) ढश्छन्दसि।। (4.4.106)

(21.2) तस्य तात्।। (7.1.44)

(20.7) तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य।।

(6.1.7)

(18.5) तुमर्थे से सेनसे0।। (3.4.9)

(16.7) तृतीया च होश्छन्दसि।।

टिप्पणी

(3.1.123)

(20.1) थट् च छन्दसि।। (5.2.50)

(22.15) दाधर्तिदर्धर्तिद0।।

(7.4.42)

(18.13) दीर्घजिह्वी च छन्दसि।। (4.1.59)

(24.1) दीर्घादटि समानपादे।। (8.3.9)

(22.12) दुरस्युद्र विणस्यु0।। (7.4.36)

(18.25) दूतस्य भागकर्मणी।। (4.4.120)

(18.6) दृशे विख्ये च।। (3.4.11)

(16.8) द्वितीया ब्राह्मणे।। (2.3.60)

(18.18) द्व्यचश्छन्दसि।। (4.3.150)

(20.23) द्व्यचोऽतस्तिङ:।। (6.3.135)

(19.8) नक्षत्राद्ध:।। (4.4.141)

(23.5) नसत्तनिषत्तानुत्त0।। (8.2.61)

(23.4) नाद्धस्य।। (8.2.17)

(23.12) नित्यं छन्दसि (4.1.46)

(18.11) नित्यं छन्दसि।। (4.1.46)

(22.11) नित्यं छन्दसि।। (7.4.8)

(21.1) निपातस्य च।। (6.3.136)

(21.15) नेतराच्छन्दसि।। (2.3.3)

(18.19) नोत्वद्वर्ध्रबिल्वात्।। (4.3.151)

(24.14) पातौ च बहुलम्।। (8.3.52)

(23.16) पाथोनदीभ्यां ड्यण् (4.4111)

(18.22) पाथोनदीभ्यां ड्यण्। (4.4.111)

(20.17) पितरामातरा च छन्दसि।। (6.3.33)

(24.6) पूर्वं तु भाषायाम्।। (8.2.98)

(23.1) प्रसमुपोद: पादपूरणे।। (8.1.6)

(18.24) बर्हिषि दत्तम्।। (4.4.119)

(20.4) बहुप्रजाश्छन्दसि च।। (5.4.123)

(16.11) बहुलं छन्दसि।। (2.4.39)

(16.13) बहुलं छन्दसि।। (2.4.73)

(16.14) बहुलं छन्छसि।। (2.4.76)

(17.12) बहुलं छन्दसि।। (3.2.88)

(20.2) बहुलं छन्दसि।। (5.2.122)

(20.8) बहुलं छन्दसि।। (6.1.34)

(21.14) बहुलं छन्दसि।।

(7.1.26)

(22.6) बहुलं छन्दसि।। (7.1.103)

(21.13) बहुलं छन्दसि।।

(7.1.8)

(22.1) बहुलं छन्दसि।। (7.3.97)

(22.17) बहुलं छन्दसि।।

(7.4.78)

(21.7) बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि।।

(6.4.75)

(18.21) भवे छन्दसि।।

(4.4.110)

(23.7) भुव श्च महाव्याहृते:।।

(8.2.71)

(18.12) भुव श्च।। (4.1.47)

(19.1) मत्वर्थे मासतन्वो:।।

(4.4.128)

(19.2) मधोर्ञ च।। (4.4.129)

(17.7) मन्त्रे श्वेतवहोक्थ0।।

(3.2.71)

(20.2) मन्त्रे सोमा श्वेन्द्रिय0।।)

(6.3.131)

(21.12) मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मन:।।

(6.4.141)

(23.1) मये च (4.4.138)

(23.13) मायायामण्

(4.4.124)

(22.9) मीनातेर्निगमे।। (7.3.81)

(21.19) यजध्वैनमिति च।।

(7.1.43)

(16.1) रजे श्च करणे।। (2.3.63)

(7.1.10)

(18.1) रात्रे श्चाजसौ।। (4.1.31)

(18.26)

रेवतीजगतीहविष्याभ्य:0।।

(4.4.122)

(17.15) लिङर्थे लेट्।। (3.4.7)

(17.17) लेटोऽडाटौ।। (3.4.64)

(21.18) लोपस्त आत्मनेपदेषु।।

(7.1.41)

(18.16) वसन्ताच्च।। (4.3.20)

(19.7) वसो: समूहे च।। (4.4.140)

(17.4) वह श्च।। (3.2.64)

(21.1) वा छन्दसि।। (3.4.88)

(20.11) वा छन्दसि।।

(6.1.106)

(21.4) वा षपूर्वस्य निगमे।।

(6.4.9)

(23.11)

विचार्यमाणानाम्।। (8.3.97)

(17.1) विजुपे छन्दसि।। (3.2.73)

(22.13) विभाषा छन्दसि।।

(7.4.44)

(24.3) विभाषा पृष्टप्रतिवचने हे:।।

(8.2.93)

(16.2) विशाखयो श्च।। (1.2.62)

(19.4) वेशोयशआदेर्भगाद्यल्।।

(4.4.131)

(18.3) व्यत्ययो बहुलम्।। (3.1.85)

(16.6) व्यवहिता श्च।। (1.4.82)

(24.1) ये यज्ञकर्मणि।। (8.2.88)

(18.7) शकि णमुल्कमुलौ।। (3.4.12)

(20.1) शीर्षश्छन्दसि।। (6.1.60)

(20.12) शेश्छन्दसि बहुलम्।। (6.1.70)

(22.2) श्रीग्रामण्योश्छन्दसि।। (7.1.56)

(21.9) श्रुशृणुपृकृवृभ्यश्छन्दसि।। (6.4.102)

(16.3) षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा।। (1.4.9)

(24.15) षष्ठ्याः पतिपुत्रपृष्ठ0।। (8.3.53)

(17.18) स उत्तमस्य।। (3.4.68)

(18.23) सगर्भसयूथसनुताद्यन्।। (4.4.114)

(20.18) सध मादस्थयोश्छन्दसि।। (6.3.96)

(24.17) सनोतेरनः।। (8.3.108)

(19.11) संपरिपूर्वात् ख च।। (5.1.82)

(19.1) सप्तनोऽञ्छन्दसि।। (4.1.61)

(23.15) समुद्राभ्राद्धः (4.4.118)

(19.9) सर्वदेवात्तातिल्।। (4.4.142)

(22.16) ससूवेति निगमे।। (7.4.74)

(17.2) सिब्बहुलं लेटि।। (3.1.34)

(22.14) सुधितवसुधित0।। (7.4.45)

(21.17) सुपां सुलुक्पूर्वसव0।। (7.1.39)

(18.9) सृपितृदोः कसुन्।। (3.1.17)

(19.6) सोममर्हति यः।। (4.4.137)

(20.15) स्यश्छन्दसि बहुलम्।। (6.1.133)

(17.5) हव्येऽनन्तः पादम्।। (3.2.66)

(16.12) हेमन्तशिशिरावहोरात्रे0।। (2.4.28)

(18.17) हेमन्ताच्च।। (4.3.21)

(20.16) ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे0।। (6.1.151)

(22.7) ह्रु ह्वरेश्छन्दसि।। (7.2.31)

राष्ट्रिय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

माध्यमिक कक्षा का पाठ्यक्रम

वेदाध्ययन (245)

औचित्य

भारतीय दर्शन, संस्कृत साहित्य और प्रादेशिक भाषीय साहित्य का सम्पूर्ण वाङ्मय वृक्ष तुल्य है। उसका विस्तार महान है। यह बद्ध मूल वृक्ष है इसलिए महान है, सनातन है, चिरञ्जीवी भी है। इस वृक्ष का मूल अपरिवर्तनीय है। परन्तु नूतन पल्लव नूतन पुष्प और नूतन फल नित्य उत्पन्न होते है। उसका मूल क्या है यह स्वाभाविक जिज्ञासा देश विदेश के मनुष्य करते है। जो कोई भी वहां प्रयत्न करता है वह सफलता को प्राप्त होता है। वह चिर काल के लिए कृतार्थ होता है, और कृतकृत्य होता है। उसका मूल क्या है। उसका बोद्ध किसको होता है, उसकी शाखा क्या है, और पुष्प फल क्या है। उसकी छाया क्या है। उसकी सुगन्धि कैसी है। उपभोक्ता कौन है। वे कितने प्रकार के हैं इस प्रकार वैचित्र्य इन विषयों का विषय है। परन्तु उस वृक्ष का मूल क्या है। इस सम्पूर्ण विषय का तो उपन्यास सम्भव नही है। वैसे भी छात्र यदि इससे कुछ भी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, तो हमारा प्रयत्न सफल होगा ऐसा हम मानते हैं।

भारतीय समाज का मनोरञ्जन जीवन दैनन्दिन व्यवहार, धर्माचरण, आध्यात्मिकता, इन सम्पूर्ण का मूल गौरवशाली वेद ही हैं। भारतीय चिन्तन में वैदिक वाङ्मय का वैशिष्ट्य सभी को अच्छी प्रकार से ज्ञात ही हैं। वैदिक वाङ्मय की विभूति वास्तविक है। यह वाङ्मय प्राचीन, सम्पूर्ण पृथिवी व्यापि है, इसका परिमाण विशाल है, इसका वैभव बहुत ही अधिक है तथा इसका सौन्दर्य गुण बहुत ही अतुलनीय है। यह वाङ्मय विशाल मौलिक और पुरातन है। इसलिए ही वहां पर हमारी इच्छा प्रवृत्ति, जिज्ञासा और श्रद्धा है। केवल इतना ही नहीं। और भी अन्य निमित्त वैदिक वाङ्मय का अध्ययन विद्यार्थियो के लिए विशिष्ट अभिरुचि को उत्पन्न करता है। वेद के सही ज्ञान के अभाव में अनेक धर्मसम्प्रदाय, मत और आचार प्रवृत हुए हैं जिनका प्रतिपाद्य विषय वेद विरुद्ध हैं। समाज में धर्मविषय में अत्यन्त अन्ध श्रद्धालु हैं। अन्धश्रद्धा के निवारण के लिए भी वेद का अध्ययन नितान्त आवश्यक है। विज्ञान का अध्ययन करने से उदर की पूर्तिमात्रा हो सकती है। अथवा जीवनयात्रा के निर्वहन के लिए। परन्तु जीव कहाँ से आता है, कहाँ जाता है, उसके सुखदु:खादि के कारण क्या है? यह लोक है तथा परलोक है या नहीं। पुनर्जन्म है अथवा नहीं। यदि है तो मृत्यु होने पर कुछ कर्तव्य हैं अथवा नहीं इत्यादि सम्पूर्ण विषय विज्ञान के अधिन नहीं है। अपितु ये धर्म अधीन है। उन सभी धर्मो का मूल वेद है। इसलिए जीविका के लिए विज्ञान, सुख दु:ख के निर्णय के लिए और इहपरलोक यात्रा के लिए वेद अच्छा विभाग है। इसलिए वेदाध्ययन सबसे प्रमुख और सबसे सरल है। अत: उसका अध्ययन करना चाहिए।

अधिकारी

इस पाठ्यविषय को सम्पूर्ण रूप से संस्कृत भाषा से हिन्दी में अनुदित है। इसलिए इस पाठ का अधिकारी कौन है यह प्रश्न उत्पन्न होता है।

यहाँ पर वह शिक्षार्थी अधिकारी है जिसे-

- काव्य, व्याकरण कोष और वेद आदि विविध विषयों का सामान्य ज्ञान है।
- सरल संस्कृत, संस्कृत साहित्य का सरल गद्यांश और पद्यांश को पढ़ और समझ सकता है।
- सरल संस्कृत और हिन्दी भाषा को समझ सकता है।
- पाणिनीय व्याकरण को समझ सकता है।
- सरल संस्कृत भाषा और हिन्दी भाषा में लिख कर भाव प्रकट कर सकता है।

प्रयोजन (सामान्य)

माध्यमिक स्तर पर वेदाध्ययन के पाठ्य योजना के कुछ उद्देश्य यहाँ दिए गये हैं।

- भारतीय जीवन का सर्वस्व वेद है। उसका ज्ञान हो।
- वेद से निकले हुए दर्शनों के वैज्ञानिक तत्त्व को और कला साहित्य आदि का ज्ञान हो।
- मनुष्य में वेदाध्ययन से पुण्य, सरल स्वभाव और परोपकार की भावना का विकास होगा इसलिए वेदाध्ययन कैसे करना चाहिए यह जानना आवश्यक है।
- वेद के बिना नास्तिक दर्शन अपूर्ण है। उनकी पूर्णता के लिए वेद अध्ययन करना चाहिए।
- वेद जिज्ञासुओं की जिज्ञासाओं का समाधान करने के में समर्थ हो सकें।
- संस्कृत और संस्कृति रक्षा के लिए समर्थ प्रयत्न करने वाले श्रद्धाशील छात्र बन सकें।
- अत्यधिक प्राचीन भारतीय ज्ञान, सम्पदा, वैज्ञानिकता, सभी मनुष्यों के उपकारीता और महिमा का गर्व से जगत् में प्रचार-प्रसार कर सकें।
- वेद ज्ञान को बढ़ाना होगा जिससे वेद के सरल अंशो को पढ़कर छात्र उन अंशो के अर्शों को जानेंगे। वे अपने मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति करने में समर्थ होंगे।
- वेदाध्ययन करके छात्र महाविद्यालय स्तर और विश्वविद्यालय स्तर पर प्रवर्तमान पाठ्यक्रम अध्ययन के लिए अवसर प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

प्रयोजन (विशिष्ट)

वेदाध्ययन करने के लिए प्रवेश का सामर्थ्य

- सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय के प्रारूप जानकर उस उस अश को पढ़ सकते है।
- वैदिक सूक्तों को अध्ययन करने में समर्थ हो।
- इस विषय को पढ़कर वेदों में प्रवेश करना चाहिए।

- वेदों के गौरव को जानना चाहिए।
- पढ़ी हुई सामग्री के आश्रित प्रश्नों के उत्तर देने में सक्षम हो सकें।
- सूक्त व्याख्यान में सामर्थ्य को प्राप्त कर सकें
- वैदिक भाषा में ज्ञान को प्राप्त करके अन्य सूक्तों के व्याख्यान और अध्ययन करने में छात्र प्रवृत हो।
- वैदिक व्याकरण के ज्ञान से वैदिक भाषा को जानेंगे। उन सूक्तों की व्याख्या करने में समर्थ होंगे।
- सूक्तों के तात्पर्य को जानेंगे। वैदिक चिन्तन के द्वारा व्याख्यान करने में समर्थ होंगे।
- सूक्त प्रयोग के और व्याकरण प्रयोग के सामर्थ्य को समझ सकेंगे।
- सूक्तों के अध्ययन से आनन्द प्राप्त होता है। सूक्त में कहे गए विषयों को अपने जीवन में प्रयोग कर सकेंगे।
- वैदिक व्याकरण ज्ञान से वैदिक भाषा अध्ययन करने में समर्थ होकर व्याकरण का प्रयोग कर सकेंगे।

पाठ्य सामग्री

पाठ्यक्रम के साथ निम्नलिखित सामग्री समायोजित होगी-

- दो मुद्रित पुस्तकें।
- एक शिक्षक अंकित मूल्यांकन पत्र।
- वेदाध्ययन का शिक्षण प्रायोगिक रूप से होगा परन्तु प्रायोगिक परीक्षा नहीं होगी।
- पाठ निर्माण में, संपर्क कक्षाओं में और अध्यापनकाल में छात्रों में जीवन कौशलों का अच्छी प्रकार से विकास हो ऐसा ध्यान करना होगा। इससे उनमें अपने आप युक्ति समन्वित चिन्तन शक्ति का विकास होगा।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में प्रवेशोत्तर यह पाठ्यक्रम विद्यार्थी एक वर्ष से अधिकाधिक पांच वर्षों में पूर्ण कर सकता है।

अङ्क मूल्यांकान विधि और परीक्षा योजना

- प्रश्न पत्र (100) सौ अङ्क का है। परीक्षाकाल तीन घंटे का है। इस पत्र का लिखित स्वरूप ही है (Theory)। प्रायोगिकरूप (Practical) कुछ भी नहीं है। क्रम (Formative) और समुच्चित (Summative) दो प्रकार से मूल्यांकन होगा।
- क्रमिक मूल्याकन - बीस अङ्क (20) शिक्षक अंकित मूल्यांकन (TMA) कार्य का एक पत्र होगा। इसका मूल्यांकन अध्ययन केन्द्र में (Study Centre) होगा। इस कार्य के अंङ्क पत्रिका (Marks sheet) में पृथक रूप से उल्लिखित होंगे।

- समुच्चित मूल्यांकन– वर्ष में दो बार (मार्च और अक्टूबर मास में) सार्वजनिक परीक्षा आयोजित होगी। इस परीक्षा में समुच्चित मूल्यांकन होगा।
- प्रश्नपत्र में ज्ञान को (Knowledge), अवगमन (Understanding) अभिव्यक्ति को (Application skill) और अवलम्ब युक्त अनुपात से प्रश्नों का समावेश हो।
- परीक्षा में अतिलघुत्तरात्मक- लघुत्तरात्मक-निबन्धात्मक-प्रश्नों का भी समावेश होगा।
- सूत्रार्थ सूत्र की व्याख्या और रूपसाधन ये तीन मुख्य विषय हों। अन्य कुछ प्रसक्त अनुप्रसक्त विषयों को भी जानना चाहिए।
- उत्तीर्णता के लिए (condition) - प्रतिशत तैतीस (33%) अङ्क उत्तीर्णता के लिए उनका (मानदण्ड) है।
- संस्थान की परीक्षा में उत्तर लेखन भाषा – संस्कृत या हिन्दी हो।

अध्ययन योजना

- निर्देशभाषा (Medium of instruction) - संस्कृत।
- स्वाध्याय के लिए समय अवधि (Self&study hours) 240 घंटे
- कम से कम तीस (30) सम्पर्क कक्षा (Personal Contact Programme & PCP) अध्ययन केन्द्र में होगी।
- भारांश - सैद्धान्तिक (Theory) सौ प्रतिशत है। प्रायोगिक (Practical) – नहीं है।

अङ्कविभाजन

आगे की सारणी देखिए

पाठ्यविषय का उद्देश्य (पाठ्यविषयबिन्दु)

माध्यमिक कक्षा के वेदाध्ययन की पुस्तक में निम्न विषय समाहित हैं। विवरण नीचे दिया गया है।-

सम्पूर्ण पाठ्यविषय को तीन भाग में लिखा है। प्रतिभाग में कितने पाठ, स्वाध्याय के लिए कितने घंटे, सैद्धान्तिक परीक्षा में कितने अंश, प्रायोगिक परीक्षा में कितने अंश, और प्रत्येक अध्याय के अङ्क विभाजन का विषय यहाँ दिए गए हैं।

अध्याय - 1 वैदिक साहित्य का इतिहास (पाठ 1-7)

अध्याय का औचित्य

जैसे मूल के बिना वृक्ष के नहीं होने पर चिंता कर सकते हैं, उसी प्रकार वेद के बिना भारतीय वाङ्मय की कल्पना नहीं कर सकते। इसलिए मूलभूत वेद के अध्ययन में प्रवृत्त पूर्व वेद का एक सही परिचय की

अत्यन्त आवश्यकता है। इस विभाग में वेद का सामान्य परिचय और विशेष परिचय करना चाहिए। वेद का आविर्भाव, पाठ के प्रकार इत्यादि विषय हो। वेद के भाष्यकार, वेदभाष्यपद्धति, वैदिकाख्यान, वेदविषय में दार्शनिकों का विमर्श, और वैदिक देवता ये विषय यहाँ पर दिए गए हैं।

अध्याय - 2 वैदिक सूक्तों का अध्ययन (पाठ 8-15)

अध्याय का औचित्य

वैदिक सूक्त भारतीय ज्ञान के उत्स स्वरूप है। यहाँ कुछ सूक्तों के अध्ययन के लिए सामग्री है। सूक्त का अध्ययन कैसे होता है, कौन-कौन से विषय वेदाध्ययनकाल में जानने चाहिए, सूक्तो का व्याकरण क्या है, सूक्त का तात्पर्य क्या है ये विषय यहाँ दिए जाते है।

अध्याय - 3 वैदिक प्रक्रिया (पाठ - 16-24)

अध्याय का औचित्य

व्याकरण ज्ञान के बिना वेदों का अर्थ स्पष्ट नहीं जाना जा सकता है। इसलिए इस विभाग में पाणिनीय व्याकरण का वैदिक भाग समाहित किया है। वहां पर भी कुछ मुख्य सूत्रों को दिया गया है। यहाँ सूत्र व्याख्या कैसे होता है, उससे वैदिक शब्दों की निष्पत्ति कैसे होती हैं ये विषय प्रमुख रूप से उपस्थापित करते है।

पाठ्यविषय का उद्देश्य (पाठ्यविषय बिन्दु)

माध्यमिक कक्षा की वेदाध्ययन पुस्तक में निम्न विषयों का अन्तर्भाव किया है -

क्र.सं.		मुख्य बिन्दु	स्वाध्याय का समय	भारांश (अङ्क)
1	**अध्याय-1**	**वैदिक साहित्य का इतिहास-**	**56**	**30**
	पाठ-1	वैदिक साहित्य का इतिहास- वेद विषय प्रवेश, वेदो का वैशिष्ट्य, महत्त्व, वैदिक वाङ्मय, उसकी विभूति, वेद शब्द का अर्थ, वेद लक्षण, वेद का पर्याय, वेद पौरुषेय अथवा अपौरुषेय।		
	पाठ-2	वैदिकसाहित्य का इतिहास- वेद आविर्भाव काल वेद पाठ प्रकार, मन्त्रों के ऋषि, छन्द, देवता विनियोग		
	पाठ-3	वैदिक साहित्य का इतिहास- वेदभाष्यकार		
	पाठ-4	वैदिक साहित्य का इतिहास- वेदभाष्यपद्धति		

	पाठ-5	वैदिक साहित्य का इतिहास- वैदिक आख्यान, दार्शनिकों के लिए वेद विमर्श		
	पाठ-6	वैदिक साहित्य का इतिहास- वैदिक यज्ञ, परिचय,		
	पाठ-7	वैदिक साहित्य का इतिहास- वैदिक देवता, परिचय, विभाजन, मत, आकार, इन्द्रादिस्वरूप		
2	**अध्याय-2**	**वैदिक सूक्तों का अध्ययन-**	**76**	**30**
	पाठ-8	वैदिक सूक्तों का अध्ययन- सूर्य सूक्त (ऋ.वे.1.115), संज्ञानमुक्त (ऋ.वे.10.191)		
	पाठ-9	वैदिक सूक्तों का अध्ययन- पूषन्-सूक्त (ऋ.वे.6.54), उषस्सूक्त (ऋ.वे.3.61)		
	पाठ-10	वैदिक सूक्तों का अध्ययन- वरुण सूक्त (ऋ.वे.1.25)		
	पाठ-11	वैदिक सूक्तों का अध्ययन- यमसूक्त (ऋ.वे.10.14)		
	पाठ-12	वैदिक सूक्तों का अध्ययन- शुनः शेपोख्यान (ऐ.ब्रा.7.3)-1)		
	पाठ-13	वैदिक सूक्तों का अध्ययन- शुनःशेप उपाख्यान (ऐ.ब्रा.7.3)-2		
	पाठ-14	वैदिक सूक्तों का अध्ययन- शुनःशेप उपाख्यान (ऐ.ब्रा.7.3)-3		
	पाठ-15	वैदिक सूक्तों का अध्ययन- विश्वामित्र नदी संवाद (ऋ.वे.3.33)		
3	**अध्याय-3**	**वैदिक प्रक्रिया**	**108**	**40**
	पाठ-16	वैदिक प्रक्रिया- अष्टाध्यायी का अध्याय 1-2		
	पाठ-17	वैदिक प्रक्रिया- अष्टाध्यायी का अध्याय 3		
	पाठ-18	वैदिक प्रक्रिया- अष्टाध्यायी का अध्याय 3-4		
	पाठ-19	वैदिक प्रक्रिया- अष्टाध्यायी का अध्याय 4		
	पाठ-20	वैदिक प्रक्रिया- अष्टाध्यायी का अध्याय 5-6		
	पाठ-21	वैदिक प्रक्रिया- अष्टाध्यायी का अध्याय 6-7		
	पाठ-22	वैदिक प्रक्रिया- अष्टाध्यायी का अध्याय 7		
	पाठ-23	वैदिक प्रक्रिया- अष्टाध्यायी का अध्याय 8		
	पाठ-24	वैदिक प्रक्रिया- अष्टाध्यायी का अध्याय 8		

प्रश्नपत्र का प्रारूप

(Question Paper Design)

विषय-वेदाध्ययन (245) (Veda Adhyayan) स्तर- माध्यमिक स्तर

परीक्षाकालावधि (Time)-तीन घंटे (3 hrs) पूर्णांङ्क (Full Marks)- 100

लक्ष्य के अनुसार अङ्क विभाजन

विषय	अङ्क	प्रतिशत
ज्ञान (Knowledge)	25	25%
अवबोध (Understanding)	45	45%
अनुप्रयोगकौशल (Application Skill)	30	30%
महायोग->	100	

प्रश्न प्रकार से अङ्कभार विभाजन

प्रश्नप्रकार	प्रश्नसंख्या	अङ्क	योग
दीर्घ उत्तरीयप्रश्न (LA)	5	6	30
लघूत्तरात्मकप्रश्न (SA)	10	4	40
लघूत्तरीयप्रश्न (VSA)	10	2	20
बहुविकल्पीयप्रश्न	10	1	10
महायोग->	35		100

पाठ्य विषय के विभागानुसार भारांश

विषय घटक	अङ्क	स्वाध्याय के लिए समय
1. वैदिक साहित्य का इतिहास	30	56
2. वैदिक सूक्तों का अध्ययन	30	76
3. वैदिक प्रक्रिया	40	108
महायोग ->	100	240

प्रश्नपत्र का काठिन्यस्तर

प्रश्नस्तर	अङ्क
कठिन (Difficult)	25
मध्यम (Medium)	50
सरल (Easy)	25

आदर्श प्रश्नपत्र

Sample Question Paper

इस प्रश्नपत्र में ..... प्रश्न है। ..... और मुद्रितपुट है।	Code No. इट संख्या 55/5/A/A

अनुक्रमांक 450155183001
Roll No .....

वेद अध्ययन

Veda Adhyayan

(245)

परीक्षा का दिन और दिनाङ्क .....

Day and date of Examination

.....

निरीक्षक के हस्ताक्षर

Signature of two Invigilators

1)

.....

2)

.....

सामान्य निर्देश

1. अनुक्रमाङ्क प्रश्नपत्र के प्रथम पृष्ठ पर निश्चित रूप से लिखिए।
2. निरीक्षण कीजिए कि प्रश्नपत्र की संख्या और प्रश्नों के प्रथम पृष्ठ के प्रारम्भ में प्रदत्त संख्या समान है। प्रश्नक्रम सही है अथवा नहीं।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का (क), (ख), (ग), (घ) इन विकल्प में युक्त उत्तर चुनकर उत्तरपत्र पर लिखना है।
4. सभी प्रश्नों के उत्तर निर्धारित समय में ही लिखें।
5. उत्तरपत्र में आत्मपरिचयात्मक लेखन अथवा निर्दिष्ट स्थान को छोड़कर अन्य जगह कोई भी अनुक्रमाङ्क लेखन न लिखे।
6. अपने उत्तरपत्र में प्रश्नपत्र की गूढ संख्या को निश्चित रूप से लिखना चाहिए।

वेदाध्ययन

(Veda Adhyayan)

(245)

परीक्षा समयावधि (Time) तीन घंटे (3 Hrs) पूर्णाङ्क (Full Marks) - 100

निर्देश-

1. इस प्रश्नपत्र में [A] भाग में 10, [B] भाग में 10, [C] भाग में 10, [D] 5 इस प्रकार 35 प्रश्न है।
2. प्रश्न के दक्षिण पार्श्व में संख्याओं में (अङ्क x प्रश्न=पूर्णाङ्क) इस प्रकार ही अङ्कों का निर्देश।
3. सभी प्रश्न अनिवार्य।

[A] निम्न प्रश्नों के युक्त विकल्प को चुनिए। 1x10=10

1) वेदो में प्राचीनतम ग्रन्थ क्या है।

(क) सामवेद (ख) यजुर्वेद (ग) अथर्ववेद (घ) ऋग्वेद

2) वेद: अपौरुषेय: यह किसका मत है।

(क) मीमांसकों का (ख) वैयाकरण का (ग) चार्वाक का (घ) आधुनिकपण्डित का

3) मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम् यह किसने कहा।

(क) यास्क से (ख) आपस्तम्ब से (ग) मनु के द्वारा (घ) सायण के द्वारा

4) ब्राह्मणसर्वस्वम् यह ग्रन्थ किस वेद से सम्बद्ध है।

(क) कृष्णयजुर्वेद से (ख) शुक्लयजुर्वेद से (ग) ऋग्वेद से (घ) सामवेद से

5) शुन:शेपोपाख्यान किस वेद में है।

(क) ऋग्वेद में (ख) सामवेद में (ग) यजुर्वेद में (घ) अथर्ववेद में

6) वरुणसूक्त के देवता कौन हैं।

(क) अग्नि (ख) यम (ग) उषा (घ) वरुण

7) विपाशा नदी के तट पर कौन आया है।

(क) विश्वामित्र (ख) वसिष्ठ (ग) अत्रि (घ) वामदेव

8) सूर्य सूक्त का ऋषि कौन है।

(क) अत्रि (ख) व्याडि (ग) कुत्स (घ) शौनक

9) हैमन्तिकम् यहाँ पर तद्धितप्रत्यय क्या है।

(क) ठक् (ख) ठञ् (ग) घ (घ) छ

10) दृशे इसका लौकिक रूप क्या है।

(क) द्रष्टुम् (ख) पश्यति (ग) अद्राक्षीत् (घ) ददर्श

[A] निम्नलिखित का यथा निर्देश उत्तर लिखिए। 2x10=20

1) ऋग्वेद का सर्वप्रथम भाष्य अब किसका प्राप्त होता है। सामसंहिता के प्रथम भाष्यकार कौन हैं। 1x1=2

2) निरुक्तकार कौन है? निघण्टुशब्दार्थ क्या है? 1x1=2

3) अग्निष्टोम का अन्य नाम क्या है? किस ब्राह्मण में अग्निष्टोम का विवरण विस्तार से है। 1x1=2

4) वैदिकसाहित्य में कितने युग है? और वह कौन से। 1x1=2

5) उषा सूक्त का ऋषि कौन है? इस सूक्त का देवता कौन है? 1x1=2

6) वसन्ताच्च इससे कौन सा तद्धितप्रत्यय का विधान करते है। पाथ्यः यहाँ पर कौन सा तद्धितप्रत्यय है। 1x1=2

7) गृभाय इसका लौकिक रूप क्या है? वक्तुम् इसका वैदिक रूप क्या है? 1x1=2

8) सम्परिपूर्वात् ख च इस सूत्र का अर्थ लिखो। ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे इस सूत्र का अर्थ लिखो।1x1=2

9) माधवः यहाँ पर तद्धितप्रत्यय क्या है? मधव्यः यहाँ पर तद्धितप्रत्यय क्या है? 1x1=2

10) अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः यह किस प्रकार का सूत्र है। छन्दस्यृदवगृहात् इससे किसका विधान करते हैं? 1x1=2

[A] निम्न का अनतिदीर्घ उत्तर के द्वारा समाधान कीजिए। 4x10=40

1) वेदशब्द का अर्थ लिखिए अथवा वेदलक्षण को प्रतिपादित कीजिए।

2) शुनःशेपोपाख्यान का संक्षेप से वर्णन कीजिए।

3) अग्निस्वरूप का वर्णन कीजिए अथवा रुद्रस्वरूप का वर्णन कीजिए।

4) सङ्गच्छध्वं संवदध्वम् ... इस मन्त्र को पूर्ण करके अन्वय और सरलार्थ को लिखिए। 1+1+2=2

5) विश्वामित्रनदीसंवाद के सार को संक्षेप से लिखिए।

6) वयमु त्वा पथस्पथे... इस मन्त्र को पूर्ण करके अन्वय और सरलार्थ लिखिए। 1+1+2=4

7) थट् च छन्दसि इस सूत्र का उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

8) अश्विमानण् इस सूत्र को उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए। अथवा ''हेमन्तशिशिरावहोरात्रे च छन्दसि'' इस सूत्र की उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

9) ''छन्दसि शायजपि'' इस सूत्र का उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।

10) तेजस्वी इस शब्दरूप की प्रक्रिया को लिखिए। अथवा नक्षत्रियः इसकी प्रक्रिया को प्रदर्शीत कीजिए।

[A] पाच दीर्घोत्तर समाधान करना चाहिए। 6x5=30

1) मीमांसक मत में वेद के वैशिष्ट्य को प्रतिपादित कीजिए।

2) सूर्यसूक्त का सार लिखिए।

3) वरुण स्वरूप अथवा यम स्वरूप का वर्णन कीजिए।

4) ''षष्ठीयुक्तश्छन्दसि'' इस सूत्र की व्याख्या कीजिए। अथवा शकि णमुल्कमुलौ, ईश्वरे तोसुन्कसुनौ इससे व्याख्या कीजिए।

5) ''छन्दसि परेऽपि'' और 'व्यवहिताश्च' की व्याख्या कीजिए।

--)(O)(--

आदर्श प्रश्नपत्र की अंक योजना

[A] निम्नलिखित के युक्त विकल्प का चयन कीजिए। 1x10=10

1-(घ), 2-(क), 3-(ख), 4-(ख), 5-(क), 6-(घ), 7-(क), 8-(ग), 9-(ख), 10-(क)

[B] निम्नलिखित का यथानिर्देश उत्तर लिखिए। 2x10=20

1) ऋग्वेद का सर्वप्रथम भाष्य अब स्कन्दस्वामि का प्राप्त होता है। साम संहिता का प्रथम भाष्यकार माधव है। 1+1=2

2) निरुक्तकार यास्काचार्य है। निघण्टुशब्द के शब्दों की सूची यह अर्थ है। 1+1=2

3) अग्निष्टोम का अन्य नाम ज्योतिष्टोम है। ऐतरेयब्राह्मण में अग्मिष्टोम का विवरण विस्तार से है। 1+1=2

4) वैदिकसाहित्य में चार युग है। छन्दोयुग, मन्त्रयुग, ब्राह्मणयुग, और सूत्रयुग तीन गुण है। 1+1=2

5) उष्स्सूक्त के ऋषि वामदेव है। 1+1=2

6) वसन्ताच्च इससे ठञ् प्रत्यय का विधान होता है। पाथ्यः यहाँ पर तद्धितसंज्ञक ङ्यण् प्रत्यय है। 1+1=2

7) गृभाय इसका लौकिक रूप गृहाण है। वक्तुम् इसका वैदिक रूप वक्षे यह है। 1+1=2

8) सम्परिपूर्व से वत्सरान्त प्रातिपदिक से छन्द में अधीष्टादि अर्थो में खः हो और छ हो। ह्रस्वात्परे चन्द्रशब्दत्तरपद को सुडागम हो मन्त्र में। 1+1=2

9) माधवः यहाँ पर तद्धितसंज्ञक ञप्रत्यय। मधव्यः यहाँ पर तद्धित यत्प्रत्यय है। 1+1=2

10) अनुदात्तं प्रश्नान्ताभिपूजितयोः यह विधिसूत्र है। ऋकारान्त अवग्रह से परे नकार को णत्व हो छन्द में। 1+1=2

[C] निम्नलिखित का अनतिदीर्घ उत्तर के द्वारा समाधान कीजिए। 4x10=10

1) बिन्दु - 1.5 / 1.8 देखना चाहिए

2) बिन्दु - 5.1 देखना चाहिए

3) बिन्दु - 7.6 / 7.8 देखना चाहिए

4) बिन्दु - 8.1.2, प्रथममन्त्र को देखना चाहिए 1+1+2=4

5) बिन्दु - 15.2 देखना चाहिए

6) बिन्दु - 9.2, प्रथम मन्त्र देखना चाहिए 1+1+2=4

7) बिन्दु - 20.1 देखना चाहिए

8) बिन्दु - 8.14 / 1.15 देखना चाहिए

9) बिन्दु - 18.2 देखना चाहिए

10) बिन्दु - 20.2 / 19.8 देखना चाहिए

[D] पाच दीर्घोत्तर के द्वारा समाधान करना चाहिए। 6x5=30

1) बिन्दु - 5.7 देखना चाहिए

2) बिन्दु - 8.2 देखना चाहिए

3) बिन्दु - 10.3 / 11.2 देखना चाहिए

4) बिन्दु - 16.3 / 18.7 & 18.8 देखना चाहिए

5) बिन्दु - 16.5 & 16.6 देखना चाहिए

--)(O)(--